राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 283

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, शनिवार, 21 मार्च 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 16

मोदी बोले, निर्भया मामले में न्याय की हुई जीत

>>4

आखिर सात साल बाद निर्भया को मिला न्याय, चारों दरिंदे फांसी पर लटकाए गए

सात साल बाद ▶ तिहाड़ में सुबह 5 :30 बजे विनय, अक्षय, पवन और मुकेश की जिंदगी का हो गया अंत

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

आखिर सात साल बाद निर्भया को न्याय मिला। सामूहिक दुष्कर्म के बाद नृशंस तरीके से हत्या करने के चारों दोषियों विनय, अक्षय, पवन और मुकेश को शुक्रवार सुबह 5.30 बजे फांसी पर लटका दिया गया। हालांकि चौथे डेथ वारंट को भी टालने की कोशिश की गई। इससे जुड़ी तमाम याचिकाओं को लेकर देर रात तक चली सुनवाई के बाद गुनहगारों को उनके किए की सजा मिल गई। तिहाड़ जेल अधीक्षक के इशारा करते ही लीवर दबा दिया गया। करीब आधे घंटे बाद चिकित्सक ने फांसी के फंदे से लटक रहे चारों दोषियों की जांच की और उनको मृत घोषित कर दिया।

16 दिसंबर 2012 की रात मेडिकल छात्रा के साथ हुई इस दरिंदगी से पूरे देश में आक्रोश भर गया था। लंबे संघर्ष के बाद गुरुवार रात्रि साढ़े तीन बजे सुप्रीम कोर्ट ने दोषियों की याचिका खारिज कर फांसी टलवाने की सारी कोशिशों को खत्म कर दिया, जिसके बाद जेल संख्या तीन में पहले से चल रही तैयारियां तेज हो गईं। कुछ ही देर में जेल अधीक्षक दोषियों की सेल में पहुंचे और उन्हें जगाया। उनके स्वास्थ्य की जांच की गई। करीब सवा चार बजे सुरक्षाकर्मियों ने सेल में ही दोषियों को सफेद कुर्ता-पायजामा पहनाया। उनसे कहा गया कि यदि वे चाहें तो प्रार्थना कर सकते हैं। दोषियों ने इसके बाद कुछ मिनट तक मौन रखकर भगवान का स्मरण किया और सेल से निकाले जाने का इंतजार करने लगे। करीब दस मिनट बाद सुरक्षाकर्मियों ने इनके हाथ को पीछे की ओर बांधा और सेल से बाहर निकालकर अहाते में ले गए। यहां पश्चिमी जिला उपायुक्त (राजस्व), जेल अधीक्षक, उपाधीक्षक, मुख्य चिकित्सा अधिकारी पहले से मौजूद थे। उपायुक्त की मौजूदगी में जेल अधीक्षक ने बारी-बारी से सभी दोषियों की पहचान की। इसके बाद सभी को डेथ वारंट पढ़कर सुनाया और बताया कि किस अपराध के लिए उन्हें सजा दी जा रही है। इसके बाद सभी के चेहरे काले रंग के कपड़े से ढक दिए गए, ताकि वे फांसी घर व जल्लाद को नहीं देख पाएं। इन्हें सुरक्षाकर्मी फांसी घर के प्लेटफार्म पर ले गए और ठीक साढ़े पांच बजे जेल अधीक्षक का इशारा मिलते ही जल्लाद ने लीवर दबा दिया।

- 16 दिसंबर 2012 की रात छह लोगों ने की थी हैवानियत
- इस वारदात के विरोध में पूरे देश में हुए थे प्रदर्शन

गुनहगारों को फांसी मिलते ही मैंने सबसे पहले बेटी से मन ही मन बात की और कहा कि आज तुम्हें इंसाफ मिला। इसके बाद उसकी तस्वीर को गले लगाया। देश की बेटियां अब स्वयं को सुरक्षित महसूस करेंगी। मेरा संघर्ष देश की हर पीड़ित बेटी के लिए जारी रहेगा। -निर्भया की मां

लंबे इंतजार के बाद शुक्रवार को निर्भया को न्याय मिलने के बाद उसकी मां (बीच में) भावुक गईं। इस अवसर पर रिश्तेदारों और परिचितों का उनसे मिलने के लिए तांता लग गया। प्रेट्र

निर्भया को न्याय विशेष पेज

मुकेश और विनय ने खाया रात का खाना, भूखा रहा पवन पेज>>4

इंसाफ की इस सुबह का देश के लोगों को था अर्से से इंतजार पेज>>4

दो घंटे पहले तक पैंतरेबाजी

दोषियों ने फांसी से बचने के लिए हर कानूनी दांव पेंच अपनाया, लेकिन जीत इंसाफ की हुई। पटियाला हाउस अदालत ने चौथे डेथ वारंट पर रोक लगाने से इन्कार कर दिया, लेकिन दोषियों के वकील ने सुप्रीम कोर्ट में तीन याचिकाएं दायर कीं, लेकिन हर जगह याचिका खारिज हो गई। इसके बाद तीन दोषियों ने गुरुवार रात 8.30 बजे हाई कोर्ट में अति आवश्यक याचिका दायर की, जिसे पौने तीन घंटे की बहस के बाद खारिज कर दिया गया। वकील को लताड़ लगाते हुए पीठ ने कहा कि दोषियों का भगवान से मिलने का समय नजदीक है और तथ्यों पर बहस करने के बजाय बेवजह की दलीलें देकर समय खराब न करें। इसके बाद दोषी सुप्रीम कोर्ट चले गए। फांसी के दो घंटे पहले रात 3.30 बजे सुप्रीम कोर्ट ने उनकी याचिका खारिज कर दी। कोर्ट ने कहा, आप बार-बार वही दलील दे रहे हैं जो हर स्टेज पर, हर कोर्ट में खारिज हो चुकी हैं और राष्ट्रपति के पास दया याचिका भी खारिज हो चुकी हैं।

सरोकार

सूती मास्क बनाने में जुटे केंद्रीय जेल के कैदी

जबलपुर : केंद्रीय कारागार, जबलपुर में सूती मास्क बनाए जा रहे हैं ताकि

आमजन को मास्क की किल्लत से बचाया जा सके। सूती कपड़े की इकहरी परत वाले इन मास्क को मप्र सरकार ने संक्रमण के फैलाव को रोकने में कारगर बताया है। (पेज-10)

जागरण विशेष

आस्था और विश्वास के साथ बजाएं थाली-घंटा-घंटी...

नई दिल्ली : ताली, थाली, घंटा-घंटी बजाकर एक-दूसरे का आभार जताने

और कोरोना से लड़ने को एकजुटता की प्रधानमंत्री की देश से अपील में निहित वैज्ञानिक पहलू को समझा रहे वैदिक विज्ञान के जानकार। (पेज-10)

न्यूज गैलरी

बिजनेस ▶ पृष्ठ 12

राहत पैकेज उम्मीदों पर शेयर बाजारों में लौटी रौनक

मुंबई : चार कारोबारी सत्रों की गिरावट को पीछे छोड़ते हुए सप्ताह के आखिरी कारोबारी सत्र में शुक्रवार को घरेलू शेयर बाजारों में थोड़ी रौनक दिखी। बांबे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का सेंसेक्स 1,627.73 अंकों की उछाल के साथ 29,915.96 अंक पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी भी 8,745.45 अंक पर स्थिर हुआ।

अंतरराष्ट्रीय ▶ पृष्ठ 13

अमेरिका ने किया हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल परीक्षण

वाशिंगटन : अमेरिका ने शुक्रवार को पहली हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया। रक्षा मंत्रालय पेंटागन के अनुसार, इस मिसाइल की गति ध्वनि की गति से करीब पांच गुना ज्यादा होगी। इस लिहाज से यह मिसाइल 6,200 किलोमीटर प्रति घंटा से ज्यादा गति से दुश्मन पर हमला करेगी।

बॉलीवुड सिंगर कनिका की करतूत ने बढ़ाई मुसीबत

लापरवाही ▶ कोरोना से थी संक्रमित, लखनऊ की कई पार्टियों में हुईं शामिल

11 मार्च को विदेश से लौटी थीं लखनऊ, कानपुर भी गई थीं

जागरण संवाददाता, लखनऊ

'बेबी डॉल मैं सोने दी...' गाने से पूरे देश में चर्चित हुई बॉलीवुड सिंगर कनिका कपूर की एक करतूत ने शुक्रवार को लखनऊ को दहशतजदा कर दिया है। विदेश से यहां आईं कनिका कोरोना वायरस से ग्रस्त होने के बावजूद कई पार्टियों में शामिल हुईं। कनिका कपूर लंदन गई थीं। 11 मार्च को लखनऊ लौटी थीं। विदेश से आने के बावजूद उन्होंने सरकार की तय एडवाइजरी को दरकिनार कर दिया और करीब 10 दिन तक होम क्वारंटाइन का पालन करने के बजाए शहर में हाई प्रोफाइल लोगों के बीच पार्टियां करती रहीं। बीच में कानपुर भी गईं। इस मामले लखनऊ के डीएम के निर्देश पर कनिका के खिलाफ तीन थानों में आइपीसी 188 (महामारी कानून), 269 (ऐसा काम जिससे संक्रामक रोग फैलने की आशंका हो) और 270 (जीवन के लिए संकटपूर्ण रोग का फैलाना) की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किए गए हैं। इस सनसनीखेज मामले के सामने आने के बाद सरकार ने लखनऊ, नोएडा और कानपुर शहर को सैनिटाइज करने के निर्देश दिए हैं।

बड़े क्षेत्र में वायरस के संक्रमण का खतरा : बड़ी संख्या में कनिका के लोगों के संपर्क में आने से बड़े क्षेत्र में वायरस के संक्रमण का खतरा पैदा हो गया है। यह बात सार्वजनिक होते ही प्रशासन में खलबली मच गई। इसलिए कि कनिका की पार्टी में शामिल स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह ने सरकारी कार्यक्रमों समेत कैबिनेट की बैठक में भाग लिया था। सांसद दुष्यंत संसद की कार्यवाही में भी शामिल हुए। कनिका 13 मार्च को कानपुर के विष्णुपुरी में स्थित कल्पना अपार्टमेंट के फ्लैट नंबर 902 में रहने वाले अपने मामा विपुल टंडन के गृह प्रवेश में आई थीं। अपार्टमेंट को लॉक डाउन कर दिया गया है।

चार दिन से आ रहा था बुखार : कनिका को गत चार दिन से जुकाम-बुखार था। बुधवार को उन्होंने सीएमओ समेत अन्य अफसरों को फोन पर तबीयत बिगड़ने की सूचना दी। गुरुवार शाम उनके फ्लैट में हेल्थ टीम पहुंची और सैंपल कलेक्शन कर केजीएमयू जांच के लिए भेजा गया। सुबह 9 बजे संस्थान के प्रवक्ता डॉ. सुधीर सिंह ने कनिका में वायरस की पुष्टि की। इसके बाद उन्हें पीजीआइ भेजा गया। लखनऊ में कनिका का फ्लैट डंडईया स्थित कॉलोनी में है। कनिका के आवास के आस-पास एक किमी दायरे में स्क्रीनिंग की जाएगी।

संपर्क में आए सैकड़ों लोग, 45 की सैंपलिंग : कनिका के पिता ने तीन पार्टियों में शामिल होने की बात कही है। सीएमओ की टीम ने इनमें शामिल लोगों को ट्रेस करना शुरू कर दिया है। पिता समेत तीन लोगों के सैंपल संग्रह किए गए। शुक्रवार शाम तक कुल 45 लोगों के सैंपल लिए गए।

कनिका ने दी सफाई : कहा-चार दिन पहले ही पता चला पेज>>6

- सरकार की एडवाइजरी को दरकिनार कर क्वारंटाइन का पालन नहीं किया
- पार्टी के दौरान संपर्क में आए कई मंत्री, अफसर खुद ही घरों में हुए आइसोलेट
- लखनऊ के तीन थानों में कनिका के खिलाफ दर्ज हुई एफआइआर
- लखनऊ सहित नोएडा और कानपुर को सैनिटाइज करने का निर्देश

कनिका कपूर की फाइल फोटो। एएफपी

पार्टियों में ये लोग हुए शामिल

राजस्थान की पूर्व सीएम वसुंधरा राजे, उनके सांसद पुत्र दुष्यंत सिंह, उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह, कांग्रेस के पूर्व सांसद जितिन प्रसाद, पूर्व सांसद अकबर अहमद डंपी, विधायक रघुराज प्रताप सिंह, डीजी फायर जावीद अहमद।

लखनऊ में कहां-कहां हुईं पार्टियां

पूर्व बसपा सांसद अकबर अहमद डंपी के डालीबाग स्थित घर में 13 व 14 को पार्टी हुई। बगल में ही पूर्व केंद्रीय मंत्री जितिन प्रसाद के ससुर आदेश सेठ का घर है। यहां 15 मार्च को पार्टी की। साथ ही लोकायुक्त संजय मिश्र के यहां पार्टी में भी कनिका पहुंची।

कई हस्तियों के पार्टी में शामिल होने से दिल्ली तक मची खलबली

कनिका की पार्टियों में राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, उप्र के स्वास्थ्य मंत्री जयप्रताप सिंह समेत कई सांसद, पूर्व मंत्री व राज्य सरकार के अफसर शामिल हुए। कनिका के वायरस की पुष्टि होने पर लखनऊ से लेकर दिल्ली तक खलबली मच गई। संपर्क में आए कई मंत्री, अफसर खुद ही घरों में क्वारंटाइन हो गए। लखनऊ में शुक्रवार को प्रशासन ने होटल ताज जिसमें कनिका ठहरी थीं, समेत सभी मुख्य बाजार बंद करा दिए और आइसोलेशन शुरू करा दिया गया।

देश में कोरोना संक्रमण के 50 नए मामले, आंकड़ा 241 पर पहुंचा

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश में कोरोना के 50 नए मामले सामने आए हैं। देश में एक दिन में संक्रमितों की यह सबसे बड़ी संख्या है। इनको मिलाकर शुक्रवार को संक्रमितों का आंकड़ा 241 पर पहुंच गया है। देशभर में इन संक्रमितों के संपर्क में आए 6700 लोगों की पहचान की गई है और उन्हें सघन निगरानी में रखा गया है। कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए कई राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने कड़े कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। महाराष्ट्र में मुंबई, पुणे, नागपुर और पिंपरी-चिंचवण शहरों को शनिवार से पूरी तरह से बंद करने का एलान किया गया है। वहीं, दिल्ली में भी माल को बंद कर दिया गया है। माल में सिर्फ राशन और दवा की दुकानें ही खुलेंगी।

रेलवे भी निभाएगी जनता कर्फ्यू में भागीदारी, नहीं चलेगी एक भी ट्रेन

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'जनता कर्फ्यू' के आह्वान में रेलवे भी पूरी जिम्मेदारी के साथ भूमिका निभाएगी। इस अभूतपूर्व पहल के मद्देनजर रेल मंत्रालय ने शनिवार रात 12 बजे से रविवार रात 10 बजे के बीच देश में रेल यातायात को पूरी तरह बंद रखने का निर्णय लिया है। मोदी ने रविवार सुबह सात से रात नौ बजे तक जनता कर्फ्यू का आह्वान किया है। उन्होंने इस दौरान सभी से घरों के भीतर रहने की अपील की है।

रेल मंत्रालय की ओर से सभी महाप्रबंधकों को जारी निर्देश के अनुसार 21-22 मार्च की तय अवधि के दौरान कोई भी जोन अपने यहां से कोई ट्रेन नहीं चलाएगा। इसका मतलब हुआ कि देशभर में रोजाना चलने वाली 2400 पैसेंजर ट्रेनें तथा 1300 मेल/एक्सप्रेस ट्रेनें नहीं चलेंगी। इन ट्रेनों के लिए की गई बुकिंग रद मानी जाएगी और इनका पूरा पैसा यात्रियों को रिफंड किया जाएगा। मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और दिल्ली जैसे महानगरों में लोकल ट्रेनों का संचालन भी अत्यंत सीमित रहेगा।

इस दौरान जो ट्रेनें पहले से चल चुकी होंगी और रास्ते में होंगी उनके यात्रियों को बीच में ही रोककर स्टेशन पर उतार लिया जाएगा और प्रतीक्षालयों, मुख्य हॉल आदि जगहों पर थोड़ी-थोड़ी दूरी बनाकर ठहराया जाएगा। अधिकारियों से कहा गया है कि इस दौरान वे स्टेशनों की स्थिति पर बारीक नजर रखें तथा सुनिश्चित करें कि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न होने पाए। ऐसा पहली बार हो रहा है कि रेल संचालन को इतने व्यापक पैमाने पर रोका गया है।

खानपान इकाइयों पर अंकुश : रेलवे स्टेशनों में खानपान इकाइयां, फूड प्लाजा, रिफ्रेशमेंट रूम, जन आहार, शेल किचन तथा अन्य दुकानें इन रुके हुए यात्रियों को खाना-पानी और जरूरी चीजें मुहैया कराने के लिए केवल 22 मार्च रात 10 बजे तक खुली रहेंगी। उसके बाद सबको बंद कर दिया जाएगा। मेल एक्सप्रेस ट्रेनों में कैटरिंग सेवाएं भी सामान्यतः उपलब्ध नहीं होंगी। मांग होने पर चाय-कॉफी तथा पैकेटबंद आइटम बेचने की अनुमति होगी। केवल उन्हीं यूनिटों को चालू रहने की अनुमति होगी जो पहले से बुकिंग पर खाना सप्लाई करती हैं।

एहतियाती कदम

- शनिवार आधी रात से रविवार रात 10 बजे तक नहीं चलेंगी 3700 ट्रेनें
- पहले से चल रही ट्रेनों को स्टेशनों पर रोककर यात्रियों को प्रतीक्षालय में ठहराया जाएगा
- लोकल ट्रेनों का भी कम से कम होगा परिचालन, कैटरिंग इकाइयों पर भी पाबंदी
- जनता कर्फ्यू के दौरान दिल्ली में मेट्रो ट्रेनों का संचालन बंद रहेगा
- सभी निजी व सरकारी अस्पतालों में कोरोना जांच के लिए मॉक ड्रिल होगी

यात्रियों को दी जा रही सूचना

जनता को जागरूक करने के लिए अधिकारियों से उद्घोषणा प्रणाली, पंफलेट, वेबसाइट, टीवी व समाचार पत्रों के माध्यम से यात्रियों को पूर्व सूचना देने को कहा गया है, ताकि यात्रियों में किसी तरह की घबराहट न व्याप्त हो। 'रेल कर्फ्यू' खत्म होने के बाद स्टेशनों पर रोके गए यात्रियों के साथ 22 मार्च की रात 10 बजे के बाद ट्रेनें पकड़ने के लिए आने वाले यात्रियों के लिए पर्याप्त संख्या में विशेष ट्रेनें चलाने के इंतजाम करने को भी अधिकारियों से कहा गया है।

दिल्ली में छह नए मामले, शाहीन बाग के दो प्रदर्शनकारी भी चपेट में

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली में शुक्रवार को कोरोना के छह नए मामले सामने आए हैं। इनमें जहांगीरपुरी निवासी महिला और उसका बेटा शामिल है, जिन्हें लोकनायक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दोनों शाहीन बाग के प्रदर्शन में शामिल हुए हैं। महिला की सऊदी अरब से आई दिलशाद गार्डन निवासी 38 वर्षीय बेटी पहले से ही संक्रमित है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार दिलशाद गार्डन निवासी महिला का इलाज सफदरजंग अस्पताल में चल रहा है। वह 10 मार्च को सऊदी अरब से लौटी थी। इनके संपर्क में आए 100 लोगों को आइसोलेशन में रहने का निर्देश दिया गया है। चार नए मरीज दिल्ली में कहां के रहने वाले हैं यह अभी पता नहीं चल सका है। दिल्ली में कोरोना के अब तक 20 मामलों की पुष्टि हो चुकी है। इसमें से चार मरीज अस्पताल से स्वस्थ होकर घर आ चुके हैं।

विस में शक्ति परीक्षण से पहले ही कमल नाथ ने दिया इस्तीफा

भोपाल में शुक्रवार को भाजपा के वरिष्ठ नेता शिवराज सिंह चौहान (बाएं) ने मध्य प्रदेश के कार्यवाहक मुख्यमंत्री कमल नाथ से उनके आवास पर मुलाकात की। प्रेट्र

राज्य ब्यूरो, भोपाल

- सुप्रीम कोर्ट के आदेश के 18 घंटे के भीतर मप्र में सत्ता संघर्ष का पटाक्षेप
- सीएम ने पत्रकारवार्ता कर किया एलान और फिर राज्यपाल को सौंपा त्याग-पत्र
- विरोधियों को चेताया-आज के बाद कल और कल के बाद परसों भी आता है

सुप्रीम कोर्ट के कमल नाथ सरकार को शक्ति परीक्षण साबित करने के आदेश के 18 घंटे के भीतर ही मध्य प्रदेश में सियासी संघर्ष का पटाक्षेप हो गया। विधानसभा में बहुमत परीक्षण के पूर्व ही मुख्यमंत्री कमल नाथ ने पत्रकारवार्ता कर इस्तीफे का एलान कर दिया। इसके बाद राज्यपाल लालजी टंडन को इस्तीफा सौंप दिया। राज्यपाल ने इस्तीफा मंजूर करते हुए नए मुख्यमंत्री के कार्यभार संभालने तक उनको कार्यवाहक मुख्यमंत्री बने रहने को कहा है।

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को मप्र सरकार को साफ कहा था कि वह शुक्रवार शाम पांच बजे तक विस में बहुमत साबित करे। इसीलिए गुरुवार रात करीब डेढ़ बजे विधानसभा अध्यक्ष एनपी प्रजापति ने शुक्रवार दोपहर दो बजे से विधानसभा आहूत की थी, लेकिन इसकी नौबत ही नहीं आई। मुख्यमंत्री दोपहर करीब सवा एक बजे राजभवन पहुंचे और राज्यपाल को इस्तीफा सौंप दिया। मप्र में सियासी संकट की शुरुआत तीन मार्च को बसपा विधायक रामबाई व कुछ अन्य विधायकों के दिल्ली ले जाए जाने के बाद हुई थी।

लोभी-प्रलोभी जीत गए

इस्तीफा देने के बाद कमल नाथ ने ट्वीट के जरिये प्रतिक्रिया दी- 'आज मध्य प्रदेश की उम्मीदों और विश्वास की हार हुई है। लोभी और प्रलोभी जीत गए हैं। प्रदेश के आत्मसम्मान को हराकर कोई नहीं जीत सकता। मैं पूरी इच्छाशक्ति से प्रदेश के विकास के लिए काम करता रहूंगा।'

कुनबा बिखरने का सिलसिला रोक नहीं पा रही कांग्रेस

नई दिल्ली : मध्य प्रदेश की सत्ता हाथ से निकलने के साथ एक बार फिर साबित हो गया है कि कांग्रेस नेतृत्व राज्यों में अपना कुनबा बिखरने का सिलसिला थाम नहीं पा रहा है। (पेज-15)

पूछा-'मेरी गलती क्या थी' पेज>>15

सख्त रुख

कोरोना वायरस के कम्युनिटी ट्रांसमिशन फेज में पहुंचने का खतरा गहराया, केंद्र ने राज्यों को सोशल डिस्टेंसिंग का कड़ाई से पालन कराने को कहा, सीआरपीसी और आइपीसी की धाराओं के तहत भी उठा सकते हैं कदम

...दूर-दूर नहीं रहे तो होगी सख्त कानूनी कार्रवाई

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

पिछले पांच दिनों से कोरोना वायरस से ग्रसित मरीजों की संख्या में तेज बढ़ोतरी ने सरकार की चिंता बढ़ा दी है। देश में वायरस के तीसरे फेज यानी कम्युनिटी ट्रांसमिशन की आशंका भी गहरा गई है। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए सरकार ने इसे रोकने के लिए पूरी ताकत झोंक दी है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने सभी राज्यों को सोशल डिस्टेंसिंग (एक दूसरे से दूर-दूर रहने) के नियम का पालन नहीं करने वालों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव लव अग्रवाल के अनुसार, राज्यों को स्पष्ट निर्देश है कि सोशल डिस्टेंसिंग लागू कराने लिए उन्हें किसी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करनी पड़े तो इसमें भी संकोच नहीं करें। एपिडेमिक डिजीज कंट्रोल एक्ट के तहत राज्यों को पहले से ही कार्रवाई करने का पूरा अधिकार है। इसके अलावा यदि जरूरत पड़े तो वे सीआरपीसी, आइपीसी या किसी भी अन्य कानून की उपयुक्त धारा के तहत भी कार्रवाई कर सकते हैं। लव अग्रवाल ने कहा कि पिछले चार-पांच दिन से कोरोना ग्रसित मरीजों की तेजी से बढ़ती संख्या चिंता की बात है और कम्युनिटी ट्रांसमिशन के फेज तक पहुंचने से रोकने के लिए सोशल डिस्टेंसिंग को कड़ाई से लागू करना ही एक मात्र उपाय है।

सोशल डिस्टेंसिंग को लागू करने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय पहले ही सार्वजनिक परिवहन के साधनों को कम करने और उनमें यात्रियों के बीच एक मीटर की दूरी सुनिश्चित करने को कह चुका है। साथ ही राज्यों को रेलवे स्टेशनों और बस अड्डों पर भीड़ नियंत्रित करने के विशेष प्रबंध करने को भी कहा गया है। यदि ऐसा संभव नहीं हो तो उन्हें पूरी तरह बंद कर दिया जाए। लव अग्रवाल ने कहा कि सभी राज्य एक साथ मिलकर पूरे देश में सोशल डिस्टेंसिंग को कड़ाई से लागू नहीं करेंगे तो हालात को संभालना मुश्किल हो जाएगा। इस बीच, आइसीएमआर के डॉक्टर रमन आर. गंगाखेड़कर ने कहा कि अभी तक देश में कोरोना के कम्युनिटी ट्रांसमिशन का कोई मामला नहीं मिला है। जितने भी केस सामने आ रहे हैं, वे लोकल ट्रांसमिशन के हैं।

कोरोना से नहीं हुई इतालवी की मौत पेज>>6

लव अग्रवाल। फाइल

क्यों खतरनाक है कम्युनिटी ट्रांसमिशन?

अभी तक देश में जितने संक्रमित मिले हैं, वे या तो विदेश से आए हैं या ऐसे ही किसी संक्रमित के सीधे संपर्क में आए हैं। यह संक्रमण का लोकल ट्रांसमिशन स्टेज कहलाता है। इसमें संक्रमण का स्रोत ज्ञात रहता है। कम्युनिटी ट्रांसमिशन का अर्थ होगा कि कोई किसी अज्ञात के संपर्क में आकर संक्रमित हो गया। ऐसा होने पर संक्रमित लोगों की पहचान मुश्किल होती है और संक्रमण का दायरा बहुत तेजी से बढ़ता है।

क्या है सोशल डिस्टेंसिंग? : सोशल डिस्टेंसिंग का अर्थ है दूरी बनाकर रहना। यह इसी अवधारणा पर केंद्रित है कि लोग एक-दूसरे के संपर्क में आने से बचें। ऐसा होने से संभावित संक्रमण से बचना-बचाना संभव होगा। आपात स्थिति न हो तो घर से बाहर नहीं निकलना और बाहर आने पर सामने वाले से तीन से छह फीट की दूरी सोशल डिस्टेंसिंग का तरीका है।

इन कदमों का भी रखें ध्यान

- हाथों को लगातार साबुन से धोते रहें
- जरूरत पर सैनिटाइजर का प्रयोग करें
- आंख, नाक, मुंह को छूने से बचें
- खांसते-छींकते समय एहतियात बरतें
- मास्क लगाकर बाहर निकलें

हर आपात स्थिति से निपटने को तैयार रहें अस्पताल : केजरीवाल

कोरोना से बचाव ▶ चिकित्सा अधीक्षकों को संविदा पर भर्तियां करने का अधिकार दिया, अस्पतालों की सुरक्षा बढ़ाई ताकि कोई मरीज भाग न पाए

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सभी सरकारी अस्पतालों को कोरोना के कारण बनने वाली हर आपात स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने सभी अस्पतालों के चिकित्सा अधीक्षकों को निर्देश दिया है कि अस्पताल में संसाधन और कर्मचारियों की कमी न हो। सभी चिकित्सा अधीक्षकों को तीन माह के लिए संविदा पर अतिरिक्त कर्मचारी नियुक्त करने का अधिकार दे दिया गया है। साथ ही सीएम ने कोरोना से निपटने के लिए सभी जरूरी सामान तत्काल खरीदने को कहा है।

उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया है कि कोरोना से निपटने के लिए अस्पतालों को दिए जाने वाले जरूरी संसाधन, दवाओं व अन्य सुविधाओं को लेने के लिए होने वाली कागजी कार्रवाई को हाथों-हाथ पूरा किया जाए, जिससे सामान खरीदने में किसी तरह की देरी न हो। उन्होंने दवा, मास्क व अन्य सामान का स्टॉक करने वालों के ठिकानों पर छापा मारने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने यह निर्देश दिल्ली से सभी अस्पतालों के चिकित्सा अधीक्षकों के साथ दिल्ली सचिवालय में हुई बैठक में दिए। इस दौरान स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन व अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

दिल्ली सचिवालय में कोरोना वायरस को लेकर आयोजित बैठक में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल। साथ में स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन। सौजन्य-दिल्ली सरकार

बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली में पिछले 24 घंटे में कुछ पॉजिटिव केस सामने आए हैं। हालांकि अब भी दिल्ली में कोरोना कम्यूनिटी में नहीं फैला है लेकिन दिल्ली के अस्पतालों को हर स्थिति से निपटने के लिए पहले से तैयार रहना होगा। हमें ज्यादा मेहनत करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पश्चिमी देशों में भी कोरोना का प्रभाव बढ़ने पर अस्पताल के संसाधन कम पड़ गए थे। इस कारण दिल्ली के अस्पतालों को ज्यादा तैयार रहने की जरूरत है।

मुख्यमंत्री ने सभी चिकित्सा अधीक्षकों को निर्देश दिया कि अस्पताल की तैयारी पूर्ण कर लें। साथ ही यह सुनिश्चित करें अस्पताल में किसी आवश्यक संसाधन की कमी न हो। अगर किसी अस्पताल में किसी संसाधन के लिए कोई अप्रुवल चाहिए तो उसे तत्काल लें, मंत्रालय समेत अधिकारियों से इसकी तत्काल मंजूरी मिलेगी। हाथों हाथ फाइल मंजूर होगी। उन्होंने सभी चिकित्सा अधीक्षकों को निर्देश दिया कि वे इस बात को सुनिश्चित करें कि उनके अस्पताल में सभी जांच मशीनें काम करें। कभी भी जांच मशीन खराब होने की शिकायत नहीं होनी चाहिए। साथ ही सीएम ने कहा कि सभी अस्पतालों में वेंटिलेटर काम करने चाहिए। उन्होंने चिकित्सा अधीक्षकों से कहा कि वेंटिलेटर सप्लायर से बात करें। सारे वेंटिलेटर खरीद लें, जिससे आपात स्थिति में वेंटिलेटर की कमी न हो। इसके अलावा सीएम ने कहा कि सभी अस्तपालों में सारी दवाएं होनी चाहिए। दवा खरीदने की जरूरत हो तो तत्काल उसे खरीद लें। मास्क मिलने में समस्या नहीं होनी चाहिए। सीएम ने स्वास्थ्य मंत्री जैन को निर्देश दिया कि मास्क और दवाओं को कोई स्टॉक न कर सके, इसे भी सुनिश्चित किया जाए। कोई स्टॉक करता है तो उसके यहां छापेमारी की जाए। केजरीवाल ने कहा कि अस्पताल से कोई भी कोरोना मरीज भाग न सके, इसका यह ध्यान रखें। मरीज किसी हाल में ठीक होने से पहले न भागे। उन्होंने कहा कि पुलिस साथ देने को तैयार है। सभी छह अस्पतालों में सुरक्षा बढ़ाने का भी उन्होंने निर्देश दिए। सीएम ने सभी चिकित्सा अधीक्षकों से कहा है कि तीन माह के लिए संविदा पर कर्मचारियों की नियुक्ति कर लें। इसके लिए किसी से मंजूरी की आवश्यकता नहीं है। सीएम ने कहा कि अस्पतालों में अभी सामान्य इलाज को बंद न किया जाए। ऐसा आपात स्थिति में किया जाएगा। सीएम के साथ बैठक के बाद चिकित्सा और पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों की स्वास्थ मंत्री सत्येंद्र जैन की अध्यक्षता में बैठक हुई। इस दौरान तय हुआ कि दोनों विभाग सामंजस्य से काम करें, जिससे अस्पताल के अंदर कोरोना को फैलने से रोका जा सके।

31 तक चालान का भुगतान करने न जाएं ट्रैफिक कार्यालय

जासं, नई दिल्ली : कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने की दिशा में यातायात पुलिस ने एक कदम और उठाया है। यातायात पुलिस ने लोगों से अपील की है कि जिन भी लोगों के चालान हुए हैं, वह उनका भुगतान 31 मार्च के बाद कर सकते हैं। ऐसे में सिर्फ कागजात लेने के उद्देश्य से चालान का भुगतान करने के लिए ट्रैफिक सर्किट ऑफिस में न जाएं। एक अप्रैल को यह तय किया जाएगा कि चालान भुगतने में छूट की अवधि को बढ़ाया जाएगा या नहीं।

यातायात पुलिस के विशेष आयुक्त ताज हसन ने आदेश जारी किए हैं कि यातायात पुलिस के निरीक्षक लोगों को 31 मार्च तक चालान का भुगतान न करने के बारे में जागरूक करें। यातायात निरीक्षक लोगों को फोन करके बताएं कि जिन लोगों के चालान किए गए हैं, वे उनका भुगतान 31 मार्च के बाद ट्रैफिक सर्किल ऑफिस जाकर कर सकते हैं। कोई ऐसी स्थिति है कि चालान के समय जमा किए गए कागजात की बहुत आवश्यकता है तो ही पूरी सावधानी के साथ चालान का भुगतान किए जाने के बाद कागजात दिए जाएंगे।

17 साल में पहली बार जनता कर्फ्यू में बंद रहेगी दिल्ली मेट्रो

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण के कारण घोषित जनता कर्फ्यू में दिल्ली मेट्रो का परिचालन पूरी तरह बंद रहेगा। मेट्रो का परिचालन शुरू होने के बाद 17 सालों में पहली बार रविवार को मेट्रो सेवा बंद रहेगी। वैसे भी कोरोना के डर से मेट्रो में यात्रियों की संख्या करीब 38 फीसद तक घट चुकी है। दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने भी मेट्रो में भीड़ कम करने के लिए कई कदम उठाए हैं। शुक्रवार से मेट्रो में एक सीट छोड़कर यात्रियों के बैठने का प्रावधान कर दिया गया। इसके अलावा मेट्रो कोच में किसी यात्री के खड़े होकर सफर नहीं करने का निर्देश दिया गया है। हालांकि लोग इस नियम का बहुत ज्यादा पालन करते तो नहीं दिखे, लेकिन शुक्रवार को मेट्रो में ज्यादा भीड़ नहीं रही। नए कॉरिडोर पर मेट्रो खाली ही दौड़ती रहीं।

डीएमआरसी का कहना है कि विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देश का मतलब यात्रियों को भीड़ से बचाने की सलाह देना है ताकि लोग खुद भीड़ से बचने की पहले करें। फिर भी दिशा-निर्देश को लागू करने के लिए डीएमआरसी कदम उठा रहा है। मेट्रो स्टेशनों, ट्रेन व सोशल मीडिया पर पोस्ट कर यात्रियों से भीड़ से बचने की सलाह दी जा रही है। इससे मेट्रो में यात्रियों की संख्या काफी कम हो गई है। गुरुवार को मेट्रो में 37 लाख लोगों ने यात्रा की, जबकि कार्य दिवसों के दिन सामान्य तौर पर यह आंकड़ा 55-60 लाख होता है।

आटो सेवा भी मुहिम में रहेगी शामिल

जासं, नई दिल्ली : प्रधानमंत्री के जनता कर्फ्यू के आह्वान पर भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) के आटो-टैक्सी संगठन ने 22 मार्च को सेवा न देने का निर्णय लिया है। इस बारे में संगठन के महामंत्री राजेंद्र सोनी ने बताया कि कोरोना वायरस को लोगों में पहुंचने से रोकने के लिए आवश्यक है कि सड़क पर कम से कम लोग निकलें और एक-दूसरे के संपर्क में न आएं। इसलिए हमने रविवार को ऑटो व टैक्सी सेवा न देने का निर्णय लिया है। डिलीवरी का काम करने का निर्णय लिया है।

न्यूज गैलरी

सीबीआइ ने दिल्ली पुलिस के एसआइ को घूस लेते पकड़ा

नई दिल्ली : केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ) ने दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा में तैनात एक सब-इंस्पेक्टर (एसआइ)को चार लाख रुपये घूस लेते गिरफ्तार किया है। एसआइ ने एक मामले को हल्का करने के लिए शिकायतकर्ता से 30 लाख रुपये घूस मांगे थे। सीबीआइ के प्रवक्ता आरके गौड़ ने बताया कि मंदिर मार्ग थाने में तैनात एसआइ संजीव कुमार ने शिकायतकर्ता से उसके खिलाफ दर्ज मामले को कमजोर करने के लिए 30 लाख रुपये घूस मांगे थे। उसी में से चार लाख रुपये लेते हुए उसे गिरफ्तार किया गया। शिकायत मिलने के बाद सीबीआइ ने संजीव कुमार को गिरफ्तार करने के लिए इससे पहले दो बार जाल बिछाया था। (प्रेट्र)

ताहिर को फिर एक दिन की पुलिस हिरासत

नई दिल्ली : उत्तर-पूर्वी जिले में भड़के सांप्रदायिक दंगे के दौरान मारे गए आइबी कांस्टेबल अंकित शर्मा के हत्यारोपित आप के निलंबित पार्षद ताहिर हुसैन को शुक्रवार को कड़कड़डूमा कोर्ट ने एक बार फिर पुलिस हिरासत में भेज दिया। कोर्ट परिसर स्थित उत्तर-पूर्वी जिले के मुख्य महानगर दंडाधिकारी पवन सिंह राजावत की कोर्ट में पेशी के दौरान क्राइम ब्रांच ने दंगों से संबंधित एक और मामले में पूछताछ करने के लिए ताहिर को पुलिस हिरासत में भेजने की मांग की। इसके बाद कोर्ट ने ताहिर को एक दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया। हालांकि कोरोना वायरस के चलते कोर्ट में सामान्य मामलों में आरोपितों की पेशी पर रोक है लेकिन ताहिर हुसैन का मामला अति आवश्यक मामले की श्रेणी में आने के कारण कोर्ट में पेशी हुई। (जासं)

छठी बार प्रदर्शनकारियों से मिलने पहुंचे वार्ताकार

नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त दोनों वार्ताकार शुक्रवार को छठी बार प्रदर्शनकारियों से मिलने के लिए शाहीन बाग पहुंचे। इस दौरान वार्ताकारों ने प्रदर्शनकारियों से बात नहीं की। वार्ताकार संजय हेगड़े और साधना रामचंद्रन ने धरनास्थल का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने अपने साथ चल रहे पुलिसकर्मियों समेत सभी प्रदर्शनकारियों के हाथ सैनिटाइज करवाए। मीडियाकर्मियों से बातचीत के दौरान वार्ताकारों ने कहा कि 23 मार्च को सुप्रीम कोर्ट में मामले की सुनवाई है। ऐसे में वह धरना स्थल का माहौल देखने के लिए आए थे। (जासं)

एम्स ने भी रद की रुटीन सर्जरी

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

- सफदरजंग अस्पताल में पहले से ही यह सेवा है बंद
- सैकड़ों मरीजों की सर्जरी होगी प्रभावित

कोरोना के कारण ज्यादातर अस्पतालों की ओपीडी में मरीज कम हो गए हैं। कई बड़े अस्पतालों ने ओपीडी पंजीकरण का समय भी घटा दिया है। एम्स भी ओपीडी अप्वाइंटमेंट रद करने की मरीजों को सलाह दे रहा है। इसी क्रम में सफदरजंग अस्पताल के बाद अब एम्स ने भी अस्पताल में रुटीन सर्जरी बंद करने का फैसला किया है। शनिवार से एम्स में रुटीन सर्जरी नहीं होगी। इसलिए दूसरे राज्यों से ऐसे मरीज जिनकी हालत स्थिर है तो फिलहाल एम्स न आएं। उन्हें सर्जरी के बगैर वापस लौटना पड़ सकता है। एम्स द्वारा रुटीन सर्जरी बंद किए जाने से सैकड़ों मरीजों का ऑपरेशन प्रभावित होगा।

हालांकि मौजूदा परिस्थिति में इसे आवश्यक बताया जा रहा है। डॉक्टर कहते हैं कि अस्पतालों में भीड़ के कारण संक्रमण बढ़ने का खतरा बना हुआ है। इसके अलावा कोरोना का संक्रमण बढ़ने पर अस्पतालों में उसके इलाज के लिए भी व्यवस्था करनी होगी। इसलिए रुटीन सेवाओं में कटौती जरूरी है। इससे अस्पतालों में संक्रमण का खतरा भी कम होगा। एम्स के सहायक प्रोफेसर डॉ. विजय गुर्जर, एम्स रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन (आरडीए) के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अमरिंदर सिंह मल्ही, डॉ. जवाहर सिंह सहित कई डॉक्टरों ने इलेक्टिव सर्जरी बंद करने व ओपीडी में भीड़ नियंत्रित करने की मांग उठाई थी। डॉ. विजय ने कहा कि कोरोना की रोकथाम में डॉक्टरों की अहम भूमिका है। यदि डॉक्टर रुटीन के काम में लगे रहेंगे और यदि वे संक्रमित हो जाते हैं तो परेशानी खड़ी हो जाएगी। पूरा विभाग बंद करने की नौबत आ सकती है। इसलिए गैर जरूरी सर्जरी को टालना जरूरी था।

बहरहाल, एम्स में प्रतिदिन औसतन 650 सर्जरी होती हैं। ऐसे में रुटीन सर्जरी टलने से मरीजों को परेशानी होना निश्चित है। इससे पहले सफदजरंग सहित कई अन्य अस्पतालों में भी रुटीन सर्जरी व ओपीडी कम कर दी गई है।

एम्स ने संस्थान के ऐसे कर्मचारियों को घर से ही काम करने का निर्देश दिया है, जो मरीजों के इलाज से सीधे तौर पर नहीं जुड़े हैं। एम्स प्रशासन ने सभी विभागाध्यक्षों को निर्देश दिया है कि वर्कशॉप, हिंदी संभाग, मीडिया प्रोटोकॉल, सहायकों, इंजीनियरिंग, लाइब्रेरी, प्रशासनिक, मेडिकल रिकॉर्ड, वित्त सहित कई विभागों के 50 फीसद कर्मचारियों व डाटा ऑपरेटर को एक सप्ताह के लिए वर्क फ्रॉम होम के लिए भेज दें। इसके अगले सप्ताह अन्य 50 फीसद कर्मचारियों को यह सुविधा दी जाएगी।

तीन दिन तक बंद रहेंगे दिल्ली के कई बाजार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रविवार को एक दिन के जनता कर्फ्यू के एलान के बाद कारोबारी संगठन कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने बड़ा कदम उठाते हुए तीन दिनों (21 से 23 मार्च) तक दिल्ली के बाजारों के बंद की घोषणा की है। यह फैसला कैट पदाधिकारियों की बैठक में लिया गया। इस घोषणा के पक्ष में दिल्ली के कई बाजारों के कारोबारी संगठन साथ आए हैं।

इसी तरह राष्ट्रीय राजधानी के कुछ बाजारों ने पांच दिनों (20 से 25 मार्च) तक बंद रखने की घोषणा की है। यह फैसला कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के मद्देनजर उठाया गया है। यह भी निर्णय लिया गया है कि इन दिनों व्यापारी अधिक से अधिक समय घर में ही रहेंगे। वैसे, इस बंदी से दवा, दूध और जनरल स्टोर की दुकानें प्रभावित नहीं होंगी।

इस बारे में कैट के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल ने बताया कि जरूरत और आवश्यक वस्तुओं की दुकानों को इस बंद से अलग रखा गया है। बाकि दुकानें इस बंद में शामिल होंगी। दिल्ली हिंदुस्तानी मर्केंटाइल एसोसिएशन (डीएचएमए) के पूर्व अध्यक्ष सुरेश बिंदल ने बताया कि 23 मार्च की शाम को व्यापारियों की बैठक में तीन दिनों के बाजार बंद व सरकार के निर्देशों की समीक्षा कर आगे बाजार बंद के मामले में निर्णय लिया जाएगा।

हमेशा गुलजार रहने वाले कनॉट प्लेस में पसरा है सन्नाटा। संजय

भागीरथ पैलेस पांच तो चांदनी चौक का कपड़ा मार्केट चार दिन रहेगा बंद : चांदनी चौक स्थित इलेक्ट्रिकल सामानों के थोक बाजार भागीरथ पैलेस के दुकानदारों ने पांच दिन (20 से 25 मार्च) तक बाजार बंद की घोषणा की है। इस बारे में दिल्ली इलेक्ट्रिकल ट्रेडर्स एसोसिएशन (डीइटीए) के अध्यक्ष भारत आहूजा ने बताया कि जिस तरह से वैश्विक महामारी को लेकर भय का माहौल उत्पन्न हुआ है, उसे देखते हुए पांच दिनों तक बाजार बंद रखने की घोषणा की गई है। हालांकि भागीरथ पैलेस की ही दवा और मेडिकल उपकरण की दुकानें इस बंद से अछूती रहेंगी।

चांदनी चौक के सभी कपड़ा दुकानदारों ने चार दिन (21 से 24 मार्च) तक दुकानें बंद रखने की घोषणा की है। इस बारे में डीएचएमए के महासचिव मुकेश सचदेवा ने कहा कि प्रधानमंत्री की पहल पर संगठन से जुड़े 100 से अधिक कपड़ा बाजार के संगठनों से विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया है। चांदनी चौक में कपड़ा के 4200 से अधिक दुकानें हैं। करोलबाग का ज्वेलर्स मार्केट चार दिन (21 से 25 मार्च) तक बंद रहेगा। वहीं, जनपथ मार्केट, लाजपत राय मार्केट व आजाद मार्केट दो दिन (21 व 22 मार्च) को बंद रहेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जनता कर्फ्यू के आह्वान पर दिल्ली में 22 मार्च को पूरे दिल्ली का व्यापार बंद रहेगा। शनिवार को गांधी नगर, कृष्णा नगर, कनॉट प्लेस, चावड़ी बाजार, नेहरू प्लेस, रोहिणी, पीतमपुरा समेत कई मार्केट एसोसिएशन ने बाजार खोलने का निर्णय लिया है। वहीं, 28 औद्योगिक क्षेत्रों में ज्यादातर फैक्ट्रियां भी खुली रहेंगी। वैसे कोरोना के मुद्दे पर दिल्ली बंद बुलाने का अधिकार केंद्र या दिल्ली सरकार के पास है, ये दिल्ली बंद की जरूरत होगी तो तुरंत निर्णय लेंगी। अभी केंद्र या दिल्ली सरकार ने तीन दिन के दिल्ली बंद का ऐलान नहीं किया है।

– बृजेश गोयल, संयोजक, चैंबर एंड ट्रेड इंडस्ट्री

इसी तरह ओल्ड लाजपत राय मार्केट, टैंक रोड मार्केट, कुचा महाजनी, चांदनी चौक मुख्य मार्ग व गांधी नगर का शांति मोहल्ला कपड़ा मार्केट तीन दिन (21 से 23 मार्च तक) बंद रहेगा। कृष्णा नगर व लक्ष्मी नगर समेत पूर्वी दिल्ली के अन्य बाजार दो दिन (22 व 23 मार्च) को बंद रहेंगे। वहीं, खान मार्केट दो दिन 22 व 23 मार्च को बंद रहेगा। इस बारे में खान मार्केट ट्रेडर्स एसोसिएशन के प्रधान संजीव मेहरा ने बताया कि 23 मार्च को निर्णय लिया जाएगा कि इस बंद को आगे बढ़ाना है कि नहीं। हालांकि, कनॉट प्लेस व सदर बाजार ने 22 मार्च को एक दिन ही बाजार बंद की घोषणा की है।

जांच में देरी के कारण छूट रही यात्रियों की फ्लाइट

बिरंचि सिंह, नई दिल्ली

इंदिरा गांधी इंटरनेशनल (आइजीआइ) एयरपोर्ट पर खाड़ी देशों से आने वालों यात्रियों की संख्या बढ़ रही है। थर्मल स्क्रीनिंग होने के कारण यात्रियों को यहां पर जांच में काफी समय लग रहा है। ऐसे में कनेक्टिंग फ्लाइट लेकर विभिन्न शहरों को जाने वाले यात्रियों की फ्लाइट छूट रही है।

देरी के कारण गुरुवार को गोरखपुर जाने वाले 15 यात्रियों को शुक्रवार सुबह नौ बजे की फ्लाइट में जगह दिलाई गई। वहीं कुछ यात्री शुक्रवार की रात आइजीआइ एयरपोर्ट पर उतरे थे। इन यात्रियों को भी इसी से जाना था। लेकिन जांच प्रक्रिया में देरी के चलते सुबह इनकी फ्लाइट छूट गई। चूंकि गोरखपुर के लिए एक ही फ्लाइट थी। ऐसे में इनके लिए गोरखपुर की बजाय लखनऊ तक दूसरी फ्लाइट उपलब्ध कराई गई।

गोरखपुर जाने वाले राजू मौर्या, अनिल, नरेंद्र, गुड्डू, बाबूराम और रामप्रवेश जैसे अन्य यात्रियों को समझौता करना पड़ा। इन यात्रियों ने बताया कि उनके पास सामान बहुत है और उन्हें अब सामान के साथ लखनऊ उतरना पड़ेगा। वहां से गोरखपुर जाने में पूरा दिन खराब हो जाएगा। अतिरिक्त पैसा भी खर्च होगा। लेकिन उनकी एक नहीं सुनी गई। कुछ ऐसी स्थिति का सामना केरल जाने वाले यात्रियों को करना पड़ा। चूंकि, केरल जाने वाले फ्लाइट की संख्या भी कम हो गई है। इसलिए इनको भी एयरपोर्ट पर रोक कर एक साथ भेजा जा रहा है। इसके चलते इन यात्रियों को लंबा इंतजार करना पड़ रहा है।

आइजीआइ एयरपोर्ट पर फ्लाइट छूटने के बाद बैठे यात्री। जागरण

इस बार नवरात्रि में डिजिटल होंगे देवी मां के दर्शन

राहुल सिंह, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के चलते राजधानी के प्रमुख मंदिर फिलहाल बंद रहेंगे। इसके चलते भक्तों को इस बार नवरात्र के दौरान मंदिरों में देवी मां के दर्शन नहीं हो पाएंगे। ऐसे में अधिकतर मंदिर प्रबंधन ने डिजिटल दर्शन की विशेष व्यवस्था की है। भक्तों को बेवसाइट, यू-ट्यूब, वाट्सएप, ट्विटर, इंस्टाग्राम व फेसबुक समेत अन्य सोशल साइट्स के जरिये दर्शन कराए जाएंगे।

दिल्ली के झंडेवालान देवी मंदिर में हर साल नवरात्र में लाखों भक्त दर्शन करने के लिए आते हैं। मंदिर प्रबंधन की ओर से विशेष व्यवस्था की जाती है, जिसमें मंदिर को भव्य रूप से सजाया जाता है। वहीं, माता रानी का विशेष रूप से श्रृंगार किया जाता रहा है। यहां मां के दर्शन के लिए दिल्ली-एनसीआर समेत अन्य स्थानों से भक्त बड़ी संख्या में पहुंचते हैं, लेकिन इस बार कोरोना वायरस के प्रकोप से बचने के लिए मंदिर प्रबंधन ने एहतियाती तौर पर मंदिर के पट बंद करने का निर्णय लिया है।

प्रबंधन कमेटी से जुड़े सुभाष मल्होत्रा का कहना है कि 21 मार्च से लेकर आगामी आदेश तक मंदिर बंद रहेंगे, जिनमें नवरात्र भी शामिल रहेंगे। इसके अलावा कोरोना का वायरस खत्म व कम होने की स्थिति में ही मंदिर के पट आम लोगों के लिए खोले जाएंगे। वहीं, मरघट वाले बाबा मंदिर को गुरुवार से बंद कर दिया गया है। इसके अलावा कालकाजी मंदिर की प्रबंधन कमेटी से जुड़े सुरेंद्र नाथ अवधूत का कहना है कि मंदिर के पट बंद करने पर अभी फैसला नहीं लिया गया, लेकिन संक्रमण से बचने के लिए लगातार मंदिर को सैनिटाइज कराया जा रहा है। फिलहाल भक्तों के हाथों को सैनिटाइज करने के बाद ही उन्हें मंदिर में प्रवेश दिया जा रहा है।

दिल्ली में मॉल और तीनों हाट भी बंद

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए दिल्ली सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। दिल्ली में सभी शॉपिंग मॉल को शुक्रवार को तत्काल प्रभाव से बंद कर दिया है। सीएम अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी। कहा कि इस दौरान मॉल में सब्जी, मेडिकल स्टोर और किराना की दुकानें खुलीं रहेंगी। ऐसे में किसी भी व्यक्ति को दहशत में आने की जरूरत नहीं है। सामान स्टोर करने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।

उधर, एक अन्य आदेश में केजरीवाल सरकार ने दिल्ली के तीनों हाट यानी आइएनए, जनकपुरी और पीतमपुरा को बंद कर दिया है। इसके अलावा दिल्ली में पर्यटन के लिए चलने वाली हो-हो बस सेवा भी बंद कर दी गई है। इन सभी को 31 मार्च तक के लिए बंद किया गया है। इसकी जानकारी उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने ट्वीट कर दी। सिसोदिया ने बताया कि सुरक्षा कारणों से इन सभी को बंद करने का फैसला किया गया है।

योजना

दिल्ली में दो हेरिटेज पार्क बनाएगा दिल्ली विकास प्राधिकरण, बुराड़ी में 50 जबकि नेहरू प्लेस में 20 एकड़ में होगा तैयार

हरियाली के बीच दिखेगी कला-संस्कृति की झलक

संजीव गुप्ता, नई दिल्ली

दिल्ली में जल्द ही दो हेरिटेज पार्क तैयार किए जाएंगे। ये ऐसे पार्क होंगे जहां हरियाली के साथ-साथ देश के इतिहास, बौद्ध धर्म और राजधानी की सांस्कृतिक विविधता की भी झलक मिलेगी। बुराड़ी और नेहरू प्लेस में बनने वाले ये दोनों पार्क दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) तैयार करेगा। एक पार्क भारतीय इतिहास की जानकारी देगा तो दूसरे पार्क में भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का ज्ञान मिलेगा। इसी माह डीडीए इन पार्कों के लिए कंसलटेंट नियुक्त करने के लिए टेंडर भी जारी कर देगा। कंसलटेंट की प्राथमिक रिपोर्ट आते ही पार्क विकसित करने का काम शुरू हो जाएगा। दोनों पार्क तीन साल में तैयार हो जाने की संभावना है।

जानकारी के मुताबिक बुराड़ी में यह पार्क कोरोनेशन पिलर के पास हरित क्षेत्र की 50 एकड़, जबकि नेहरू प्लेस में आस्था कुंज के पास 20 एकड़ जगह पर विकसित किया जाएगा। इन पार्कों में दिल्ली की कला, हस्तशिल्प, वास्तुकला, संस्कृति, संगीत और खानपान भी मिलेगा। पार्क तैयार करने के लिए दोनों जगहों की इकोलॉजी का भी अध्ययन किया जाएगा, जिसमें वहां की मिट्टी और जलवायु जांची जा सके। इस जांच के अनुसार ही पौधारोपण का काम होगा। पार्क में लगने वाले सभी पौधे स्थानीय प्रजाति के होंगे ताकि वहां देशी-विदेशी पक्षी भी आ सकें।

अधिकारियों के मुताबिक इन पार्कों की डिजाइनिंग में वॉक-वे, पार्किंग, लाइटिंग और कनेक्टिविटी का भी ख्याल रखा जाएगा। अगर इन पार्कों के आसपास कोई ट्रांजिट कॉरिडोर हुआ तो इन्हें उनके साथ जोड़ दिया जाएगा। पार्क में आने वाले लोगों को बाहर का ध्वनि प्रदूषण नहीं झेलना पड़े, इसके लिए नॉइज बैरियर का इस्तेमाल भी किया जाएगा। समीपवर्ती मेट्रो स्टेशन और बस स्टॉप से लोग आसानी से यहां पैदल भ्रमण करते हुए पहुंच सकें, इसके लिए पैदल पारपथ भी बनाया जाएगा। डीडीए के मुताबिक, इन दोनों पार्कों में सिंचाई के लिए सीवर के शोधित पानी का इस्तेमाल किया जाएगा। इसके लिए जल बोर्ड के साथ मिलकर काम किया जाएगा। पार्कों में वर्षा जल संचयन की भी व्यवस्था रहेगी, जिससे भूजल स्तर में काफी सुधार हो सके। खाने के लिए यहां दिल्ली ही नहीं, अन्य राज्यों के फूड स्टॉल भी होंगे। हस्तशिल्पियों को भी यहां अपने हस्तशिल्प प्रदर्शित करने और बेचने की जगह दी जाएगी।

यह दोनों हेरिटेज पार्क दिल्ली के नए पर्यटक स्थल होंगे। सप्ताह भर में कंसलटेंट नियुक्ति के लिए टेंडर निकाल दिया जाएगा। कंसलटेंट की प्राथमिक रिपोर्ट आते ही पार्कों का काम शुरू हो जाएगा।

-तरुण कपूर, उपाध्यक्ष, डीडीए

करीब दो दशक में दोगुना हुआ दिल्ली का हरित क्षेत्र : दिल्ली में हरित क्षेत्र 2001 के बाद दोगुना हो गया है। वन विभाग की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2001 में यह 151 वर्ग किलोमीटर था जो 2019 में बढ़कर 324.4 वर्ग किलोमीटर हो गया। अब राजधानी का कुल वन एवं हरित क्षेत्र 21.9 फीसद हो गया है। दिल्ली सरकार ने 2025 तक इसे 25 फीसद तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली में ट्री कवर 2017 में 113 वर्ग किलोमीटर था जो 2019 में 129 वर्ग किलोमीटर हो गया है। इसी तरह वन क्षेत्र भी 192.41 वर्ग किलोमीटर से बढ़कर 195.44 वर्ग किलोमीटर हो गया है। दक्षिणी दिल्ली में सर्वाधिक 1.28 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र है। दूसरे नंबर पर 1.09 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र के साथ दक्षिणी पश्चिमी दिल्ली है। वन विभाग के मुताबिक हरित क्षेत्र को 25 फीसद तक बढ़ाने के लिए दिल्ली को 6500 हेक्टेयर जमीन की जरूरत है।

जोर पकड़ने लगी गर्मी, 31 डिग्री पार हुआ पारा

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

पश्चिमी विक्षोभ के कारण मौसम में उतार-चढ़ाव के बीच दिल्ली में गर्मी जोर पकड़ने लगी है। शुक्रवार को अधिकतम तापमान 31 डिग्री सेल्सियस पार कर गया। हालांकि गुरुवार रात कई जगह हल्की बरसात हुई और शनिवार को भी बारिश की संभावना है। लेकिन इससे तापमान में गिरावट आने के कोई आसार नहीं हैं।

शुक्रवार को दिल्ली का अधिकतम पारा सामान्य से एक डिग्री अधिक 31.4 डिग्री सेल्सियस, जबकि न्यूनतम तापमान सामान्य स्तर पर 16.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हवा में नमी का स्तर 53 से 96 फीसद रहा।

मौसम विभाग के मुताबिक पश्चिमी विक्षोभ के असर से शनिवार को आंशिक तौर पर बादल छाए रहेंगे। गर्जन वाले बादल बनने और हल्की बारिश होने की भी संभावना है। शाम और रात के समय 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से धूल भरी हवा भी चल सकती है। लेकिन इस सबके बावजूद अधिकतम पारा 31 और न्यूनतम पारा 17 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार हैं।

स्काईमेट वेदर के मुख्य मौसम विज्ञानी महेश पलावत ने बताया कि अभी अगले दो-तीन दिन अधिकतम पारा 31 से 32, जबकि न्यूनतम पारा 17 से 18 डिग्री सेल्सियस तक रहेगा। इसके बाद 24 और 25 मार्च को एक मजबूत पश्चिमी विक्षोभ के चलते फिर से दिल्ली में तेज हवा के साथ बारिश होगी। इस दौरान पारे में आंशिक कमी आ सकती है। इसके बाद तापमान में लगातार इजाफा होगा।

बेरोजगारी के आकलन के लिए जेपीसी गठन की मांग

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : राज्यसभा में सदस्यों ने बेरोजगारी को लेकर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के गठन के प्रस्ताव का समर्थन किया। माकपा सदस्य बिनॉय बिस्वम ने प्रस्ताव पेश करते हुए सरकार से देश में बेरोजगारी की स्थिति के आकलन तथा समग्र रिपोर्ट तैयार करने के लिए जेपीसी के गठन का अनुरोध किया था। बेरोजगारी की मौजूदा स्थिति का सही आकलन किए जाने की जरूरत बताते हुए बिस्वम ने कहा कि सरकारी आंकड़े केवल 6.1 फीसद बेरोजगारी का दावा करते हैं। दूसरी तरफ थिंक टैंक सीएमआइइ के अनुसार, देश में 13.2 फीसद लोग बेरोजगार हैं। इसे देखते हुए सरकार को पढ़े-लिखे नागरिकों के बीच बेरोजगारी की वर्तमान स्थिति पर एक समग्र रिपोर्ट पेश करनी चाहिए।

प्रस्ताव में सरकार को सुझाव दिया गया है कि उसे इस मसले का संपूर्ण अध्ययन एवं विवेचना करने तथा रोजगार गारंटी अधिनियम की रूपरेखा तैयार करने के लिए संयुक्त संसदीय समिति के गठन का निर्णय लेना चाहिए। उन्होंने अधिनियम का नाम शहीद भगत सिंह राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम रखे जाने की इच्छा जताई।

प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कांग्रेस सदस्य कुमार केतकर ने कहा कि इस पर तत्काल ध्यान दिए जाने की जरूरत है, क्योंकि बेरोजगारी कभी भी फूटने वाला बम है। बेरोजगारी का मुद्दा अर्थव्यवस्था का मसला नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक विकास और संस्कृति से जुड़ा मसला है। उन्होंने सदन का ध्यान 1930-1950 के उस दौर की ओर दिलाया जिसका फिल्मांकन 'गॉडफादर' फिल्म में किया गया है। तब अपराध जगत के लोग बेरोजगार युवाओं को प्रलोभन देकर अपने गैंग में शामिल करते थे।

उन्होंने सूखे के दौर में महाराष्ट्र में चलाई गई रोजगार गारंटी स्कीम का जिक्र भी किया, जिसे बाद में संप्रग सरकार ने पूरे देश में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के रूप में लागू किया। उन्होंने बेरोजगारों को उत्पादक कार्यों में लगाने की जरूरत बताई।भाजपा सदस्य सत्यनारायण जटिया ने कहा, 'हमारे पास सीमित संसाधन हैं। चूंकि मांग करना आसान है। इसलिए आपको ये महत्वपूर्ण लग रहा है।'

लीज के जरिये भी कम कीमत पर पूरी होंगी सेना की जरूरतें

अहम बदलाव ▶ सरकार ने रक्षा खरीद प्रक्रिया में एक नई श्रेणी जोड़ी

'मेक इन इंडिया' की पहल को बढ़ावा देने के लिए भी किए गए कई उपाय

राजनाथ सिंह फाइल फोटो

वैश्विक मंदी का भारतीय रक्षा खरीद पर असर नहीं : राजनाथ

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि वैश्विक मंदी का दुनिया के हर देश पर तो असर पड़ा है, लेकिन देश के रक्षा खरीद पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि दो से पांच महीने के भीतर वैश्विक अर्थव्यवस्था में सुधार की संभावनाओं से इन्कार भी नहीं किया जा सकता है।

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत अब अपनी सेनाओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी मित्र देश से युद्धपोत से लेकर परिवहन विमानों को कम कीमत पर लीज पर हासिल कर सकेगा। सरकार ने रक्षा खरीद प्रक्रिया (डीपीपी) 2020 का ड्राफ्ट जारी किया है, जिसमें मौजूदा 'खरीद एवं निर्माण' श्रेणी के अतिरिक्त रक्षा खरीद के लिए लीज श्रेणी का प्रावधान किया गया है।

सरकार की तरफ से जारी बयान में यह भी कहा गया है कि 'मेक इन इंडिया' की पहल को समर्थन करने के लिए विभिन्न खरीद श्रेणियों में निर्धारित स्वदेशी सामग्रियों को बढ़ाया गया है। भारतीय उद्योग की व्यापक भागीदारी और मजबूत रक्षा औद्योगिक ढांचे के विकास को सुगम बनाने के लिए डीपीपी 2020 में स्वदेशी कच्चे माल, विशेष मिश्रित धातु व सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल को प्रोत्साहित किया गया है।

इसके अलावा, इस मसौदे में एक हजार करोड़ रुपये से अधिक और पांच साल से ज्यादा अवधि में सप्लाई किए जाने वाले ठेके में 'मूल्य भिन्नता खंड' को जोड़ा गया है।

लीजिंग को समय-समय पर किराया भुगतान के लिए बड़ी प्रारंभिक पूंजी व्यय के विकल्प के तौर मौजूदा 'खरीद एवं निर्माण' श्रेणी के अतिरिक्त एक नई श्रेणी के रूप में पेश किया गया है। स्वदेशी और विदेशी दो श्रेणियों में लीजिंग की अनुमति दी गई है। स्वदेशी श्रेणी में लीज देने वाले कंपनी का मालिक भारतीय होना चाहिए। मसौदे को 17 अप्रैल तक सार्वजनिक चर्चा और सलाह-मशविरे के लिए रखा गया है और उसके बाद इसे अंतिम रूप दिया जाएगा। आखिरी बार डीपीपी में 2016 में बदलाव किया गया था।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि उन्होंने मौजूदा डीपीपी-2016 में बदलाव के लिए अगस्त, 2019 में एक पुनरीक्षण समिति का गठन किया था। डीपीपी के नए मसौदे में रक्षा ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रिया को सरल बनाया गया है।

सीआइएसएफ के 1,018 नए पदों को गृह मंत्रालय ने दी हरी झंडी

नई दिल्ली, प्रेट्र : गृह मंत्रालय ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल सीआइएसएफ की क्षमता में इजाफा करते हुए 1,000 से ज्यादा नए पदों के सृजन को हरी झंडी दे दी है। सीआइएसएफ के पास फिलहाल हवाईअड्डे, परमाणु केंद्र, महत्वपूर्ण सरकारी भवन व मेट्रो नेटवर्क आदि की सुरक्षा की जिम्मेदारी है। उसके विशेष सुरक्षा समूह (एसएसजी) के कमांडो वीवीआइपी की भी सुरक्षा करते हैं।

अधिकारियों ने शुक्रवार को बताया, गृह मंत्रालय ने पहले 899 और बाद में 119 पदों के सृजन का अनुमोदन किया है। कांस्टेबल (सिपाही) से लेकर निरीक्षक (दरोगा) स्तर तक के लिए सृजित इन पदों के आधार पर अगले दो वर्षों में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआइएसएफ) की एक और बटालियन (1,000 जवान) का गठन हो सकेगा। फिलहाल सीआइएसएफ की क्षमता 1.8 लाख जवानों की है। सरकार पहले ही यह साफ कर चुकी है कि वह देश के नागरिक हवाईअड्डों के साथ-साथ गणमान्य नागरिकों (वीवीआइपी) की सुरक्षा में सीआइएसएफ की जिम्मेदारी में इजाफा करने जा रही है। उसकी क्षमता वृद्धि इसी क्रम में की गई है। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआइएसएफ) फिलहाल देश के 60 हवाईअड्डों की सुरक्षा करता है। बल के जवान हर समय मुस्तैद रहते हैं।

राफेल पर भी पड़ सकता है कोरोना संकट का साया

- विमानों की पहली खेप तो मई में आएगी लेकिन बाद में हो सकता है विलंब
- वायुसेना को उम्मीद, भारत में राफेल की आपूर्ति पर नहीं पड़ेगा कोई असर

प्रतीकात्मक फोटो

नई दिल्ली, एएनआइ : कोरोना वायरस का असर भारत को मिलने वाले राफेल लड़ाकू विमानों पर भी पड़ सकता है। फ्रांस सरकार के निर्देश पर राफेल बनाने वाली कंपनी डसाल्ट एविएशन ने 31 मार्च तक अपना कामकाज बंद कर दिया है। फ्रांस भी कोरोना वायरस से उपजी महामारी से ग्रस्त देश है। वहां पर बड़ी संख्या में लोग मारे जा चुके हैं। प्रकोप और गंभीर रूप न ले, इसके लिए सरकार बचाव में कई तरह के कदम उठा रही है।

भारतीय वायुसेना ने डसाल्ट एविएशन में काम रुकने का भारत में राफेल की आपूर्ति पर कोई असर न पड़ने की संभावना जताई है। लड़ाकू विमानों की पहली खेप इसी साल मई में आनी है। लेकिन डसाल्ट में कामबंदी अगर आगे बढ़ी तो जाहिर तौर पर भारत को भविष्य में होने वाली आपूर्ति प्रभावित होगी। अभी यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि भारतीय वायुसेना के जिन कर्मियों को फ्रांस के छह स्थानों पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है, वह जारी है या उसमें भी कुछ व्यवधान पड़ गया है। वायुसेना सूत्रों के अनुसार कंपनी पांच लड़ाकू विमान भारत को सौंप चुकी है, इन्हीं से फ्रांस में भारतीय वायुसेना के पायलट प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। मई में इन्हीं विमानों को भारत लाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि भारत और फ्रांस की सरकारों के बीच 36 राफेल विमानों की खरीद का 2016 में समझौता हुआ था। इसी के तहत मई से आपूर्ति शुरू होनी है। इस सौदे में भारत को बिना निशाना साधे ही हवा से हवा में मार करने वाली घातक मेटेअर मिसाइल और लंबी दूरी की स्काल्प गाइडेड मिसाइल भी मिलेंगी। स्काल्प मिसाइल हवा से जमीन पर मार करने में सक्षम है। दोनों मिसाइलें राफेल विमान में फिट होंगी। इन दोनों मिसाइलों फिट होने से राफेल विमान की मारक क्षमता बढ़ जाती है।

पांच आइआइआइटी को मिलेगा राष्ट्रीय महत्व के संस्थान का दर्जा

- आइआइआइटी (संशोधन) विधेयक लोकसभा में पारित
- इन संस्थानों को बीटेक, एमटेक और पीएचडी की डिग्री देने का मिलेगा अधिकार

नई दिल्ली, एएनआइ : लोकसभा ने शुक्रवार को आइआइआइटी (संशोधन) विधेयक पारित कर दिया। मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने विधेयक को सदन के पटल पर रखा। संशोधन विधेयक में पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मोड में सूरत, भोपाल, भागलपुर, अगरतला और रायचुर में बनने वाले पांच इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (आइआइआइटी) और 15 मौजूदा आइआइआइटी को राष्ट्रीय महत्व के संस्थान (आइएनआइ) का दर्जा देने का प्रावधान किया गया है।

सदन में विधेयक पर चर्चा के दौरान केंद्रीय मंत्री निशंक ने कहा कि पहली बार केंद्र, राज्य और उद्योग की प्रतिभागिता से छात्रों को प्रशिक्षित करने का खूबसूरत मॉडल तैयार किया गया है। कुछ संस्थानों में 100 फीसद प्लेसमेंट के साथ सभी आइआइआइटी में औसतन 70 फीसद प्लेसमेंट हुआ है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से संस्थानों की अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

2015 में दुनिया की टॉप 1000 यूनिवर्सिटी में भारत के पांच संस्थान थे। अब इनकी संख्या बढ़कर 48 हो गई है। अब संस्थान टॉप 100 और टॉप 50 में भी स्थान बना रहे हैं और शोध का कार्य बढ़ रहा है।

उन्होंने बताया कि इनका पाठ्यक्रम उद्योग जगत से परामर्श के आधार पर तैयार किया गया है। इस विधेयक में पीपीपी मोड पर तैयार मौजूदा 15 आइआइआइटी और पांच बाकी आइआइआइटी को डिग्री प्रदान करने का अधिकार देते हुए आइएनआइ का दर्जा देने का प्रावधान है। इन सभी आइआइआइटी को अन्य यूनिवर्सिटी की तरह ही बीटेक, एमटेक और पीएचडी की डिग्री देने का अधिकार होगा। इस विधेयक के तहत 2014 व 2017 के प्रिंसिपल एक्ट में संशोधन करने तथा पांचों संस्थानों को वैधानिक दर्जा दिए जाने का भी प्रावधान है। अभी ये संस्थान सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के तहत रजिस्टर्ड सोसायटी की तरह काम कर रहे हैं।

अब इन पांचों आइआइआइटी को आइआइआइटी (पीपीपी) एक्ट, 2017 में शामिल कर लिया जाएगा। पीपीपी मोड में बने 15 अन्य आइआइआइटी को पहले ही इस कानून के अंतर्गत शामिल किया जा चुका है। पीपीपी मोड के तहत 20 आइआइआइटी के गठन के प्रस्ताव को नवंबर, 2010 में केंद्रीय कैबिनेट की मंजूरी मिली थी।

राहुल पर टिप्पणी से झारखंड विस में हंगामा, हाथापाई की नौबत

राज्य ब्यूरो, रांची

- कांग्रेस व झामुमो विधायकों ने सीपी सिंह की बर्खास्तगी की मांग की
- इरफान अंसारी की टिप्पणी पर भाजपा विधायक हुए नाराज

झारखंड विधानसभा में सत्ता-पक्ष व विपक्ष के बीच तीखी नोक-झोंक को लेकर हंगामा व नारेबाजी तो आम है, लेकिन शुक्रवार को सदन में सत्ता पक्ष व विपक्ष के सदस्यों के बीच हाथापाई की नौबत आ गई। सत्ता पक्ष के विधायक जहां सीपी सिंह द्वारा राहुल गांधी को आपत्तिजनक रूप से संबोधित करने पर भड़क उठे, वहीं, भाजपा विधायकों ने इरफान अंसारी की भानुप्रताप शाही के बारे में की गई एक टिप्पणी को आधार बना हंगामा काटा। हालांकि, वरिष्ठ सदस्यों के हस्तक्षेप से सदन में मारपीट जैसी घटना नहीं हुई। हंगामे का परिणाम यह रहा कि पहली पाली में प्रश्नकाल नहीं चल सका। वहीं सदन की कार्यवाही दो बार स्थगित करनी पड़ी।

पहली लाइन पर ही हो गया हंगामा : भाजपा विधायक और पूर्व मंत्री ने चर्चा के दौरान सूचना के तहत अपनी बात रखने की अनुमति मांगी। सीपी सिंह ने कहा कि 16 मार्च को राहुल गांधी उर्फ ....। इतना कहते ही कांग्रेस विधायक अपने स्थान पर खड़े हो गए और हंगामा करते हुए वेल में आ गए। संसदीय कार्यमंत्री आलमगीर आलम ने भी आपत्ति दर्ज कराई। कांग्रेस विधायक सीपी सिंह से माफी मांगने की मांग करने लगे। कांग्रेस विधायकों का हंगामा देख भाजपा विधायकों ने भी शोर मचाना शुरू कर दिया।

दोनों पक्ष के विधायकों ने समेटी बांहें : इस बीच वेल से अपनी सीट पर जाने के क्रम में कांग्रेस विधायक इरफान अंसारी ने कुछ ऐसा कहा कि भाजपा विधायक भानु प्रताप शाही उखड़ गए। भाजपा विधायकों का आरोप था कि इरफान अंसारी ने गाली दी है। इसे लेकर भाजपा विधायक वेल में उतर आए, इधर कांग्रेस विधायक भी वेल में आ गए और माहौल अचानक गर्म हो उठा।

संसद से केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक पारित

नई दिल्ली, एएनआइ : संसद ने केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक को पारित कर दिया। राज्यसभा से लौटाए गए विधेयक को लोकसभा ने ध्वनिमत से पारित किया। लोकसभा ने पिछले वर्ष 12 दिसंबर को इस विधेयक को पारित कर दिया था। राज्यसभा ने 16 मार्च को कुछ संशोधनों के साथ इसे पारित किया। लोकसभा ने शुक्रवार को राज्यसभा के उन संशोधनों पर मुहर लगा दी। विधेयक में तीन डीम्ड विश्वविद्यालयों संस्कृत-राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति को केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में उन्नत करने की मांग की गई है।

उधर, मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राज्यों को कोरोना वायरस के कारण स्कूल बंद रहने तक मिड डे मील या खाद्य सुरक्षा भत्ता मुहैया कराने की सलाह दी है। राज्यों को भेजे गए पत्र में मंत्रालय ने कहा है, 'राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को स्कूलों के बंद रहने तक तैयार मिड डे मील या खाद्य सुरक्षा भत्ता, दोनों में से जो भी संभव हो मुहैया कराने की सलाह दी जा रही है।'

साढ़े नौ एकड़ में बनेगी संसद की नई इमारत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- सेंट्रल विस्टा के सीएलयू के मसौदे पर केंद्र सरकार की मुहर
- संसद भवन से लेकर कॉमन केंद्रीय सचिवालय के प्रस्ताव मंजूर

संसद की प्रस्तावित नई इमारत और कॉमन केंद्रीय सचिवालय के निर्माण के लिए केंद्र सरकार की ओर से आवश्यक भूमि संबंधी मंजूरी शुक्रवार को मिल गई। संसद भवन की नई इमारत के लिए साढ़े नौ एकड़ भूमि की जरूरत है जिसको चिन्हित करते हुए भूमि संबंधी बदलावों (सीएलयू) के प्रस्ताव को पास कर दिया गया। इसके साथ ही सेंट्रल विस्टा की प्रस्तावित परियोजनाएं तेजी से चालू हो जाएंगी।

दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) के सीएलयू के लिए भेजे गए प्रस्ताव में मौजूदा हरित क्षेत्र को बरकरार रखने का प्रावधान किया गया है। सेंट्रल विस्टा की प्रमुख इमारतें राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, नार्थ व साउथ ब्लॉक, इंडिया गेट, नेशनल आर्काइव्स का निर्माण 1931 से पहले का है। केंद्रीय सचिवालय के लिए विभिन्न मंत्रालयों की इमारतों का निर्माण जरूरत के हिसाब से खाली भूखंडों पर बेतरतीब तरीके से किया गया है। संसद भवन की इमारत 1927 में बनी है जिसे अब हेरिटेज बिल्डिंग घोषित किया जाएगा। मौजूदा भवन में जगह कम होने की वजह से संसदीय जरूरतें पूरी नहीं हो पा रही हैं।

केंद्र के विभिन्न मंत्रालयों के विभाग अलग-अलग जगहों पर हैं, जहां अंतर विभागीय कार्यों के लिए दौड़ना पड़ता है। बेतरतीब इमारतों व निर्माण के चलते सेंट्रल विस्टा का स्वरूप बिगड़ गया है। प्रस्तावित कॉमन सेंट्रल सचिवालय की इमारतें एक साथ बनाई जाएंगी जो सभी आधुनिकतम सुविधाओं से लैस होंगी। इससे कर्मचारियों की उत्पादकता में बढ़ोतरी होगी। राजपथ की सुंदरता को और बढ़ाने के लिए हरित पट्टी और पानी की कृत्रिम नहरों को और सुंदर बनाया जाएगा।

संसद की नई इमारत मौजूदा संसद भवन के सामने की साढ़े नौ एकड़ भूमि में बनेगी। इसकी चौहद्दी के उत्तरी छोर पर रेडक्रास रोड, दक्षिण में रायसीना रोड और पश्चिम में संसद भवन होगा। दूसरा भूखंड मौजूदा शास्त्री भवन का है जहां 5.88 एकड़ में कार्यालय बनेगा। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की 22.82 एकड़ की जमीन पर नया सरकारी भवन निर्मित होगा।

राणा कपूर को विशेष अदालत ने न्यायिक हिरासत में भेजा

- इससे पहले ईडी की हिरासत में थे यस बैंक के सह संस्थापक कपूर
- उनके वकील ने जेल में कोरोना के संक्रमण का अंदेशा जताया

मुंबई, एजेंसियां : प्रवर्तन निदेशालय की विशेष अदालत ने मनी लांड्रिंग के एक मामले में गिरफ्तार यस बैंक के सह संस्थापक राणा कपूर को दो अप्रैल तक के लिए न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। इससे पहले विशेष अदालत ने 16 मार्च को पांच दिनों के लिए कपूर को प्रवर्तन निदेशालय की हिरासत में भेजा था।

कपूर को पांच दिन की हिरासत खत्म होने पर विशेष अदालत में पेश किया गया। यस बैंक के सह संस्थापक को जांच एजेंसी ने सात मार्च को गिरफ्तार किया था। निदेशालय ने मौखिक रूप से अदालत में यस बैंक और डीएचएफएल की कथित वित्तीय अनियमितताओं का विवरण दिया।

इस बीच, उनके वकील ने अदालत को बताया कि कपूर अतिसंवेदनशील व्यक्ति हैं और जेल में उन्हें कोरोना वायरस का संक्रमण हो सकता है। कपूर की पूर्व हिरासत खत्म होने के बाद उनको शुक्रवार को अदालत के सामने पेश किया गया। अदालत ने जब उनसे पूछा कि आपको कोई शिकायत तो नहीं है, इस पर उन्होंने कहा कि उन्हें छह-सात सालों से अस्थमा है, उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम है और वे बहुत ज्यादा डिप्रेशन में हैं।

जेट एयरवेज के संस्थापक नरेश गोयल पत्नी अनीता गोयल के साथ शुक्रवार को यस बैंक मामले में मुंबई स्थित प्रर्वतन निदेशालय के दफ्तर में पेश हुए। प्रेट्र

इसके बाद उनके वकील ने कहा कि कम प्रतिरोधक क्षमता वाला व्यक्ति होने के चलते उनको कोरोना का संक्रमण होने का खतरा ज्यादा है। उन्होंने कहा कि यह संक्रमण काफी तेजी से फैल रहा है और यह काफी अनिश्चित स्थिति है। यदि उनको जेल भेजा जाता है, तो उनके लिए गंभीर मामला हो सकता है। उनके वकील ने कपूर को एक बड़े सेल में रखने का अनुरोध किया।

भाजपा सदस्य की टिप्पणी के कारण रास की कार्यवाही स्थगित

- रोजगार पर बहस के दौरान 'स्टैटिकल शाहीन बाग' कहने का विपक्षी सदस्यों ने किया पुरजोर विरोध

नई दिल्ली, प्रेट्र : सत्ताधारी भाजपा सदस्य की एक टिप्पणी के कारण शुक्रवार को राज्यसभा की कार्यवाही को स्थगित करनी पड़ा। भाजपा सदस्य ने कहा कि कुछ विपक्षी पार्टियां 'स्टैटिकल शाहीन बाग' की तरह रोजगार पर तुलना से परे आंकड़े का इस्तेमाल कर रहे हैं। उनके ऐसा कहने पर विपक्षी सदस्यों ने हंगामा शुरू कर दिया।

देश में रोजगार की स्थिति पर चर्चा में भाग लेते हुए भाजपा सदस्य जीवीएल नरसिम्हा राव ने कहा कि कुछ विपक्षी पार्टियां एनएसओ के लीक आंकड़े का इस्तेमाल कर रहे हैं। देश की बेरोजगारी दर 45 वर्षों के निम्नतम स्तर तक गिर गया है बताने के लिए वे ऐसा करते हैं। भाजपा सदस्य के मुताबिक, देश की बेरोजगारी की हालत पर वर्तमान आंकड़े और पूर्व के आंकड़े की तुलना नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि विपक्षी अलाप रहे हैं क्योंकि यह उन्हें हेडलाइन में लाता है।

नरसिम्हा ने कहा, 'यह स्टैटिकल शाहीन बाग है।' उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्षी पार्टियां राजनीतिक दुष्प्रचार के रूप में इस्तेमाल कर रही हैं और देश की जनता को गुमराह कर रही हैं।

जैसे ही उन्होंने स्टैटिकल शाहीन बाग कहा राजद सदस्य मनोज कुमार झा ने

जीवीएल नरसिम्हा राव फाइल फोटो

प्वाइंट ऑफ आर्डर उठाया। विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच तकरार शुरू हो जाने के बीच केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने एक टिप्पणी की। सदन में हो रहे शोर के कारण उनकी आवाज सुनी नहीं जा सकी।

तुरंत ही कांग्रेस, आम आदमी पार्टी (आप) और राजद के सदस्य नारे लगाते हुए सदन के वेल में पहुंच गए। बार-बार शांत करने के प्रयास नाकाम होने के बाद आसन ने पूरे दिन के लिए कार्यवाही स्थगित कर दी।

स्थापना

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को आज सौंपा जाएगा वैकल्पिक गर्भगृह, श्रीराम जन्मभूमि परिसर में होने वाला अनुष्ठान टला

25 को वैकल्पिक गर्भगृह में विराजेंगे रामलला

जागरण संवाददाता, अयोध्या

रामलला का वैकल्पिक गर्भगृह शनिवार को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को सौंप दिया जाएगा। 25 मार्च को तड़के इसी गर्भगृह में रामलला की स्थापना की जानी है। इस बीच शुक्रवार से इसके लिए शुरू होने वाला अनुष्ठान कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण के कारण टाल दिया गया है। संशोधित कार्यक्रम के अनुसार अब यह अनुष्ठान 22 मार्च यानी रविवार से शुरू होगा। अनुष्ठान में काशी के विशेषज्ञ आचार्यों सहित 22 वैदिक आचार्य शामिल होंगे। दो दिन तक सतत अनुष्ठान के बाद रामलला को वैकल्पिक गर्भगृह में स्थापित किया जाएगा।

दिया जा रहा अंतिम रूप : श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने वैकल्पिक गर्भगृह शुक्रवार को ही हस्तांतरित करने की मांग की थी, लेकिन यह नहीं हो पाया। माना जा रहा है कि कोरोना से बचाव की मुहिम में ध्यान बंट जाने से वैकल्पिक गर्भगृह तैयार करने में कुछ शिथिलता आयी है। जिलाधिकारी अनुज कुमार झा ने बताया कि वैकल्पिक गर्भगृह को अंतिम रूप दिया जा रहा है और शनिवार को गर्भगृह तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को हस्तगत कर दिया जाएगा।

कोरोना से बचाव के आह्वान का होगा सम्मान : श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कोरोना से बचाव का जो आह्वान किया है, उसका पूरा सम्मान होगा। उन्होंने कहा, समाज जब सुरक्षित रहेगा, तभी राष्ट्र और उसको संचालित करने वाली संस्थाएं मठ-मंदिर, मेले और परंपराएं भी बचेंगी। नृत्यगोपाल दास ने स्वयं सुरक्षित रहने और भीड़ से बचने का भी सुझाव दिया। विहिप प्रवक्ता शरद शर्मा के हवाले से जारी बयान में महंत नृत्यगोपाल दास ने कहा, संकट की इस घड़ी में शासन-प्रशासन जो भी निर्देश देगा, उसका पालन करना हमारा कर्तव्य है।

प्रतीकात्मक फोटो

टल सकता है मुख्यमंत्री का कार्यक्रम

कोरोना के संक्रमण की आशंका को ध्यान में रखकर वैकल्पिक गर्भगृह में रामलला को पहुंचाने के उत्सव से भीड़ को अलग रखने का प्रबंध किया जा रहा है। इसलिए रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व शुरू होने वाला आयोजन भी टाल दिया गया है। आयोजन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भी शामिल होना था, लेकिन उनका कार्यक्रम भी टलने की आशंका है।

15 अप्रैल के बाद होगा अयोध्या में भूमि पूजन

संजय कुमार, रांची : अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर बनाने के लिए भूमि पूजन 15 अप्रैल के बाद होगा। तब तक झारखंड सहित सभी राज्यों की पवित्र नदियों का जल एवं तीर्थ स्थलों की मिट्टी संग्रह कर उसे राज्य के प्रांत कार्यालयों में जमा करना है, जिसे अयोध्या भेजा जाएगा। इसके बाद वहां भूमि पूजन का कार्यक्रम रखा जाएगा। वैसे तिथि की घोषणा 4 अप्रैल को अयोध्या में होने वाली ट्रस्ट की बैठक में लिया जाएगा। सूत्रों के अनुसार यह तिथि 30 अप्रैल हो सकती है। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय महामंत्री मिलिंद परांडे ने पत्र जारी कर नदियों का जल एवं तीर्थ स्थलों की मिट्टी संग्रह करने का कार्यक्रम 15 अप्रैल तक पूरा कर लेने को कहा है। इसमें सभी नदियों का जल 100 मिलीलीटर एवं सभी तीर्थ स्थलों की मिट्टी 100 ग्राम संग्रह करना है। विहिप ने कार्यकर्ताओं से आग्रह किया है कि कोरोना से बचाव के लिए नववर्ष पर रामोत्सव में रथयात्रा/शोभायात्रा, सभा इत्यादि बड़े कार्यक्रम नहीं करें।

कह के रहेंगे माधव जोशी

... मतलब अल्पमत पॉजिटिव निकला और वे सेल्फ क्वारंटाइन में चले गए!

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बोले, अंतत : न्याय हुआ

प्रतिक्रिया ▶ निर्भया के गुनहगारों को फांसी पर कई नेताओं ने जताया संतोष, ज्यादातर ने कानूनी खामियों को दूर करने की जरूरत बताई

नई दिल्ली, प्रेट्र

निर्भया मामले में चार दोषियों को फांसी पर लटकाये जाने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व केंद्रीय मंत्रियों समेत विभिन्न दलों के नेताओं ने न्याय होने की बात कहते हुए इसका स्वागत किया है।

प्रधानमंत्री ने अपने ट्वीट में निर्भया नाम का जिक्र किये बिना कहा कि न्याय हुआ। महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा को सुनिश्चित करना बहुत आवश्यक है। हमारी नारी शक्ति ने हर क्षेत्र में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। हम लोगों को एक ऐसा देश बनाना है जहां नारी सशक्तिकरण, समानता और समान अवसर पर जोर रहे।

अपराधियों के लिए कड़ा संदेश : स्मृति ईरानी: महिला एवं बाल कल्याण मंत्री स्मृति ईरानी ने कहा कि निर्भया के गुनहगारों को फांसी से अपराधियों को यह कड़ा संदेश जायेगा कि वे कानून के पंजे से बच नहीं सकते। मैंने निर्भया की मां का सालों का संघर्ष देखा है। समय जरूर लगा लेकिन अंततः न्याय हुआ। इससे यह संदेश भी जाता है कि आप कानून से भाग सकते हैं लेकिन उससे पीछा नहीं छुड़ा सकते। मैं इस दिन को सराहती हूं कि आज निर्भया को इंसाफ मिला।

नरेंद्र मोदी। फाइल

बेटी को न्याय मिला : रविशंकर प्रसाद: केंद्रीय विधि मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि जिस बेटी ने इतना कष्ट सहा आखिरकार उसे अंततः न्याय मिला। इस समय न्यायपालिका और सरकार को आत्म अवलोकन की जरूरत है। वे सुनिश्चित करें कि मौत की सजा पाये लोग सिस्टम की खामी का लाभ उठाकर फैसले को सालों न लटकाने न पायें।

महिला की मर्यादा से खिलवाड़ करने वालों को माफी नहीं : गडकरी: केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने इस मामले में अपने ट्वीट में कहा कि निर्भया को न्याय मिला। हम लोगों को याद रखना चाहिये की महिलाओं की मर्यादा से खिलवाड़ करने वाले को माफी नहीं मिल सकती। आओ हम लोग नया भारत बनायें जहां हर महिला को सम्मान व समान अवसर मिले।

निर्भया की आत्मा को अब शांति मिलेगी : रेखा शर्मा: राष्ट्रीय महिला आयोग की प्रमुख रेखा शर्मा ने कहा कि न्याय मिलने से निर्भया की आत्मा को अब शांति मिलेगी। निर्भया के माता-पिता को लंबी कानूनी लड़ाई में जीत हासिल हुई। इन गुनहगारों की फांसी से दूसरे लोगों को भी सबक मिलेगा। इस मामले से यह पता चलता है कि हम लोगों के न्यायिक तंत्र में कितनी खामियां हैं।

यह पूरे देश की जीत : स्वाती मालीवाल: दिल्ली महिला आयोग की प्रमुख स्वाती मालीवल ने निर्भया के गुनहगारों को फांसी पर लटकाये जाने को देश की जीत बताया है। उन्होंने कहा कि यह पूरे देश की जीत है। अब हमें एक मजबूत सिस्टम बनाना है।

देश के लिए आत्म अवलोकन का समय : ज्योतिरादित्य: भाजपा नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि निर्भया को अंततः न्याय मिल गया। इस समय देश को आत्म अवलोकन की जरूरत है। इस फैसले से यह संदेश गया है कि महिलाओं के प्रति किया गया कोई भी अपराध स्वीकार्य नहीं है। साथ ही इससे कानून की पूरी ताकत से निपटा जायेगा।

क्रिकेटर से सांसद बने गौतम गंभीर ने एक ट्वीट में कहा कि दोषी अंततः फांसी पर लटका ही दिये गये। निर्भया, हम तुम्हें देरी से न्याय दे पाए। उधर एमनेस्टी इंटरनेशनल ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि महिलाओं के प्रति हिंसा की घटनाओं का समाधान काफी मृत्युदंड नहीं हो सकता। उसने इसे भारत के मानवाधिकार रिकार्ड पर धब्बा बताया है।

संकल्प लेने का दिन : केजरीवाल

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ट्विटर पर अपनी टिप्पणी में कहा कि सात साल बाद निर्भया के गुनहगार फांसी पर लटकाये गये। आज का दिन इस बात का संकल्प लेने का है कि हम इस तरह की कोई और घटना नहीं होने देंगे। पुलिस, अदालत और राज्य व केंद्र की सरकार को संकल्प लेना होगा कि हम अपने सिस्टम की कमियां दूर करेंगे ताकि किसी और बेटी के साथ ऐसा न हो।

अरविंद केजरीवाल। फाइल

दूर करनी होंगी सिस्टम की खामियां, ताकि कोई न उठाने पाए इनका लाभ

माला दीक्षित, नई दिल्ली

न्याय में देरी

- प्रक्रियात्मक खामियों का लाभ उठाकर सिस्टम को नचाते रहे निर्भया के दोषी
- इसको लेकर केंद्र सरकार ने दायर कर रखी हैं कोर्ट में दो याचिकाएं

निर्भया के दोषियों को फांसी के फंदे तक पहुंचने में सात साल से ज्यादा समय लगा। चारों दोषियों को फांसी होने के बाद यह जरूर कहा जा रहा है कि न्याय में देर है, पर अंधेर नहीं। लेकिन, सवाल उठता है कि इतनी देर क्यों? क्या देर से मिला न्याय उसकी अहमियत को कम नहीं कर देता? क्यों हमारी न्यायिक प्रक्रिया में इतनी खामियां हैं, जिनका लाभ उठाकर निर्भया के गुनाहगार पूरे सिस्टम को अपनी मर्जी से नचाते रहे? और कानून के दायरे में बंधा सिस्टम बस उनकी एक के बाद एक कानूनी पैंतरेबाजी का निशाना बनता रहा? यह मामला एक नजीर है, जिसमें न्याय में देरी की जिम्मेदार न्याय प्रदान प्रणाली (जस्टिस डिलिवरी सिस्टम) की खामियां उजागर हुईं। अब सिस्टम की खामियां दूर करने का समय आ गया है। अगर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र की लंबित दो याचिकाओं को स्वीकार करते हुए फांसी की सजा पाए जघन्य अपराध के दोषियों के मामले में कानूनी विकल्पों की समय सीमा तय कर दी तो समस्या बहुत कुछ सुलझ सकती है।

निर्भया केस पर अगर निगाह डाली जाए तो घटना 16 दिसंबर, 2012 की है। 13 सितंबर, 2013 को निचली अदालत ने चारों दोषियों को फांसी की सजा सुनाई और अगले ही साल हाई कोर्ट ने भी मुहर लगा दी। लेकिन सुप्रीम कोर्ट में तीन साल लग गए। पांच मई, 2017 को सुप्रीम कोर्ट ने चारों की फांसी को सही ठहराया। इसके बाद भी दोषियों को फांसी के फंदे तक पहुंचाने में तीन साल का और समय लग गया। सुप्रीम कोर्ट से अपील खारिज होने के बाद दोषियों के पास पुनर्विचार, क्यूरेटिव और राष्ट्रपति के पास दया याचिका दाखिल करने का कानूनी विकल्प बचा था। यही वह स्टेज थी, जहां दोषियों ने किसी समय सीमा का पालन नहीं किया। चारों ने अलग-अलग मनचाही देरी से याचिकाएं दाखिल कीं। कानून कहता है कि जब तक दोषियों के कानूनी विकल्प समाप्त नहीं होते, फांसी नहीं दी सकती। साथ ही सभी को एक साथ फांसी देने के हाई कोर्ट के आदेश से भी सिस्टम को बांध दिया।

स्पष्ट कानूनी प्रावधान न होने के कारण प्रक्रियात्मक खामियों का लाभ उठाकर जब दोषियों ने कानूनी पैंतरेबाजी दिखानी शुरू की, तो न्याय में देरी को लेकर सवाल उठे और सरकार हरकत में आई। केंद्र सरकार ने गत 22 जनवरी को सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दाखिल कर मांग की कि फांसी की सजा पाए दोषियों की दया याचिका खारिज होने के बाद सात दिन के भीतर डेथ वारंट जारी कर दिया जाए। उसके बाद सात दिन के भीतर उन्हें फांसी दे दी जाए।

इस पर सह अभियुक्तों की पुनर्विचार, क्यूरेटिव या दया याचिका लंबित रहने का कोई असर नहीं पड़ना चाहिए। केंद्र ने अर्जी में न्याय का इंतजार करते दुर्दांत अपराध के पीड़ितों का हवाला देते हुए कोर्ट से इस बारे में दिशा-निर्देश तय करने का आग्रह किया है। सरकार ने शत्रुघ्न चौहान मामले में दिए गए पूर्व फैसले में फांसी के लिए तय की गई 14 दिन की समय सीमा को घटाकर 7 दिन करने का आग्रह किया है। केंद्र की यह अर्जी अभी लंबित है। अगर कोर्ट ने टाइम लाइन तय करने वाले दिशा-निर्देश जारी कर दिए तो प्रक्रियात्मक देरी समाप्त हो सकती है।

इसके अलावा केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एक और अर्जी दाखिल कर रखी है। इसमें मांग की गई है कि सभी दोषियों को एक साथ फांसी देने की बात ठीक नहीं है। सुप्रीम कोर्ट से अपील खारिज होने के बाद जिस-जिस दोषी के कानूनी विकल्प समाप्त होते जाएं, उन्हें फांसी देने की इजाजत मिलनी चाहिए। इस अर्जी पर सुप्रीम कोर्ट में 23 मार्च को सुनवाई होनी है। कोर्ट ने साफ कहा था कि वह कानूनी मुद्दे पर विचार करेगा। इस बारे में आने वाला फैसला भी महत्वपूर्ण होगा।

मुकेश और विनय ने खाया रात का खाना, भूखा रहा पवन

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

गुरुवार शाम साढ़े सात बजे दोषियों को खाना खाने के लिए कहा गया, तो अक्षय ने सिर्फ चाय पीने की इच्छा जाहिर की। उसे चाय दी गई। मुकेश और विनय ने रात का खाना खाया था। जेल सूत्रों ने बताया कि पवन ने न तो खाना खाया और न ही चाय की मांग की। जेल प्रशासन ने उसे मनाने की कोशिश की, लेकिन उसने साफ-साफ इन्कार कर दिया। दोषियों की सुरक्षा में पचास जवानों को तैनात किया गया था।

छह लोगों ने की थी हैवानियत: देशभर को दहला देने वाली इस वारदात में छह लोग शामिल थे। राम सिंह ने 2013 में जेल में ही फांसी लगा ली थी, जबकि एक नाबालिग तीन साल सुधार गृह में रहने के बाद बाहर आ चुका है।

सात वर्ष बाद तिहाड़ में हुई फांसी: तिहाड़ जेल में इससे पहले 2013 में आतंकी अफजल को फांसी की सजा दी गई थी। अफजल से पूर्व तिहाड़ में इंदिरा गांधी के हत्यारे सतवंत सिंह और केहर सिंह को 1989 में फांसी पर लटकाया गया था।

तीन बार टला था डेथ वारंट

7 जनवरी 2020 : 22 जनवरी के लिए पहला डेथ वारंट जारी हुआ।

17 जनवरी : दूसरा डेथ वारंट जारी। फांसी की तारीख 11 फरवरी तय हुई।

17 फरवरी : 3 मार्च के लिए तीसरा डेथ वारंट जारी।

5 मार्च : चौथा डेथ वारंट जारी, फांसी की तारीख 20 मार्च मुकर्रर।

18 मार्च : चौथा डेथ वारंट टालने के लिए अर्जी दायर की गई।

19 मार्च : अदालत का डेथ वारंट टालने से इन्कार।

न्याय मिलने पर गांव में मनी खुशी

जागरण संवाददाता, बलिया

किसी की मौत जश्न की वजह तो नहीं बन सकती, लेकिन निर्भया मामले में गुनहगारों को फांसी दिए जाने पर क्रांतिकारियों की धरती बलिया में न्याय का उल्लास अवश्य नजर आया। यहां निर्भया के गांव में शुक्रवार की सुबह इंसाफ का उजाला लेकर आई। लोग बेसब्री से इस क्षण का इंतजार भी कर रहे थे।

सात साल तीन महीने और चार दिन बाद निर्भया को इंसाफ मिला। चारों दुष्कर्मियों मुकेश, पवन गुप्ता, विनय शर्मा व अक्षय सिंह को फांसी के फंदे पर लटकाए जाने की सूचना मिलते ही निर्भया के गांव के लोग घरों से बाहर आ गए और एक-दूसरे पर गुलाल छिड़ककर इंसाफ की इस जीत का जश्न मनाया। गांव की युवतियों का कहना था-' देर से ही सही, किंतु न्याय मिला। यह दिल को काफी सुकून देने वाला पल था।'

दैनिक जागरण से बातचीत में ग्रामीणों ने कहा कि उन्हें कानून पर पूरा भरोसा था। कानूनी दांव-पेच के बाद भी गांव के लोग नाउम्मीद नहीं थे। गुनहगारों को सजा मिलने के बाद निर्भया की आत्मा को वास्तविक शांति मिली होगी।

निर्भया को न्याय मिलने के बाद उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में जश्न मनाया गया। इस दौरान महिलाओं और युवतियों ने होली खेलने के साथ मिठाई भी बांटी। जागरण

दिल्ली में दोषियों का पक्ष लेने पर लोगों ने दो युवकों को धुना

जासं, नई दिल्ली : कनॉट प्लेस स्थित पालिका बाजार के गेट नंबर सात पर शुक्रवार शाम अचानक दो युवकों को लोग पीटने लगे। हैरानी की बात यह हुई कि जो लोग पिटाई करने वालों से मारपीट का कारण पूछने जाते वो भी युवकों की पिटाई करने लग जाते। असल में मामला निर्भया से जुड़ा था। दो-तीन लोग दोषियों को फांसी देने की बात को न्याय बता रहे थे। तभी वहां से गुजर रहे उक्त युवकों ने कह दिया कि यह बिल्कुल गलत हुआ है। क्या दुष्कर्म की सजा फांसी होती है? साथ ही निर्भया के बारे में कुछ अपशब्द कह दिए। बस फिर क्या था।

लोगों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। सबसे खास बात यह थी कि सभी ऐसे भावुक दिख रहे थे मानों निर्भया उनकी अपनी बेटी या बहन हो। जब तक पुलिस उनको जीप में डालकर लेकर नहीं गई, तब तक लोगों ने पुलिस के रोकने के बावजूद भी युवकों को पीटा। पता नहीं यह उस रात उस युवती की मदद न कर पाने का गुस्सा था या उसके प्रति लोगों की दया और श्रद्धांजलि।

मुकेश व राम सिंह का नाम नहीं लेना चाहते उनके गांव के लोग

जागरण संवाददाता, जयपुर

- राजस्थान में करौली जिले में कच्चे घर पर लटका ताला, रिश्तेदारों ने तोड़े संबंध
- शादी के कुछ समय बाद ही रामसिंह की पत्नी की हो गई थी मौत

निर्भया मामले के दोषी मुकेश सिंह और राम सिंह का उनके गांव के लोग नाम तक लेना नहीं चाहते हैं। वह दोनों राजस्थान में करौली जिले के भद्रवती नदी किनारे स्थित एक छोटे गांव कल्लादेह के निवासी थे। इनमें से राम सिंह ने तिहाड़ जेल में आत्महत्या कर ली थी, जबकि मुकेश सिंह को शुक्रवार को फांसी दे दी गई। राम सिंह और मुकेश दोनों भाई थे।

कल्लादेह गांव में मात्र 10 कच्चे घर हैं। इस गांव में कुल मिलाकर 50 लोग रहते हैं। गांव से एक से डेढ़ किलोमीटर दूर फिर एक छोटी बस्ती है। करौली जिला मुख्यालय से चार किलोमीटर दूर कल्लादेह गांव तक पहुंचने के लिए भद्रावती नदी पार करनी पड़ती है ।

गांव में मुकेश सिंह की मां कल्याणी रहती थीं, जो बेटे की करतूत के बाद गांव छोड़कर जा चुकी हैं। बेटे की करतूत के कारण हुई बदनामी के कारण वह कई दिन तक घर में बंद रही और फिर यहां ताला लगाकर चली गई । उसके घर से करीब दो सौ मीटर दूर धन सिंह अपने परिवार के साथ रहता है ।

धन सिंह से जब शुक्रवार को मुकेश सिंह को फांसी देने और निर्भया मामले में बात करने की कोशिश की गई तो उन्होंने साफ मना कर दिया। धन सिंह ने कहा हम उस जल्लाद का नाम ना तो सुनना चाहते हैं और ना ही लेना चाहते हैं । घटना के बाद गांव के सभी परिवारों ने उस परिवार से नाता-रिश्ता तोड़ दिया ।

बस्ती में जाने पर लोगों ने बताया कि मुकेश सिंह और राम सिंह दोनों भाई थे। उनके दो अन्य भाई भी हैं। राम सिंह की शादी हो गई थी और मुकेश सिंह अविवाहित था । शादी के कुछ समय बाद ही राम सिंह की पत्नी की मौत हो गई थी। पत्नी की मौत के बाद रामसिंह को शराब की लत लग गई थी।

इसके बाद चारों भाई दिल्ली में नौकरी करने चले गए। राम सिंह ड्राइवर था और मुकेश सिंह उसके साथ क्लीनर का काम करता था। दोनों कभी ट्रक तो कभी बस पर काम करते थे। मां कल्याणी कभी दिल्ली तो कभी गांव में रहती थी, लेकिन अपने पति की मौत के बाद वह गांव में रहने लगी थी ।

दोनों बेटों ने जब निर्भया के साथ बर्बरता की तो उसके बाद से आसपास के लोगों ने कल्याणी से बात करना बंद कर दिया था। आसपास के गांवों में रहने वाले रिश्तेदारों ने संबंध खत्म कर लिए थे । इस पर वह दो अन्य बेटों के पास दिल्ली चली गई। गांव वालों को यह पता नहीं कि वे दिल्ली में किस जगह रहते हैं।

बॉलीवुड ने कहा, पीड़िता को मिला न्याय

निर्भया को इंसाफ! जैसी करनी वैसी भरनी। इसे भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में मिसाल बनने दीजिए। दुष्कर्म की सजा मौत है। आपको नारीत्व का सम्मान करना होगा। वो लोग शर्म करें, जिन्होंने फांसी में देरी की। जय हिंद।

-ऋषि कपूर, अभिनेता

अगर निर्भया के गुनहगारों को वर्ष 2012 में ही फांसी दे दी गई होती तो महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में कमी देखने को मिलती। कानून का डर लोगों में देखने को मिलता। सावधानी हमेशा इलाज से बेहतर है। यह न्यायपालिका में बदलाव का समय है।

-प्रीति जिंटा, अभिनेत्री

आशा देवी में एक मां की हिम्मत देखने को मिली। आखिरकार निर्भया को न्याय मिला।

-सुष्मिता सेन, अभिनेत्री

मेरे विचार और प्रार्थनाएं निर्भया के माता पिता, दोस्तों और प्रियजनों के साथ हैं। इंतजार लंबा था, लेकिन न्याय हुआ।

-रितेश देशमुख, अभिनेता

आखिरकार दोषियों को फांसी हो गई। उम्मीद है कि वर्षों बाद आज निर्भया के माता-पिता चैन की नींद सो सकेंगे। यह उनके लिए एक लंबी लड़ाई थी।

-तापसी पन्नू, अभिनेत्री

दिन की शुरुआत एक अच्छी खबर से हुई कि निर्भया के गुनहगारों को फांसी दे दी गई है। न्याय पूरा हुआ।

-तमन्ना भाटिया, अभिनेत्री

सीमा कुशवाहा बोलीं-निर्भया का कंगन पहन दिलाया न्याय

सुशील गंभीर, नई दिल्ली

मेरा निर्भया से खून का रिश्ता नहीं है, लेकिन ऐसा लगता है कि वह मेरे साथ हमेशा है। क्योंकि उसका कंगन जो मेरे हाथ में है। आंटी (निर्भया की मां) ने निर्भया का कंगन मुझे पांच साल पहले पहनाया था और तब से उसे उतारा नहीं है। जब भी कोर्ट में इंसाफ की लड़ाई लड़ने गई तो कंगन के रूप में निर्भया मेरे साथ होती थी। मैं निर्भया की बड़ी बहन बन उसे इंसाफ दिलाने के लिए लड़ी। इतना कह सीमा कुशवाहा भावुक हो गई। अधिवक्ता सीमा कुशवाहा 2014 से इस केस में पैरवी कर रही हैं। हालांकि निर्भया के परिवार से वे वारदात के बाद से ही जुड़ी हैं। दिसंबर 2012 में जब न्याय के लिए प्रदर्शन हो रहे थे तो उन्होंने इंडिया गेट पर पोल पर चढ़कर प्रदर्शन किया था।

जब यह मामला आगे नहीं बढ़ रहा था तो 2014 में सीमा कुशवाहा ने इस केस की कमान संभाली। इसके बाद उन्होंने निर्भया के परिवार को भरोसा दिलाया कि दोषियों को फांसी होकर रहेगी। तारीख दर तारीख केस आगे बढ़ा और आखिर वह हो ही गया, जो वादा उन्होंने निर्भया के परिवार से किया था। सीमा कुशवाहा ने बताया कि उनके मन को जो शांति मिली है, वह शब्दों से बयां नहीं की जा सकती।

ऐसे गांव से हैं सीमा, जहां आज भी स्कूल नहीं है

वरिष्ठ वकील सीमा कुशवाहा जागरण

सीमा कुशवाहा उत्तर प्रदेश के ऐसे गांव की रहने वाली हैं, जहां पर आज भी स्कूल नहीं है। उन्होंने बताया कि उनके गांव का नाम उग्रपुर है, जो इटावा में पड़ता है और उसके नजदीक बिधिपुर गांव है। वह वहीं पर स्कूल में पढ़ने जाती थी। इसके बाद कानपुर में पढ़ाई की और वहीं से लॉ की डिग्री ली। 2009 में दिल्ली आकर प्रैक्टिस शुरू की और निर्भया का केस उनका पहला था। उन्होंने बताया कि एक काम को अंजाम तक पहुंचा दिया और अब दूसरा सपना अपने गांव में स्कूल बनवाने का है। अब इस सपने को पूरा करने के लिए पूरी मेहनत करेंगी और गांव में स्कूल खुलवाकर ही रहेंगी।

जल्लाद को जेल प्रशासन की ओर से दिए गए 60 हजार रुपये

जागरण संवाददाता, पश्चिमी दिल्ली : तिहाड़ जेल प्रशासन की ओर से जल्लाद पवन को 60 हजार रुपये का भुगतान किया गया है। इसके अलावा जेल प्रशासन ने उसे भत्ते का भी भुगतान किया है। इस भत्ते में पवन के आने जाने का खर्चा व प्रतिदिन के मेहनताने का भुगतान शामिल है। भत्ते के तौर पर कुल कितनी रकम का भुगतान किया गया है, इसके बारे में जेल प्रशासन ने कुछ भी बताने से इन्कार कर दिया।

यह तीसरा मौका था जब जल्लाद तिहाड़ आया था। इसके पूर्व दो बार डेथ वारंट जारी होने पर जल्लाद आया था, लेकिन दोनों ही बार डेथ वारंट रद होने के कारण उसे वापस जाना पड़ा। हर बार जेल प्रशासन ने उसे भत्ते का भुगतान किया, क्योंकि डेथ वारंट की तिथि से दो दिन पूर्व जल्लाद को बुलाया जाता था। हालांकि तीसरी बार जल्लाद को जेल प्रशासन ने तीन दिन पहले यानी 17 मार्च को ही बुला लिया था। उनके आने के बाद से ही जेल में ट्रायल का दौर शुरु हो गया। इस बार तिहाड़ पहुंचने पर जेल प्रशासन ने जल्लाद की भी काउंसिलिंग कराई थी।

चारों शवों को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंपा

जासं, पश्चिमी दिल्ली : निर्भया के दोषियों को फांसी पर लटकाने के करीब आधे घंटे में जेल के चिकित्सक फांसी घर में प्लेटफार्म के नीचे कोठरी में दाखिल हुए तो उन्होंने लटक रहे दोषियों की जांच की। जांच के दौरान चिकित्सकों ने पाया कि दोषियों की मौत हो चुकी है। इस दौरान जेल मैन्युअल का पालन किया गया। इसके बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए डीडीयू अस्पताल भेजा गया। डीडीयू अस्पताल में पांच सदस्यीय चिकित्सकों के पैनल ने चारों दोषियों के शव का पोस्टमार्टम किया। इसके बाद शव को परिजनों को सौंप दिया गया।

संघर्ष की जीत

रात में ही तिहाड़ जेल के बाहर जुटे लोग सुबह तक डटे रहे, हर हाथ में तिरंगा और जुबां पर था निर्भया जिंदाबाद का नारा, दिसंबर 2012 में ठिठुराने वाली रात में इंसाफ मांगने के लिए उमड़ा था जनसैलाब, अब संतुष्टि का था भाव

इंसाफ की इस सुबह का लोगों को था अर्से से इंतजार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

16 दिसंबर 2012 की ठिठुराने वाली काली रात के बाद 20 मार्च 2020 की इंसाफ की सुबह का इंतजार लंबा जरूर था, लेकिन यह राजधानी के लोगों को बड़ा सुकून दे गया। दोषियों की फांसी का गवाह बनने की चाह कोरोना वायरस के खौफ पर भारी पड़ी और हाथों में तिरंगा लिए लोग गुरुवार रात से ही तिहाड़ जेल के बाहर जमा होने लगे थे। किसी की फांसी को लेकर इस तरह का उत्साह पहले कभी देखने को नहीं मिला। वे निर्भया जिंदाबाद के नारे लगाकर यह कहने की कोशिश कर रहे थे कि बहादुर बेटी आज तुम्हारी मां के संघर्ष की जीत हो गई है। हर चेहरे पर इंसाफ की खुशी झलक रही थी।

तिहाड़ जेल के बाहर गुरुवार रात बारह बजे से ही लोगों का जमावड़ा लगना शुरू हो गया। कई लोगों के हाथ में पोस्टर थे। इन पर निर्भया जिंदाबाद, इंसाफ का दिन लिखकर लोग आए थे। वे इस पल का गवाह बनने के लिए घंटों तिहाड़ गेट पर जमे रहे। सुबह 5 बजकर 29 मिनट तीस सेकंड पर ही तिहाड़ जेल के गेट नंबर तीन पर मौजूद जनसैलाब ने निर्भया के गुनहगारों की फांसी का काउंटडाउन शुरू कर दिया। सेकंड की सुई जैसे-जैसे आगे बढ़ रही थी, लोगों की आवाज में जोश बढ़ता जा रहा था। काउंटडाउन खत्म होते ही निर्भया जिंदाबाद के नारे से पूरा इलाका गुंजायमान होने लगा। लोगों की जुबां पर एक ही बात थी कि निर्भया के दोषियों को बहुत पहले ही फांसी हो जानी चाहिए थी। हालांकि देर से ही सही, लेकिन इंसाफ तो मिला। गेट पर खड़े इंद्रप्रस्थ संजीवनी संस्था के पदाधिकारी तिरंगा हाथ में लेकर पहुंचे थे।

निर्भया के दोषियों को फांसी दिए जाने के दौरान जेल के बाहर हाथ में पोस्टर लिए खड़ीं महिलाएं। हरि प्रकाश

उनका कहना था कि 20 मार्च को निर्भया डे के रूप में मनाया जाना चाहिए। वहां मौजूद राजेश नाम के व्यक्ति ने कहा कि इस दिन का हम बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। निर्भया की मां ने न्याय पाने के लिए काफी संघर्ष किया है। हम उनके संघर्ष को सलाम करते हैं। संजीव अरोड़ा ने कहा कि न्याय में इतनी देरी नहीं होनी चाहिए। सात वर्ष बाद निर्भया को इंसाफ मिला है। ऐसे दोषियों को तुरंत फांसी की सजा मिलनी चाहिए। जिससे कि न्याय प्रणाली पर लोगों का विश्वास और बढ़े।

पवन फर्श पर लेट गया, जोर से रो रहा था विनय

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

▶ आखिरी समय में तक बचने की कोशिश करते रहे विनय और पवन

फांसी से बचने के लिए निर्भया के दोषियों ने हर संभव कोशिश की। विनय और पवन को सेल से फांसी घर तक ले जाने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। आखिर में पवन फर्श पर लेट गया और खुद को चोट पहुंचाने लगा।

शुक्रवार सुबह जेल अधीक्षक दोषियों को उठाने के लिए उनकी सेल में गए थे। उन्हें देखते ही दोषियों के चेहरे का रंग उड़ गया। बड़े शांत भाव से जेल अधिकारियों ने उनकी तरफ देखा और आंखों ही आंखों में इशारा कर दैनिक क्रियाकलाप से निवृत्त होने के निर्देश दिए। इसके बाद जब जेलकर्मियों ने उन्हें नए कपड़े पहनाए तो उनकी आंखों में मौत का खौफ साफ नजर आ रहा था। विनय रोने लगा तो पवन सुरक्षाकर्मियों से जान बख्शने की गुहार लगाने लगा। किसी तरह सुरक्षाकर्मियों ने उनके हाथ पीछे से बांधे। उनके चारों तरफ दो-दो सुरक्षाकर्मी मौजूद थे। दल के आगे भी दो व पीछे भी दो सुरक्षाकर्मी इनके साथ खुले अहाते की ओर बढ़ने लगे। फांसी घर की ओर ले जाते समय पवन सुरक्षाकर्मियों को धक्का देते हुए फर्श पर लेट गया। अचानक हुई इस घटना के बाद सुरक्षाकर्मी सतर्क हुए और उसे उठाकर प्लेटफार्म पर पहुंचाया। वहीं प्लेटफार्म पर पहुंचने के बाद विनय जोर-जोर से रोने लगा। उसने दया की भीख मांगी, लेकिन दोनों को तख्ते पर डालकर इनके पैरों को बांध दिया गया। सूत्रों का कहना है कि विनय व पवन एक ही प्लेटफार्म पर थे। वहीं अक्षय व मुकेश दूसरे प्लेटफार्म पर थे।

सांसदों को भी सताने लगा संक्रमित होने का भय

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- गायिका कनिका कपूर की पार्टी में जाने वाले सांसद दुष्यंत संसद कार्यवाही में रहे शामिल
- छह दर्जन दूसरे सांसदों के साथ नाश्ते के लिए राष्ट्रपति भवन भी गए थे

देश में बढ़ते कोरोना संक्रमण के मामलों के बीच शुक्रवार को संसद पर भी इसकी आशंका छा गई। राजस्थान के झालावाड़ से सांसद और पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के पुत्र दुष्यंत सिंह कोरोना संक्रमण की आशंका में घिर गए हैं। मां-बेटे लखनऊ में 15 मार्च को उस पार्टी में मौजूद थे जहां बॉलीवुड गायिका कनिका कपूर थीं। शुक्रवार को कनिका के कोरोना पॉजिटिव घोषित होने के बाद दोनों ने खुद को आइसोलेट कर लिया है। लेकिन सांसदों के बीच भय का माहौल बन गया है।

दरअसल, दुष्यंत गुरुवार तक संसद की कार्यवाही में हिस्सा लेते रहे और 18 मार्च को वह उत्तर प्रदेश व राजस्थान के लगभग छह दर्जन दूसरे सांसदों के साथ नाश्ते के लिए राष्ट्रपति भवन भी गए थे। इनमें पूर्व केंद्रीय मंत्री और मीरजापुर से सांसद अनुप्रिया पटेल, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, वीके सिंह, गजेंद्र शेखावत, अर्जुन राम मेघवाल, कैलाश चौधरी, साध्वी निरंजन ज्योति, राज्यवर्धन सिंह राठौर, विजय गोयल, ओम माथुर, रविकिशन, हेमामालिनी, रीता बहुगुणा जोशी, साक्षी महाराज, कुमारी सैलजा और मैरीकॉम भी शामिल हैं। साथ ही दुष्यंत ने परिवहन, पर्यटन और संस्कृति पर संसदीय समिति की बैठक में भी हिस्सा लिया था जिसमें 20 सांसद उपस्थित थे। 17 मार्च को उन्होंने भाजपा संसदीय दल की बैठक में हिस्सा लिया था।

दुष्यंत सिंह और वसुंधरा राजे द्वारा खुद को आइसोलेट करने के बावजूद सरकार पर संसद सत्र अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करने का दबाव बढ़ने लगा है। तृणमूल कांग्रेस के सदस्य डेरेक ओ ब्रायन ने ट्वीट कर बताया कि वह दो दिन पहले दुष्यंत के पास लगभग ढाई घंटे तक बैठे थे और अब वह खुद को आइसोलेट कर रहे हैं। उन्होंने सरकार पर आरोप लगाया कि सत्र को बरकरार रखकर वह जान खतरे में डाल रही है। उन्होंने तत्काल स्थगन की मांग की। उनकी ही पार्टी के सहयोगी सुखेंदु शेखर राय ने भी खुद को आइसोलेट करने की घोषणा की है। वहीं, अपना दल की सांसद अनुप्रिया पटेल ने भी ट्वीट कर कहा कि वह और दुष्यंत सिंह गुरुवार को एक कार्यक्रम में मौजूद थे इसलिए एहतियात के तौर पर वह खुद को आइसोलेट कर रही हैं। नवनिर्वाचित राज्यसभा सदस्य दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने भी खुद को आइसोलेशन पर रखने का निर्णय लिया है। वहीं, गृह राज्यमंत्री जी. किशन रेड्डी ने कहा, 'मैंने सुना है कि सिंह पार्टी में मौजूद थे। लेकिन उनमें कोरोना वायरस के कोई लक्षण नहीं हैं।

मुरलीधरन व सुरेश प्रभु ने खुद को क्वारंटाइन किया

केरल स्थित मेडिकल इंस्टीट्यूट का दौरा करने के बाद विदेश राज्यमंत्री वी. मुरलीधरन ने खुद को क्वारंटाइन कर लिया है। इस अस्पताल में बाद में एक मरीज कोरोना वायरस से संक्रमित मिला था। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु ने भी खुद को एहतियात के तौर पर अपने घर पर क्वारंटाइन कर लिया है। वह 10 मार्च को सऊदी अरब में एक बैठक में हिस्सा लेकर लौटे हैं। हालांकि दोनों को कोरोना निगेटिव घोषित कर दिया गया है।

पूरी तरह सैनिटाइज होगी संसद

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

संसद पर छाई कोरोना की आशंका को देखते हुए अब अगले दो दिनों में पूरे परिसर को सैनिटाइज किया जाएगा। सदन के अंदर हर पर्दे को भी बदला जाएगा। माना जा रहा है कि राष्ट्रपति भवन भी सैनिटाइज होगा।

शुक्रवार को दुष्यंत सिंह में संक्रमण की आशंका के बाद लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने व्यापक बैठक की। एनडीएमसी और संबंधित अधिकारियों को परिसर में सफाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। शनिवार और रविवार को संसद बंद रहेगी। वहीं, सोमवार को बैठक दोपहर दो बजे से शुरू होगी। इस बीच अंदर एक एक चप्पे को सैनिटाइज किया जाएगा। यहां तक कि पर्दे भी बदले जाएंगे। सोफे और कुर्सियों को लगातार दो दिनों तक सैनिटाइज किया जाएगा।

ध्यान रहे कि विपक्षी सांसदों की ओर से सत्र स्थगित करने की मांग हो रही है। लेकिन अभी अनुदान मांगों को पास किया जाना बाकी है। लिहाजा माना जा रहा है कि अगले सप्ताह के मध्य तक सत्र को स्थगित करने पर विचार किया जा सकता है।

उप्र के सरकारी दफ्तरों में होगी कार्मिकों की 50 फीसद उपस्थिति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने 4 अप्रैल तक सरकारी विभागों में समूह 'ख', 'ग' और 'घ' के 50 प्रतिशत कार्मिकों की उपस्थिति की व्यवस्था करने और बाकी 50 फीसद को घर से काम करने देने का फैसला किया है। कार्यालय आने वाले कार्मिक तीन पालियों में काम करेंगे। अधीनस्थ कार्यालयों, स्थानीय निकायों और निगमों में भी यह व्यवस्था लागू होगी।

मुख्य सचिव राजेंद्र कुमार तिवारी ने शुक्रवार को इस बारे में शासनादेश जारी कर इसका कड़ाई से अनुपालन कराने का निर्देश दिया है। शासनादेश के अनुसार, सभी विभागाध्यक्ष यह व्यवस्था करेंगे कि हर दिन कार्यालयों में समूह 'ख', 'ग' और 'घ' के 50 प्रतिशत कार्मिकों की उपस्थिति सुनिश्चित हो। बाकी 50 प्रतिशत घर से ही काम करेंगे। दफ्तर आने वाले कार्मिकों के लिए समय का आवंटन तीन पालियों में किया जाएगा। पहली पाली सुबह 9 से शाम 5 बजे, दूसरी सुबह 10 से शाम 6 बजे और तीसरी सुबह 11 बजे से सायंकाल 7 बजे तक चलेगी। इसके लिए विभागाध्यक्षों के स्तर से रोस्टर तय किया जाएगा। विभागाध्यक्ष अपने विभाग के कार्मिकों का साप्ताहिक रोस्टर इस तरह से बनाएंगे कि ऐसे कर्मचारी एक-एक हफ्ता छोड़कर कार्यालय आएं। जो कर्मचारी एक हफ्ते कार्यालय आएंगे, वे अगले सप्ताह घर में रहकर काम करेंगे और उनके स्थान पर बाकी 50 फीसद कार्मिक दफ्तर जाएंगे। ध्यान यह रखना होगा कि इससे सरकारी काम में, खासतौर पर बजट के काम में व्यवधान न पैदा हो। पहले हफ्ते में कार्यालय आने वाले कार्मिकों को चिन्हित करते समय घर से दूरी और दफ्तर आने के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले स्वयं के साधनों का भी ध्यान रखा जाएगा। रोस्टर के मुताबिक घर से काम करने वाले कार्मिक इस अवधि में मोबाइल के जरिये कार्यालय से संपर्क में रहेंगे।

देश में संक्रमण के 50 नए मामले सामने आए

वायरस का प्रकोप ▶ महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा 52 केस, केरल में 28 और उत्तर प्रदेश में 23 पीड़ित

अभी तक चार लोगों की गई जान, 23 संक्रमित पूरी तरह स्वस्थ भी हुए

नई दिल्ली, प्रेट्र : देश में कोरोना के 50 नए मामले सामने आए हैं। देश में एक दिन में संक्रमितों की यह सबसे बड़ी संख्या है। इनको मिलाकर शुक्रवार को संक्रमितों का आंकड़ा 241 पर पहुंच गया है। देशभर में इन संक्रमितों के संपर्क में आए 6700 लोगों की पहचान की गई है और उन सभी को सघन निगरानी में रखा गया है।

कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों को देखते हुए कई राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने कड़े कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। महाराष्ट्र में मुंबई, पुणे, नागपुर और पिंपरी-चिंचवण शहरों को शनिवार से पूरी तरह से बंद करने का एलान किया गया है। वहीं, दिल्ली में भी माल को बंद कर दिया गया है। माल में सिर्फ राशन और दवा की दुकानें ही खुलेंगी।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और राज्य के स्वास्थ्य विभागों के मुताबिक कोरोना वायरस से पीड़ितों की संख्या लगातार बढ़ रही है और संक्रमितों की संख्या 241 हो गई है। कोरोना वायरस 19 राज्यों में फैल चुका है। इससे संक्रमित पाए गए लोगों में 40 विदेशी नागरिक भी शामिल हैं। इनमें इटली के 17, इंडोनेशिया के सात, ब्रिटेन के सात और फिलीपींस के तीन नागरिक भी शामिल हैं। देश में अब तक कोरोना वायरस से चार लोगों की जान चुकी है। इनमें कर्नाटक, महाराष्ट्र, दिल्ली और पंजाब का एक-एक मामला शामिल है। राजस्थान के जयपुर के एक निजी अस्पताल में गुरुवार को इटली के 69 साल के एक नागरिक की हार्ट अटैक से मौत हुई है। कोरोना वायरस से संक्रमित होने पर ही उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था। लेकिन इस वायरस से वह मरीज पूरी तरह मुक्त हो चुका था।

नई दिल्ली में शुक्रवार को लोग कोरोना वायरस को लेकर सतर्कता बरतते हुए स्टोर्स पर मास्क पहनकर खरीददारी करने पहुंचे। यह तस्वीर केंद्रीय भंडार की है। प्रेट्र

कोरोना के कुल केस	
महाराष्ट्र	52 (तीन विदेशी)
केरल	37 (सात विदेशी)
उत्तर प्रदेश	23 (तीन विदेशी)
दिल्ली	17 (एक विदेशी)
तेलंगाना	17 (नौ विदेशी)
राजस्थान	17 (दो विदेशी)
हरियाणा	17 (14 विदेशी)
कर्नाटक	15
लद्दाख	10
गुजरात	7
चंडीगढ़	5
जम्मू-कश्मीर	4
मध्य प्रदेश	4
तमिलनाडु	3
आंध्र प्रदेश	3
उत्तराखंड	3
ओडिशा	2
पंजाब	2
बंगाल	2
पुडुचेरी	1

कोरोना की बढ़ती दहशत

- दक्षिण मुंबई में सार्वजनिक जगह पर थूकने पर 16 लोगों पर एक-एक हजार का जुर्माना लगा
- केरल के कासरगोड में शनिवार से सभी सरकारी दफ्तर एक हफ्ते के लिए बंद रहेंगे
- गोवा में 24 मार्च को निर्धारित गोवा जिला पंचायत की 50 सीटों पर चुनाव को टाल दिया गया है
- कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले में एक हजार लोग घरों में ही क्वारंटाइन किए गए

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक कोरोना वायरस से संक्रमित 23 लोग अब तक उपचार के बाद ठीक हो चुके हैं। संक्रमितों में महाराष्ट्र में तीन विदेशियों समेत सबसे ज्यादा 52 केस सामने आए हैं। केरल में शुक्रवार को ब्रिटेन के पांच नागरिकों समेत और 12 लोगों को कोरोना से संक्रमित पाया गया, इनको मिलाकर राज्य में संक्रमितों की संख्या 37 हो गई है। इनमें सात विदेशी शामिल हैं। राज्य के मुख्यमंत्री पी. विजयन ने बताया कि एर्नाकुलम में पांच, कासरगोड में छह और पलक्कड़ में एक नया मामला सामने आया है। इसको देखते हुए कासरगोड में शनिवार से सभी सरकारी दफ्तरों को एक हफ्ते के लिए बंद करने का आदेश दिया गया है। उत्तर प्रदेश में चार नए मामले मिले हैं और राज्य में यह संख्या 23 हो गई है। दिल्ली में अभी तक कुल 17 संक्रमित मिले हैं। तेलंगाना में नौ विदेशियों समेत 17, कर्नाटक में 15, दो नए मामलों के साथ लद्दाख में 10 और जम्मू-कश्मीर में कोरोना के चार मामले अभी तक सामने आ चुके हैं।

राजस्थान में आठ नए मामले मिले हैं और इनकी संख्या 17 हो गई है। इनमें दो विदेशी शामिल हैं। बढ़ती संख्या को देखते हुए राजस्थान सरकार ने दो दिन पहले ही पूरे राज्य में धारा 144 लगाने की घोषणा कर दी थी। हरियाणा में शुक्रवार को तीन नए मामले दर्ज किए गए, जिनको मिलाकर इनकी संख्या 17 हो गई है। इनमें 14 विदेशी शामिल हैं। गुजरात में दो नए मामले मिले हैं और संक्रमितों की संख्या सात हो गई है। तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में अभी तक तीन-तीन मामले मिले हैं। ओडिशा में एक और नया केस मिला है और संक्रमितों की संख्या दो हो गई है। उत्तराखंड में तीन संक्रमित हैं। बंगाल और पंजाब में एक-एक नया मामला सामने आया है और इन दोनों राज्यों में पीड़ितों की संख्या दो-दो हो गई है। चंडीगढ़ में चार नए मामलों के साथ अब तक पांच केस मिले हैं। जबकि, पुडुचेरी में भी एक संक्रमित है। मध्य प्रदेश में भी कोरोना वायरस के चार पॉजिटिव केस पाए गए हैं।

सामाजिक जिम्मेदारी निभा रहे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

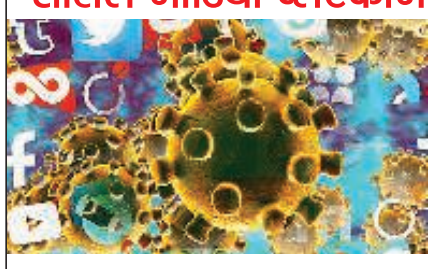

कोरोना वायरस के कारण दुनिया में 10 हजार से ज्यादा लोगों की मौतें अब तक हो चुकी हैं। चीन के बाद इटली, फ्रांस जैसे देशों ने आधिकारिक रूप से लॉकडाउन कर दिया है, जबकि ब्रिटेन समेत कई यूरोपीय देशों में अघोषित लॉकडाउन की स्थिति बन गई है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर ही लोगों का ज्यादा वक्त बीत रहा है। ट्विटर, फेसबुक जैसे लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म भी कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ी जा रही लड़ाई में शामिल हो गए हैं। पेश है एक नजर:

ट्विटर

ट्विटर पर सूचनाओं की बाढ़ है। तमाम जानकारियां वेरीफाई अकाउंट से मिल रही हैं लेकिन, ट्विटर पर स्क्रीन के सबसे ऊपर दाएं कोरोना पर अपडेट सूचनाएं दी जा रही हैं, जबकि ठीक इसके नीचे 'डू द फाइव' पॉप अप बटन दिया है। कोविड-19 नाम का हैशटैग स्थायी कर दिया है। इसके साथ ही संक्रमण के खिलाफ जंग को लेकर एक हब भी बना दिया है। ट्विटर ने डब्ल्यूएचओ और भारत के स्वास्थ्य विभाग के भी खास लिंक दिए हैं।

1.14 करोड़ से ज्यादा हैं भारत में ट्विटर यूजर्स | **33 करोड़ से अधिक यूजर्स हैं दुनिया में ट्विटर के**

फेसबुक

फेसबुक ने कोरोना वायरस इंफॉर्मेशन सेंटर बनाने की घोषणा की है। न्यूज फीड में इसे सबसे ऊपर रखा जा रहा है। इस पर हेल्थ टिप्स अन्य सूचनाओं के साथ दी जा रही हैं। इटली, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन और ब्रिटेन की सूचनाएं अमेरिका की सूचनाओं के साथ दी जा रही हैं। डब्ल्यूएचओ के साथ मिलकर फेसबुक रीयल टाइम डाटा भी दे रहा है। सोशल डिस्टेंसिंग पर खासा जोर है। कोविड-19 के लिए हब बनाया है। दुनियाभर में जारी अलर्ट को शीर्ष प्राथमिकता दी जा रही है। लोकल कम्यूनिटी की खबरों को तवज्जो दी जा रही है।

21 करोड़ से अधिक लोग भारत में हैं फेसबुक पर | **2.4 अरब से अधिक है फेसबुक पर सक्रिय लोगों की संख्या दुनिया में**

गूगल और यू ट्यूब

गूगल ने 'डू द फाइव' अभियान शुरू किया है। गूगल ने यू ट्यूब पर भी इस अभियान को शुरू कर दिया है। साफ-सफाई से संबंधित इस अभियान के तमाम वीडियो यू ट्यूब पर डाले गए हैं। साथ ही सरकारी एजेंसियों के नोटिफिकेशन को प्रमुखता दी जा रही है। यू ट्यूब पर पॉप अप बटन दिया गया है। सर्च में कोरोना को प्राथमिकता दी जा रही है। कोरोना को लेकर टिकर भी चलाया जा रहा है।

26.5 करोड़ से अधिक लोग भारत में यू ट्यूब पर वीडियो देखते हैं | **2 अरब से अधिक लोग यू ट्यूब पर वीडियो देखते हैं**

वाट्सएप

वाट्सएप ने कोरोना वायरस को लेकर हब बनाने की घोषणा की है। वाट्सएप डाट काम/कोरोना वायरस पर आप जाकर सूचनाएं हासिल कर सकते हैं। डब्ल्यूएचओ की सूचनाओं को भी साझा किया जा रहा है। आम लोगों के साथ स्वास्थ्य कर्मियों, सामाजिक नेताओं जैसे विभिन्न वर्गों के लोगों के लिए टिप्स दिए जा रहे हैं। साथ ही लोगों को वेरिफाई सूचनाएं ही साझा करने को कहा जा रहा है, ताकि अफवाह न फैले। भारत में वाट्सएप पर मायजीओवी कोरोना हेल्प डेस्क शुरू की गई है। +919013151515 नंबर भी जारी किया गया है।

4 करोड़ से अधिक लोग भारत में वाट्सएप का इस्तेमाल करते हैं | **1.5 अरब डॉलर से अधिक लोग दुनिया में इस प्लेटफॉर्म से जुड़े हुए हैं**

वीमेट:

भारत के ग्रामीण हिस्सों में शॉर्ट वीडियो वाले इस प्लेटफॉर्म ने 'कोरोना पर हावी' और 'ओह ना ना कोराना', दो मुहिम चलाई हैं। 'कोरोना पर हावी' टैग पर 15,500 वीडियो अपलोड किए गए हैं, जबकि 'ओह ना ना कोराना' पर 18,400 से ज्यादा वीडियो अपलोड किए गए हैं। हिंदी में नोटिफिकेशन से लोगों को काफी सहूलियत हो रही है।

इंस्टाग्राम

इंस्टाग्राम ने कॉल टू एक्शन का मैसेज सबसे ऊपर दाईं तरफ दिया है, जहां कोविड-19 पर जारी होने वाले अलर्ट दिए जा रहे हैं। साथ ही विश्व स्वास्थ संगठन से जारी हो रही सूचनाएं साझा की जा रही हैं। यदि आप कोरोना वायरस हैशटैग को सर्च करेंगे तो आपको सभी तरह की सूचनाएं कोरोना के बारे में दी जाएंगी।

15.5 करोड़ से अधिक हैं भारत में इंस्टाग्राम यूजर्स | **1 अरब से अधिक हैं दुनिया में इंस्टाग्राम के यूजर्स**

स्नैपचैट

कोरोना वायरस के कारण तनाव में हैं तो स्नैपचैट ने हेयर फॉर यू' टूल पेश किया है। इसे अप्रैल में लांच करना था, लेकिन कोरोना वायरस के कारण इसे फरवरी में ही लांच किया गया। इसमें मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट तनाव को खत्म करने के टिप्स देंगे। इसने भी डब्ल्यूएचओ समेत सभी सरकारी एजेंसियों और कंपनियों का कंटेंट भी दिया है।

2.29 करोड़ लोग जुड़े हुए हैं स्नैपचैट से भारत में | **33 करोड़ से अधिक लोग स्नैपचैट से दुनिया में जुड़े हुए हैं**

थरूर जनता कर्फ्यू की अपील के समर्थन में

नई दिल्ली, प्रेट्र : कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री शशि थरूर ने रविवार को जनता कर्फ्यू की प्रधानमंत्री की अपील का समर्थन किया है। उन्होंने खुद भी यह अपील मानने की बात कही। हालांकि उन्होंने यह भी जोड़ा कि प्रधानमंत्री कोरोना से मुकाबले के लिए किसी कार्रवाई की बात नहीं बता सके। गौरतलब है कि गत दिवस पीएम ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में रविवार को जनता कर्फ्यू का आहान किया था।

थरूर ने कहा कि प्रधानमंत्री के भाषण में कार्रवाई का वादा नदारद था। बहुत सारे लोग परेशान हैं। मांग नीचे जा रही है, पर्यटन उद्योग बदहाल है। दिहाड़ी मजदूरों के सामने अभूतपूर्व संकट है। देश में अर्थव्यवस्था को बल देने की जरूरत है। थरूर के मुताबिक देश के लोगों को एक साथ आने की जरूरत है, क्योंकि वायरस किसी राजनीतिक दल को नहीं देखेगा। प्रधानमंत्री ने पूरे देश की एकजुटता की जो अपील की है वह सही है। जनता कर्फ्यू इसी का एक तरीका है। रविवार इसके लिए सबसे आसान दिन है।

समय कम है, तेज काम करना होगा : चिदंबरम

एक अन्य वरिष्ठ कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने शुक्रवार को कहा कि कोरोना के खिलाफ जंग केवल नैतिक उपदेशों से नहीं जीती जा सकती। लाकडाउन इसका एकमात्र समाधान है। चिदंबरम ने भी प्रधानमंत्री द्वारा बताए गए कदमों का समर्थन किया है। उन्होंने कहा, पीएम को सामाजिक और आर्थिक कदम उठाने होंगे तथा बिना समय गंवाए साहसिक फैसले लेने होंगे। चिदंबरम ने कहा, कल मुझे लगा कि प्रधानमंत्री हालात जांच रहे हैं।

क्वारंटाइन से बचने का प्रयास कर रहे यात्रियों के लिए सुरक्षा कड़ी की

नई दिल्ली, आइएएनएस : विदेश से आए यात्रियों के लिए 14 दिन के क्वारंटाइन से बच निकलना मुश्किल होगा। हवाई अड्डे और सभी बड़े रेलवे स्टेशनों पर सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। देश भर में विदेशी और विदेश से लौटे भारतीय यात्रियों पर कड़ी नजर रखी जा रही है। ये यात्री महानगरों में ट्रेनों में सवार होते हैं। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) और उसकी खुफिया शाखा ने दो सप्ताह के क्वारंटाइन से बचने का प्रयास करने वाले कई यात्रियों को रोकने का काम किया है। ये यात्री विभिन्न हवाई अड्डों से बच निकले और ट्रेन में सवार होने में सफल रहे। आरपीएफ के महानिदेशक अरुण कुमार ने इस तरह के मामले का ताजा उदाहरण देते हुए कहा कि ऐसे एक यात्री को असम सीमा पर रोका गया।

घर वापसी

अजय देवगन की बेटी और इरफान खान के बेटे ने की मुंबई वापसी, फिल्मकार अश्विनी अय्यर तिवारी ने की एहतियात बरतने की अपील

अभिनेता अनुपम खेर व कई स्टार किड स्वदेश लौटे

एंटरटेनमेंट ब्यूरो, मुंबई

कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप के बीच अभिनेत्री सोनम कपूर आहूजा, उनके पति आनंद आहूजा व भजन गायक अनूप जलोटा की स्वदेश वापसी के बाद अब अभिनेता अनुपम खेर भी मुंबई लौट आए हैं। उनके अलावा विदेश में पढ़ाई कर रहे कई स्टार किड ने भी वतन वापसी की है। इनमें अभिनेता इरफान खान के बेटे बाबिल, अभिनेता अजय देवगन और अभिनेत्री काजोल की बेटी न्यासा शामिल हैं। फिल्म निर्माता बोनी कपूर की बेटी खुशी हाल ही में न्यूयॉर्क से लौटी हैं। बाबिल लंदन और न्यासा सिंगापुर में पढ़ाई कर रहे हैं।

अपने शो न्यू एम्सटर्डम की शूटिंग पूरी करने के बाद शुक्रवार को अमेरिका से लौटे अनुपम खेर ने मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे का वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया। उन्होंने लिखा, 'आखिरकार चार महीने बाद न्यूयॉर्क से मुंबई वापसी हो गई। यह देखकर बहुत खुशी हुई कि हवाईअड्डे पर हमारे अधिकारी सख्ती, लेकिन विनम्रता और सक्षमता के साथ कोरोना की स्थिति से निपट रहे हैं। भारत वास्तव में एक उदाहरण पेश कर रहा है कि संकट से कैसे निपटना चाहिए। अधिकारियों और लोगों पर गर्व है।'

लंदन में फंसे बाबिल गुरुवार को मुंबई पहुंचे। इरफान की पत्नी सुतापा ने बेटे की सुरक्षित वापसी की दुआ के लिए शुभचिंतकों का शुक्रिया अदा किया है। काजोल बेटी न्यासा के साथ बुधवार रात मुंबई हवाईअड्डे पर नजर आई थीं। खबरों के मुताबिक, न्यासा सिंगापुर से लौटी थीं।

फिल्मकार व लेखिका अश्विनी अय्यर तिवारी ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'अगर शिक्षित लोग कोरोना महामारी की गंभीरता को नहीं समझेंगे, खुद को क्वारंटाइन करने का फैसला नहीं लेंगे, कहेंगे कि चलता है, कुछ नहीं होगा का ऐटीट्यूड रखेंगे तो हम स्थिति को नियंत्रण से बाहर होता देखेंगे। आइए हम, अपने, मैं सब जानता हूं के अहम को एक तरफ रखें और जिम्मेदारी से भारत को वापस सामान्य होने में मदद करें।'

अनुपम खेर। फाइल

नमस्कार। मैं चाहता हूं कि सभी लोग सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचें। जरूरी न हो तो ट्रेन और बसों में सफर न करें। आने वाले 10-15 दिन बहुत ही मुश्किल भरे हैं। इस मुश्किल वक्त से लड़ने के लिए सरकार और लोगों को साथ कोशिश करनी होगी। घबराएं नहीं। अफवाहों से सावधान रहें। जो निर्देश राज्य सरकार द्वारा दिए जा रहे हैं, उनका पालन करें।

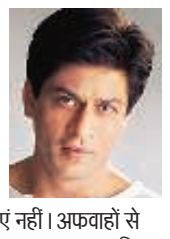

शाह रुख खान, अभिनेता

कान फिल्म फिल्म फेस्टिवल स्थगित : कोरोना के प्रकोप के कारण फ्रांस में आयोजित होने वाला कान फिल्म फेस्टिवल फिलहाल स्थगित कर दिया गया है। सोशल मीडिया पर कान फिल्म फेस्टिवल के आधिकारिक अकाउंट पर यह जानकारी दी गई। 73वां कान फिल्म फेस्टिवल 12-23 मई के बीच आयोजित होना था। हालात के अनुरूप इसका आयोजन अब जून के अंतिम या जुलाई के प्रथम सप्ताह में हो सकता है।

ऋषि कपूर को सताई पाकिस्तान की चिंता

अभिनेता ऋषि कपूर ने गुरुवार देर रात पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान से अपील करते हुए कहा कि वे अपने नागरिकों को सावधानी बरतने की सलाह दें। उन्होंने ट्वीट किया, 'पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान को भी अपने देश को पर्याप्त सावधानी बरतने की सलाह देनी चाहिए। पाकिस्तान के लोग भी हमें बेहद प्रिय हैं। वैसे भी एक वक्त पर हम एक ही थे। यह एक वैश्विक संकट है। इसमें कोई अहंकार वाली बात नहीं। मानवता जिंदाबाद।' इस पर पाकिस्तानी सिंगर शफकत अमानत अली ने लिखा, 'आपकी शुभकामनाओं के लिए बहुत धन्यवाद। आप सही हैं। इसमें हम सभी एकसाथ हैं और यह देशों नहीं, बल्कि मानवता के बारे में है। मानवता जिंदाबाद। उम्मीद है इस खतरे को हम जल्द दूर कर देंगे। प्यार और ढेर सारी शुभकामनाएं।'

ड्यूटी पर मुस्तैद रहेगी, लेकिन फासले से मिलेगी पुलिस

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

कोरोना वायरस के संक्रमण ने उत्तर प्रदेश पुलिस के सामने पहली बार वह चुनौती खड़ी की है, जब उसे खुद को बचाते हुए दूसरों की सेवा में डटे रहना है। पुलिस व पीएसी में कोरोना वायरस के संक्रमण से निपटने के लिए खास कदम उठाए गए हैं। पुलिसकर्मी ड्यूटी पर मुस्तैद तो रहेंगे, लेकिन अब जरा फासले से मिलेंगे।

डायल 112 की पीआरवी (पुलिस रिस्पांस व्हीकल) को भी भीड़भाड़ से दूर खड़ा करने की रणनीति बनाई गई है। डीजीपी मुख्यालय से लेकर पुलिस की सभा शाखाओं में विशेष सतर्कता बरती जा रही है। एडीजी (112) असीम अरुण ने बताया कि पुलिसकर्मियों को खुद को सुरक्षित रखते हुए दूसरों की मदद के लिए प्रेरित किया जा रहा है। पीआरवी पर तैनात पुलिसकर्मियों को खांसी-बुखार या ऐसे अन्य लक्षण होने पर तत्काल छुट्टी लेकर चिकित्सकीय सलाह लेने के निर्देश भी दिए गए हैं।

किसी घटना की सूचना पर पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचने पर पूरी सावधानी बरतने के साथ ही पीआरवी वाहनों को हर शिफ्ट भीतर से भी अच्छी तरह से साफ करने का निर्देश दिया गया है।

एसडीआरएफ के जवान भी संभालेंगे मोर्चा : पुलिस के साथ राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के जवान भी मोर्चा संभालेंगे। एडीजी पीएसी बिनोद कुमार सिंह ने बताया कि एसडीआरएफ की चार टुकड़ियां बनाई गई हैं, जिनमें करीब 150 जवान शामिल हैं। यह टुकड़ियां लखनऊ व गौतमबुद्धनगर पुलिस कमिश्नरेट के अलावा मेरठ व गोरखपुर भेजा जा रही हैं। टुकड़ियां मेडिकल उपकरणों से लैस होंगी और उनके साथ चिकित्सक भी होंगे ताकि आपात स्थिति का सामना किया जा सके।

श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर 24 मार्च तक बंद : इस बीच, कोरोना वायरस के प्रकोप को देखते हुए श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर 24 मार्च तक बंद कर दिया गया। मंदिर में दर्शनार्थियों के प्रवेश पर पूरी तरह रोक रहेगी। नियमित पूजा आरती के लिए अर्चकों को प्रवेश दिया जाएगा। स्थिति को देखते हुए मंदिर प्रशासन ने 21 मार्च से रोक लागू करने का शुक्रवार को निर्णय ले लिया। मुख्य कार्यपालक अधिकारी विशाल सिंह ने बताया कि अर्चक, कर्मचारी व सुरक्षाकर्मी भी इस रोक से मुक्त रहेंगे।

22 मार्च देर रात डेढ़ बजे से सभी अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक उड़ानों के देश में उतरने पर एक हफ्ते के लिए प्रतिबंध लगा दिया है भारत सरकार ने। कोरोना के बढ़ते खतरे को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शनिवार 21 मार्च 2020

सजगता, सतर्कता से दें कोरोना को शिकस्त

कोरोना के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए अब दुनिया की निगाहें भारत की ओर टिकी हैं। यही वजह है कि सजगता और चैतन्यता की अपील प्रधानमंत्री तक कर रहे हैं। इसकी कई वजहें हैं। दुनियाभर की तमाम स्टडीज ने कोरोना की रोकथाम के लिए भारत के उठाए गए कदमों की सराहना की है, लेकिन तीसरे चरण को काफी गंभीर माना जा रहा है। वाशिंगटन स्थित एक शोध केंद्र ने आशंका जताई है कि भारत की आधी से अधिक आबादी तक कोरोना का संक्रमण पहुंच सकता है। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया है कि इसमें अधिकतर को सामान्य संक्रमण ही होने की आशंका है जो आसानी से ठीक हो जाए। लेकिन, सजगता और खुद को क्वारंटाइन करने से इस स्थिति को भी रोका जा सकता है।

प्रकोप का व्यापक फैलाव संभव

अमेरिका की प्रिंस्टेन यूनिवर्सिटी के लेक्चरर और वाशिंगटन स्थित सेंटर फॉर डिसीज डायनामिक्स, इकोनॉमिक्स एंड पॉलिसी के निदेशक रामानन लक्ष्मीनारायण ने एक हालिया इंटरव्यू में कहा कि खुद अमेरिका का आकलन है कि उनकी जनसंख्या की 20 से 60 फीसद तक की आबादी इस वायरस की चपेट में आ सकती है। ऐसे में अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत में भी यह आंकड़ा इसी के आसपास पहुंच सकता है। वे यह भी कहते हैं कि भारत सरकार इस भयावहता को समझती है। वह जानती है कि कोराना भारत में अभी गंभीर चरण में नहीं है। सामुदायिक संक्रमण को रोकने के लिए सरकार ने स्कूल, कॉलेज, सिनेमा, मल्टीप्लेक्स बंद कर दिया है। वो कहते हैं कि 17 मार्च तक के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार अभी 12 हजार से भी कम जांचें की गई हैं, अधिक से अधिक जांच हो तो आंकड़ा बढ़ सकता है।

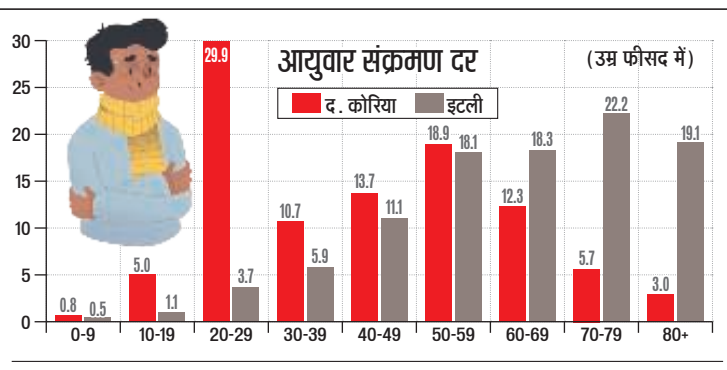

2.5 डब्ल्यूएचओ ने 23 जनवरी को माना था कि कोरोना का मरीज ढाई लोगों को संक्रमित करता है

4.0 अन्य शोध और अध्ययन ने फरवरी के अंत तक संक्रमण की दर 4 तक बढ़ने की बात कही

2.0 सार्स जैसे वायरस के मरीज की संक्रमण दर 2 व्यक्ति मानी गई थी। यानी एक मरीज ने और 2 को संक्रमित किया था।

1.3 सामान्य फ्लू के मरीज भी कम संक्रमण नहीं फैलाते। औसतन फ्लू का एक मरीज 1.3 लोगों को संक्रमित करता है

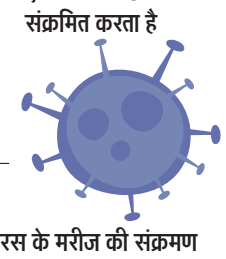

युवाओं में संक्रमण ज्यादा

ज्यादातर लोगों में यह भ्रम है कि यह वायरस ज्यादा उम्र वालों को ही निशाना बना रहा है। दक्षिण कोरिया ने आबादी के बहुत बड़े हिस्से की रैंडम जांच कराई जिसमें एक चौंकाने वाला तथ्य सामने आया। लगभग 30 फीसद कोरोना संक्रमित 20 से 29 वर्ष के बीच वाले थे। हालांकि मृत्यु दर बुजुर्गों की ही यहां भी ज्यादा थी। इस आधार पर यह मान लेना कि कोराना युवाओं या स्वस्थ लोगों को प्रभावित नहीं करता, गलत साबित हुआ। हालांकि इसका सुखद पहलू यह रहा कि युवकों की मौत का प्रतिशत यहां भी नगण्य था, जबकि सबसे अधिक मृत्यु दर 80 से अधिक उम्र वालों की ही रही।

महाराष्ट्र के चार शहर आज से बंद

महामारी का असर ▶ मुंबई, पुणे, नागपुर और पिंपरी-चिंचवण में अब मिलेंगी केवल अत्यावश्यक सेवाएं

राशन, दूध व दवा की दुकानें खुलेंगी, ट्रेन, बस, टैक्सी और आटो भी चलेंगे

राज्य ब्यूरो, मुंबई

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने राज्य के चार महानगरों को शनिवार से बंद करने का निर्णय किया है। मुंबई, नागपुर, पुणे एवं पिंपरी-चिंचवण में अत्यावश्यक सेवाओं को छोड़ बाकी सबकुछ 31 मार्च तक बंद रहेगा। राज्य में कोरोना संक्रमितों की बढ़ती संख्या को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने राज्य की जनता को फेसबुक के जरिए संबोधित किया। उन्होंने कहा कि कोरोना से मुकाबले के लिए अगले 15 दिन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए मुंबई, पुणे, पिंपरी-चिंचवण एवं नागपुर में जीवन आवश्यक सेवाएं छोड़ सभी दुकानें एवं निजी क्षेत्र के कार्यालय बंद रहेंगे। सरकारी कार्यालयों में भी उपस्थिति 25 फीसद तक ही सीमित रखने का निर्णय किया गया है। राशन, दूध, दवा की दुकानें, बैंक, शेयर बाजार एवं अन्य आवश्यक वित्तीय सेवाएं, लोकल ट्रेन, बसें एवं आटो-टैक्सी जैसे परिवहन के साधन चालू रहेंगे। यह बंदी शुक्रवार मध्यरात्रि से शुरू हो जाएगी।

मुख्यमंत्री ने यह चेतावनी भी दी है कि यह बंदी घूमने-फिरने के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ घर में ही रहने के लिए दी जा रही है। यह एक तरह का बंधन है, जिसका पालन करना ही होगा। उद्धव ठाकरे ने कहा कि जिंदा रहने के लिए लोग संघर्ष करते हैं। आज जिंदा रहने के लिए घर पर रहने की जरूरत है। पूरी दुनिया आज घर पर रह रही है। इसलिए आप भी घर पर रहिए। यह युद्ध है। संपर्क एवं संसर्ग से बचकर ही यह युद्ध जीता जा सकता है।

मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने कहा कि कई लोगों से ट्रेन एवं बसें बंद करने की सलाह मिल रही है। लेकिन महानगरपालिका के कर्मचारी, सफाई कर्मचारी, डॉक्टर, एंबुलेंस पर काम करनेवाले कर्मचारी तथा ऐसी ही अन्य सेवाओं से जुड़े लोग इन्हीं सार्वजनिक परिवहन साधनों का उपयोग करके अपने काम पर पहुंच रहे हैं। इसलिए इन सेवाओं को बंद करने का निर्णय नहीं किया जा रहा है।

भीड़ और कम करने की जरूरत : उद्धव ने कहा कि उनके द्वारा भीड़भाड़ कम करने की अपील का असर हुआ है। मुंबई की लोकल ट्रेनों एवं सड़कों पर भीड़ काफी कम हुई है। लेकिन इसे और कम करने की आवश्यकता है। खासतौर से ऐसे महानगरों में, जहां अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे हैं एवं विदेशों से लोग आते रहे हैं। इसीलिए बृहन्मुंबई महानगर के अंतर्गत आनेवाले मुंबई, ठाणे, कल्याण-डोंबीवली, नवी मुंबई, रायगढ़, पालघर तथा पुणे व इसके उपनगर पिंपरी-चिंचवण एवं नागपुर को बंद करने का निर्णय किया गया है। यहां केवल आवश्यकीय सेवाएं ही मिल पाएंगी।

मुंबई के डिब्बा वालों ने बंद की सेवा : चौबीसों घंटे चलती रहने वाली मुंबई के लोगों को टिफिन पहुंचाने वाले डिब्बावालों ने कोरोना वायरस के कारण शुक्रवार से अपनी सेवा 31 मार्च तक रोक दी हैं। डिब्बावालों की यूनियन के अनुसार, उन्होंने यह फैसला वायरस के डर के कारण लिया है। एएनआइ

कोरोना को हराना है

- निजी क्षेत्र के दफ्तर बंद रहेंगे, सरकारी कार्यालयों में काम करने सिर्फ 25 फीसद स्टाफ ही आएगा
- बंदी के दौरान लोगों को घरों में ही रहना होगा, घूमने-फिरने पर पाबंदी

कर्मचारियों का वेतन नहीं काटने का अनुरोध

मुख्यमंत्री ने असंगठित क्षेत्र से अपील की है, 'आप अपना कामकाज बंद रखने के बावजूद अपने कर्मचारियों का वेतन न काटें। उन्हें कामचलाऊ वेतन अवश्य दें। कोरोना एक संकट है। संकट में मानवता दिखनी चाहिए। यह आप दिखाइए। अपने कर्मचारियों को सहारा दीजिए। इस सहारे के आधार पर ही यह युद्ध जीता जा सकता है।' बता दें कि गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अपने संबोधन में निजी क्षेत्र से ऐसी ही अपील कर चुके हैं।

उत्तर प्रदेश में सभी मॉल दो अप्रैल तक बंद, धार्मिक-मांगलिक कार्यक्रम भी स्थगित

जेएनएन, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए उत्तर सरकार ने और एहतियाती कदम उठाने का फैसला लिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में सभी धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मांगलिक गतिविधियां व कार्यक्रम 2 अप्रैल तक स्थगित करने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने वैवाहिक कार्यक्रमों में आमंत्रितों की संख्या को 10 तक सीमित रखने का प्रयास करने को कहा है। सरकार ने प्रदेश में सभी मॉल को भी बंद करने का निर्देश दिया है। सरकारी अस्पतालों में अनावश्यक भीड़भाड़ रोकने के लिए 31 मार्च तक गैर-जरूरी ओपीडी व जांच को स्थगित रखने को कहा गया है। सरकारी अस्पतालों में केवल आकस्मिक सेवाएं प्रदान की जाएंगी। लखनऊ, नोएडा व कानपुर शहर को सैनिटाइज करने के निर्देश दिए गए हैं। तहसील दिवस, समाधान दिवस, मुख्यमंत्री आरोग्य मेला और जनता दर्शन का आयोजन भी दो अप्रैल तक स्थगित रहेगा।

लखनऊ में बार, रेस्टोरेंट, फूड स्टाल, कैफे और ढाबे बंद : शुक्रवार को लखनऊ में कई मरीजों के सामने आने के बाद प्रशासन ने सख्त कदम उठाते हुए जिले की सभी बार, कैफे और रेस्टोरेंट, फूड स्टाल और खाने-पीने की दुकानें 31 मार्च तक बंद करने के निर्देश दिए। यहां कोरोना वायरस की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है, जिसके चलते प्रशासन की ओर से सार्वजनिक स्थानों पर लोगों की आवाजाही रोकने के प्रयास किए जा रहे हैं। कोरोना के खतरे को देखते हुए जिले के सभी बार, कैफे, लाउंज, हेयर सैलून और ब्यूटी पार्लर रेस्टोरेंट, ढाबे सहित सड़क किनारे लगने वाले फूड स्टाल को भी बंद करने का आदेश दिया गया है। यह आदेश 31 मार्च तक लागू रहेगा। अगर किसी ने भी इस आदेश का उल्लंघन किया तो कार्रवाई की जाएगी। आवश्यक सेवाएं और चीजों की आपूर्ति बदस्तूर रहेगी। दवा की दुकानें, रसोई गैस, पेट्रोल पंप और खाद्यान की दुकानें खुली रहेंगी ताकि लोगों को दिक्कत न हो।

कांग्रेस नेता जितिन ने खुद को किया आइसोलेट : लखनऊ में जिस पार्टी में गायिका कनिका कपूर थीं, वहां पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं कांग्रेस नेता जितिन प्रसाद भी थे। शुक्रवार को गायिका में कोरोना वायरस की पुष्टि होने के बाद कांग्रेस नेता ने भी खुद को अपने घर में आइसोलेट कर लिया है। डीएम इंद्र विक्रम सिंह ने कहा कि कांग्रेस नेता जितिन प्रसाद लखनऊ में हुई पार्टी में शामिल होकर लौटे हैं। वह पूरी तरह स्वस्थ हैं। उन्हें व परिवार को होम क्वारंटाइन की सलाह दी गई है। कहा है कि जो भी लोग उनसे मिले हों, वे भी होम क्वारंटाइन हो जाएं।

बंगाल में विदेश से लौटने पर 14 दिनों का क्वारंटाइन अनिवार्य : कोलकाता में लंदन से लौटे दो युवकों के कोरोना वायरस संक्रमित होने की पुष्टि के बाद अब ममता सरकार ने सख्ती शुरू कर दी है। विदेश जो भी लोग अब कोलकाता पहुंचेंगे उन्हें 14 दिनों के लिए क्वारंटाइन में रहना अनिवार्य कर दिया गया है। ऐसा नहीं करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। बंगाल में लंदन से कोलकाता लौटे एक और युवक के शरीर में कोरोना का संक्रमण पाया गया है। यह राज्य में कोरोना का दूसरा पॉजिटिव केस है।

दुष्यंत से मिलने के बाद डेरेक ने खुद को किया क्वारंटाइन : भाजपा सांसद दुष्यंत सिंह के संपर्क में आने के बाद तृणमूल कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य डेरेक ओ ब्रायन सेल्फ क्वारंटाइन में चले गए। बताता चलें कि दुष्यंत भी सेल्फ आइसोलेशन में हैं।

ओडिशा में सैलून, ब्यूटीपार्लर, स्पा बंद : ओडिशा में दूसरे कोरोना मरीज की पहचान की गई है। परीक्षण किए गए 14 नमूनों में से गुरुवार की रात एक नमूना कोरोना पॉजिटिव पाया गया है। राज्य में कोरोना पॉजिटिव मरीजों की संख्या दो हो गई है।

राजस्थान में एक दिन में आठ नए मामले

राजस्थान में शुक्रवार को कोरोना वायरस से संक्रमित आठ नए लोग मिले है। इनमें भीलवाड़ा में एक प्राइवेट चिकित्सक सहित 6 लोग और जयपुर में अमेरिका से आई एक युवती और एक युवक शामिल है। एतिहातन भीलवाड़ा में कर्फ्यू लगा दिया गया है। सीमाएं सील कर दी गई है। राज्य में कोरोना पॉजिटिव की संख्या 17 हो गई है। इनमें से 3 इलाज के बाद स्वस्थ हो गए । वहीं कोरोना वायरस से पॉजिटिव पाए जाने पर इलाज के बाद स्वस्थ हुए इटली के 69 वर्षीय पर्यटक एंड्री कार्ली की हार्ट अटैक से शुक्रवार को मौत हो गई। अजमेर जिला प्रशासन द्वारा दरगाह कमेटी और दोनों अंजुमन के पदाधिकारियों की सहमति से सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह शुक्रवार से बंद कर दी है।

मप्र के जबलुर में मिले चार कोरोना पॉजिटिव

मध्य प्रदेश के जबलपुर में चार मरीज कोरोना पॉजीटिव मिले हैं। ये सभी चार-पांच दिन पहले दुबई से लौटे थे। मरीजों के स्वजन को भी क्वारंटाइन किया जाएगा। उन लोगों की भी जानकारी जुटाई जा रही है, जिनसे इन्होंने मुलाकात की थी। वहीं सागर जिला अस्पताल में यदि कोई कोरोना मरीज भर्ती हुआ तो उसका इलाज करने वाले डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ 14 दिन तक घर नहीं जा सकेगा। इसके अतिरिक्त जेल विभाग ने कैदियों की उनके स्वजन से मुलाकात पर 31 मार्च तक के लिए रोक लगा दी है।

कनिका कपूर विदेश से आईं और एयरपोर्ट पर बिना जांच कराए पहुंच गईं लखनऊ

जागरण संवाददाता, लखनऊ

- साथ सफर करने वाले 300 यात्रियों पर खतरा, पता लगाने में जुटी एयर इंडिया
- गायिका की चूक ने डाली विमान यात्रियों की जान जोखिम में

गायिका कनिका कपूर के लंदन से मुंबई और फिर वहां से लखनऊ तक के विमान के सफर में कई स्तर पर चूक हुई। इस चूक ने जहां उनके साथ सफर करने वाले करीब 300 यात्रियों और 30 से अधिक क्रू स्टाफ के जीवन को खतरे में डाल दिया है। वहीं, उनको क्वारंटाइन करने की कवायद भी धरी रह गई। अब एयर इंडिया उन यात्रियों का पता लगाने में जुट गया है, जिन्होंने पहले लंदन से मुंबई और फिर मुंबई से लखनऊ तक की यात्रा कनिका कपूर के साथ की। खासतौर पर वह यात्री जो कनिका कपूर की सीट के आसपास बैठे थे। उनकी डिटेल निकाली जा रही है।

कनिका कपूर ने 9 मार्च को लंदन से एयर इंडिया एक्सप्रेस के विमान एआइ-130 से मुंबई के लिए उड़ान भरी थी। 10 मार्च को इस विमान से करीब 160 यात्री मुंबई उतरे थे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की गाइड लाइन के तहत कनिका कपूर का मुंबई एयरपोर्ट पर थर्मल स्कैनिंग से जांच की जानी थी। यहां जांच के बाद विदेश से आने के कारण उन्हें क्वारंटाइन में रखा जाना चाहिए था। इंटरनेशनल विमान से मुंबई पहुंचने के करीब चार घंटे के बाद पहली विमान एयर इंडिया की थी। विमान नंबर एआइ-625 से कनिका कपूर ने 11 मार्च की सुबह 8:15 बजे मुंबई से लखनऊ के लिए उड़ान भरी थी। इस विमान में भी क्रू सदस्यों सहित 140 यात्री सवार थे।

सुबह 10:25 बजे कनिका कपूर का विमान लखनऊ के चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के घरेलू टर्मिनल पर उतरा था। चूंकि लंदन से कनिका एयर इंडिया एक्सप्रेस के विमान से मुंबई आईं थीं। उनका सामान इस विमान से एयर इंडिया में दोबारा लोड किया गया। विमान के लखनऊ पहुंचने के बाद घरेलू टर्मिनल से कनिका कपूर बिना जांच के बाहर निकल आईं। एयरपोर्ट अधिकारियों के अनुसार, यहां घरेलू विमानों की जांच नहीं की जा रही है।

केंद्र ने दिए कांटेक्ट ट्रेसिंग शुरू किए जाने के संकेत

नई दिल्ली, आइएएनएस : केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने शुक्रवार को संकेत दिए कि बॉलीवुड गायिका कनिका कपूर की कांटेक्ट ट्रेसिंग (किन-किन लोगों के संपर्क में आईं) शुरू कर दी गई है। कनिका को शुक्रवार को ही कोरोना पॉजिटिव घोषित किया गया।

संयुक्त स्वास्थ्य सचिव लव अग्रवाल ने कहा, 'कांटेक्ट ट्रेसिंग हमारा तत्कालिक प्रोटोकॉल है। जैसे ही हमें केस (कोरोना वायरस पॉजिटिव) के बारे में पता चलता है यह शुरू हो जाता है।' उन्होंने आगे कहा कि अगर एक भी मामला हमसे छूट गया तो हम उसी स्थिति में पहुंच जाएंगे जहां दो महीने पहले थे। इसीलिए यह बेहद जरूरी है कि हम वायरस ट्रांसमिशन की श्रृंखला तोड़ दें।

बेटे के पॉजिटिव पाए जाने की जानकारी छिपाने वाली रेल अधिकारी निलंबित

नई दिल्ली, प्रेट्र : दक्षिण पश्चिम रेलवे की अधिकारी को बेंगलुरु में रेलवे रेस्ट हाउस में अपने बेटे की कोरोना वायरस की जांच पॉजिटिव पाए जाने की जानकारी छिपाने के कारण निलंबित कर दिया गया है। अधिकारी के बेटे की जर्मनी से लौटने के बाद जांच कराई गई थी। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

रेलवे के प्रवक्ता ई. विजय ने बताया कि अधिकारी न केवल अपने बेटे के जर्मनी से लौटने के बारे में सूचित करने में विफल रही, बल्कि मुख्य बेंगलुरु रेलवे स्टेशन के समीप रेलवे रेस्ट हाउस में ठहरकर दूसरों की जिंदगी भी खतरे में डाल दी। प्रवक्ता ने कहा कि सहायक कार्मिक अधिकारी (यातायात) को निलंबित कर दिया गया है।

रेल अधिकारी का 25 वर्षीय पुत्र स्पेन के रास्ते जर्मनी से लौटा था। 13 मार्च को बेंगलुरु में केंपेगोड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचने के बाद उसे घर में क्वारंटाइन रहने के लिए कहा गया था। बाद में 18 मार्च को कोविड-19 के लिए की गई जांच में वह पॉजिटिव पाया गया। दक्षिण पश्चिम रेलवे के एक अधिकारी ने कहा, 'अपने परिवार को बचाने के लिए उन्होंने बेटे के बारे में जानकारी छिपाई, लेकिन हम सभी को खतरे में डाल दिया।'

- स्पेन के रास्ते जर्मनी से लौटे बेटे के साथ रेलवे रेस्ट हाउस में ठहरी थी अधिकारी

कार्यालय के भी लगाए थे चक्कर

एक बयान में विजय ने कहा है कि कर्नाटक महामारी (कर्नाटक संक्रामक बीमारी कोविड-19 नियमन 2020) अधिनियम के अनुसार, कोविड-19 से प्रभावित किसी देश की यात्रा करने वाला या संक्रमित के संपर्क में आने वाले व्यक्ति को भी संक्रमित घोषित किया जाएगा और उसकी सूचना तत्काल ही कर्नाटक के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग को दी जाएगी। अधिकारी जर्मनी से स्पेन के रास्ते लौटे अपने बेटे के संपर्क में आई और उन्होंने राज्य सरकार या रेलवे को इसके बारे में सूचना नहीं दी। अधिकारी ने अपने बेटे को सरकारी रेस्ट हाउस में क्वारंटाइन में रखने का फैसला लिया और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर खतरा पैदा किया। निलंबित अधिकारी अपने कार्यालय भी गईं। प्रवक्ता ने कहा कि सतर्कता के तहत रेस्ट हाउस को बंद कर दिया गया है और सफाई कर्मचारियों को क्वारंटाइन में रखा गया है। वहां ठहरने वाले अधिकारियों, लोगों और उनके परिवार को सूचित किया गया है।

भारत में डॉक्टरों की कमी चिंतित करने वाली

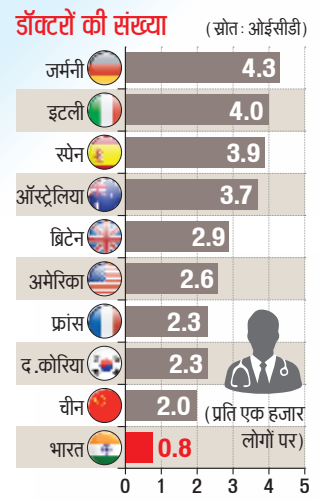

चौंकाते हैं आंकड़े ओईसीडी के हालिया आंकड़े बताते हैं कि दुनिया के कई देशों में डॉक्टरों की संख्या प्रति एक हजार लोगों पर बहुत ही कम हैं। जर्मनी में सर्वाधिक प्रति एक हजार लोगों पर 4.3 डॉक्टर और स्पेन में 3.9 डॉक्टर हैं। अमेरिका में डॉक्टरों की संख्या 2.9 से कुछ कम है। चीन में प्रति एक हजार लोगों पर करीब दो डॉक्टर हैं। वहीं दुनिया के प्रमुख देशों में भारत की स्थिति सबसे खराब है।

कोविड-19 का प्रकोप दुनिया के दूसरे कई देशों के बाद अब भारत की परेशानियों को बढ़ा रहा है। ऐसे में चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े लोगों की ओर दुनिया उम्मीदों से देख रही है। दुनिया के लगभग हर देश में डॉक्टर, नर्स और अन्य चिकित्सा कर्मी मरीजों के इलाज के लिए और इस महामारी से निपटने के लिए लगातार काम में जुटे हैं। इसके चलते कई बार वे खुद भी संक्रमित हो जाते हैं। जैसे-जैसे दुनिया में स्थितियां बिगड़ रही हैं चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े लोगों की चुनौतियां भी बढ़ रही है। ऐसे में आबादी के हिसाब से दुनिया के प्रमुख देशों में कितने डॉक्टर हैं, ये जानना जरूरी है।

उपाय पर विचार

आपातकालीन परिस्थितियों में विशेष उड़ान का भी इंतजाम कर सकती है सरकार, विदेशी नागरिकों की सुविधाओं को देखते हुए उनकी वीजा अवधि बढ़ाने का फैसला

विदेश में फंसे भारतीयों को राहत पहुंचाने की तैयारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

विदेश में फंसे भारतीयों को सुरक्षित घर तक लाने के लिए सरकार कई विकल्पों पर विचार कर रही है। खास तौर पर ऐसे भारतीय जो उन शहरों में अलग-थलग पड़ गए हैं, जहां से अंतरराष्ट्रीय उड़ानें बंद कर दी गई हैं, उन्हें मदद देने के लिए सरकार प्रवासी भारतीयों की मदद लेने जा रही है।

विदेश मंत्रालय के तमाम मिशन व दूतावासों के जरिये हवाई अड्डों या विश्वविद्यालयों या होटलों में फंसे भारतीयों को राहत सामग्री पहुंचाने के लिए एनआरआइ का सहयोग लेने पर विचार किया जा रहा है। 22 मार्च से अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर प्रतिबंध लगने के बावजूद सरकार आपातकालीन परिस्थितियों में विदेश में फंसे भारतीयों को स्वदेश लाने के लिए विशेष उड़ान का भी इंतजाम कर सकती है।

उधर, केंद्र सरकार ने देश में रहने वाले विदेशी नागरिकों की सुविधाओं को देखते हुए उनकी वीजा अवधि भी बढ़ाने का फैसला किया है। सरकार की तरफ से जारी सूचना के मुताबिक ऐसे विदेशी नागरिक जो अभी भारत में हैं और उनकी वीजा की अवधि 13 से 15 मार्च के बीच खत्म हो रही थी, उसे अब 15 अप्रैल, 2020 तक के लिए बढ़ा दिया गया है। इसके तहत रेगुलर वीजा लेने वाले या ई-वीजा लेने या निवास वीजा रखने वाले विदेशी नागरिकों को शामिल किया जाएगा।

सरकार ने यह भी कहा है कि इन नागरिकों पर कोई अतिरिक्त शुल्क भी नहीं लगाया जाएगा। सनद रहे कि केंद्र सरकार की तरफ से 11 मार्च और 13 मार्च को दो अधिसूचनाएं जारी की गई हैं, जिनमें कहा गया है कि कोविड-19 के मद्देनजर 14 मार्च के बाद सभी भारतीय वीजा रद कर दिया गया है। शुक्रवार को सरकार की तरफ से जारी सूचना से भारत में रहने वाले विदेशी नागरिकों को काफी राहत मिलेगी।

एनआरआइ की ली जाएगी मदद

उधर, विदेश मंत्रालय के सूत्रों ने बताया है कि विदेश में जो भारतीय फंसे हुए हैं, उन्हें निकालने के लिए सुनियोजित प्लानिंग होगी। अभी जो सूचना आ रही है, उसके मुताबिक इंग्लैंड, यूरोपीय संघ के तमाम देशों और दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में भारतीय फंसे हुए हैं। कई देशों में पूरी तरह से लॉक डाउन हो चुका है और वहां भारतीय फंसे हुए हैं। कोशिश है कि पहले एनआरआइ की मदद से उन भारतीयों को जरूरी खाद्य सामग्री, पेयजल, दवाइयां आदि पहुंचाई जाए। इन सभी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय हैं, जो काफी प्रभावशाली भी हैं। इसके बाद उन्हें बाहर निकालने की कोशिश होगी। यह भी विचार किया जा रहा है कि आस-पास के देशों में फंसे भारतीयों को किसी एक हवाई अड्डे पर जुटाया जाए और फिर उन्हें वहां से बाहर निकाला जाए। जैसे यूरोपीय संघ में फंसे भारतीयों को हॉलैंड से और दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में फंसे भारतीयों को मलेशिया से निकालने का विकल्प है।

यूपीएससी ने सिविल सेवाओं का साक्षात्कार स्थगित किया

नई दिल्ली, प्रेट्र : संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने कोरोना के प्रसार पर रोक लगाने के एहतियाती उपाय के तहत 2019 की सिविल सेवा परीक्षा का साक्षात्कार स्थगित कर दिया है। कार्मिक मंत्रालय द्वारा जारी बयान में कहा गया है कि साक्षात्कार की नई तारीखों से अभ्यर्थियों को बाद में अवगत करा दिया जाएगा।

बयान में कहा गया है कि कोविड-19 के कारण, एहतियात के तौर पर यूपीएससी ने 23 मार्च, 2020 से 3 अप्रैल, 2020 तक सिविल सेवा (मुख्य) परीक्षा 2019 के अभ्यर्थियों के व्यक्तित्व परीक्षण को टाल दिया है। बता दें कि यूपीएससी हर साल तीन स्तरों (प्रारंभिक, मुख्य और साक्षात्कार) पर परीक्षा का आयोजन करता है। इस परीक्षा से भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा और भारतीय विदेश सेवा समेत अन्य सेवाओं के लिए अधिकारियों का चयन किया जाता है।

कनिका ने कहा, चार दिन पहले ही पता चला

प्रथम पृष्ठ से आगे

चारों ओर से खुद को घिरते देख गायिका कनिका कपूर एक न्यूज चैनल के संपर्क में आईं। इस दौरान उन्होंने विदेश से लौटने पर 14 दिन तक क्वारंटाइन का पालन न करने के सवाल पर जानकारी होने से ही इन्कार कर दिया। खुद की शिक्षा का बार-बार हवाला भी देती रहीं। कहा कि वह एयरपोर्ट से छिपकर बाहर नहीं निकलीं। कनिका ने सैंपलिंग व्यवस्था पर भी सवाल खड़े किए। चार दिन से बीमारी के लक्षण थे। तीन दिन पहले सीएमओ व अन्य अफसरों को कॉल किया। गुरुवार शाम को सैंपलिंग हुई, शुक्रवार को रिपोर्ट आ सकी तब वायरस का पता चला।

शामिल सभी को आइसोलेशन में रखेगी सरकार : कोरोना वायरस से संक्रमित गायिका कनिका कपूर के तीन कार्यक्रमों में शामिल होने वाले लोगों को चिह्नित कर राज्य सरकार ने उनको आइसोलेशन में रखने का निर्देश दिया है। इन व्यक्तियों की स्वास्थ्य संबंधी सभी जरूरी जांचें कराने का भी निर्देश दिया है।

कोरोना से नहीं हुई इटली के नागरिक की मौत

प्रथम पृष्ठ से आगे

स्वास्थ्य मंत्रालय ने जयपुर में इटली के एक नागरिक की मौत को कोरोना के कारण हुई मौत मानने से इन्कार कर दिया। लव अग्रवाल ने कहा कि जयपुर के मरीज को पहले कोरोना जरूर हुआ था, लेकिन इलाज के बाद दो बार टेस्ट में वह कोरोना निगेटिव निकला। उसके बाद उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई थी। 70 साल की उम्र का इटली का यह नागरिक चेन स्मोकर यानी लगातार धूमपान करने वाला भी था और कई अन्य बीमारियों से पहले से ग्रसित था। इसी सिलसिले में एक अन्य अस्पताल में इलाज के दौरान हार्ट अटैक से उसकी मौत हो गई।

कोरोना के टीके को लेकर उम्मीदों के बीच उठते सवाल

कोरोना के कहर से दुनिया परेशान है। ऐसे में इस बीमारी से निपटने के कई तौर-तरीके अपनाए जा रहे हैं और नए शोध भी किए जा रहे हैं। शोध में सबसे अहम है इस रोग से निरोधक टीका विकसित करना। इस दिशा में कदम बढ़ चुके हैं। पिछले सप्ताह इसका मानवीय परीक्षण भी शुरू हुआ। लेकिन, टीका को लेकर कुछ आशंकाएं और चिंताएं कायम हैं। आइए जानते हैं, वे कौन से सवाल हैं, जो वैज्ञानिकों के दिमाग को मथ रहे हैं?

क्या टीका लोगों में प्रतिरोधक क्षमता पैदा करेगा?

टीका किसी भी रोग के संक्रमण के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता पैदा करता है। शोधकर्ता मानते हैं कि सार्स-कोरोना वायरस-2 के संक्रमण से जो लोग ठीक हो चुके हैं उन्हें कुछ समय के लिए दोबारा संक्रमण से बचाया जा सकता है। लेकिन वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के वायरोलॉजिस्ट माइकल डायमंड का कहना है कि इसे सबूतों के आधार पर पुष्ट करना जरूरी है। अभी इस वायरस के प्रतिरोधक क्षमता के बारे में जानकारी नहीं है। हालांकि प्रीप्रिंट1 के 14 मार्च के एक ऑनलाइन पोस्ट में बताया गया है कि सार्स-कोरोना वायरस-2 से संक्रमित दो बंदरों के ठीक होने के चार सप्ताह बाद वैज्ञानिकों ने उन्हें दूसरी बार वायरस से संपर्क कराया गया तो वे संक्रमित नहीं हुए। अब वैज्ञानिक इस बात का पता लगाने में जुटे हैं कि क्या यह रोग प्रतिरोधक क्षमता मानव में भी विकसित की जा सकती है।

यदि मानव में प्रतिरोधक क्षमता विकसित भी होती है तो कब तक टिकेगी?

अभी तक इस संबंध में कोई ठोस सबूत नहीं मिला है कि एक बार प्रतिरोधक क्षमता विकसित होने के बाद आगे यह कितनी कारगर होगी। यूनिवर्सिटी ऑफ आयोवा के कोरोना वायरोलॉजिस्ट स्टैनली पर्लमैन कहते हैं कि सामान्य सर्दी-जुकाम पैदा करने वाले कोरोना वायरस के लिए प्रतिरोधक क्षमता कम समय के लिए होती है, भले ही उस व्यक्ति में एंटीबॉडीज का उच्च स्तर ही क्यों न हो, फिर संक्रमित हो सकता है। इस संबंध में महामारी पैदा करने वाले दो अन्य कोरोना वायरस- एक्यूट रेस्परेटरी सिंड्रोम (सार्स) तथा मिडिल ईस्ट रेस्परेटरी सिंड्रोम (मर्स) से सबूत मिले हैं। शोध में पाया गया है कि मर्स संक्रमण से ठीक होने के बाद वायरस के प्रति एंटीबॉडीज में भारी कमी आई। यह भी पाया गया कि मर्स संक्रमण के 15 साल बाद भी शरीर में एंटीबॉडीज मौजूद हैं लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि यह प्रतिरोधक क्षमता दोबारा संक्रमण को रोक सकती है। अभी तक लंबे समय तक प्रतिरोधक क्षमता का सबूत नहीं मिला है।

तो किस प्रकार की प्रतिरोधक क्षमता वाले टीके खोजे जाने चाहिए?

कैंब्रिज मैसाचुसेट्स स्थित कंपनी मॉडर्न ने इसी सप्ताह फेज 1 का परीक्षण शुरू किया है। इसमें टीके की सेफ्टी पर ध्यान दिया गया है। लेकिन शोधकर्ताओं को टीके की प्रतिरोधक क्षमता की प्रकृति पर भी करीब से नजर रखनी है। मॉडर्न का टीका आरएनए मॉलिक्यूल युक्त है। सार्स-कोरोना वायरस-2 के लिए विकसित किए जा रहे टीका भी इस तरह का बनाया जा रहा है ताकि यह वैसा एंटीबॉडीज बना सके जो मानव कोशिका में प्रवेश करने वाले स्पाइक प्रोटीन की पहचान कर उसे रोक सके।

क्या ये टीके सुरक्षित होंगे?

सार्स-कोरोना वायरस-2 टीका विकसित कर रहे शोधकर्ताओं की मुख्य चिंता टीका से बढ़ने वाली बीमारियों को लेकर है। प्रायोगिक सार्स टीका के परीक्षण में पाया गया है कि टीके बाद वायरस के संक्रमण के बाद लिवर में हानिकारक जलन पैदा होती है। इसलिए, इस बात की चिंता की जा रही है कि पहले टीके का प्रयोग जानवरों पर करके रोग वृद्धि की आशंका को समाप्त किया जाए और उसके बाद ही मानव पर परीक्षण हो। ह्यूस्टन के बायलोर कॉलेज ऑफ मेडिसिन के वैज्ञानिक पीटर होटेज कहते हैं कि सार्स- कोरोना वायरस- 2 के टीके की अपरिहार्यता को समझते हैं लेकिन यह सुनिश्चित होना चाहिए कि टीके से रोग वृद्धि की संभावना नहीं हो। स्रोत: नेचर पत्रिका

कैसे पता चलेगा कि टीका काम करेगा या नहीं?

आमतौर पर टीके का मानव पर परीक्षण जानवरों पर उसकी सेफ्टी और असर को देखने के बाद किया जाता है। लेकिन मॉडर्न द्वारा विकसित किए जा रहे टीके का फेज 1 परीक्षण जानवर और इंसानों पर एक साथ किए जा रहे हैं। जबकि पेंसिल्वेनिया स्थित इनोवियो फॉर्मास्यूटिकल्स अप्रैल में पहला इंसानी परीक्षण शुरू करने वाली है। इनोवियो द्वारा विकसित किए जा रहे टीके का इस्तेमाल चूहों और सूअरों पर किया गया है। इसमें पाया गया है कि इन दोनों में वायरस के प्रति एंटीबॉडीज तथा टी सेल पैदा हुए हैं। अब इसका प्रयोग बंदरों पर किया जा रहा है। इसके बाद टीके लगे जानवरों पर यह देखा जाएगा कि वे संक्रमण से सुरक्षित हैं या नहीं। इस प्रयोग के बाद ही पता चलेगा कि टीका कारगर है या नहीं।

अगले तीन-चार हफ्ते बेहद महत्वपूर्ण : मोदी

सतर्कता ▶ प्रधानमंत्री ने मुख्यमंत्रियों को दी सलाह , कहा-बेवजह भ्रम फैलाने से रोकें

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

देश के नाम संबोधन के दूसरे दिन पीएम नरेंद्र मोदी ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से संवाद के जरिए समन्वय बनाने की कोशिश की। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में अगले तीन चार हफ्ते को बेहद महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने सोशल डिस्टेंसिंग (सामाजिक तौर पर दूरी बनाने) को सबसे अहम हथियार करार दिया।

उन्होंने मुख्यमंत्रियों से कहा वह अपने अपने राज्य में सोशल डिस्टेंसिंग को लागू करने पर सबसे ज्यादा ध्यान दें। मोदी ने कहा है कि कोरोना महामारी का खतरा सभी के राज्यों पर एक समान है और यह समझने की जरूरत है कि कोई भी इस खतरे से अछूता नहीं है। सभी नागरिकों का इसमें सहयोग चाहिए लेकिन बेवजह भय फैलाने की जरूरत नहीं है। इस महामारी को लेकर हमेशा सतर्क रहना ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।

पीएम ने राज्यों की तरफ से उठाये गये कदमों की सराहना की। साथ ही सुझाव दिया कि मुख्यमंत्री प्रदेश के व्यापारिक संगठनों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग कर कालाबाजारी रोकें। यह सुनिश्चित करें कि व्यापारी मौके का फायदा उठाकर जनता से ज्यादा कीमत न वसूलें। उन्हें समझाएं और इसके लिए राजी करें। जरूरी हो तो कानून का भी इस्तेमाल करें।

मुख्यमंत्रियों की तरफ से भी केंद्र के प्रयासों की सराहना की गई। देश के नाम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कोरोना वायरस से निपटने की तैयारियों को लेकर मुख्यमंत्रियों से वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से चर्चा की। इस दौरान उनके साथ केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन भी मौजूद थे। एएनआइ

उनके संबोधन से पड़ने वाले प्रभाव की भी प्रशंसा की गई। साथ ही आग्रह किया गया कि टेस्टिंग सुविधा को बढ़ाया जाए। साथ ही 2020-21 की वित्तीय सहायता जल्द दी जाए। उनकी ओर से निजी अस्पतालों और लैब को भी बड़ी संख्या में जोड़ने की आग्रह किया गया।

इस बैठक में स्वास्थ्य सचिव प्रीति सूदन ने कोरोनावायरस की रोकथाम के लिए राष्ट्रीय स्तर पर उठाये जाने वाले कदमों के बारे में बताया गया। सूदन ने बताया कि पीएम मोदी की व्यक्तिगत निगरानी में सारी व्यवस्था हो रही है। आईसीएमआर के डीजी डॉ. बलराम भार्गव ने बताया कि भारत में अभी इस बीमारी का दूसरा चरण है। हम इसे फेज-तीन में जाने से रोक सकते हैं। कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी केंद्र सरकार व प्रधानमंत्री मोदी को अभी तक के उपायों पर धन्यवाद दिया और अपने राज्यों में उठाए जाने वाले कदमों की जानकारी दी और कहा कि वह जनता के हित में काम करते रहेंगे।

कोरोना वायरस से लड़ाई में मलेरिया की दवा को लेकर बढ़ी रुचि

नीलू रंजन, नई दिल्ली

- 2002 में फैले सार्स वायरस के खिलाफ क्लोरोक्वीन के प्रभावी होने के मिले थे प्रमाण
- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कोरोना के मरीजों के इलाज में भी इसे बताया प्रभावी

हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन की कीमत में तीन गुना बढ़ोतरी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : कोरोना वायरस के इलाज में कारगर साबित हो रही क्लोरोक्वीन दवा के बल्क ड्रग्स की कीमत में तीन गुना बढ़ोतरी हो गई है।

हिमाचल ड्रग मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन के सलाहकार सतीश सिंगला ने बताया कि क्लोरोक्वीन दवा बनाने में हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन बल्क ड्रग का इस्तेमाल होता है। उन्होंने बताया कि 10 दिन पहले तक हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन की कीमत 6000-7000 रुपये प्रति किलोग्राम थी जो बढ़कर 18,000 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है। उन्होंने बताया कि इन दिनों क्लोरोक्वीन बल्क ड्रग की भारी मांग है और इसे मनमानी कीमत पर बेचा जा रहा है जबकि इसकी कीमत एनपीपीए के तहत तय होती है। बताया जा रहा है कि क्लोरोक्वीन दवा के इस्तेमाल से कोरोना वायरस के इलाज में सफलता मिल रही है। इसके बाद से क्लोरोक्वीन दवा की भारी मांग बाजार में देखी जा रही है।

मलेरिया के इलाज के लिए 76 साल पहले आई दवा पूरी दुनिया में कोविड-19 के इलाज में प्रभावी होने को लेकर चर्चा में है। हालांकि भारत के वैज्ञानिकों में इसे लेकर चुप्पी है, लेकिन फ्रांस के वैज्ञानिकों द्वारा कोविड-19 के इलाज में क्लोरोक्वीन के कारगर होने के दावे के बाद अमेरिका में दवाओं की नियामक एजेंसी एफडीए और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी इस पर मुहर लगा दी है। भारत में भी जयपुर में इटली के कोरोना वायरस पीड़ित नागरिक के इलाज में एड्स की दवाओं के साथ-साथ क्लोरोक्वीन का इस्तेमाल किया गया था।

कोविड-19 के इलाज में क्लोरोक्वीन की तरफ दुनियाभर के वैज्ञानिकों का ध्यान यूं नहीं नहीं गया। दरअसल, कोविड-19 भी सार्स की तरह कोरोना फैमली का एक वायरस है। कोविड-19 वायरस का वैज्ञानिक नाम सार्स-कोव-दो है। इसीलिए इसे न्यू कोरोना वायरस भी कहा जाता है। 2002 में सार्स वायरस के 23 देशों में फैलने के बाद इसको लेकर दुनियाभर में शोध किए गए। इन शोधों के दौरान ही पता चला कि सार्स वायरस को रोकने में क्लोरोक्वीन काफी हद तक कामयाब है। शोध में सामने आया कि क्लोरोक्वीन मानव शरीर के भीतर कोशिका के ऊपर एक परत बना देता है। इस परत के कारण वायरस मानव कोशिका से जुड़ नहीं पाता है। परिणाम यह होता है कि वायरस को पनपने और कई गुना बढ़ने के लिए कोशिका से जरूरी प्रोटीन नहीं मिल पाता। इस कारण वायरस का प्रभाव सीमित हो जाता है।

चूंकि कोविड-19 की कोई निश्चित दवा नहीं है, इसीलिए इससे पीड़ित मरीजों के इलाज के कई दवाओं का एक साथ प्रयोग किया जाने लगा। सार्स वायरस के खिलाफ क्लोरोक्वीन के कारगर होने के कारण कोविड-19 के इलाज में इसे भी शामिल किया गया। लेकिन अभी तक यह साफ नहीं हो पाया है कि यह क्लोरोक्वीन कोविड-19 वायरस से ग्रसित होने के पहले काम करता है या फिर उसके बाद भी काम करता है। इसे लेकर अमेरिका से लेकर यूरोप तक में जांच शुरू हो गई है।

ध्यान देने की बात यह है कि क्लोरोक्वीन केवल कोरोना वायरस के खिलाफ कारगर साबित नहीं हो रही है। दूसरी बीमारियों के इलाज में यह कारगर साबित हो चुकी है। आर्थराइटिस और लीवर की एक प्रकार की बीमारी के इलाज में भी इसका इस्तेमाल लंबे समय से हो रहा है।

चीन के अनुभव से सीख रहा भारत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: चीन ने जिस तरह से कोरोना वायरस पर काबू पाने की कोशिश की है, उसके अनुभव से भारत भी काफी कुछ सीख रहा है। साथ ही भारत अपने अनुभव दक्षिण एशियाई देशों के अलावा दूसरे देशों से साझा भी कर रहा है। शुक्रवार को भी भारत ने कोरोना वायरस से लड़ने पर विमर्श करने के लिए चीन की तरफ से बुलाई गई बैठक में हिस्सा लिया। अमेरिका की तरफ से एशिया प्रशांत क्षेत्र में इस वायरस के रोकथाम पर बुलाई गई उच्चस्तरीय बैठक में विदेश सचिव हर्ष श्रृंगला ने हिस्सा लिया। इस बैठक में हिस्सा लेने वाले कोरिया, वियतनाम, न्यूजीलैंड व जापान से भारत ने यहां कोरोना वायरस को रोकने को लेकर जो भी कदम उठाए गए हैं, उस पर जानकारी दी।

स्वास्थ्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने बताया कि जब से चीन में इस वायरस का प्रकोप हुआ है, तभी से हम वहां की एक-एक गतिविधि पर नजर रखे हुए हैं। भारतीय दूतावास से वहां की हर छोटी बड़ी जानकारी मिल रही है, जिससे हमें यहां पर कोरोना के खिलाफ रणनीति बनाने में मदद मिली है। उधर, चीन की तरफ से जो वीडियो कांफ्रेंसिंग बुलाई गई थी, उसमें भी भारत के स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों ने हिस्सा लिया था। इस बैठक के बारे में भारत में चीन के राजदूत सुन वीडोंग ने कहा है कि चीन सरकार के पास जितनी भी क्षमता है, वह उसके साथ अपने सभी मित्र देशों को कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में मदद करने को तैयार है।

अपने घर में ही क्वारंटाइन की जिद न करें : रेड्डी

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय गृह राज्यमंत्री जी. किशन रेड्डी ने परिवार के सदस्यों से कोरोना वायरस से जूझ रहे देशों से आने वाले लोगों की जांच और क्वारंटाइन में रखने के सरकार के कदम का विरोध नहीं करने का आग्रह किया है। लोग अपने परिवार के सदस्य को घर में ही रखने का आग्रह कर रहे हैं। गृह राज्यमंत्री ने कहा कि जानलेवा वायरस का प्रसार रोकने की दिशा में उठाए जा रहे कदमों का विरोध करना उचित नहीं है।

रेड्डी ने संवाददाताओं से कहा, 'कोरोना वायरस से पीड़ित देशों से लौटने वाले भारतीयों की जांच की जा रही है और उन्हें यहां क्वारंटाइन में रखा जा रहा है। कुछ लोग इसका विरोध कर रहे हैं। माता-पिता अपने बच्चों को घर जाने देने का आग्रह कर रहे हैं। वे कहते हैं कि हम घर पर ध्यान रखेंगे। यह सही नहीं है। हम देश में बीमारी का संक्रमण रोकने के लिए कदम उठा रहे हैं। मैं सभी माता-पिता से प्रयास का समर्थन करने की अपील करता हूं।'

गृह राज्यमंत्री ने कहा कि विभिन्न हवाई अड्डों पर अभी तक 14.30 लाख यात्रियों की कोरोना वायरस की आशंका का पता लगाने के लिए जांच की गई है। देश में अभी जितने मामलों की पुष्टि हो चुकी है उसमें कई विदेशी नागरिक हैं। इलाज के बाद स्वस्थ हो चुके 20 से ज्यादा रोगियों को छुट्टी दे दी गई है। कई और लोगों के

जी किशन रेड्डी। फाइल

भारत के प्रयासों की तुलना चीन से नहीं की जा सकती

गृह राज्यमंत्री रेड्डी ने कहा कि कोरोना वायरस से निपटने के लिए भारत की तुलना चीन से नहीं की जा सकती। इसका कारण यह है कि चीन के पास सैन्य प्रणाली है जिसमें लोगों को सामाजिक दूरी बनाने के लिए बाध्य किया जा सकता है। हमारा देश दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। हमारे लिए संक्रमण रोकना जरूरी है। इससे बचाव का एक मात्र रास्ता है और वह -अत्यंत सावधानी और सामाजिक दूरी बनाए रखना है।

शुक्रवार को छुट्टी मिल जाने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि देश भर में करीब 69000 लोगों को घर में ही क्वारंटाइन में रखा गया है।

कोविड-19 टेस्ट किट्स के मूल्यांकन के लिए 14 कंपनियों को लाइसेंस

नई दिल्ली, प्रेट्र : कोविड-19 टेस्टिंग किट्स की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने के लिए ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (डीसीजीआइ) ने 14 निजी कंपनियों को लाइसेंस प्रदान किए हैं। इनमें स्विस कंपनी रोश डायग्नोस्टिक्स इंडिया भी शामिल है।

सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन (सीडीएससीओ) के अधिकारियों ने बताया कि बाकी 13 कंपनियां भारतीय हैं। इनमें अहमदाबाद की कोसारा डायग्नोस्टिक्स और चेन्नई की सीपीसी डायग्नोस्टिक्स शामिल हैं। ये सभी कंपनियां टेस्टिंग किट्स की गुणवत्ता का मूल्यांकन करेंगी और अपने डाटा डीसीजीआइ को सौंपेंगी। सीडीएससीओ के एक अधिकारी ने बताया, 'हम अब एक और निजी डायग्नोस्टिक्स कंपनी बायोमेरिक्स को लाइसेंस देने पर विचार कर रहे हैं। तीन अन्य कंपनियों के अलावा उसने भी इसकी मंजूरी मांगी है।'

यह कदम भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) की उस घोषणा के बाद उठाया गया है जिसमें कहा गया था कि देश में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों के बीच उसके परीक्षण की क्षमता बढ़ाने के लिए सिर्फ मान्यता प्राप्त लैब्स में ही टेस्ट कराए जाएंगे। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने निजी लैब्स से कोरोना वायरस का टेस्ट मुफ्त करने की अपील भी की थी।

कोरोना वायरस से लड़ने में पीएम के प्रयासों को संघ का समर्थन

जागरण संवाददाता, रांची

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह भय्याजी जोशी ने कहा है कि कोरोना वायरस जैसी महामारी से निपटने में प्रधानमंत्री के सभी प्रयासों का संघ समर्थन करता है। शुक्रवार को उन्होंने संदेश जारी कर कहा कि 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के दिन सभी स्वयंसेवक परिवार के साथ घरों में रहेंगे। सभी स्वयंसेवक समाज जागरण में अपनी भूमिका सुनिश्चित कर इस चुनौती का सामना करने में अपना योगदान देंगे। प्रधानमंत्री ने 60 वर्ष से ऊपर के लोगों को घरों से नहीं निकलने का आह्वान किया है। संघ ने इसका समर्थन करते हुए इस आयु से ऊपर के स्वयंसेवकों को घरों से नहीं निकलने को कहा है। 22 मार्च को लगने वाली संघ की शाखा के लिए तो कई स्थानों पर संदेश जारी किया जा रहा है कि उस दिन एक घंटे की शाखा की जगह केवल संघ की प्रार्थना कर सभी स्वयंसेवक घरों में लौट जाएं। कई राज्यों में तो पार्कों व मैदानों को बंद कर देने के कारण शाखा लगनी बंद हो गई है।

कोरोना वायरस से लड़ना सबसे बड़ी देशभक्ति : आरएसएस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि अभी शाखा लगाना नहीं, कोरोना वायरस से लड़ना ही सबसे बड़ी देशभक्ति है। स्वयंसेवकों को अपने को बचा कर रखते हुए दूसरे को भी जागरूक करने को कहा गया है। पूरे देश में समय और परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए स्वयंसेवक शाखा लगाने का निर्णय कर रहे हैं। इस महामारी से लड़ने के लिए एक जगह अधिक संख्या में लोगों का इकट्ठा नहीं होना और घरों में बंद रहना ही सबसे बड़ा बचाव है।

संघ हर परिस्थिति में है सरकार के साथ

कोरोना वायरस से बचाव में आरएसएस हर परिस्थिति में सरकार के साथ है। जैसे ही कर्नाटक सरकार ने अपने यहां शादी विवाह, पार्टी एवं बड़े कार्यक्रमों पर रोक लगाने की घोषणा की, संघ ने अपने इतिहास में पहली बार प्रतिनिधि सभा को स्थगित करने का निर्णय लिया। बैठक से एक दिन पहले इसे स्थगित करने की घोषणा करने से आने वाले प्रतिनिधियों को परेशानी होने की बात जानते हुए संघ ने देशहित में सरकार का साथ देने का निर्णय लिया। उसके बाद सरकार्यवाह भय्याजी जोशी ने संदेश जारी कर संघ के सभी बड़े कार्यक्रमों को स्थगित करते हुए कोरोना वायरस को लेकर समाज में जागरूकता फैलाने में स्वयंसेवकों को लगने को कहा। वर्ष प्रतिपदा पर भी सभी बड़े कार्यक्रम स्थगित करने का निर्णय लिया गया।

आइआइटी, एम्स के पूर्व छात्रों ने कोरोना रोकने के लिए यंत्र बनाया

नई दिल्ली, आइएएनएस : आइआइटी और एम्स के पूर्व छात्रों देबयान साहा और शशि रंजन ने कोरोना वायरस के खिलाफ 'एयरलेस माइनस कोरोना' नाम से एक यंत्र बनाया है। यह सड़कों पर चलते हुए शहर को संक्रमण मुक्त करता चलेगा। यह अस्पताल, बस स्टॉप, रेलवे स्टेशन, शॉपिंग मॉल और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर जाएगा और उसकी सतह को संक्रमण मुक्त कर देगा, जहां से कोरोना का प्रसार हो सकता है। इन दोनों के अनुसार, कोरोना वायरस को मारने के लिए पानी की बूंदों में बिजली का प्रवाह किया जाता है। उन्होंने चार्ज या आयनित पानी की बूंदों का उपयोग करके कोरोना वायरस को मारने का एक नया तरीका ईजाद किया। कोरोना डिस्चार्ज का उपयोग करके पानी की बूंदों को आयनित किया जा सकता है।

ऐसे आयनित पानी की बूंदें प्रोटीन के ऑक्सीकरण के जरिये गैर हानिकारक अणु बनने में मदद कर सकती हैं। ऑक्सीकरण सबसे शक्तिशाली रोगाणुरोधी उपायों में से एक है। उन्होंने कहा कि यह तकनीक पूरे शहर को संक्रमण मुक्त कर सकती है। उन्होंने बताया कि कई उपाय ऐसे हैं, जिनसे वायरस को निष्क्रिय किया जा सकता है। अल्कोहल उनमें से एक है। अल्कोहल आधारित सैनिटाइजर किसी व्यक्ति को या छोटे पैमाने पर सतहों को संक्रमण मुक्त करने में कारगर है। लेकिन, पूरे शहर को संक्रमण मुक्त करने में यह अक्षम है।

सख्त रुख

निमोनिया और बुखार से पीड़ित मरीजों पर होगी विशेष नजर, 22 मार्च को सभी निजी और सरकारी अस्पतालों में होगा मॉक ड्रिल

कोरोना के इलाज के लिए तैयार रहें सभी अस्पताल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

संसदीय मामलों के मंत्रालय ने डॉक्टर सांसदों के साथ बैठक की

नई दिल्ली, एएनआइ : कोरोना वायरस का प्रसार रोकने के प्रयासों को बल देने के तहत संसदीय मामलों के मंत्रालय ने सभी पार्टियों के डॉक्टरी पेशे से जुड़े सांसदों के साथ संसद पुस्तकालय में बैठक की। संसदीय मामलों के मंत्री प्रह्लाद जोशी ने कहा कि शुक्रवार को चिकित्सकीय विशेषज्ञों, स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों और डॉक्टरी पेशे से जुड़े सांसदों के साथ बैठक की गई। यह बैठक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सलाह पर की गई है।

जोशी ने कहा कि जेपी नड्डा के स्वास्थ्य मंत्री रहने के समय इस बैठक की शुरुआत हुई थी। कोरोना वायरस के खतरे से निपटने के लिए हमने अपनी तैयारियों पर चर्चा की। सभी ने सरकार के प्रयासों की सराहना की।

कोरोना वायरस के कम्युनिटी ट्रांसमिशन के फेज तक पहुंचने की आशंका को देखते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय ने निजी और सरकारी सभी अस्पतालों को इसके इलाज के लिए तैयार रहने को कहा है। सभी अस्पतालों को ओपीडी में थर्मल स्क्रीनिंग लगाकर निमोनिया और बुखार वाले मरीजों की अलग से जांच की व्यवस्था करने को कहा गया है। साथ ही अस्पताल में दवा दुकानों पर भीड़ के प्रबंधन के लिए रेड क्रॉस और एनडीआरएफ के जवानों को तैनात किया है। सभी अस्पतालों में कोरोना के मरीजों की भर्ती और इलाज के लिए 22 मार्च को मॉक ड्रिल होगा।

स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से निजी और सरकारी सभी अस्पतालों को जारी एडवाइजरी में ओपीडी में आने वाले सभी मरीजों की कोरोना जांच सुनिश्चित करने को कहा गया है। इसके लिए बुखार से पीड़ित मरीज की पहले ही थर्मल स्क्रीनिंग से जांच कर अलग से इलाज करने की व्यवस्था करने को कहा गया है, ताकि कोरोना से ग्रसित होने की स्थिति में दूसरे मरीजों के संपर्क से उसे दूर रखा जा सके। कोरोना के कम्युनिटी ट्रांसमिशन के फेज में पहुंचने की आशंका को देखते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय ने निमोनिया के मरीजों की जानकारी नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल (एनसीडीसी) को देना अनिवार्य कर दिया है, ताकि उनकी कोरोना की जांच कराई जा सके। अस्पतालों को वैसे मरीजों को वापस करने को कहा गया है, जो कोरोना ग्रसित होने के संदिग्ध नहीं हैं। संदिग्ध मरीजों की जानकारी एनसीडीसी को तत्काल देने को कहा गया है। मरीजों की संख्या बढ़ने की आशंका को देखते हुए सभी अस्पतालों को 31 मार्च तक गैरजरूरी सर्जरी को टालने, परीक्षाओं को आगे बढ़ाने और इंफेक्शन रोकने के लिए स्टाफ को ट्रेनिंग देने के लिए कहा गया है। साथ ही भविष्य की जरूरत को देखते हुए वेंटिलेटर और हाई ऑक्सीजन मास्क व स्टाफ के लिए सुरक्षा पोशाक का पर्याप्त मात्रा में इंतजाम करने को कहा गया है। अस्पतालों को कहा गया है कि वे वैसे मरीजों को डिस्चार्ज कर सकते हैं, जिनकी हालात स्थिर है।

गोरखपुर समेत चार और शहरों में क्वारंटाइन सुविधा को सेना तैयार

नई दिल्ली, एएनआइ : कोरोना वायरस को हराने के लिए भारतीय सैन्य बलों ने चार और शहरों में व्यापक पैमाने पर तैयारियां की हैं, जिससे जरूरत पड़ने पर सैन्य सुविधाओं को क्वारंटाइन कैंप में तब्दील किया जा सके। इनमें गोरखपुर, विशाखापत्तनम, जोधपुर व जैसलमेर शामिल हैं।

सेना के अनुसार, जरूरत पड़ने पर बहुत कम समय में इन जगहों पर क्वारंटाइन की सुविधा बढ़ाई भी जा सकती है। रक्षा मंत्रालय में कोविड-19 से जुड़े मामलों के नोडल अधिकारी ब्रिगेडियर अनुपम शर्मा ने कहा कि देश में कोरोना वायरस को काबू में करने के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा विदेश मंत्रालयों के साथ सेना संपर्क में है।ब्रिगेडियर अनुपम के अनुसार, 'फिलहाल देश में सेना की तरफ से जैसलमेर, मानेसर, हिंडन और मुंबई में क्वारंटाइन सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

देश में रोजाना बन रहे हैं 1.5 करोड़ मास्क : मंडाविया

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारत के पास रोजाना 1.5 करोड़ मास्क उत्पादन की क्षमता है और कोरोना वायरस के प्रसार को देखते हुए संकट की स्थिति पैदा नहीं होने देना सुनिश्चित करने के लिए और उत्पादन शुरू हो गया है। रसायन, उर्वरक और जहाजरानी राज्यमंत्री मनसुख लाल मंडाविया ने राज्यसभा में शुक्रवार को प्रश्नकाल के दौरान यह जानकारी दी।

मंडाविया ने कहा कि दस्ताने (ग्लव्स) तथा दवाओं के साथ ही मांग पूरी करने के लिए पर्याप्त मात्रा में सैनिटाइजर भी उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा, 'हमारे पास देश भर में मास्क तैयार करने की 100 से ज्यादा इकाइयां हैं। हमने सर्वे कराया है, रोजाना उत्पादन शुरू है। मास्क का अभाव नहीं है। दस्तानों की कमी नहीं है। जरूरत के हिसाब से देश में सैनिटाइजर भी उपलब्ध हैं।' एक अन्य सवाल के जवाब में राज्यमंत्री ने कहा कि देश में आपात स्थिति पैदा नहीं हो इसके लिए पहल की जा रही है। जानलेवा बीमारी को रोकने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम के अलावा मंत्रियों का समूह वायरस को फैलने से रोकने के उपायों पर काम कर रहा है।

मनसुख लाल मंडाविया। फाइल

उन्होंने कहा, 'तीन जरिये से वायरस देश में प्रवेश कर सकता है। हवा, समुद्र और बांग्लादेश और नेपाल से भूमि के माध्यम से यहां आ सकता है। सभी जगहों पर कड़ी पहल की जा रही है। प्रभावित देशों से भारत आने वाले सभी यात्रियों के लिए क्वारंटाइन अनिवार्य किया गया है।'

दैनिक जागरण

सब कुछ क्षणभंगुर है- यश भी और यशस्वी भी

घातक लापरवाही

महामारी बन चुके कोरोना वायरस के संक्रमण के मामले में न जाने कब से यह स्पष्ट है कि एक अकेले व्यक्ति की लापरवाही पूरे समुदाय और अंततः देश पर भारी पड़ सकती है, फिर भी कुछ लोग गैर जिम्मेदारी का घातक परिचय देने से बाज नहीं आ रहे हैं। इस मामले में नया नाम जुड़ा है गायिका कनिका कपूर का, जिन्होंने बीते हफ्ते लंदन से लौटकर लखनऊ में पार्टी तो की ही, अन्य अनेक सार्वजनिक स्थलों में भी उपस्थिति दर्ज कराई। कोरोना वायरस के खतरे से बेपरवाह होकर वह कानपुर भी गईं। क्या इससे अधिक शर्मनाक और कुछ हो सकता है कि जब विदेश यात्रा करने वालों के लिए यह जरूरी बताया जा रहा था कि वे घर-परिवार लौटते ही खुद को सामाजिक रूप से अलग-थलग रखें तब कनिका कपूर ठीक इसके उलट आचरण कर रही थीं? उन्होंने देश के लिए कितना बड़ा संकट खड़ा कर दिया है, इसका पता इससे चलता है कि वह जिस पार्टी में गईं उसमें दिल्ली, जयपुर आदि शहरों के भी लोग शामिल हुए। इनमें उप्र के स्वास्थ्य मंत्री जयप्रताप सिंह, वंसुधरा राजे एवं उनके सांसद बेटे दुष्यंत सिंह भी हैं। दुष्यंत लखनऊ में पार्टी करने के बाद दिल्ली आए और संसद भी गए।

कनिका कपूर के कोरोना वायरस से संक्रमित पाए जाने के बाद अब यह अति आवश्यक है कि उनके परिजनों के साथ उनके संपर्क में आने वाले दुष्यंत सरीखे सभी लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाए। इतना ही नहीं उनकी भी निगरानी करनी होगी जो इस पार्टी में गए लोगों से मिले-जुले। कनिका ने एक तरह से उसी खतरे को बढ़ाने का काम किया जिससे बचने के लिए देश युद्ध स्तर पर जुटा हुआ है। कोरोना वायरस के संक्रमण के मामले में देश अभी दूसरे दौर यानी उस स्थिति में है जहां इसकी पहचान हो जा रही है कि कौन किससे संक्रमित हुआ? यदि इसका पता लगाना मुश्किल हुआ कि कौन किससे संक्रमित हुआ तो फिर हालात हाथ से फिसल सकते हैं। यह घोर चिंताजनक है कि जैसी लापरवाही कनिका ने दिखाई वैसी ही कुछ अन्य भी दिखा रहे हैं। कोई खुद को अलग-थलग करने से इन्कार कर रहा है तो कोई अस्पताल से भागा जा रहा है। कुछ ऐसे भी हैं जो स्वास्थ्य परीक्षण कराने से बच रहे हैं। ऐसे लोग अपने साथ-साथ पूरे देश को ऐसे भीषण खतरे की ओर धकेल रहे हैं जिसका सामना करना बेहद कठिन होगा। चूंकि देश सबसे बड़े संकट से दो-चार है इसलिए उन सबके खिलाफ सख्ती बरतने में तनिक भी संकोच नहीं किया जाए जो अपनी जिम्मेदारी को लेकर सचेत नहीं। यह आपातस्थिति है और इसमें ढिलाई के लिए कहीं कोई गुंजाइश नहीं।

जागरूकता ही बचाव

कोरोना के कहर के बीच उत्तराखंड में भी सरकार, शासन और प्रशासन हाई अलर्ट पर हैं। सरकार सिनेमा हॉल, मॉल और नेशनल पार्क के साथ ही सभी ऐसे स्थानों पर आवाजाही प्रतिबंधित कर चुकी है, जहां ज्यादा भीड़ रहती है। इसके अलावा प्रदेश भर में जागरूकता अभियान भी चलाए जा रहे हैं। दरअसल देश की तरह उत्तराखंड में भी कोरोना पीड़ितों का आंकड़ा बढ़ रहा है। गुरुवार को यह संख्या एक से बढ़कर तीन हो गई है। अच्छी बात यह है कि गुरुवार रात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान के बाद लोगों ने इसके महत्व को समझा है। देहरादून स्थित दून मेडिकल कॉलेज में रोजमर्रा की अपेक्षा भीड़ कम रही। यह अच्छा है कि लोग वक्त की नजाकत को समझ रहे हैं, बावजूद इसके ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जो खतरे को लेकर गंभीर नजर नहीं आ रहे। इसमें सबसे बड़ी विडंबना तो कुछ राजनेताओं की ओर से देखने को मिली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सूर्यकांत धस्माना और भाजपा के विधायक खजान दास जिस तरह से दून मेडिकल कॉलेज के आइसोलेशन वार्ड में घुसे, उससे जाहिर है कि नेताओं को ऐसी संकट की घड़ी में भी सियासत ही सूझ रही है। सियासत की इन सूरमाओं को तो समाज को राह दिखानी थी। खामियां तंत्र के स्तर पर भी सामने आई हैं। तंत्र ने फैसले लेने में वैसी तत्परता नहीं दिखायी, जिसकी जरूरत थी। मसलन स्कूलों को बंद करने के लिए आदेश तो दिए गए, लेकिन सवाल यह है कि बोर्डिंग स्कूलों को इससे क्यों अलग रखा गया। जबकि सरकार अच्छी तरह से जानती है कि देहरादून, मसूरी और नैनीताल स्थित ख्याति प्राप्त बोर्डिंग स्कूलों में बाहर के बच्चे ज्यादा हैं। ऐसे में बच्चों की सुरक्षा को देखते हुए बोर्डिंग स्कूल बंद करने का फैसला पहले ही हो जाना चाहिए था। इसके अलावा एक और अहम सवाल है। सवाल यह है कि जब सीबीएसई और आइसीएसई जैसे बोर्ड के साथ ही इंजीनियरिंग और विश्वविद्यालयों की परीक्षाएं स्थगित हो चुकी हैं तो उत्तराखंड बोर्ड इस फैसला क्यों नहीं कर रहा। यह सही है कि बोर्ड ने परीक्षा केंद्रों में सुरक्षा और बचाव के व्यापक इंतजाम किए हैं, लेकिन जब प्रधानमंत्री तक अपील कर रहे हैं कि घर से बाहर निकलने की कोशिश कम से कम करें, ऐसे में क्या परीक्षाओं को स्थगित नहीं किया जाना चाहिए। दरअसल यह वक्त ऐसा है कि सरकार हो या नागरिक हर किसी को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

सही सबक सीखने से इन्कार

डॉ. एके वर्मा

कोई भी दल अपने सदस्यों को असहमति, आलोचना और आरोप का फर्क नहीं समझाता, जिससे प्रत्येक मंच पर वाद-विवाद का स्वरूप विकृत हो चला है

अंततः कमल नाथ सरकार ने बहुमत परीक्षण से पहले ही मैदान छोड़ दिया। उनकी सरकार का पतन तभी सुनिश्चित हो गया था जब ज्योतिरादित्य सिंधिया कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए थे। इस पर कम ही चर्चा हुई कि आखिर योग्य, युवा और प्रतिबद्ध कांग्रेसियों को पाटी क्यों छोड़नी पड़ती है? यह मर्ज आज का नहीं बहुत पुराना है। ओडिशा में बीजू पटनायक, उत्तर प्रदेश में चौधरी चरण सिंह, रीता बहुगुणा जोशी और जगदंबिका पाल, महाराष्ट्र में शरद पवार, बंगाल में ममता बनर्जी, आंध्र में जगन मोहन रेड्डी, तमिलनाडु में जयंती नटराजन, तेलंगाना में के चंद्रशेखर राव, असम में हेमंत सरमा आदि नेताओं की लंबी सूची है, जो कांग्रेस छोड़ गए। प्रश्न यह है कि यदि कोई राष्ट्रीय पार्टी अनेक राज्यों में अपने नेताओं को खोती जाए तो उसका जनाधार बचेगा कैसे? उस पार्टी का अस्तित्व कितने दिन बना रहेगा? क्या इसी का परिणाम नहीं कि कांग्रेस पार्टी धीरे-धीरे कुछ राज्यों में सिमटती जा रही है? क्या वह स्वयं को 'कांग्रेस-मुक्त भारत' की ओर नहीं धकेल रही? क्या जिन लोगों ने अपने खून-पसीने से कांग्रेस को खड़ा-बड़ा किया, वे एक व्यक्ति और परिवार के लिए उसे दांव पर लगा देंगे? काफी दोष कांग्रेस के बड़े नेताओं का है। ऐसी कौन सी मजबूरी है, जो किसी भी कांग्रेसी को पार्टी की दुर्दशा पर अपनी आवाज उठाने नहीं देती? पार्टी छोड़ना तो आसन विकल्प है, लेकिन पार्टी के अंदर रह कर पार्टी की कमजोरियों और बुराइयों से लड़ना और उसे सही मार्ग पर ले जाना बहुत कठिन है। कांग्रेस के नेता यह क्यों नहीं सोचते कि सोनिया और राहुल यदि पार्टी को आगे नहीं ले जा पा रहे तो राष्ट्रीय नेतृत्व को कैसे पुनर्परिभाषित किया जाए? वे राज्य स्तर पर भी नेतृत्व को तरजीह नहीं दे पा रहे हैं। क्यों राज्यों के मुख्यमंत्री, अन्य मंत्री या संगठन के पदाधिकारी शीर्ष नेतृत्व की कृपा पर आश्रित होते हैं? क्यों कांग्रेस में आज तक आंतरिक लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो पाई है? क्या यही पार्टी की लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता है? आज वे लोग संगठन के प्रत्येक स्तर पर हावी होते जा रहे हैं जो पार्टी के 'कुबेर' या 'दबंग' हैं। आम कांग्रेसी तो बिल्कुल हाशिये पर चला गया है। कोई भी राष्ट्रीय पार्टी बिना संगठन और विचारधारा के कैसे अपनी अस्मिता बचा सकती है?

यह संकट केवल कांग्रेस में ही नहीं है। यह भाजपा में भी उतना ही व्याप्त है। आज सिंधिया को लेकर इतना उत्साह क्यों है भाजपा में? क्योंकि मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान के अलावा कोई कद्दावर नेता दिखाई नहीं देता। ज्योतिरादित्य के आने से पार्टी को युवा नेता मिल रहा है। भाजपा की यही हालत अन्य राज्यों में है। मोदी सरकार के 2014 में सत्ता में आने पर भाजपा में भी नेतृत्व संबंधी गुणात्मक बदलाव दिखाई देता है। राष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक नेतृत्व समाप्त सा हो गया है और मोदी-शाह हर जगह पार्टी के तारणहार की भूमिका में दिखाई देते हैं। इससे भाजपा के अधिकतर मंत्री, सांसद, विधायक आदि हाशिये पर चले गए हैं। वे निश्चिंत हैं कि कुछ करें या नहीं, मोदी-शाह तो हैं ही बेड़ा पार करने को। इसी का परिणाम है कि राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और दिल्ली के चुनावों में भाजपा को पराजय मिली।

मोदी सरकार ने पिछले पांच-छह वर्षों में बहुत कुछ किया है, पर भाजपा के अधिकतर सांसद-विधायक उनकी योजनाओं की 'मार्केटिंग' करते दिखाई नहीं देते। हाल में सरकार ने राष्ट्रीय मार्गों पर टोल पर 'फास्ट-टैग' की व्यवस्था की, जो अत्यंत सुविधाजनक है जिससे समय, ईंधन और धन की बचत हो रही है। ऐसी ही अनेक योजनाएं हैं, जिनसे जनता लाभान्वित हो रही है, पर राज्य स्तर पर भाजपा नेताओं को उनके संबंध में कोई जनजागृति विकसित करते देखा नहीं जाता। अधिकतर मंत्री, नेता और अफसर आपसी गठजोड़ से भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और उसका खामियाजा मोदी के खाते में जा रहा है।

कांग्रेस और भाजपा दोनों पार्टियां नेतृत्व संकट से गुजर रही हैं। वे नहीं समझ पा रहीं कि दूरगामी राजनीति के लिए प्रत्येक स्तर पर योग्य, जनप्रिय और स्थापित नेतृत्व होना चाहिए, पर नेतृत्व निर्माण के लिए लोकतांत्रिक और संस्थागत स्वरूप तो विकसित करना ही होगा, जिसमें प्रत्येक सदस्य को अपनी योग्यता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर हो। नेतृत्व कोई ऐसी शख्सियत नहीं जो रातों-रात बन जाए, उसके लिए पार्टियों के पास योग्य, जनप्रिय नेताओं की लंबी 'सप्लाई-लाइन' होनी चाहिए। राष्ट्रीय, प्रांतीय, शहरी और ग्रामीण स्तर पर क्या कोई भी पार्टी संगठन और युवा नेतृत्व को लेकर गंभीर है? जिन दलों के पास युवा, महिला, छात्र आदि के अनुषांगिक संगठन हैं, वे भी उनको संगठनात्मक, विचारधारामूलक, नीतिगत और शासन एवं प्रशासन संबंधी कोई प्रशिक्षण नहीं देते, जिससे उनके द्वारा दिशाविहीन विमर्श में समय नष्ट होता है जो प्रायः आरोप-प्रत्यारोप में बदल जाता है। कोई भी दल अपने सदस्यों को असहमति, आलोचना और आरोप का फर्क नहीं समझाता, जिससे प्रत्येक मंच पर वाद-विवाद का स्वरूप विकृत हो चला है। इस क्रम में वामपंथी दल फिर भी आगे हैं, जिनके पास संगठनात्मक कौशल, वैचारिक दृष्टि और बौद्धिक क्षमता अन्य दलों के मुकाबले बेहतर हैं। इसीलिए किसी भी वाद-विवाद में वे अपना पक्ष मजबूती से रखते हैं, भले ही विचारधारा के स्तर पर उनकी जन-स्वीकार्यता न हो। भाजपा के पास राष्ट्रीय स्तर पर गिने-चुने प्रवक्ता हैं जो तथ्य और तर्क का सहारा लेकर अपना पक्ष रखते हैं, पर नीचे के स्तर पर ज्यादातर नेता भाषा का संयम खो देते हैं। भाजपा के लिए जरूरी है कि अपने नेताओं को सम्यक प्रशिक्षण दिलाए या दक्षिणपंथी रुझान वाले बुद्धिजीवियों को प्रवक्ता बनाए। कांग्रेस को भी यही फॉर्मूला अपनाना चाहिए।

सिंधिया प्रकरण सभी राजनीतिक दलों को सोचने का अवसर देता है। दलों में गुटबाजी कोई नई बात नहीं। सभी दलों में अनेक गुट होते हैं जो सामाजिक विभिन्नता को प्रतिबिंबित करते हैं, पर उसके बावजूद दल को कैसे एकजुट रखा जाए और विचारधारा तथा नेतृत्व के प्रति कैसे सबकी निष्ठा बनाई रखी जाए, मंथन इस पर होना चाहिए। विमर्श सिंधिया पर नहीं, वरन दलीय-व्यवस्था और दलों में आंतरिक लोकतंत्र की स्थापना पर होना चाहिए।

(लेखक सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोसायटी एंड पॉलिटिक्स के निदेशक हैं)

response@jagran.com

निर्भया को क्यों मुश्किल से मिला न्याय

विराग गुप्ता

न्यायिक तंत्र के दुरुपयोग के मामलों में जुर्माने और सजा की व्यवस्था बने ताकि फालतू की याचिकाएं न दायर हों

आखिरकार देश को झकझोर देने वाले निर्भया कांड के गुनहगारों को फांसी दे दी गई। सामूहिक दुष्कर्म और हत्या का यह मामला हर लिहाज से दुर्लभतम था। हमारी संवैधानिक व्यवस्था में जघन्य अपराधों के दुर्लभतम मामलों में मृत्यु दंड यानी फांसी की सजा देने का अधिकार न्यायाधीशों को दिया गया है। निर्भया शायद पहला ऐसा मामला है, जिसमें दोषियों को फांसी देने के लिए ट्रायल कोर्ट के जज को चार बार डेथ वारंट यानी फांसी का आदेशपत्र जारी करना पड़ा। यह भी ध्यान रहे कि निर्भया के गुनहगारों की सजा पर अमल का सिलसिला तब तेज हुआ जब इसी तरह का एक मामला पिछले साल हैदराबाद में हुआ। निर्भया के गुनहगारों को 22 जनवरी को फांसी देने के लिए डेथ वारंट जारी किया गया, लेकिन वकीलों की कानूनी तिकड़मों से फांसी की सजा दो महीने टल गई। इस दौरान दोषी पक्ष के वकीलों ने ट्रायल कोर्ट, हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रपति के सामने करीब 36 याचिकाएं दायर कीं। सामान्य मुकदमे की फाइलिंग, लिस्टिंग, नोटिस, गवाही, सुनवाई और फैसले में कई साल लग जाते हैं, लेकिन पिछले दो महीने में निर्भया मामले से जुड़ी अधिकांश याचिकाओं का फैसला एक दिन के भीतर ही हो गया। इन याचिकाओं के त्वरित निस्तारण से जाहिर है कि जजों में दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो वर्तमान कानूनी व्यवस्था के दायरे में भी अदालतें जल्द फैसला कर सकती हैं।

हैदराबाद कांड के बाद आंध्र प्रदेश सरकार ने दिशा विधेयक के माध्यम से कानूनी बदलाव की एक पहल की। प्रस्तावित कानून के अनुसार ऐसे मामलों में पुलिस को एक हफ्ते में आरोपपत्र दायर करने और अदालतों को दो सप्ताह में फैसला देने के लिए नियम बन रहे हैं। आपराधिक कानून में राज्यों द्वारा किए जा रहे ऐसे बदलावों को केंद्र की सहमति के बाद ही कानूनी मान्यता मिल सकती है। हाल में संसद की स्थाई समिति ने कानूनी सुधार के एक नए प्रस्ताव की अनुशंसा की है जिसके अनुसार एक महीने में पुलिस जांच और छह महीने में अदालती फैसले के लिए नियम बन सकते हैं। सरकार और विधायिका द्वारा मुकदमों के समयबद्ध निष्पादन के लिए की जा रही पहल को न्यायपालिका के सहयोग से ही सफल बनाया जा सकता है।

इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि निर्भया के दोषियों की फांसी की सजा पर अमल को रोकने के लिए दोषी पक्ष के वकीलों द्वारा अपनाए गए हथकंडों पर जजों ने यहां तक कहा कि पूरा सिस्टम कैंसर ग्रस्त हो गया है। इस सिस्टम को कैंसर मुक्त करना ही होगा। सुप्रीम कोर्ट के अनेक आदेशों के बावजूद, दूरस्थ इलाकों में पीड़ितों को पहले एफआइआर दर्ज कराने और फिर मुकदमेबाजी में अच्छा-खासा समय और संसाधन खपाना पड़ता है। यदि निर्भया मामले को टेस्ट केस मानते हुए न्यायिक व्यवस्था का ऑडिट किया जाए तो अनेक जरूरी न्यायिक सुधार किए जा सकते हैं। इस पर विचार होना ही चाहिए कि जो अदालतें दो महीने में करीब 36 मामलों का निष्पादन कर सकती हैं वही मुख्य मामले का निस्तारण सात वर्षों में क्यों कर सकीं? जिस फुर्ती से पिछले दो महीनों में अदालतों ने फैसले दिए उसी तत्परता से देश के तीन करोड़ मामलों में जल्द फैसला हो तो अपराधियों में कानून का डर फैलने के साथ ही समाज की सेहत भी सुधरेगी।

निर्भया मामले में मीडिया की सजगता की वजह से ही सात साल बाद दोषियों को फांसी की सजा सुनाई गई और गत दिवस इस सजा पर अमल भी हो गया, लेकिन अन्य तमाम मामलों में फांसी की सजाओं में बेवजह विलंब हो रहा है। निर्भया मामले के बाद अनेक सख्त कानून तो बनाए गए, पर उनके अमल का सिस्टम नहीं बन सका। यह सिस्टम बनाना अनिवार्य है, क्योंकि जहां यह जरूरी है कि दोषियों को जल्द सजा मिले वहीं यह भी कि निरपराध लोग बेवजह जेल में न सड़ते रहें। मुकदमों का जल्द निपटारा जरूरी है। जेलों की व्यवस्था राज्यों के अधीन है, जहां अभी भी अंग्रेजों के समय के नियम और कानून लागू हैं। यदि 21वीं सदी की जरूरतों के अनुसार नए नियम बनें तो एक देश एक कानूनी व्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हो सकती है।

निर्भया मामले में न्यायिक विलंब से जो अनेक विसंगतियां उजागर हुई हैं उन पर सरकार और संसद के साथ न्यायपालिका को गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। देश में करोड़ों मुकदमों में तारीख पर तारीख मिलती रहती है, लेकिन मीडिया रिपोर्ट से प्रभावित मामलों में रात के अंधेरे में भी अदालतों के दरवाजे खुल जाते हैं। न्यायपालिका द्वारा ऐसी व्यवस्था बनानी चाहिए जिससे देश के सभी लोगों को जल्द न्याय मिल सके।

यह भी जरूरी है कि दया याचिकाओं के दुरुपयोग को रोकने और उनके समयबद्ध निस्तारण की व्यवस्था भी बने। चूंकि सुप्रीम कोर्ट देश की संवैधानिक अदालत है इसलिए रिव्यू और क्यूरेटिव पिटीशन के समयबद्ध निस्तारण की व्यवस्था उसे ही बनानी चाहिए। निर्भया मामले का सबसे बड़ा सबक यह है कि न्यायिक तंत्र के दुरुपयोग के मामलों में जुर्माने और सजा की ठोस व्यवस्था बने ताकि फालतू की याचिकाएं न दायर हों। यह सब करके ही हम निर्भया को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

(स्तंभकार सुप्रीम कोर्ट के वकील एवं 'रेप लॉज एंड डेथ पेनाल्टी' के लेखक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

सत्य को जानें

सत्य से बड़ा कोई दूसरा धर्म नहीं है। महापुरुषों का भी कथन है कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सदैव तत्पर रहें। ऐसा करते ही अज्ञान, ज्ञान में बदल जाएगा। जीवन की यात्रा अद्भुत होगी। नित्य प्रति उल्लास-उमंग-उत्साह का समावेश होगा। सत्य व्यक्ति को निर्भार बना देता है।

जो व्यक्ति सत्य निष्ट होता है, अपने कर्तव्य के प्रति सचेत एवं सजग होता है-उसके मार्ग का बाधक बनना इतना सरल कार्य नहीं होता है, क्योंकि सत्य के साथ तो स्वयं परमात्मा होता है। यदि हमें अपने कर्तव्यों का सही मायने में बोध है तो वह परमात्मा सदैव किसी न किसी रूप में हमारी सहायता अवश्य ही करता है। जो जीवन को पवित्रता और पारदर्शिता के साथ जीते हैं, उन्हें परमपिता परमेश्वर सहज ही स्वीकार करते हैं। शांति भी उस एक की चरण-शरण में ही है। सत्य को पा लेना या जान लेना इतना आसान कार्य भी नहीं है। कथन और आचरण दोनों का जब तक समन्वय नहीं होगा, सत्य का दर्शन दुर्लभ है। यह देश धर्मराज युधिष्ठिर का है, सत्यवादी राजा हरिशचंद्र का है। जिन्होंने सत्य की पालना के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर किया। तभी वे आज भी अमर हैं।

जो लोग सत्यनिष्ठ होते हैं, उनमें देवत्व होता है। वे परमात्मा के प्यारे होते हैं। हालांकि इस राह में कई कठिनाइयां भी आती हैं, पर जो दृढ़ संकल्पित होते हैं, जो अपने मन की अवाज को पहले सुनते हैं, वे सत्य-असत्य का भेद भली-भांति कर पाते हैं। अपनी सत्यवादिता का परिचय व्यक्ति अपने कर्मक्षेत्र में प्रस्तुत कर सकता है। सत्य को अनुभूत किया जा सकता है, पर उसके लिए हमारा हृदय मंदिर पवित्र हो। हर कर्म परमात्मा को साक्ष्य बनाकर करें। यह मानकर कि वह हमारे हर अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा रखे हुए है। सत्य मात्र परमात्मा है, बाकी सारा संसार नश्वर है। जब इसका बोध हो जाए तो समझें आप सत्य के करीब हैं।

आचार्य अनिल वत्स

सीवर में दम तोड़ती मानवता

सुधीर कुमार

सीवर सफाई की समस्या का संभावित हल यही है कि इस क्षेत्र में केवल मशीनों का ही प्रयोग किया जाए

हाल ही में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक देश में सीवर और सेप्टिक टैंकों की सफाई के दौरान दम घुटने से पिछले तीन वर्षों में 271 लोगों की जानें चली गईं। मैनुअल स्कैवेंजिंग यानी एक इंसान द्वारा दूसरे इंसानों के मल की सफाई को समाज का सबसे घृणित कार्य माना जाता है और इससे जुड़े लोगों को भी सम्मानजनक दृष्टि से नहीं देखा जाता है। भारत सरकार ने 1993 और 2013 में कानून बनाकर इस प्रथा पर प्रतिबंध तो लगा दिया, लेकिन सीवर सफाई के क्षेत्र में आधुनिक मशीनों की सुविधाएं नहीं होने और ज्यादातर जगहों पर अनुबंध की व्यवस्था होने तथा संवेदकों की लापरवाही के चलते सीवर और सेप्टिक टैंकों की सफाई के क्रम में हरेक साल स्वच्छता के सैकड़ों सिपाहियों को अपनी जान गंवानी पड़ती है।

सेप्टिक टैंकों और सीवर की सफाई के दौरान उसके भीतर मौजूद मिथेन, सल्फर, कार्बन डाईऑक्साइड और कार्बन मोनोक्साइड जैसी जहरीली गैसें सफाई कर रहे कर्मचारी को अपने आवेश में ले लेती हैं। जिससे तत्काल उसकी मौत हो जाती है। जो मजदूर इस 'गैस चैंबर' से किसी तरह बचकर निकल आते हैं, उन्हें आजीवन स्वास्थ्य संबंधी व्याधियों का सामना करना पड़ता है। कई बार तो पहले एक सफाईकर्मी इन जहरीली गैसों की चपेट में आता है और फिर उसे बचाने के क्रम में दूसरों की भी जान चली जाती है। मलबे से लबालब भरे सीवर मौत को आमंत्रण देते हैं। ऐसे में जो व्यक्ति बिना किसी सुरक्षा उपकरण के इसकी सफाई के लिए उतरता है, उसके बचने की संभावना कम ही होती है!

सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कई बार कहा है कि सेप्टिक टैंक और सीवर आदि की सफाई के लिए किसी मानव का प्रवेश दंडात्मक प्रावधान होगा। केवल आपातकालीन स्थिति में ही सुरक्षा उपकरणों के साथ किसी सफाई कर्मी के प्रवेश की अनुमति दी गई है। ऐसी परिस्थिति में 27 तरह के नियम का पालन करना पड़ता है। सफाईकर्मी को ऑक्सीजन सिलेंडर, गैस-मास्क, सेफ्टी बेल्ट, रबड़ के जूते व दास्ताने, टॉर्च और विशेष सूट के बिना सीवर के भीतर भेजने की अनुमति नहीं है।

नियम के तहत सीवर सफाई का काम इंजीनियर और डॉक्टर की निगरानी में ही किया जाना चाहिए। जहां यह काम होता है, वहां डॉक्टर और एंबुलेंस की व्यवस्था अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। सीवर में उतरने से पहले उसमें मौजूद गैसों की नियमतः जांच की जानी चाहिए, लेकिन सीवर सफाई का ठेका लेने वाला ठेकेदार खुलेआम सुरक्षा मानकों का उल्लंघन करता है, जिससे आए दिन सैकड़ों सफाईकर्मियों को असमय दम तोड़ने को विवश होना पड़ता है। सीवर सफाई की समस्या का संभावित हल यही है कि इस क्षेत्र में केवल मशीनों का ही प्रयोग किया जाए।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

प्रकृति के आगे बौना है मनुष्य

संकट की इस घड़ी में प्रकृति के संदेश को समझें शीर्षक से लिखे अपने आलेख में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कोरोना वायरस के संक्रमण से उपजे मौजूदा संकट को एक अवसर में बदलने की बात कही है। अवसर प्रकृति और उसके मानदंडों के सम्मान का, अवसर साफ-सफाई के अनुदेशकों के अनुपालन का, अवसर आत्मनियंत्रण की सीख का और अवसर अपनी सुरक्षा के साथ-साथ सभी जीव-जंतुओं की सुरक्षा के विचार के सम्मान का। भारतीय सांख्य दर्शन में इस बात पर गंभीरता पूर्वक विचार किया गया है कि परम पुरुष (ईश्वर) प्रकृति के रूप में साकार होते हैं और संपूर्ण जगत की सृष्टि करते हैं। यह प्रकृति ममतामई मां के रूप में सभी जीव जीव-जंतुओं को आश्रय प्रदान करती है। उन्हें पालती है, किंतु यह अपने स्थापित नियमों के मामलों में अत्यंत कठोर भी है। क्या निर्धन, क्या धनवान, बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी इसकी निरपेक्ष दृष्टि में एक समान हैं। इधर हमने अपनी सत्ता और शक्ति के दंभ में प्रकृति और उसके संसाधनों का मनमाना दोहन किया। क्षुधा मिटाने को पशुओं-पक्षियों की निर्मम हत्याएं कीं। भौतिक सुख के लिए पेड़-पौधों को काट डाला। हमने तो इंसान तक को भी नहीं छोड़ा। उन्हें सबक सिखाने के लिए एटमी हथियार बनाए, लेकिन प्रकृति की असीमित ताकत के आगे बौने सिद्ध हो गए। उसने अति सूक्ष्म विषाणु भेज दिए हमारे होश ठिकाने लगाने को। अभी भी जो हम उसके संदेशों को समझ पाएं, अभी भी जो हम अपनी संस्कृति के सूत्र वाक्य वसुधैव कुटुंबकम की भावना को आत्मसात कर लें, समानता और परस्पर निर्भरता के मूल्यों को स्वीकार कर लें तो न सिर्फ इस मौजूदा संकट से बाहर आ जाएंगे, बल्कि भविष्य की ऐसी किसी चुनौती को भी पहले ही रोक पाएंगे।

चंदन कर्ण, देवघर

डरें नहीं, संयम बरतें

कोरोना वायरस के डर से स्कूल, कॉलेज, दफ्तर लगभग बंद हैं। बहुत से लोग घरों से काम कर रहे हैं और अनावश्यक बाहर नहीं निकल रहे हैं। हर रोज कोरोना के कई नए मामले सामने आ रहे हैं, तो वहीं बहुत से लोग ठीक भी हो रहे हैं। इसमें डरने की जरूरत नहीं है। लेकिन कुछ लोग अज्ञानतावश अफवाहें फैला रहे हैं, यह ठीक नहीं है। यह समय संयम बरतने का है। बाजार में किसी चीज की कमी नहीं है। जहां तक संभव हो अनावश्यक रूप से बाहर निकलने से बचना चाहिए। अधिक सामान स्टोर करने की भी जरूरत नहीं है। इससे सामान महंगे हो जाते हैं। सावधानी बरतना जरूरी है। साफ-सफाई एवं कीटनाशक का छिड़काव करते रहना चाहिए।

उपासना, दिल्ली विवि

ओलंपिक और कोरोना

कोरोना वायरस के कारण इस साल होने वाले ओलंपिक खेलों पर संकट के बादल घिरते पर दिख रहे हैं। इसके बावजूद जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे और आइओसी ओलंपिक निर्धारित समय पर आयोजित कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं, परंतु यह इतना आसान नहीं है। फिलहाल करीब 55 प्रतिशत खिलाड़ी ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुके हैं, परंतु यह उनके लिए संकट का समय है। ओलंपिक क्वालीफाई करने वाले कई खेल या तो रद हो चुके हैं या फिर स्थगित कर दिए गए हैं। जो खिलाड़ी ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर भी चुके हैं वे कई टूर्नामेंट के रद या स्थगित हो जाने के कारण अपनी तैयारी को अंतिम रूप नहीं दे पा रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि ओलंपिक का अपने निर्धारित समय पर आयोजन हो पाना मुश्किल है।

मो. फैयाज आलम, दिल्ली

निर्भया को इंसाफ

करीब सात साल की लंबी न्यायिक प्रक्रिया के बाद आखिरकार निर्भया को इंसाफ मिल सका। निःसंदेह 20 मार्च 2020 की तिथि इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गई। इस तिथि को निर्भया दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए। इससे महिला सशक्तीकरण को बल मिलेगा। न्यायिक प्रक्रिया में भी बदलाव की जरूरत है।

दीपक गौतम, सोनीपत

मेलबाक्स

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :

दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

आजकल

कोरोना के खतरे से परे नहीं शाहीन बाग

अवधेश कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

कोरोना वायरस के देश-दुनिया में बढ़ते प्रकोप को देखते हुए यह प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि इस खतरनाक वायरस का असर समाज में न फैले, इसके लिए हर तरह की एडवाइजरी एवं सरकारी आदेशों का पालन किया जाए। ऐसा न करके केवल हम स्वयं को ही खतरे में नहीं डालते, बल्कि पूरे समाज को इस बीमारी के मुंह में झोंकने का अपराध करते हैं। आज देश में सबसे बड़ी समस्या कोरोना के रूप में हमारे सामने है जिससे बचाव के लिए हमें तमाम उपायों पर जोर देना चाहिए

प्रतीकात्मक।

कोरोना को महामारी और राष्ट्रीय आपदा घोषित करने के साथ केंद्र द्वारा महामारी कानून लागू करने के सुझाव को अनेक राज्यों ने स्वीकार किया है। राजधानी दिल्ली भी उसमें शामिल है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सरकार के निर्णय की घोषणा करते हुए कहा कि 31 मार्च तक सभी प्रकार की राजनीतिक सभाएं, धरना, प्रदर्शन, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर रोक लगा दी गई है। देश के सभी प्रमुख मंदिरों तक में लोगों के प्रवेश प्रतिबंधित हो गए हैं या उनसे अपील की गई है कि अभी कुछ दिनों तक दर्शन-पूजन को नहीं आएं।

इधर राजधानी दिल्ली में शाहीन बाग में धरना दे रहे लोगों के लिए इसके मायने अलग हैं। दिल्ली पुलिस ने स्वयं 31 मार्च तक सभी धरना, प्रदर्शन व अन्य कार्यक्रमों को रद करने का आदेश जारी किया है। पुलिस के बयान में कहा गया कि किसी भी तरह के कार्यक्रम के लिए नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट नहीं जारी करेगी। किंतु दिल्ली पुलिस के अधिकारी शाहीन बाग में धरना पर बैठी महिलाओं एवं उनके साथी पुरुषों को समझाने में अब तक विफल ही रहे हैं। धरनारत महिलाएं कह रही हैं कि हमारे लिए कारोनो से ज्यादा खतरनाक सीएए, एनपीआर एवं एनआरसी है। अब प्रश्न यह है कि शाहीनबाग धरना के साथ क्या किया जाना चाहिए?

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से पूछा गया था कि अगर 50 से ज्यादा लोग प्रदर्शन करते हैं तो क्या उन पर कोई कार्रवाई भी होगी तो उन्होंने कहा कि महामारी कानून के तहत डीएम और एसडीएम के पास अधिकार हैं। इस घोषणा के बाद लगा था कि शाहीन बाग में सड़क घेरकर तीन महीने से दिया जा रहा अवैध धरना खत्म हो जाएगा। हुआ उल्टा। अभी तक महिलाएं वहां सड़क पर बिछाई गई दरियों, चादरों पर बैठती थीं, लेकिन अब लकड़ी के तख्तों से बने करीब 60 से ज्यादा चौकीनुमा बेड लगाए गए हैं। संभवतः दिल्ली का यह पहला विरोध प्रदर्शन है, जहां प्रदर्शनकारियों के बैठने के लिए बेड लगाए गए हैं। इसका अर्थ स्पष्ट है। धरने को आयोजित कराने वाली शक्तियां इसका अंत नहीं चाहतीं। पर्दे के पीछे से लोगों को उकसाने और भ्रमित करने वाले कई लोगों ने ट्वीट या अन्य माध्यमों से यह अपील कर दी कि कोरोना के खतरे को देखते हुए शाहीन बाग या ऐसे अन्य धरनों को कुछ समय के लिए प्रतीकात्मक धरनों में बदल दें। हालांकि कोई वहां ऐसा कहने गया नहीं। यह एक कुटिल रणनीति है। हमने अपील भी कर दी और धरना भी जारी रहा। एक बार आपने आग लगाकर इतना फैला दिया और अब आप अपील का पाखंड कर रहे हैं! 50 लोगों वाले आदेश के बाद कहा जा रहा है कि हम एक दो दिनों में क्रमिक रूप से 50-50 महिलाओं को ही बिठाएंगे। तो अब दिल्ली सरकार और दिल्ली पुलिस को फैसला करना है। दिल्ली पुलिस की बात को ये मानने के लिए तैयार नहीं हुए। वहां कुछ दिनों पहले जब एक संगठन ने समानांतर धरना एवं प्रदर्शन की घोषणा की थी तो धारा 144 लागू करके उसे रोक दिया गया। धारा 144 की सूचना वहां टंगी हुई है, किंतु उसका कोई असर शाहीन बाग धरना पर नहीं हुआ। क्या शाहीन बाग देश में कोई अलग देश है या दिल्ली के अंदर कोई अलग राज्य है जहां भारत और दिल्ली का कोई कानून लागू नहीं होता? अभी तक शाहीन बाग के धरनाकर्ताओं ने ऐसा ही व्यवहार किया है। इस बात को बार-बार दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि यह धरना झूठ पर आधारित है तथा इसके पीछे केवल केंद्र सरकार को मुस्लिम विरोधी साबित कर पूरी दुनिया में भारत की छवि खराब करने तथा देश में अव्यवस्था कायम करने की साजिश है। इससे उत्पन्न सांप्रदायिक तनाव ने दिल्ली को दंगों की आग तक में झोंक दिया। नागरिकता कानून से किसी भारतीय का कोई लेना-देना नहीं, एनपीआर पर फिर से गृह मंत्री ने राज्यसभा में स्पष्ट किया है कि उसमें 'डी' यानी संदिग्ध नागरिकों वाला कोई 'डाउटफुल' कॉलम है ही नहीं तथा इसमें कोई कागज दिखाना ही नहीं हैं।

कोरोना माहामारी ने एक स्वास्थ्य आपातकाल सदृश स्थिति पैदा कर दी है। अगर एक व्यक्ति भी संक्रमित होकर समाज में घुलमिल गया तो वह कितने लोगों की जान जोखिम में डाल सकता है इसकी आप कल्पना नहीं कर सकते। भारत में अभी तक यह ज्यादा नहीं फैला है तो इसका कारण सरकार द्वारा किए गए पूर्वोपाय ही हैं। जिन देशों ने थोड़ी ढिलाई दी वहां आज हाहाकार मचा हुआ है। इटली में दो हजार से अधिक लोग मारे गए हैं। वहां की स्थिति इतनी भयावह है कि मृतकों के परिजन तक उन्हें नहीं देख पा रहे हैं। दरअसल वहां समय रहते कड़ाई नहीं बरती गई और संक्रमित परिवार में गए, समाज के लोगों से मिले और सैकड़ों लोग चपेट में आते गए। ईरान में एक हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं एवं 17 हजार से ज्यादा संक्रमित हैं। स्पेन ने भी सख्ती नहीं बरती और स्थिति नियंत्रण से बाहर है। वहां 500 से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं एवं 12 हजार से ज्यादा संक्रमित हैं। फ्रांस जैसे देश के लिए स्थिति को संभालना कठिन हो रहा है। ब्रिटेन पहले शांत बैठा था और अब वहां भी हाहाकार है। चीन से लेकर अमेरिका तक इस बीमारी से तबाही मची हुई है। ऐसे में हमें भी पूरी तरह से सावधानी बरतनी चाहिए।

कहने का तात्पर्य यह कि अगर हमने कहीं भी नरमी बरती तो स्थिति नियंत्रण से बाहर जा सकती है। ये सब छोटे देश हैं। भारत 135 करोड़ आबादी का देश है। अगर यहां कोरोना समाज के अंदर फैला तो कैसी तबाही होगी इसकी कल्पना करना मुश्किल है। कई देशों में सेना उतरकर लोगों को घरों में रहने को विवश कर रही है। इसमें शाहीन बाग जैसे संभावित ज्वालामुखी को किसी तरह की छूट नहीं मिलनी चाहिए। देश की छाती पर शूल और अब कोरोना वायरस का संक्रमण फैलाने का खतरा बना यह धरना खत्म होना चाहिए।

अफवाहों की महामारी फैलाने से बचें

अभय कुमार 'अभय'
स्वतंत्र टिप्पणीकार

कोरोना वायरस सिर्फ किसी देश के लिए नहीं, बल्कि समूची दुनिया के लिए एक बड़ा संकट है। लेकिन आज हमें इस समस्या के संदर्भ में जागरूक होना होगा। इसे अफवाहों की महामारी बनाने से बचना होगा। इस दौर की यह सबसे बड़ी ताकत और खूबी है कि हम पलक झपकते ही अपनी बात दुनिया के किसी भी कोने तक पहुंचा सकते हैं। लेकिन यह ताकत पिछले कुछ दिनों से दोधारी तलवार बन गई, खासकर कोरोना के मामले में। एक वाट्सअप मैसेज इन दिनों यह भी फैल रहा है कि गर्मी के तेज होते ही कोरोना वायरस स्वतः ही खत्म हो जाएगा। वैसे यह अफवाह ही है। कोविड-19 के बारे में विशेषज्ञों का मानना है कि इसे गर्मी, सर्दी से कोई खास फर्क नहीं पड़ता। विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक ट्रेडोस गेब्रेयसुस ने इस तरह की अनेक अफवाहों को रोकने की अपील की है। उनका यह कहना है कि किसी भी तरह की गलत सूचना फैलाने का असर इस बीमारी से बचाव के अभियान पर पड़ सकता है। उन्होंने न केवल दुनिया की तमाम सरकारों से आग्रह किया है कि वे अफवाहों पर कड़ाई से लगाम लगाएं, बल्कि तमाम सर्च इंजनों से कहा है कि वे ऐसी सूचनाओं को देखते ही हटा दें।

कोरोना आज दुनिया के लिए कितना खतरनाक है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह वायरस 170 से अधिक देशों में फैल गया है। कोरोना वायरस को लेकर भारत में अफवाहों का आलम यह है कि सोशल मीडिया के माध्यम से अनेक किस्म की जानकारियां प्रसारित की जा रही हैं जिनमें यह भी बताया जा रहा है कि क्या-क्या करने से इस बीमारी का इलाज हो सकता है। भारत में तो तरह-तरह के इलाज सोशल मीडिया पर बताए जा रहे हैं और ऐसा केवल भारत में ही नहीं हो रहा है। सोशल मीडिया से प्राप्त एक संदेश में यह सामने आया है कि एक अमेरिकी पादरी ने भी दावा किया है कि कोल्लोडिअल सिल्वर (लिक्विड में घुला धातु) कोरोना वायरस को 12 घंटे में मार देगा और शरीर के इम्यून सिस्टम को मजबूत करेगा। लेकिन ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है कि सिल्वर पीने से लाभ होता है, बल्कि इससे गुर्दे खराब हो सकते हैं। दरअसल तेजी से फैल रहे कोरोना वायरस का उपचार तलाश करने के लिए शोधकर्ता जुटे हैं, लेकिन सोशल मीडिया पर अनेक फर्जी उपचार वायरल हो रहे हैं।

कोरोना वायरस जितना खतरनाक है अफवाहें उससे भी कई गुना ज्यादा खतरनाक हैं। हालांकि पूरी दुनिया की सरकारें और विश्व स्वास्थ्य संगठन लोगों को लगातार इस तरह की अफवाहों से सावधान रहने के लिए कह रहे हैं। लेकिन एक पुरानी कहावत है कि जब तक किसी झूठ का खंडन किया जाता है, तब तक वह दुनिया के सात चक्कर लगा लेता है। कोरोना वायरस को लेकर फैलायी जा रही अफवाहें कुछ इसी प्रकार से हैं। एक-दो दिन पहले ही दिल्ली-एनसीआर में यह अफवाह फैला दी गई कि डोर बेल बजाने, दूध का पैकेट लाने और यहां तक कि अखबार से भी कोरोना फैल सकता है, जबकि यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि अखबार के जरिये कोरोना वायरस नहीं फैलता है।

विभिन्न देशों में कोरोना जनित बीमारी के इलाज के संदर्भ में दिन-रात व्यापक शोध हो रहे हैं और उन शोधों से यह बात निकल करके आई है कि नरम सतह पर कोरोना वायरस दो दिन तक जिंदा रहता है और कठोर सतह पर यह नौ दिनों तक भी जिंदा रह सकता है। इस हिसाब से हवा में यह तीन घंटे से ज्यादा और रबर व शीशा तथा तांबे में इसकी मौजूदगी चार पांच घंटे से ज्यादा नहीं हो सकती। कुल मिलाकर कहने की बात सिर्फ इतनी है कि इस बीमारी को अफवाहों की हवा मुहैया कराकर दुनिया की सबसे घातक महामारी बनने से रोका जाए।

खरी-खरी

गिरने और बिकने का 'रियलिटी शो'

लोकेंद्र नामजोशी

जबसे कोरोना अपनी वाली पर उतर आया है, कौड़ियों के दाम बिकने वाले सैनिटाइजर और मास्क भी अपनी वाली पर उतर आए हैं। इन दिनों ऐसा लग रहा है जैसे हर तरफ एक-दूसरे से जल्दी और ज्यादा तेजी से गिरने और बिकने का 'रियलिटी शो' शुरू हो गया। जिधर देखो, गिरने और बिकने की जैसे होड़ मच गई है।

अलबत्ता गिरने और बिकने के इस दौर में विपक्ष की क्या बात करें। वह तो सीएए और एनआरसी के चक्कर में पहले ही इतना गिर और बिक चुका है कि उसकी हालत उस फिल्मी गाने 'कैद में है बुलबुल सैयाद मुस्कराए, चुप रहा भी न जाए कुछ कहा भी न जाए' की नायिका जैसी हो गई है। उससे न चुप रहते बन रहा है, न कुछ कहते। हालांकि इस विपक्ष की हालत पहले ही कई बार गिरकर और बिक कर मुश्किल से कुछ संभली ही थी कि सरकार ने उसे फिर सीएए और एनआरसी नामक वॉशिंग मशीन में डाल कर गलाने, घुमाने, निचोड़ने और सुखाकर रस्सी पर टांगने जैसा पराक्रम फिर से दोहरा दिया।

वैसे हमारे यहां गिरने और बिकने की इस गंगा में हर कोई अपने हाथ धो लेना चाहता है। यह अलग बात है कि आम आदमी की नजरों में सरकार उसे गिरने नहीं, बल्कि और ज्यादा बिकने दे रही है। सरकार की ऐसी अदाकारी की वजह से ही टमाटर, भिंडी, गिलकी और प्याज अपने ऊंचे दामों से नीचे नहीं गिर रही हैं।

बहरहाल, गिरने के रियलिटी शो की बात चली है तो वह जमाना याद करें, जब गठबंधन की सरकारें महज एक अदद वोट से धड़ाम से औंधे मुंह गिर जाया करती थीं, लेकिन बिका नहीं करती थीं। जिसके चलते लाख जतन करने के बावजूद सरकार के गिरने का डर बना रहता था।

खैर, कोरोना वायरस की वजह से बात गिरने और बिकने के रियलिटी शो की चली थी, तो लगे हाथ एक रियल बात सुनते जाइए। आने वाले समय में गर्मी जैसे भी और जितनी भी ज्यादा गिरेगी, उतना ही ज्यादा कोरोना वायरस भी दुम दबाकर शनैः शनैः भाग सकता है। हां, सियासत का वायरस अभी कितना और फैलेगा, इस वायरस के कारण कितने विधायक और बिकेंगे-गिरेंगे, इसका कुछ नहीं कह सकते।

ट्वीट-ट्वीट

देश-समाज की हर तरह की जिम्मेदारियों से कटे रहने वाले ये बॉलीवुडिया चवन्निए कुछ दिनों के लिए अपना नाचना-कूदना बंद कर देंगे तो क्या विश्व चेतना खत्म हो जाएगी? जरा भी अंदाजा है कि देश के मध्य व निम्न-आय वर्ग को तुम ये विदेश-प्रवास से लाया कहर थमा दोगे तो क्या होगा?
डॉ. कुमार विश्वास@DrKumarVishwas

प्रधानमंत्री 'देश' का होता है और देश सबका है, इसलिए संकट के इस दौर में पूरा देश आपके साथ है...जय हिंद।
आचार्य प्रमोद@AcharyaPramodk

शाहीन बाग की जिद अब न सिर्फ दिल्ली, बल्कि पूरे देश के लिए खतरा बन गई है। अब ये लोग अगर नहीं समझे तो महामारी कानून के तहत इनको तुरंत गिरफ्तार कर आइसोलेट कर देना चाहिए। बुजुर्गों की फिक्र नहीं है इन्हें। यह बर्दाश्त नहीं होगा। दिल्ली पुलिस को खुली छूट देनी चाहिए।
डॉ. अजय आलोक@alok_ajay

कोरोना की जांच रिपोर्ट पॉजिटिव आना अपराध नहीं है, बल्कि ऐसे नाजुक समय में जब हम एक देश के रूप में कोरोना वायरस के खतरों को टालने के लिए युद्ध स्तर पर जूझ रहे हैं तब यात्रा का विवरण छुपाना और सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल होना अपराध है।
चैती नरूला@Chaiti

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या कोरोना वायरस प्रकृति से छेड़छाड़ का नतीजा है?

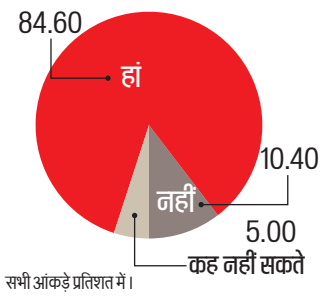

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या 'जनता कर्फ्यू' जैसे कदमों से कोरोना वायरस को फैलने से रोकने में मदद मिलेगी?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

सूली पर तो न्याय की चढ़े सिर्फ हैं चार,
विकृत मानसिक सोच से पीड़ित कई हजार।
पीड़ित कई हजार कौन इनको समझाए,
फांसी का उद्देश्य सबक उनको मिल पाए।
यदि यह क्रूर जमात सजाएं ऐसी भूली,
तो बिल्कुल बेकार समझिए देना सूली।
– ओमप्रकाश तिवारी

आलोक मिश्रा
स्थानीय संपादक, बिहार

बिहार डायरी

सारे शब्द खो गए कोरोना के खौफ में

इस सप्ताह तो बस कोरोना ही कोरोना रहा। जो भी घटनाएं हुईं, कोरोना के आगे दब गईं। जो भी शब्द उछले, वे सब कोरोना में खो गए। कोरोना के भावी खतरे से निपटने में ही सब लगे हैं। लोगों की सजगता और सरकार की सक्रियता का ही परिणाम रहा कि अभी तक सूबे में एक भी मरीज नहीं मिला है, जबकि देश में इनकी संख्या बढ़ती जा रही है। हर तरफ बस इसी की चर्चा है, इस दुआ के साथ कि जल्दी इससे निजात मिले।

इस बीच महागठबंधन की एकता को झटका लगा। राष्ट्रीय लोक समता पार्टी (रालोसपा), विकासशील इंसान पार्टी (वीआइपी) जैसे दलों को साथ लेकर हिंदुस्तानी आवामी मोर्चा (हम) के जीतनराम मांझी राजद पर समन्वय समिति बनाने का दबाव बना रहे थे। पहले वाम दलों, पप्पू यादव, शरद यादव, प्रशांत किशोर की देहरी पर चक्कर लगाने के बाद कांग्रेस से भी एकता की गुहार वे पहले ही लगा चुके थे। जब इसका कोई नतीजा नहीं निकला तो तीनों दलों ने बैठक कर राजद को बड़ा भाई बता कर 31 मार्च तक कमेटी बनाने का अल्टीमेटम दे दिया। इसका भी कोई जवाब नहीं मिला तो वे नीतीश से मिल आए कि शायद इससे राजद दबाव में आए, लेकिन नतीजा निकला उल्टा। राजद के तेजस्वी ने बाकायदा प्रेस कांफ्रेंस करके उनके बेटे को एमएलसी बनाने और लोकसभा चुनाव में तीन सीटें देने का अहसान गिना डाला। खेल पलटता देख मांझी तिलमिला उठे और बहुत कुछ कह गए। इसका परिणाम यह हुआ कि गठबंधन की एकता का सुर अलापते हुए मांझी के साथी ही उन्हें मंझधार में अकेला छोड़ राजद के साथ हो चले। अब मांझी का अगला कदम क्या होगा, यह भविष्य में ही पता चलेगा। उधर नीतीश-मांझी की मुलाकात का मांझी को भले ही कोई फायदा न हुआ हो, लेकिन राजनीति के चितेरे नीतीश के इस कदम से उसकी साथी लोक जनशक्ति पार्टी को झटका जरूर लगा है। क्योंकि बिहार फर्स्ट-बिहारी फर्स्ट का नारा देकर जिले-जिले व्यवस्था की खामियां गिनाने वाले चिराग पासवान के बोल से जदयू काफी असहज था। नीतीश-मांझी मुलाकात उसके लिए भी एक संदेश है।

पटना के महावीर मंदिर में दर्शन के लिए कतार में दूरी बनाकर खड़े श्रद्धालु। जागरण

अगर आम दिन होते तो इस राजनीतिक घटनाक्रम की खासी चर्चा होती, लेकिन धीरे-धीरे कोरोना के बढ़ते प्रकोप के कारण यह कोई खास गुल नहीं खिला सका। क्योंकि अब हर जगह कोरोना की ही चर्चा है। मुख्यमंत्री से लेकर पूरी सरकार केवल इस संकट से निपटने में जुटी है। बजट सत्र समय से पहले ही स्थगित कर दिया गया। सारे विधेयक एक ही दिन में पास कर दिए गए। अब केवल एहतियात बरतने पर ही जोर है। सभी सार्वजनिक स्थल बंद कर दिए गए हैं। 50 से अधिक लोगों का जमावड़ा नहीं लगने दिया जा रहा है। किसी भी संदिग्ध की जानकारी मिलते ही उसके उपचार की व्यवस्था की जा रही है। मंत्रीगण भी पर्याप्त सतर्कता बरतने लगे हैं। लोगों ने फूल तक लेना बंद कर दिया तो कोई वाट्सअप से ही लोगों की जरूरत पता कर रहा है। किसी के लिए फोन सहारा बन गया है तो कोई एक समय में एक से ही मिल रहा है और वह भी दूरी बनाकर। अधिकतर लोग अपने घरों में सिमट गए हैं। मार्च महीना है इसलिए जरूरी फाइलें ही देखी जा रही हैं। चूंकि स्वास्थ्य मंत्री के लिए ऐसा कर पाना मुश्किल है, इसलिए वे अस्पताल-अस्पताल व्यवस्था बनाने में जुटे हैं।

इस समय जब देश के कई राज्यों में कोरोना का कहर बढ़ता जा रहा है, गनीमत है कि बिहार में अभी तक एक भी मरीज नहीं मिला है। लेकिन भागलपुर में सुअर, पटना में कौओं व बिहारशरीफ में कुत्तों ने इस आतंक में और इजाफा कर रखा है। लोग सजग हो चले हैं और सतर्कता भी बरत रहे हैं। गावों में बाहर से आने वाले किसी में भी बुखार आदि के लक्षण दिखते ही उसकी सूचना अधिकारियों को दी जा रही है। नेपाल से जुड़ी सीमाएं सील कर दी गई हैं और केवल एक ही रास्ता खोला गया है। इस सतर्कता के पीछे कारण यह भी है कि प्रति किलोमीटर जनसंख्या घनत्व का बिहार का आंकड़ा काफी ज्यादा है। विश्व में यह अगर 48 है, देश में 382 है तो बिहार में 1,102 है यानी एक किलोमीटर क्षेत्रफल में 1,102 व्यक्ति निवास करते हैं। सरकार या सरकारी अमला ही नहीं आम आदमी भी जानता है कि अगर इसकी चपेट में आए तो परिणाम बहुत भयानक होगा। इसलिए हर कोई अपने स्तर से सतर्कता बरत रहा है इस दुआ के साथ कि बिहार ही नहीं यह बीमारी पूरे विश्व से खत्म हो।

राज्यनामा

झारखंड में स्थानीयता नीति का विवाद

प्रदीप शुक्ला
स्थानीय संपादक, झारखंड

झारखंड में नवगठित सरकार ने भले ही कामकाज का संचालन व्यवस्थित रूप से शुरू कर दिया हो, लेकिन अभी भी अनेक ऐसे विवादित मसले हैं जिनके बारे में सरकार का रुख और कार्यप्रणाली पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो पाई है

बाबूलाल मरांडी को झारखंड में नेता प्रतिपक्ष का दर्जा भले ही न मिला हो, लेकिन उनकी पहल से विधानसभा सत्र सुचारू रूप से चल रहा है। इसे एक अच्छी शुरुआत कहा जा सकता है, क्योंकि विधानसभा अखाड़ा बनने से तो बची ही, साथ ही जनता से जुड़े मुद्दों पर बहस भी हो रही है। स्थानीयता नीति, विस्थापन को लेकर समस्याएं सहित तमाम मसलों पर सरकार ने अपनी मंशा जाहिर की है। इस बीच यह भी स्पष्ट हो गया है कि सरकार फूंक-फूंक कर कदम रख रही है। इसके पीछे जो भी सोच हो, लेकिन इस पर सवाल उठने लगे हैं। खासकर स्थानीयता नीति को लेकर तीन सदस्यीय कमेटी बनाने के सवाल पर सरकार को अभी से घेरा जा रहा है। विपक्ष सरकार से स्थानीयता नीति में बदलाव के प्रति रुख और मंशा स्पष्ट करने को लेकर दबाव बना रहा है। विपक्षी विधायक कह रहे हैं कि पूर्व की स्थानीयता नीति में सरकार बदलाव करेगी या नहीं, यह उसे साफ करना चाहिए। झामुमो का रुख तो स्पष्ट है, लेकिन गठबंधन की उसकी सहयोगी पार्टी कांग्रेस इससे असहमति रखती है और यही वजह है कि इस पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन बहुत ज्यादा बोल नहीं रहे हैं। आने वाले समय में यह मुद्दा गठबंधन सरकार की गले का फांस बन सकता है। इससे पूर्व 2013 में अर्जुन मुंडा की तत्कालीन सरकार से झारखंड मुक्ति मोर्चा ने स्थानीयता को आधार बनाकर समर्थन वापस ले लिया था। यह जटिल विवाद है, जिसे पूर्ववर्ती रघुवर दास की सरकार ने बेहतर तरीके से सुलझा लिया था।

दरअसल झारखंड में स्थानीय कौन है, इसे लेकर राजनीतिक विवाद है। पूर्ववर्ती रघुवर सरकार ने इसका सर्वमान्य समाधान निकाला कि राज्य गठन की तिथि 15 नवंबर 2000 से 15 वर्ष पहले से राज्य में रहने वाले यानी 15 नवंबर 1985 से पहले से झारखंड में निवास कर रहे लोग स्थानीय माने जाएंगे। सत्ताधारी झारखंड मुक्ति मोर्चा ने इसका विरोध किया है। मोर्चा की दलील है कि स्थानीय का दर्जा उसे मिलना चाहिए, जिनके नाम यहां हुए अंतिम जमीन सर्वे में दर्ज है। राज्य में अंतिम जमीन सर्वे ब्रिटिश शासनकाल में 1932 में हुआ था।

प्रतीकात्मक।

उधर नेता प्रतिपक्ष के बिना चल रही विधानसभा में सत्ता पक्ष और विपक्ष एक-दूसरे पर हमलावर हैं। झाविमो के भाजपा में विलय और बाबूलाल मरांडी को नेता प्रतिपक्ष का दर्जा देने के मसले पर विधानसभा अध्यक्ष कानूनी परामर्श ले रहे हैं। हालांकि चुनाव आयोग ने झाविमो के भाजपा में विलय को सही ठहरा दिया है। भाजपा विधायक इस मुद्दे पर विधानसभा नहीं चलने दे रहे थे, ऐसे में बाबूलाल मरांडी ने खुद इसका पटाक्षेप किया। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष को सुझाव दिया कि अगर वह मजबूर हैं तो सत्ता पक्ष से ही किसी को नेता प्रतिपक्ष का दर्जा दे दें, ताकि सदन का नियम से संचालन हो सके। उन्होंने भाजपा विधायकों को भी इस मुद्दे पर सदन को बाधित करने से रोक दिया और इसके बाद से सदन में तमाम मसलों को लेकर बहस हो रही है। निर्दलीय विधायक सरयू राय की मांग पर वर्तमान सरकार पूर्व की रघुवर सरकार के कई काम की जांच की घोषणा भी कर चुकी है। सरकार का जो रुख है उससे लगता तो नहीं है कि सरकार आरोपों को लेकर बहुत ज्यादा गंभीर है। हां, स्थानीयता नीति जरूर ऐसा मसला है जो आने वाले समय में राज्य के लिए बड़ा मुद्दा बनेगा। झामुमो ने एलान कर रखा है कि 1932 के खतियान के आधार पर ही स्थानीयता नीति लागू होगी। मतलब स्पष्ट है कि पूर्व की रघुवर सरकार द्वारा बनाई गई स्थानीयता नीति में बदलाव होगा। सभी दल इस पर निगाह लगाए हुए हैं। गठबंधन सरकार ने इसके लिए तीन सदस्यीय कमेटी गठित की है। भाजपा पूछ रही है कमेटी का गठन क्यों किया गया है? झामुमो अपना वादा पूरा करे। मुख्यमंत्री अच्छी तरह से समझ रहे हैं

यह ऐसा मुद्दा है जो नई नवेली सरकार को मुश्किल में डाल सकता है। कांग्रेस 1932 के खातियान के आधार पर स्थानीयता नीति को कतई नहीं मानने वाली है। इसके अलावा अब झामुमो को भी शहरी मतदाताओं से आस जग गई है ऐसे में इस मसले को जितने लंबे समय तक लटकाया जा सकता है लटकाया जाए, क्योंकि यही सरकार और पार्टी दोनों के हित में रहने वाला है।

राज्यसभा चुनाव में दो-दो हाथ : राज्यसभा चुनाव में दावेदारी कर कांग्रेस ने झारखंड मुक्ति मोर्चा को भी एकबारगी धर्मसंकट में डाला है। साझीदार होने के कारण मोर्चा पर नैतिक दबाव है कि वह कांग्रेस प्रत्याशी के लिए जीत के लायक वोटों का जुगाड़ करे, लेकिन विधानसभा की दलीय स्थिति इसकी इजाजत नहीं देती। विधानसभा की कुल संख्या बल के लिहाज से एक सीट पर जीत हासिल करने के लिए 27 विधायकों के प्रथम वरीयता के वोट की आवश्यकता होगी। झारखंड मुक्ति मोर्चा के पास 29 विधायक हैं। जीत के लिए उसकी किसी अन्य दल पर निर्भरता नहीं है। भाजपा के पास सदन में बाबूलाल मरांडी को मिलाकर 26 विधायक हैं। आजसू पार्टी के दो विधायकों ने भाजपा को समर्थन का एलान किया है। एक निर्दलीय विधायक अमित यादव भी भाजपा प्रत्याशी के प्रस्तावक बने हैं। ऐसे में भाजपा भी जीत के लिए आवश्यक वोट से ज्यादा पाने को लेकर आश्वस्त हैं।

झारखंड

कोरोना वायरस से जीत लेंगे जंग

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वैश्विक महामारी घोषित किया जा चुका कोरोना वायरस वास्तव में एक बड़ी जंग के समान है। स्वयं प्रधानमंत्री कह चुके हैं कि विश्वयुद्धों के दौरान भी इतनी बड़ी संख्या में मानव जाति प्रभावित नहीं हुई थी, जितनी कोरोना से प्रभावित हो रही है। लिहाजा इसे कतई हल्के में न लें। सजगता ही इस महामारी से बचाव का सबसे बड़ा उपाय है। इसी के जरिये हम अपने राज्य को इस महामारी से सुरक्षित रख सकेंगे।

यह बताना भी जरूरी है कि इस महामारी की चुनौती से निबटना केवल सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है। राज्य के प्रत्येक नागरिक को इसके प्रति अपने कर्तव्यबोध को जागृत करना होगा। हम न केवल स्वयं को और अपने परिवार को सुरक्षित रखें वरन अपने पड़ोसी, मोहल्ले, शहर एवं राज्य का भी ख्याल रखें। इसके लिए बेहद जरूरी है कि केंद्र सरकार से लेकर राज्य सरकार के निर्दिष्ट निर्देशों का गंभीरतापूर्वक पालन करें। अपने खानपान की पुरानी पद्धतियों को भी अपनाएं। कहने का तात्पर्य यह है कि हम अपने आहार में प्रकृति द्वारा प्रदत्त उन चीजों को शामिल करें जिन्हें हमारे पूर्वज स्वास्थ्यवर्धक बता गए हैं।

महामारी घोषित हो चुकी कोरोना के संक्रमण से हम सब सचेत, सजग और सतर्क रहकर बच सकते हैं। स्वच्छ और प्रकृति आधारित जीवनशैली को अपनाकर हम इस चुनौती से निबट सकते हैं

दरअसल कोरोना से निबटने में शरीर की प्रतिरोधक क्षमता का बेहतर एवं मजबूत होना बेहद जरूरी है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता तभी बेहतर होगी जब हमारा खानपान और जीवनशैली दुरुस्त होगी। घर पर किए जाने वाले व्यायाम और योगासनों की भी भूमिका महत्वपूर्ण है। यह भी शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में बेहद कारगर हैं। वैसे सरकारी तंत्र भी इस महामारी से निबटने की दिशा में खासा सजग है। सौभाग्य से अभी तक राज्य में इस महामारी का कोई भी मामला सामने नहीं आया है, लेकिन हमें हर पल सजग इसलिए रहना होगा, क्योंकि बड़ी संख्या में राज्य के लोग रोजगार के लिए बाहर जाते हैं।

ऐसे में हमें बाहर से आने वालों के प्रति पूरी सजगता बरतनी चाहिए। उनके आते ही संवाद की कड़ी स्थापित करें, उनकी जांच हर हाल में सुनिश्चित करानी होगी, ताकि कहीं से भी किसी तरह की चूक की संभावना न रहे। इसके अलावा परिवार में बच्चों और विशेष तौर पर बुजुर्गों की सेहत का ध्यान रखना होगा। अपने घर से लेकर आसपास तक साफ-सफाई का भी विशेष ख्याल रखना होगा। यानी साफ है कि यदि हम केवल सरकार और उसकी मशीनरी के भरोसे न रहें, स्वयं प्रयास करें तो इस महामारी से जंग जीत ही लेंगे।

हिमाचल प्रदेश

बेटियों के लिए बेहतर पहल

जब भी अवसर मिला बेटियों ने उसका भरपूर लाभ उठाया और सफलता हासिल की। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां बेटियों ने अपनी काबिलियत साबित नहीं की है। और ऐसा किसी एक राज्य या फिर एक क्षेत्र या महज कुछ विधाओं तक ही सीमित नहीं है जिसमें बेटियों ने अपना लोहा मनवाया हो। शिक्षा के क्षेत्र में तो बेटियों ने डंका बजाया है। सरकार भी बेटियों को आगे बढ़ने का हरसंभव अवसर प्रदान कर रही है। समाज ने भी बेटियों की अहमियत समझी है। ऐसे परिवार भी कम नहीं हैं जिन्होंने एकल बेटी को ही अहमियत दी है। कई शिक्षण संस्थानों ने एकल बेटी के लिए सीटें आरक्षित की हैं। अब चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर ने भी ऐसा फैसला लिया है। विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के छह कोर्सों में एकल बालिका संतान के लिए एक-एक सीट आरक्षित की गई है। विश्वविद्यालय के इस फैसले से एकल बेटी वाले परिवारों को प्रोत्साहन मिलेगा। विश्वविद्यालय में इस समय 1,643 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, इनमें 943 बेटियां हैं।

यह सुखद है कि राज्य सरकार ने भी एकल

बेटियां आज आसमान छूने के लिए बेताब हैं, बस जरूरत है उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने की

प्रतीकात्मक फोटो

बेटियों के लिए कई प्रोत्साहन योजनाएं शुरू की हैं। इसी का नतीजा है कि राज्य में लिंगानुपात में अधिक अंतर नहीं है। हिमाचल प्रदेश का ऊना जिला देश के उन जिलों में शामिल था जहां पर लिंगानुपात शर्मानाक स्थिति तक पहुंच गया था। लेकिन सरकार की योजनाओं का ही नतीजा है कि अब यहां पर लिंगानुपात में कमी आई है। इस बीच यह पक्ष दुखद है कि बेटियों के खिलाफ अपराध दर में बढ़ोतरी हुई है। इसके लिए समाज का जागरूक होना बहुत जरूरी है। बेटियों को भी आत्मरक्षा की शिक्षा की भी जरूरत है। अभिभावकों को चाहिए कि बेटियों को आत्मरक्षा के गुर सिखाएं।

बेटियों को भी चाहिए कि वे हमेशा सतर्क रहें। सतर्कता सिर्फ बाहर ही नहीं, अपनों के बीच भी रखी जानी आवश्यक है, क्योंकि ऐसे भी मामले सामने आते रहे हैं कि महिलाओं के खिलाफ अपराध करने में अपने भी शामिल होते रहे हैं। कई बार इस तरह की घटनाएं होने पर लोग चुप रहते हैं जो कतई सही नहीं हैं। जब भी इस तरह की घटना होती है तो आवाज उठाई जानी चाहिए। बेटियों के हित के लिए जब सभी स्तर पर गंभीरता होगी तो बेटियां सुरक्षित होंगी और वे अपनी तरह से बेहतरीन योगदान समाज के लिए दे सकेंगी। आज आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम यह पहचानें कि बेटियों की काबिलियत किन क्षेत्रों में है और उन्हें उस विधा में विशेषज्ञता हासिल करने का पर्याप्त मौका प्रदान करें।

हरियाणा

जनप्रतिनिधियों का साथ दें

हरियाणा में कोरोना से जंग में आम जन और जन प्रतिनिधि सभी उतर आए हैं। अच्छी बात यह है कि इस महामारी से लड़ने के लिए पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों प्रतिबद्ध हैं। दूसरी तरफ स्वयं लोग बहुत आवश्यक होने पर ही घरों से निकल रहे हैं। भीड़भाड़ वैसे तो हो ही नहीं रही है और यदि आवश्यकता वश कहीं कुछ लोग जुटते भी हैं तो सोशल डिस्टेंसिंग पर जोर दे रहे हैं। यही कारण है कि हरियाणा सिविल सचिवालय में भी भीड़भाड़ नहीं है, जबकि प्रदेश के कोने-कोने से आम जन के साथ ही शासकीय कर्मचारी और अधिकारी सचिवालय में अपने-अपने कार्यों को लेकर आते रहे हैं। सचिवालय के सभी प्रवेश द्वार पर हैंड वॉश एवं स्क्रिनिंग की व्यवस्था होने के बावजूद पिछले तीन दिनों से केवल वही लोग यहां आ रहे हैं, जिन्हें बेहद जरूरी काम है। मंत्रियों और अधिकारियों से मुलाकात के लिए आने वाले फरियादियों की संख्या में भी भारी कमी आई है।

वैसे उन्हें आने की आवश्यकता भी नहीं है। मंत्री, विधायक और अधिकारी सभी फोन पर समस्याएं सुन

प्रतीकात्मक फोटो

रहे हैं और उनका निराकरण कर रहे हैं। कोरोना को हराने के लिए नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने भी लोगों से सचेत रहने का आग्रह किया है। विचारणीय है कि आज के युग में आप संचार तकनीक के उपयोग से आप हजारों किलोमीटर दूर बैठे लोगों से बात कर सकते हैं। इस तरह जैसे वह सामने बैठा है। इसलिए कोरोना से जंग में हम तकनीक का उपयोग अधिकतम करें और जैसा हमारे मंत्री, सांसद एवं विधायक कर रहे हैं, वैसे ही नगर निगमों, नगर परिषदों, नगर पालिकाओं और पंचायतों के प्रतिनिधियों को भी करना चाहिए। आवश्यक होने पर ही लोगों को अपने पास बुलाएं, जिससे भीड़ न लगे। जो लोग मिलने आएं उनसे आग्रह करें कि एक दूसरे पर्याप्त दूरी बनाए रखें।

मंत्री और विधायक फोन से समस्या बताने का अनुरोध कर रहे हैं तो सभा को सहयोग करना चाहिए

इस महामारी से जंग के लिए सोशल डिस्टेंसिंग बहुत आवश्यक है। यदि जनप्रतिनिधि आप से फोन पर समस्या बताने और उसके निराकरण का अनुरोध कर रहे हैं तो उसका बुरा न मानें वह ऐसा आपके हित में ही कह रहे हैं।

बंगाल

अब लश्कर आतंकी का खतरा

कुछ दिन पहले तक बंगाल में बांग्लादेशी आतंकी संगठन जमात-उल-मुजाहिदीन (जेएमबी) और आइएस के आतंकियों की गिरफ्तारी हुई थी। परंतु बंगाल के स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने अब बांग्लादेश की सीमा से सटे उत्तर 24 परगना जिले के बादुरिया से एक आतंकी सुंदरी को गिरफ्तार किया है। यह युवती पाकिस्तानी आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के लिए बंगाल में बैठकर साजिश को अंजाम दे रही थी। यही नहीं उसके पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी आइएसआइ के लिए हनीट्रैप के रूप में भी काम करने की बात भी सामने आ रही है। उसे आइएसआइ ने भारत की सुरक्षा से जुड़े अहम लोगों को जाल में फांसने का भी काम दे रखा था।

इस आतंकी का नाम तानिया परवीन है जो बांग्लादेश से बंगाल आई थी और एक समय सांप्रदायिक हिंसा के लिए सुर्खियों में रहे बादुरिया के एक गांव में बैठकर वह लश्कर के अपने आकाओं के साथ संपर्क में थी और उन लोगों के निर्देश पर तानिया सोशल मीडिया के जरिये महिला जेहादियों की भर्ती और प्रशिक्षण दे रही थी। इस गिरफ्तारी से एक बार फिर प्रमाणित हो गया है कि बांग्लादेशी या फिर पाकिस्तानी आतंकी संगठन बंगाल को अपना सुरक्षित पनाह मान रहे हैं। अब तक इसने न जाने कितने आतंकी साजिश को अंजाम दिए हैं। कितने लोगों को अपने संगठन से जोड़ा है? यह एक चिंता का विषय है। एक लड़की बांग्लादेश से बंगाल आकर अरबी भाषा में पोस्ट ग्रेजुएशन करती है और पाकिस्तानी आतंकी संगठन के लिए काम शुरू कर देती है। इसके बावजूद आज हमारे देश की कुछ राजनीति पार्टियां सीएए एवं एनआरसी को लेकर ऐसे लोगों के हितों की बात कर रही हैं। असल में कुछ दिन पहले एसटीएफ को इस युवती के बारे में जानकारी सोशल नेटवर्किंग साइटों पर निगरानी के दौरान मिली। निगरानी बढ़ाई गई तो उसके द्वारा पाकिस्तान के सिम कार्ड इस्तेमाल किए जाने की सूचना मिली। इसके बाद एसटीएफ ने दबोच लिया। वह नियमित रूप से लश्कर कमांडरों से सोशल साइट्स के जरिये बात करती थी। संगठन के प्रमुख हाफिज सईद से भी दो बार बात कर चुकी है। उसे बंगाल व देश के विभिन्न हिस्सों में लश्कर को मजबूत करने का काम दिया गया था। पाकिस्तान से उसके पास तीन सिम आए थे। पिछले तीन महीनों में पाकिस्तान में कॉल के कई सुबूत मिले हैं। तानिया ने कई लोगों को लश्कर जोड़ा है और ट्रेनिंग दी है। उनके पासपोर्ट बनाए गए और उन्हें प्रशिक्षण के लिए पाकिस्तान भेजा गया है। महिला स्लीपर सेल भी बनाई जा रही थी।

यह सुंदर चेहरे वाली युवती पाकिस्तानी आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के लिए बंगाल में बैठकर साजिश को अंजाम दे रही थी

आस्था व विश्वास के साथ बजाएं ताली-थाली-घंटी

जागरण विशेष

जेएनएन, नई दिल्ली

22 मार्च रविवार को शाम पांच बजे अपने-अपने घरों में से ही ताली बजाकर, थाली बजाकर, घंटी बजाकर एक-दूसरे का आभार जताएं और इस वायरस से लड़ने के लिए एकजुटता दिखाएं...। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की देशवासियों से की गई इस अपील को हल्के में कतई न लें। उन्होंने जो कहा और समझाया, उसके मायने सभी को समझ में आए। लेकिन एक बात, जो उन्होंने नहीं समझाई, वह हमने भारतीय संस्कृति और विज्ञान के जानकारों से समझी।

दरअसल, सनातन धर्म-संस्कृति में करतल ध्वनि, घंटा ध्वनि, शंख ध्वनि का अपना महत्व है। मंदिर हों या घर, इन ध्वनियों का पूजा पद्धति में विशेष स्थान है। आयुर्वेद में इनके चिकित्सकीय महत्व का वर्णन है। आचार्य प्रो. बी एन द्विवेदी, भौतिकी विभाग, आइआइटी-बीएचयू ने बताया, घंटियां इस तरह से बनाई जाती हैं कि जब वे ध्वनि उत्पन्न करती हैं तो यह हमारे दिमाग के बाएं और दाएं हिस्से में एक एकता पैदा करती हैं। जिस क्षण हम घंटा-घंटी बजाते हैं, यह एक तेज और स्थायी ध्वनि उत्पन्न करते हैं, जो प्रतिध्वनि मोड में न्यूनतम 7 सेकंड तक रहता है। हमारे शरीर के सभी सात उपचार केंद्रों को सक्रिय करने के लिए प्रतिध्वनि की

प्रतीकात्मक।

आस्था का विज्ञान

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽन: सुतानिव॥

भद्रकाली की उपासना का एक मंत्र जिसका अर्थ है- हे देवी! जो अपनी ध्वनि से संपूर्ण जगत को व्याप्त कर दैत्यों के तेज को नष्ट किए देता है, वह तुम्हारा घण्टा हम सभी की पापों से उसी प्रकार रक्षा करे, जैसे माता अपने पुत्रों की रक्षा करती है।

अवधि काफी अच्छी है। जब घंटा-घंटी बजाई जाती है तो वातावरण में कंपन पैदा होता है, जो वायुमंडल के कारण काफी दूर तक जाता है। इस कंपन का फायदा यह है कि इसके क्षेत्र में आने वाले सभी जीवाणु, विषाणु और सूक्ष्म जीव आदि नष्ट हो जाते हैं, जिससे आसपास का वातावरण शुद्ध हो जाता है। शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। घंटी को वामभाग में रखना चाहिए और बाएं हाथ से नेत्रों तक ऊंचा उठाकर बजाना चाहिए।

प्रो. केएन उत्तम, भौतिकी विभाग, इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय ने समझाया, मंत्र चिकित्सा में ध्वनि के अनुनाद विज्ञान का वृहद उपयोग है। अनुनाद की परिभाषा है कि जब किन्हीं दो वस्तुओं की आवृत्ति समान हो जाती है तो अनुनाद की स्थिति उत्पन्न होती है। अनुनाद के समय मानव शरीर में अधिक ऊर्जा का संचार होता है। इससे बाहरी विषाणुओं और रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न हो जाती है। घंटा-घंटी-थाली-चम्मच इत्यादि से ध्वनि उत्पन्न करने से निश्चित आवृत्ति की ध्वनि निकलती है। यह विभिन्न शरीर के लोगों के बराबर हो सकती है। ऐसे में शरीर में किसी रोग और विषाणुओं से लड़ने की क्षमता पैदा हो जाती है। नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर सीवी रमन ने शोध के प्रारंभिक क्षणों में ध्वनि के अनुनाद विज्ञान पर काफी शोध कार्य किया है।

महामंडलेश्वर स्वामी हरिचेतनानंद, परमाध्यक्ष हरिसेवा आश्रम, हरिद्वार ने कहा, यह सत्य है। ताली भी बजाओ, थाली भी बजाओ। आयुर्वेद के साथ-साथ पुराणों में भी इसका वर्णन है। अमंगल को दूर करने के लिए तुलसी ने भी रामचरितमानस में इसका वर्णन किया गया है। जब हम पांच और पांच उंगली मिलाकर करतल ध्वनि करते हैं तो इससे संशय रूपी विहंग उड़ जाते हैं।

वैज्ञानिक वास्तुशास्त्री संजीव गुप्त कहते हैं कि कोरोना की समस्याओं के संदर्भ में भी ध्वनि विज्ञान का विशेष प्रयोग महत्वपूर्ण है। इन ध्वनियों को धर्म के माध्यम से हमारी दिनचर्या में सम्मिलित इसी उद्देश्य से किया गया। पारंपरिक पूजा पद्धति में शंख, कांस्य, घंट इत्यादि की ध्वनि का आयुर्वेद के अलावा शिवपुराण में भी विशेष महत्व बताया गया है।

वहीं, जगदगुरु स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती समझाते हैं, घंटे की मंगलध्वनि से दूर होती है नकारात्मक शक्तियां सनातन धर्म की सभी परंपराएं वैज्ञानिक और वैदिक, दोनों दृष्टि से लाभकारी हैं। घंटा ध्वनि, शंख ध्वनि, झांझ, मजीरा, क्षुद्रघंट आदि जो बजाते हैं और जो इसकी मंगल ध्वनि सुनते हैं उनके जीवन से नकारात्मक शक्तियां दूर होती हैं। कोरोना वायरस पर नियंत्रण के लिहाज से पीएम की ओर से जनता कर्फ्यू के आह्वान ने घंटा-घंटी का बाजार बढ़ा दिया। वाराणसी की बात करें तो रविवार की शाम लोगों ने इनकी खूब खरीदारी की। इससे दशाश्वमेध व ठठेरी बाजार में सामान्य दिनों की अपेक्षा 25 फीसद तक अधिक लोग आए। इसमें शंख, घंटा-घंटी आदि की अधिक बिक्री हुई।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/jagran-special

उत्तराखंड के गांवों में पेयजल और स्वच्छता पर खर्च होंगे 287 करोड़

राज्य ब्यूरो, देहरादून

- 15वें वित्त आयोग से मिलने वाली ग्रांट का 50 फीसद हिस्सा पेयजल-स्वच्छता के लिए निर्धारित
- केंद्रीय जलशक्ति मंत्रालय ने इस संबंध में उत्तराखंड समेत सभी राज्यों को जारी की गाइडलाइन
- उत्तराखंड के ग्रामीण निकायों के लिए आयोग ने आवंटित की है 574 करोड़ रुपये की धनराशि

उत्तराखंड की त्रिस्तरीय पंचायतों (जिला, क्षेत्र व ग्राम) में 15वें वित्त आयोग से मिलने वाली ग्रांट का 50 फीसद हिस्सा पेयजल एवं स्वच्छता पर खर्च किया जाएगा। आयोग ने सभी राज्यों को 60750 करोड़ की जो धनराशि आवंटित की है, उसमें उत्तराखंड के हिस्से में 574 करोड़ रुपए आए हैं। यानी, राज्य के गांवों में 287.5 करोड़ रुपये इन कार्यों पर खर्च होंगे। खास बात ये कि इसमें खर्च के लिए राजस्व ग्राम को इकाई माना गया है। जलशक्ति मंत्रालय ने भी इस संबंध में गाइडलाइन जारी की है। इस क्रम में शासन ने सभी जिलों के जिलाधिकारी और मुख्य विकास अधिकारियों को जल जीवन मिशन के तहत इसकी योजनाएं बनाने के निर्देश जारी किए हैं।

15वें वित्त आयोग ने वर्ष 2020-21 की अंतरिम रिपोर्ट में ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल एवं स्वच्छता को शीर्ष प्राथमिकता में रखा है। साथ ही ये भी कहा है कि ग्रामीण निकायों को आयोग से दी जाने वाली ग्रांट का 50 फीसद हिस्सा वे ग्रामीण क्षेत्रों में इन दो बिंदुओं के मद्देनजर खर्च करेंगे। इसके तहत स्वच्छता एवं खुले में शौच से मुक्ति, पेयजल आपूर्ति, वर्षा जल संरक्षण, स्रोत संवर्द्धन पर खास फोकस किया जाएगा। आयोग के दिशा निर्देशों के मद्देनजर अब केंद्रीय जलशक्ति मंत्रालय की ओर से सचिव परमेश्वर अय्यर ने सभी राज्यों के लिए गाइडलाइन जारी की है कि वे इस दिशा में कदम उठाना सुनिश्चत करें। इसी कड़ी में उत्तराखंड में भी इसे लेकर हलचल शुरू हुई है। आयोग ने उत्तराखंड के ग्रामीण निकायों के लिए 574 करोड़ की धनराशि आवंटित की है, जिसका 50 फीसद गांवों में पेयजल एवं स्वच्छता पर व्यय होना है। अपर सचिव पेयजल उदयराज सिंह बताते हैं कि गांव पहले ही ओडीएफ हैं, लिहाजा इसे बरकरार रखने को कदम उठाए जाएंगे। साथ ही जलस्रोतों के संरक्षण, जीर्णोद्धार, स्रोत पुनर्जीवीकरण, पानी के सदुपयोग आदि की दिशा में कदम उठाए जाएंगे। सभी डीएम व सीडीओ को इस बारे में योजनाएं बनाने के निर्देश दिए गए हैं, क्योंकि ये कार्य इन्हीं के जरिये होने हैं।

बिना जानकारी कीटनाशकों के उपयोग से घुटा दम, मां-बेटी की मौत

नईदुनिया, इंदौर : मध्य प्रदेश के इंदौर में दीमक से बचाव के लिए निजी स्तर पर किए गए पेस्ट कंट्रोल ने दो जिंदगियां छीन लीं। परिवार की लापरवाही से कीटनाशकों का दुष्प्रभाव जाने बिना उनके उपयोग से यह स्थिति बनी। पेस्ट कंट्रोल के लिए लगाई जाने वाली सामग्री को और प्रभावी बनाने के लिए परिवार ने उसमें सल्फास पाउडर भी मिला दिया था। एक कमरे में पेस्ट कंट्रोल के बाद मां और ढाई वर्ष की बेटी सामने वाले कमरे में सो गए। कमरे में लगे एसी का कंप्रेशर बाहर गलियारे में लगा था। कीटनाशकों की जहरीली गैस कंप्रेशर से होते हुए एयर कंडीशनर (एसी) के माध्यम से कमरे में पहुंच गई। हादसे में मां-बेटी की मौत हो गई, जबकि गंभीर रूप से बीमार तीन लोग अस्पताल में भर्ती हैं।

इकबाल कॉलोनी निवासी शादाब शेख के घर के फर्नीचर में दीमक लग गई थी। उसे मारने के लिए घर की महिलाओं ने थर्माइट किलर नाम का पेस्ट कंट्रोलर और सल्फास मंगवाया और फर्नीचर व दीवारों में छिड़काव कर कमरा बंद कर दिया। गुरुवार रात करीब 10 बजे 35 वर्षीय रेशमा और ढाई साल की बेटी आयशा दूसरे कमरे में एसी चालू करके सो गई। रात में दोनों का कीटनाशकों की गैस से दम घुटने लगा तो तीसरी मंजिल पर सो रहा देवर इरफान उन्हें लेकर निजी अस्पताल पहुंचा, लेकिन रेशमा और बच्ची आयशा को बचाया नहीं जा सका।

सूती मास्क बनाने में जुटे जबलपुर केंद्रीय जेल के कैदी

रामकृष्ण परमहंस पाण्डेय, जबलपुर

स्वस्थ समाज

- सूती कपड़े की इकहरी परत वाले मास्क को मप्र सरकार ने बताया कारगर
- केंद्रीय कारागार में सजा काट रहे सैकड़ों कैदी प्रतिदिन तैयार कर रहे मास्क
- देशभर से मांग, मिल रहे ऑर्डर, मध्यप्रदेश की अन्य जेलों में भी शुरू हुआ उत्पादन

केंद्रीय कारागार, जबलपुर में सूती मास्क बनाए जा रहे हैं ताकि आमजन को मास्क की किल्लत से बचाया जा सके। सूती कपड़े की इकहरी परत वाले इन मास्क को मप्र सरकार ने संक्रमण के फैलाव को रोकने में कारगर बताया है। जबलपुर में शुरू हुए इस प्रयोग के बाद देशभर से ऑर्डर मिलने पर अब मध्यप्रदेश की अन्य जेलों में भी सूती मास्क का उत्पादन शुरू किया जा रहा है।

हालांकि केंद्र सरकार, विश्व स्वास्थ्य संगठन, अमेरिकी सरकार आदि हाल ही में यह एडवाइजरी जारी कर चुके हैं कि स्वस्थ्य व्यक्ति को मास्क लगाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि संक्रमण से बचाव के लिए मास्क पर्याप्त नहीं है। हां, फैलाव को रोकने में यह सहायक हो सकता है। खांसने-छींकने वाला कोई संदिग्ध यदि मास्क पहने हुए हो तो दूसरों को संक्रमण से बचा सकता है। केंद्र सरकार स्पष्ट कर चुकी है कि केवल उन लोगों को मास्क पहनना चाहिए, जो संक्रमित हैं अथवा संदिग्ध हैं अथवा उपचार कार्य में रत हैं।

बहरहाल, ऐहतियातन देशभर में मास्क की जबर्दस्त मांग है। 5 रुपये की लागत

तैयार मास्क दिखाते कैदी। नईदुनिया

यहां प्रतिदिन औसतन दो हजार मास्क तैयार किए जा रहे हैं। एक मास्क की लागत 6.70 रुपये पड़ती है, जिसे 7 रुपये में बेचा जा रहा है। फिलहाल 70 हजार मास्क का ऑर्डर है।

वाला मास्क 25 रुपये में मिल रहा है। ऐसे में मप्र सरकार ने सूती मास्क का उत्पादन इस तरह शुरू किया है। उसका कहना है कि सूती मास्क फैलाव को रोकने में सहायक साबित होंगे। जबलपुर स्थित नेताजी सुभाषचंद्र बोस केंद्रीय जेल की बात करें तो यहां सुबह से रात तक कैदी मास्क बनाने में जुटे हुए हैं। उनमें एक ही धुन सवार है कि वे कोरोना वायरस से बचने के लिए ज्यादा से ज्यादा मास्क कैसे बनाएं? उनकी कड़ी मेहनत में प्रायश्चित का भाव है। वे कहते हैं कि इस आपदा में यदि हम किसी की जान बचा सके तो समझो हमारे गुनाहों की माफी मिल गई...। सैकड़ा भर से अधिक कैदी जी तोड़ मेहनत कर सूती कपड़ों से मास्क बनाने में जुटे हैं।

मास्क की कमी व इसकी कालाबाजारी की खबरें आने लगी थीं, जिसके बाद सूती कपड़े से मास्क निर्माण का रास्ता नजर आया। केंद्रीय जेल के अधिकारियों ने यह बीड़ा उठाया है। राष्ट्रीय आपदा में बंदियों की भूमिका का बखान शब्दों में नहीं किया जा सकता।
-डॉ. मनीष मिश्रा, सीएमएचओ

केरल, मुंबई, नासिक के अलावा देश के कई शहरों से मास्क का ऑर्डर मिला है। केरल सरकार ने संपर्क किया है। रोजाना 3 हजार मास्क बनाने की तैयारी है। हम जल्द ही अधिक से अधिक मास्क बना सकेंगे।
-जीपी ताम्रकार, जेल अधीक्षका

जेल अधीक्षक गोपाल ताम्रकार ने बताया कि मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ. मनीष मिश्रा की सलाह पर सूती कपड़े से निर्मित मास्क के उत्पादन का विचार राज्य सरकार को भेजा गया। मिश्रा ने बताया कि कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम में सूती मास्क उपयोगी साबित हो सकते हैं। इसके बाद बंदियों को मास्क बनाने का निर्देश दे दिया गया। ऐसे 10 मास्क प्रमुख सचिव स्वास्थ्य, मप्र सरकार के पास एप्रूवल के लिए भेजे, जिसे उपयोग में लाने की स्वीकृति प्राप्त हुई। जेल के अंदर 100 हैंडलूम व 10 पावरलूम लगे हैं। इसी कपड़े से कैदियों की ड्रेस, टोपी आदि बनती है। मास्क बनाने जेल के अंदर लगीं 40 सिलाई मशीनों में अब इलेक्ट्रिक मोटर लगाई जा रही है। यहां मास्क बनते ही प्रदेश की दूसरी जेलों में भी मास्क बनने लगे हैं। जेल प्रबंधन का कहना है कि जबलपुर में निर्मित मास्क की सप्लाई के आर्डर अन्य राज्यों से भी मिल रहे हैं। केरल समेत कुछ राज्यों ने भी मास्क खरीदने की मंशा जताई है। कोर्ट, जिला प्रशासन, पुलिस, रेलवे, मेडिकल कॉलेज, स्वास्थ्य विभाग, सैन्य अस्पताल व निजी संस्थान मास्क की मांग कर चुके हैं।

सरोकार की अन्य खबरें पढ़ें
www.jagran.com/topics/positive-news

गांधी परिवार के रिश्तेदार ने 12 करोड़ में बेचा बंगला

जागरण संवाददाता, प्रयागराज

- प्रयागराज के एल्गिन रोड पर है बंगला, चीनी व्यवसायी संदीप अरोरा ने खरीदा
- प्रधानमंत्री रहते भी इस बंगले में आईं थीं इंदिरा गांधी

पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के करीबी रिश्तेदार रुस्तम गांधी की पत्नी शेहर नाज गांधी ने प्रयागराज स्थित सिविल लाइंस के एल्गिन रोड का अपना बंगला बेच दिया। इसे संदीप अरोरा ने सवा 12 करोड़ में खरीदा है। इनका दरभंगा कालोनी में बंगला है। नैनी क्षेत्र में इनकी चीनी मिल और आटा मिल है। शहर के प्रतिष्ठित व्यवसायी हैं। शहर में चीनी वाले के नाम से इनकी पहचान है। रुस्तम को फिरोज गांधी का भतीजा बताया जाता है। 29 अगस्त 2008 को राहुल गांधी रुस्तम के साथ ही अपने दादा फिरोज गांधी की प्रयागराज स्थित मजार पर पहुंचे थे।

उपनिबंधक कार्यालय में हुई रजिस्ट्री के मुताबिक शेहर नाज गांधी ने गत दिवस संदीप अरोरा पुत्र एसके अरोरा के पक्ष में इस बंगले को बेचा। शेहर नाज के पति बिजली विभाग में काम करते थे। उनका कई वर्ष पहले निधन हो चुका है। जानकारों ने बताया कि यहां पूर्व में सिविल स्टेशन भी हुआ करता था। काफी पहले इसे गांधी परिवार के ही करीबी एफएस गांधी ने लीज पर लिया था। उनके एक बेटा और दो बेटी थी। बाद में उन्होंने इसे तीन हिस्सों में बांट दिया। इसमें से अधिकांश हिस्से बिक चुके हैं। कुछ को लेकर विवाद भी चल रहा है। गुरुवार को जो बंगला बिका, उसमें तीन बार इंदिरा गांधी भी आई थीं। वर्ष 1980 में जब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं, तब कैबिनेट के कई मंत्रियों के साथ यहां आईं थीं। 1982 और इसके बाद बीच में एक बार और उनका आना हुआ था।

गांधी परिवार का बंगला गुरुवार को बिक गया। इसमें 60 लाख रुपये का स्टांप शुल्क और करीब साढ़े बारह लाख रुपये रजिस्ट्री शुल्क लगा है।
-कमला देवी, डिप्टी रजिस्ट्रार, उपनिबंधक कार्यालय

फिरोज गांधी भी कई बार आए थे यहां

इंदिरा गांधी के पति फिरोज गांधी भी इस बंगले में अक्सर आया करते थे। निधन से कुछ समय पहले वह एक कार्यक्रम में आए थे और एफएस गांधी के साथ रात्रि भोज में शामिल हुए थे।

दैनिक जागरण
सबरंग
शहर को जानने के...
नई दिल्ली, शनिवार, 21 मार्च, 2020
सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : sabrang@nda.jagran.com
https://www.facebook.com/jagransabrang/

गालिब के शहर में लियो टॉलस्टॉय

नाम से पहचान है

जंतर-मंतर से टॉलस्टॉय मार्ग शुरू होता है जो केजी मार्ग चौक तक जारी रहता है। गालिब के शहर में टॉलस्टॉय मार्ग? सुनकर और देखकर कई बार दिल्ली वाले भी चकित होते हैं। यह मार्ग दरअसल भारत और रूस की परस्पर दोस्ती का परिचायक है। अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शब्दों में समझें तो महात्मा गांधी और टॉलस्टॉय की दोस्ती से भारत और रूस को भी प्रेरणा लेनी चाहिए। गांधी रूसी लेखक-दार्शनिक टॉलस्टॉय से काफी प्रेरित और प्रभावित थे। हालांकि, अपने जीवन में वे दोनों कभी एक-दूसरे से व्यक्तिगत तौर पर नहीं मिले लेकिन पत्रों के जरिए उनके बीच एक अनोखा रिश्ता था और वे विचारों का आदान-प्रदान करते थे। अपनी आत्मकथा में गांधी ने लिखा है कि कैसे टॉलस्टॉय की किताब द किंगडम ऑफ गॉड इज विदइन यू ने उनकी जिंदगी बदल दी। यह किताब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में जोहांसबर्ग से डरबन की ट्रेन यात्रा के दौरान एक अक्टूबर 1904 को पढ़ी थी। वह इस किताब से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने एक अक्टूबर 1909 को टॉलस्टॉय को पत्र लिखा। इसके बाद उनका पत्र व्यवहार चलता रहा। गांधी ने जो किताब लिखी उसने भी टॉलस्टॉय पर गहरा प्रभाव छोड़ा और उसने वैश्विक प्रेम की अनंत संभावनाओं को लेकर उनके विचारों पर काफी असर डाला। दिल्ली और रूस का यह रिश्ता बहुत पुराना भी है। स्वतंत्रता से पहले भी रूसी भाषा दिल्ली में पढ़ाई जाती थी, लेकिन रूसी में शिक्षा 1965 में रूसी अध्ययन केंद्र की स्थापना के साथ शुरू हुई, जिसे आइआइटी दिल्ली परिसर में जगह दी गई थी। रूस ने दिल्ली के बुद्धिजीवी वर्ग को 1960 के आसपास प्रभावित किया था। उस समय के दिल्ली में पले-बढ़े वामपंथी झुकाव वाले लोगों को रूसी सांस्कृतिक केंद्र में साहित्यिक कार्यक्रमों में देखा जा सकता था। 1980 में 40 भारतीय विश्वविद्यालयों ने रूसी भाषा के विभागों की स्थापना की थी। यहां यह जानना दिलचस्प होगा कि पढ़ाने वाले ज्यादातर जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय के ही डिग्री धारक थे। यह मार्ग आज भी भारत और रूस की दोस्ती के प्रगाढ़ होने का संकेत है।

संजीव कुमार मिश्र

भारत और रूस की दोस्ती का परिचायक है यह टॉलस्टॉय मार्ग। जागरण

मॉडर्न वास्तु की नजीर आइजीएनसीए

यहां एक ही छत के नीचे कला के विविध रूपों को जान समझ सकेंगे। सौजन्य : सोशल मीडिया

नायाब वास्तु

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र...कला का ऐसा व्यापक प्रतिबिंब जहां पुरातत्व से लेकर नृत्य, मानव विज्ञान छाया चित्र तक सब कुछ देख सकते हैं। वैसे तो इसकी स्थापना पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी की स्मृति में की गई थी लेकिन इसके भवन निर्माण की कहानी बेहद दिलचस्प है। यह स्वतंत्र भारत की पहली इमारत थी, जिसके लिए अंतरराष्ट्रीय बोली लगाई गई थी। इसमें चालीस से अधिक देशों ने भाग लिया। चौड़ी सड़क के किनारे स्थित यह भवन ऐतिहासिक है। इसके ठीक सामने राष्ट्रीय अभिलेखागार की इमारत है। जिसका वास्तु एडविन लुटियन ने बनाया था। आइजीएनसीए की परिकल्पना 1980 में क्वालिटी पब्लिक स्पेस के मकसद से की गई थी। जिसका उद्देश्य देश की कला संस्कृति को एक छत के नीचे प्रस्तुति का अवसर देने के साथ ही शोध के जरिए उन्हें संरक्षित रखना था। इस कला केंद्र न्यास का गठन व पंजीकरण नई दिल्ली में 24 मार्च,1987 को संपन्न हुआ था।

भारतीय और विदेशी वास्तुकारों का मिश्रण: जॉन टी लैंग अपनी किताब मॉडर्न आर्किटेक्ट इन इंडिया में लिखते हैं कि चूंकि यह सेंट्रल विस्टा में स्थित था। ऐसे में स्थापना के समय यह सवाल भी उठा कि क्या इसे लुटियंस स्टाइल में बनाया जाए या कुछ और? बाद में भवन निर्माण के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता का निर्णय हुआ। यह इसलिए भी सुनिश्चित हुआ ताकि दुनिया के बेहतरीन आर्किटेक्ट आइजीएनसीए का वास्तु तैयार करें। प्रतियोगिता में इस बात का भी जिक्र किया गया था कि केंद्र के लिए गैलरी, थियेटर, लाइब्रेरी, ऑफिस आदि सुसज्जित होना चाहिए। इसके लिए एक अंतरराष्ट्रीय ज्यूरी भी बनाई गई, जिसमें ब्रिटिश आर्किटेक्ट जेम्स स्टेरलिंग, जापानी आर्किटेक्ट फुमिहिको माकी, भारतीय आर्किटेक्ट एपी कंविंदे, बीवी दोषी थे। प्रतियोगिता में 46 देशों से 200 से ज्यादा प्रस्ताव मिले थे। इस कड़ी प्रतियोगिता में आखिरकार प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के शिक्षक राल्फ लर्नर को इसके वास्तु का जिम्मा मिला। कुछ भारतीय वास्तुकारों की तरफ से भी प्रस्ताव मिले थे जिनमें रोमी खोसला, चंद्र प्रकाश कुकरेजा सरीखे प्रसिद्ध वास्तुकारों ने दावेदारी भेजी थीं। यह एक निओ क्लासिकल, आंगन संरचना वाला भवन है जो समग्र इमारत को ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान करता है। राल्फ ने बतौर प्रोजेक्ट डायरेक्टर इस भवन का डिजाइन तैयार किया तो इसे मूर्त रूप देने में दिल्ली के प्रसिद्ध आर्किटेक्ट जसबीर साहनी का भी योगदान रहा है।

प्रदर्शनी व आयोजन स्थल का रखा गया ख्याल: इमारत लाल और भूरे रंग के पत्थरों से बनाई गई है। पूरी इमारत ए और बी ब्लॉक में विभाजित है। इसमें फायर सिस्टम भी लगे हैं। चूंकि यह मॉडर्न आर्किटेक्ट था, इसलिए यहां पानी के निकासी की बेहतरीन व्यवस्था है। इसके पिलर इसकी खासियत हैं। इमारत में प्रवेश करते ही आप एक बड़े हॉल में पहुंचेंगे, जिसके एक तरफ सीढ़ी और दूसरी तरफ लिफ्ट है। हॉल में प्रदर्शनी वगैरह आयोजित होती हैं। जहां तक कमरों की बात है तो इनका आकार बड़ा है। हर तल पर कमरों की संख्या अपेक्षाकृत कम रखी गई है और खाली जगह ज्यादा छोड़ी गई हैं। ऐसा इसलिए भी किया गया है कि केंद्र अपनी जरूरतों के हिसाब से खाली जगह का प्रयोग कर प्रदर्शनी लगाने या फिर पुस्तकालय आदि के लिए कर सके।

भारतीय संस्कृति का प्रतीक है यहां स्थित मूर्तियां: सिंधु, गंगा, कावेरी, महानदी और नर्मदा यानी पांच प्रमुख नदियों से लाए गए पांच चट्टानों को मूर्तियों के आकार में ढाला गया। ये भारतीय संस्कृति की पुरातन व नदियों और चट्टानों की पावनता के अनुस्मारक के रूप में यहा अवस्थित हैं। एक कृत्रिम पोखर भी है।

संजीव कुमार मिश्र

दिल्ली की देहरी

नलिन चौहान
दिल्ली के अनजाने इतिहास के खोजी

मुगल शासक मुहम्मद शाह के साथ नादिरशाह। (बाएं से)। सौजन्य : सोशल मीडिया

मुगल दौर का विराम था नादिर

मुगलों ने दिल्ली पर लंबे समय तक शासन किया। लेकिन हर शासन का अंत हुआ है और इनका अंत बनकर एक नया इतिहास रचने वाला जो आया था, वो था नादिर शाह। एक तरह से मुगलकाल की तबाही था नादिर, सारी सेना, संपत्ति... शासन सब लुट गया। और 21 मार्च को खुद को लाल किला पर नए शासक के रूप में घोषित किया। बाकायदा इसका जश्न भी मनाया गया। हालांकि दिल्ली में जितने दिन (57 दिन) रहा, वह दौर दिल्ली के लिए बेहद खौफनाक था। आइए सबरंग के इस अंक में नादिर के उसी दौर से रूबरू होते हैं:

मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के दौर और मुगलों के इतिहास की सबसे बड़ी दुखद घटना है-दिल्ली पर नादिरशाह का हमला। 1738-1739 में फारस (आज का ईरान) के शाह नादिरशाह ने मुगल साम्राज्य पर आक्रमण किया, जिसमें उसे पूरी सफलता भी मिली। उसने लाहौर और दिल्ली को जीतकर पूरी तरह तबाह और बर्बाद कर दिया। वर्ष 1739 तक मुगलिया सल्तनत की गिनती, एशिया की सबसे अमीर सल्तनतों में होती थी। तब मुगल साम्राज्य में आज का पूरा भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान आता था। इस पूरे इलाके पर मुगल दरबार, जो कि आपसी गुटबाजी, भीतरघात और रंजिशों का शिकार था, में तख्त-ए-ताउस पर बैठने वाले अशक्त बादशाह मुहम्मद शाह की हुकूमत थी। मुहम्मद शाह को उसके रसिक मिजाज और वारांगनाओं की संगति के कारण 'रंगीला' बादशाह भी कहा जाता था। ऐसे में, उसमें योद्धा के गुण को छोड़कर सब गुण थे।

सिपाही से किया था नादिर ने आगाज: यह मुहम्मद शाह के वक्त का दुर्भाग्य था कि तब हिंदुस्तान की उत्तर-पश्चिम सीमा पर फारस में एक जंगबाज नादिर शाह बादशाह बना। एक गरीब चरवाहे के बेटे नादिर शाह ने फौज में एक सिपाही के रूप में अपनी जिंदगी का आगाज किया था। नादिरशाह का मूल नाम नादिरकुली था जो कि 'अफशार' कबीले का था। नादिर कुली वर्ष 1736 में नादिरशाह के नाम से फारस का सुल्तान बना।10 मई 1738 को नादिर शाह ने अफगानिस्तान पर हमला किया। अफगानिस्तान को जीतने के बाद 6 नवंबर, 1738 को नादिर शाह ने हिंदुस्तान की तरफ कूच किया। 13 फरवरी 1739 को नादिरशाह ने दिल्ली से 75 मील उत्तर स्थित करनाल (आज के हरियाणा में) में अपनी बंदूकधारी हथियारबंद डेढ़ लाख सिपाहियों की फौज के दम पर मुगलों की 10 लाख की सेना को हरा दिया। इस संयुक्त मुगल फौज, जिसमें दिल्ली के मुगल बादशाह, अवध के सआदत खान और दक्खन के निजामउल-मुल्क के सैनिक थे, की पराजय से यह बात तय हो गई कि मुगलों की यह भारी भरकम फौज एक अनुशासनहीन भीड़ के अलावा कुछ भी नहीं थी।

सबसे पहले शालीमार बाग में रुका था काफिला: जवाहर लाल नेहरु ने 'हिंदुस्तान की कहानी' पुस्तक में लिखा है कि उसके (नादिरशाह) लिए यह धावा कोई मुश्किल काम न था, क्योंकि दिल्ली के हाकिम कमजोर और नामर्द हो चुके थे और लड़ाई के आदी न रह गए थे और मराठों से नादिरशाह का सामना नहीं हुआ। उल्लेखनीय है कि मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम ने मुगलों को सहायता देने के इरादे से एक सैन्य अभियान शुरू किया था। करनाल की लड़ाई में हारने के एक सप्ताह बाद मुहम्मद शाह ईरानी हमलावर नादिर शाह के साथ दिल्ली आया। नादिरशाह का काफिला शालीमार बाग में ही रुका रहा जबकि मुहम्मदशाह 20 मार्च को लालकिले में खामोशी से पहुंचकर गद्दी पर बैठ गया। तो वहीं विजेता ईरानी बादशाह नादिर शाह 21 मार्च यानी नौरोज के दिन जीत के जश्न की शानोशौकत के साथ किले में दाखिल हुआ। लालकिला में नादिर शाह शाहजहां के महल में ठहरा जबकि मुहम्मद शाह को जनानखाने में जगह मिली।

दिल्ली को भारी पड़ी थी एक अफवाह: इससे अगला दिन (22 मार्च) मुगलिया राजधानी दिल्ली के इतिहास का सबसे काला दिन था। नादिर शाह की फौज ने दिल्ली शहर में डेरा डाल दिया। नतीजन शहर में अनाज महंगा हो गया। ऐसे में, ईरानी सैनिकों और पहाड़गंज के व्यापारियों में अनाज का दाम कम करने को लेकर झगड़ा हो गया। इसी बीच एक अफवाह उड़ गई कि नादिर शाह को उसके हरम के एक रक्षक ने मार दिया है। इस अफवाह फैलते ही स्थानीय जनता ने गुस्से में ईरानी सिपाहियों पर हमला कर दिया। इस अफरातफरी में करीब एक हजार ईरानी सिपाही मारे गए। इसके जवाब में नादिर शाह ने दिल्ली की आम जनता के कत्लेआम का हुक्म दिया। नादिर अपने आदेश की निगरानी के लिए लाल किला से निकलकर चांदनी चौक स्थित रोशन-उद-दौला की सुनहरी मस्जिद पर पहुंच गया। उस दिन सुबह से कत्लेआम शुरू हो गया था। चांदनी चौक, दरीबा और जामा मस्जिद के आसपास के इलाके में सबसे अधिक आबादी मारी गई। अकेले एक दिन में दिल्ली में करीब करीब 30 हजार नागरिक नादिरशाही हुकुम की वजह से बेरहमी से मारे गए।

मशहूर पाकिस्तानी कहानीकार इंतिजार हुसैन ने अपने उपन्यास 'दिल्ली था जिसका नाम में' लिखा है कि आदमियों के गले खीरे ककड़ियों की तरह कटने लगे। जब एक लाख से ऊपर लोग कट गए और लाशों का अंबार लग गया तब नादिर शाह ने सांस ली और उसके सिपाहियों ने हाथ रोका। नादिर शाह तो लूटमार करके चला गया। मगर अब ये शहर जिसे शाहजहां ने इतने चाव से आबाद किया था बेहाल हो चुका था और बर्बादी ने घर देख लिया था। नादिर शाह ने निजामउल-मुल्क के अनुरोध पर अपने सिपाहियों को लूटपाट-हत्या बंद करने का आदेश तो दिया, पर उसने निजाम के सामने उसे 100 करोड़ रुपये देने की शर्त रखी। इस बारे में तब के लाहौर के नाजिम के वकील आनंद राम मुखलिस ने लिखा है, '348 साल की अर्जित संपत्ति का मालिक कुछ क्षणों में ही बदल गया था।'

दो महीने तक मचा था कोहराम: मुहम्मद शाह को जलील करने के इरादे से नादिर शाह ने भी अपने को दिल्ली में बादशाह घोषित किया और अपने लड़के नसरुल्लाह का निकाह औरंगजेब के पौत्र अजीजुद्दीन की बेटी से किया। जबकि मुहम्मद शाह ने अपनी जान और सल्तनत बचाने के इरादे से कोहिनूर हीरे और तख्ते-ताउस समेत अथाह खजाने को नादिरशाह को नजर कर दिया। मुहम्मदशाह एक कमजोर ढांचे का आदमी था। उसे अकसर बुखार रहता था। एक दिन पालकी में किले के अंदर की मस्जिद में वह बेहोश हो गया। वह कुछ ठीक हुआ पर उसे लकवा मार गया। उसकी आवाज चली गई। रात भर वह बेहोश रहा। 15 अप्रैल, 1748 को सुबह उसकी मृत्यु हो गई। नादिर शाही दरबार के इतिहासकार मिर्जा महदीअस्तराबादी ने लिखा है कि 'जब्त किए गए सामान में तख्त-ए-ताउस के शाही रत्नों का कोई मुकाबला ही नहीं है। पुखराज, माणिक्य और सबसे शानदार हीरे जिनका अतीत या वर्तमान में किसी भी खजाने में जोड़ दिखता ही नहीं। ऐसे रत्न जड़े तख्त-ए-ताउस को तुरंत नादिर शाह के राजकोष में जमा करा दिया गया। दिल्ली में खौफनाक 57 दिन रहने के बाद 16 मई को नादिर शाह दिल्ली से विदा हुआ। और उसके साथ विदाई हुई मुगल सल्तनत की आठ पीढ़ियों की अथाह संपत्ति और खजाने की। लूट का पूरा साजो-सामान '700 हाथियों, 4000 ऊंटों और 12000 घोड़ों की मदद से अनेक गाड़ियां, जो कि सोने-चांदी और कीमती रत्नों से भरी थीं, पर लादा गया।

और अंत में अपनी मौत से भयभीत हो गया नादिर : नादिर ने दूसरी दिशाओं में भी अपना परचम लहराया। उसने बुखारा को जीतकर ईरान की सीमाओं को सासानी दौर (फारसी हुकूमत का चौथा दौर) के समय तक फैला दिया। वर्ष 1743 से 1746 तक वह तुर्कों के साथ संघर्ष में लिप्त रहा। नादिर के जीवन का आखिरी दौर अत्याचार, संदेह और लालच में ही बीता। वह अपनी मौत के डर से इस कदर भयाक्रांत था कि वर्ष 1747 में विद्रोही कुर्दों के खिलाफ एक अभियान में उसने अपने बेटे को ही अंधा कर दिया। नादिर शाह की हत्या उसके अपने ही अंगरक्षकों ने की। वैसे उसने जिस अफ्सार वंश (1736-49) की नींव रखी, वह अधिक समय तक सत्ता में नहीं रहा। वह बात अलग है कि आज भी ईरान में नादिरशाह की गिनती फारस के महान शासकों में होती है।

दिल्ली में नादिरशाही सिक्के

20 मार्च, 1739 को नादिर शाह दिल्ली पहुंचा। यहां नादिर के नाम पर खुत्बा (मुस्लिम राज्यों में नए राजा के सिंहासन पर बैठने की घोषणा) ।पढ़ा गया और सिक्के भी जारी किए गए। नादिरशाह ने मुगलशैली नुमा अपने सिक्कों पर सुल्तान नादिर अंकित करवाया। 'उत्तर मुगलकालीन भारत का इतिहास' में सतीश चंद्र लिखते हैं कि संदेह नहीं कि नादिरशाह ने मुगल बादशाह तथा उसके प्रमुख अमीरों को बंदी बनाया, उसने कुछ समय तक दिल्ली में अपने को बादशाह घोषित करके अपना सिक्का चलाया। दिल्ली में नादिरशाह की हुकूमत का आतंक भारत के दूसरे भागों में भी तेजी से फैला। इसी आतंक का नतीजा था कि दिल्ली से दूर अहमदबाद, मुर्शिदाबाद और वाराणसी जैसे स्थानों पर नादिरशाह के नाम से सिक्के ढाले गए।

सेहत से भरपूर मिक्स फ्रूट पंच

जायका

दिल्ली अपने जायकों के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन इन दिनों यहां के जायकों को भी कोरोना की नजर लग गई है। लोग बाहर की चीजें खाने से परहेज करने लगे हैं। मजबूरीवश जो लोग बाहर जा रहे हैं वे सोच-समझ कर ही खाने पीने की चीजों का इस्तेमाल कर रहे हैं। और बात जब हेल्दी खाने की हो तो जूस से बेहतर भला और क्या हो सकता है। अगर आप भी इन दिनों हेल्दी ड्रिंक्स व जूस की तलाश में हैं तो आपको कई जगहों पर स्वादिष्ट जूस मिल जाएंगे जो स्वाद तो देंगे साथ ही आपको बिमारियों से लड़ने की ताकत भी प्रदान करेंगे। राजधानी में कई पुराने व मशहूर जूस कॉर्नर हैं जो आपकी अच्छी सेहत के लिए रसीले फलों का रस परोस रहे हैं।

मंडी हाउस स्थित एचपीएमसी जूस कॉर्नर पर फलों का जूस पीते ही हो जाएंगे तरोताजा। ध्रुव कुमार

हिमाचल के फलों का असली स्वाद: अगर हिमाचल के बागानों से निकले शुद्ध व स्वाद से भरपूर फलों के रस का आनंद लेना चाहते हैं तो मंडी हाउस पहुंच जाएं। यहां हिमाचल भवन के बाहर एचपीएमसी जूस कॉर्नर पर हिमाचल के रसीले फलों का ऐसा रस मिलेगा कि आप कोल्ड ड्रिंक्स और शेक पीना भूल जाएंगे। 40 वर्ष पुरानी इस दुकान पर मिक्स फ्रूट पंच, नेचुरल जूस, एप्पल जूस, कीवी ड्रिंक, लीची, अमरूद, आम, नींबू, अनानास, अनार आदि का जूस उपलब्ध है। दुकानदार की मानें तो ये जूस हिमाचल से ही बोतलों में पैक होकर दिल्ली लाए जाते हैं। यहां आपको 25 रुपये से लेकर 50 रुपये तक में जूस की बोतलें भी मिल जाएंगी। कम दाम में सेहत से भरपूर जूस के लिए इससे बेहर और क्या होगा।

सिर्फ मंडी हाउस ही नहीं, लॉरेंस रोड, पंजाबी बाग, बाबा खड़ग सिंह मार्ग, इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन, एम्स, चिड़ियाघर, हौज खास आदि जगहों पर भी एचपीएमसी के जूस का स्वाद ले सकते हैं। यह 100 प्रतिशत शुद्ध जूस होता है जिसे गुड हेल्थ ग्रेट टेस्ट की टैगलाइन के साथ बेचा जाता है। हिमाचल के बागानों में बिना किसी मिलावट के ये जूस तैयार किए जाते हैं। काम की आपाधापी से थक गए हों तो समय निकाल कर एक बार यहां जूस का सेवन करें पीते ही अपने भीतर ताजगी और स्फूर्ति का एहसास करेंगे।

फ्रूट ही नहीं वेजिटेबल जूस भी है

आइटीओ स्थित सुभाष जूस एंड शेक्स कॉर्नर पर आप 30 रुपये से लेकर 80 रुपये तक में स्वाद से भरपूर जूस का स्वाद ले सकते हैं। जूस के शौकीनों की यहां अच्छी खासी संख्या देखरी जा सकती है किसी भी तरह की मिलावट से बेफिक्र आप यहां पसंदीदा जूस का आनंद ले सकते हैं। 45 वर्ष पुरानी इस दुकान में स्थानीय लोगों के साथ साथ आस पास के दफ्तर में काम करने वाले लोग भी जूस पीने आते हैं। यहां वेजिटेबल जूस, मिक्स फ्रूट जूस, किन्नू जूस, टोमैटो जूस व चुकंदर का जूस के अलावा बनाना व खजूर शेक, खजूर शेक, एप्पल शेक आदि मिल जाएंगे जो स्वाद के साथ अच्छी सेहत भी देंगे। वहीं, बाराखंबा रोड स्थित मशहूर गुप्ता जूस कॉर्नर पर भी इन दिनों काफी संख्या में लोग नारियल पानी व मिल्क शेक पीते नजर आएंगे।

यहां मिल्क शेक लोग काफी पसंद करते हैं। इस दुकान के बाहर पूरे दिन लोगों की अच्छी खासी भीड़ लगी रहती है। खासकर युवा यहां जूस व शेक पीने पहुंचते हैं।

- रितु राणा

शहर के गांव

सभाओं के कारण नाम ही पड़ गया सभापुर गांव

सभापुर गांव...अंदर प्रवेश करते ही हरे भरे पेड़ पौधे प्रकृति के बीच होने का एहसास कराते हैं। पेड़ की छांव में बैठे लोग एक दूसरे का सुख-दुख बांटते नजर आ जाएंगे। इस बात से उन्हें कोई सरोकार नहीं कि वे किस जाति या धर्म के हैं। एक दूसरे के घर आना-जाना, प्रेम और भाईचारा आज भी इस गांव में जीवंत है। यमुनापार का यह गांव आज भी अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित रीति-रिवाज और परंपराओं को संजोए हुए है। दिल्ली के इस प्राचीन एवं ऐतिहासिक गांव के पीछे भी एक लंबा इतिहास रहा है। तो आइए गांव के बुजुर्गों से ही जानें क्या है इस गांव का इतिहास और क्या है यहां खास-

सभाओं के कारण नाम पड़ गया सभापुर: सभापुर गांव का इतिहास करीब 450 वर्ष पुराना है। बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में बसे होने के कारण यहां अक्सर बाढ़ आ जाती थी और पूरा गांव उजड़ जाता था। चौधरी ज्ञानी हवलदार गांव में सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे व्यकित थे। दिल्ली के अन्य गांव की तुलना में यहां सबसे ज्यादा सभाएं होती थी, लिहाजा इसका नाम ही सभापुर रख दिया गया। 1978 में जब दिल्ली में बाढ़ आई थी तब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी यहां आई और उन्होंने सभापुर गांव के नाम से ही करावल विधानसभा में न्यू सभापुर गांव बसाया था। आरडब्ल्यूए उपाध्यक्ष वीरेंद्र प्रधान कहते हैं उनके पूर्वज गुजरात से चलकर सबसे पहले राजस्थान में बसे, उसके बाद जब वे दिल्ली पहुंचे तो यहां आश्रम चौक के पास किलोकरी गांव में रहने लगे। फिर किलोकरी गांव पंडितों को दान में देकर वे कश्मीरी गेट बस अड्डे के पास यमुना नदी के किनारे रहने लगे। धीरे-धीरे यमुना नदी के किनारे कई गांव बसते चले गए उन्हीं गांवों में से एक गांव है सभापुर।

चार बीघा जमीन दान देकर तैयार किया था श्मशान घाट: आज से दस वर्ष पहले तक गांव में कोई श्मशान घाट नहीं था जिस कारण ग्रामीणों को यमुना नदी के किनारे ही दिवंगत का अंतिम संस्कार करने जाना पड़ता था। लोगों ने कई बार सरकार से यहां श्मशान घाट बनाने की मांग की, लेकिन उनकी मांग पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। फिर वर्ष 2010 में सभापुर के लोगों ने एक पंचायत किया जिसमें सभी ग्रामीणों ने मिलकर अपनी चार हजार गज जमीन श्मशान घाट के लिए सरकार को दान देने का निर्णय लिया। श्मशान घाट बनाने के लिए सरकारी फंड न मिलने के कारण एक बार फिर 2013 में पंचायत बैठी जिसके बाद गांव वालों ने ही एक-एक हजार रुपये श्मशान घाट बनाने के लिए इकट्ठे किए। श्मशान घाट को तैयार करने में भी गांव के लोगों ने ही श्रमदान किया। युवाओं ने दिन रात मेहनत कर बाढ़ग्रस्त क्षेत्र को विकसित कर यहां श्मशान घाट बनाकर तैयार किया।

सैकड़ों वर्ष पुराने मंदिर ऐतिहासिक धरोहर: प्रचीन मंदिर और उसकी बनावट को देखना चाहते हैं तो यहां देख सकते हैं। गांव में कई सौ वर्ष पुराने मंदिर आज भी मौजूद हैं। यहां एक पुराना शिव मंदिर है जिसका अब नवीनीकरण हो चुका है। शिव मंदिर में शिवरात्रि और सावन के महीने में धूमधाम से लोग पूजा-अर्चना करते हैं। रोजाना जलाभिषेक होता है, आरती होती है और भंडारा भी होता है। इसके अलावा यहां एक कुल देवता का मंदिर भी है। भगीरथ मास्टर की मानें तो गांव में गुर्जर और ब्राह्मण समाज के लोग ज्यादा रहते हैं लेकिन अब कुछ अन्य समुदाय के लोग भी यहां रहने लगे हैं। करीब 13 हजार की आबादी वाले इस गांव में सभी समुदाय के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं।

-रितु राणा

गांव के बड़े-बुजुर्ग इसी तरह मिल बैठकर एक दूसरे के साथ सुख-दुख बांटते हैं। जागरण

राष्ट्रीय संस्करण
शनिवार 21 मार्च 2020
दैनिक जागरण
बिजनेस
www.jagran.com

मंदी की ओर अमेरिकी इकोनॉमी, आइटी इंडस्ट्री आशावान

वाशिंगटन, एजेंसियां : कोरोना वायरस से फैली महामारी के चलते अमेरिका मंदी की ओर अग्रसर है, लेकिन भारतीय मूल के एक अमेरिकी वेंचर कैपिटल विशेषज्ञ का कहना है कि सिलिकॉन वैली सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) उद्योग के विकास को लेकर आशावादी है। इंडियास्पोरा के संस्थापक एमआर रंगास्वामी ने कहा कि कोरोना संकट साल 2008 की वैश्विक आर्थिक मंदी की तुलना में अधिक मुश्किलें खड़ी कर रहा है, क्योंकि वायरस को लेकर एक तरह की अनिश्चितता की स्थिति पैदा हो गई है।

कोरोना संकट से ट्रैवल, टूरिज्म, रिटेल और हॉस्पिटेलिटी क्षेत्र सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। इन्हें मदद की सबसे पहले दरकार है।

— एस. बालाकृष्णन, सह-संस्थापक, इन्फोसिस

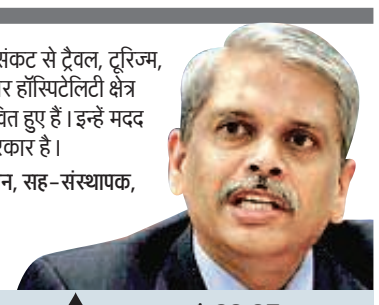

सेंसेक्स	29,915.96 ▲ 1627.73	निफ्टी	8,745.45 ▲ 482	सोना प्रति दस ग्राम	₹ 41,705 ▲ ₹1395	चांदी प्रति किलोग्राम	₹38,100 ▲ ₹2889	$ डॉलर	₹75.20 ▲ ₹0.08	क्रूड (ब्रेंट) प्रति बैरल	$ 28.25

बल्क ड्रग निर्माण के लिए 6,000 करोड़ रुपये की मदद संभव

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

देश में बल्क ड्रग निर्माण के प्रोत्साहन के लिए सरकार 6,000 करोड़ रुपये की मदद दे सकती है। शनिवार को इस पैकेज का एलान संभव है। सरकार बल्क ड्रग के अलावा मेडिकल उपकरण निर्माता कंपनियों के लिए भी 3,000 करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा कर सकती है। देश के छह राज्यों में मेडिकल उपकरण निर्माण के लिए छह पार्क बनाने का भी एलान किया जा सकता है। इस मद में 600 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है। सरकार बल्क ड्रग्स के उत्पादन से जुड़े नियमों में भी ढील दे सकती है। खासकर पर्यावरण मंजूरी के सख्त नियमों को लचीला किया जा सकता है।

सूत्रों के मुताबिक बल्क ड्रग के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इनसेंटिव दिए जा सकते हैं। बल्क ड्रग की वर्तमान यूनिट के क्षमता विस्तार के लिए प्लांट, मशीनरी, लैब व अन्य उपकरणों की खरीदारी पर सब्सिडी का प्रावधान किया जा सकता है। चीन में कोरोना वायरस फैलने के बाद भारत में बल्क ड्रग की किल्लत की आशंका जाहिर की जाने लगी थी। चीन से सप्लाई चेन बाधित होने के बाद सरकार बल्क ड्रग के मामले में चीन पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए गंभीरता से सोचने लगी। नीति आयोग के नेतृत्व में इस निर्भरता को कम करने लिए नीति लाने की योजना बनाई जिसके तहत सभी साझेदारों के साथ बैठक कर प्रोत्साहन पैकेज को अंतिम रूप दिया गया।

वजह

- बल्क ड्रग के लिए चीन पर निर्भरता को कम करना चाहती है सरकार
- 3,000 करोड़ रुपये मेडिकल उपकरण निर्माण के लिए भी
- छह मेडिकल उपकरण पार्क बनाने के लिए मिल सकते हैं 600 करोड़ रुपये

प्रतीकात्मक

बल्क ड्रग निर्माताओं के मुताबिक भारत बल्क ड्रग के मामले में 65 फीसद चीन पर निर्भर करता है। 10 फीसद आपूर्ति अन्य देशों से होती है तो 25 फीसद बल्क ड्रग का उत्पादन घरेलू स्तर पर होता है। फार्मा उद्यमियों के मुताबिक सरकार के प्रोत्साहन पैकेज से घरेलू स्तर पर बल्क ड्रग के उत्पादन में कम से कम 15 फीसद तक की बढ़ोतरी हो सकती है।

फार्मा उद्यमियों के मुताबिक घरेलू बल्क ड्रग यूनिट की उत्पादन क्षमता का भी विस्तार किया जा सकता है, लेकिन दो वजहों से अभी यह संभव नहीं हो पा रहा है। पहली दिक्कत यह है कि क्षमता विस्तार के लिए पर्यावरण मंजूरी लेनी पड़ती है जिसे लेने में सालभर से अधिक का समय लग जाता है। तब तक ऑर्डर देने वाला चीन से बल्क ड्रग मंगा लेता है। चीन का बल्क ड्रग भारत के मुकाबले 20-25 फीसद तक सस्ता है। सरकार की मदद से लागत में कमी आने पर घरेलू निर्माता चीन का मुकाबला कर सकेंगे।

उद्योग जगत को उबारने के लिए वित्त मंत्रालय सक्रिय

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

वित्त मंत्री की अध्यक्षता में चार सेक्टर के साथ शुक्रवार को बैठक हुई

कोरोना संकट से प्रभावित क्षेत्रों को राहत देने के लिए वित्त मंत्रालय सक्रिय हो गया है। शुक्रवार को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में चार प्रमुख क्षेत्रों के साथ बैठक की गई। शनिवार को भी यह बैठक जारी रहेगी। हालांकि अभी इन क्षेत्रों के लिए राहत पैकेज के एलान की कोई समय-सीमा निर्धारित नहीं की गई है।

वित्त मंत्री ने बताया कि शुक्रवार को पर्यटन व आतिथ्य सत्कार, एमएसएमई, नागरिक उड्डयन एवं पशुधन विकास क्षेत्र के साथ विचार-विमर्श किया गया। बैठक में वित्त सचिव एवं आर्थिक मामलों के सचिव भी मौजूद थे। सीतारमण ने बताया कि इन चारों क्षेत्रों के मंत्री व अधिकारी अपनी मांग लेकर आए थे जिस पर विस्तार से चर्चा की गई। संबंधित मंत्रालयों ने अपने-अपने साझेदारों से बातचीत करके मांग पत्र तैयार किए थे जिसे उन्होंने वित्त मंत्रालय को सौंपा है। वित्त मंत्री ने बताया कि यह बैठक मंत्रालय के अधिकारियों के साथ शनिवार को भी जारी रहेगी। उन्होंने यह भी बताया कि अभी इकोनॉमिक रिस्पांस टास्क फोर्स का गठन नहीं किया गया है।

वित्त मंत्री के मुताबिक शुक्रवार को जो चार-पांच सेक्टर के साथ बैठकें हुई हैं, उनका टास्क फोर्स से कोई लेना-देना नहीं है। ये सेक्टर पहले से ही वित्त मंत्रालय के संपर्क में थे। गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना संकट के अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले असर के मूल्यांकन एवं उनमें सुधार के उपाय के लिए इकोनॉमिक रिस्पांस टास्क फोर्स गठित करने का एलान किया था जिसकी अध्यक्षता वित्त मंत्री करेंगी। वित्त मंत्री ने बताया कि गठन के बाद यह सारी कवायद टास्क फोर्स का हिस्सा बन जाएगी।

फिच ने भारत का विकास दर अनुमान घटाया

नई दिल्ली, प्रेट्र : रेटिंग एजेंसी फिच रेटिंग्स ने शुक्रवार को अगले वित्त वर्ष (2020-21) के लिए भारत की जीडीपी विकास दर का अनुमान घटाकर 5.1 प्रतिशत कर दिया है। रेटिंग एजेंसी का कहना है कि कोरोना वायरस के प्रकोप से निवेश और निर्यात प्रभावित होगा। इससे पहले फिच ने दिसंबर, 2019 में अगले वित्त वर्ष के लिए जीडीपी विकास दर 5.6 प्रतिशत और उससे अगले वित्त वर्ष यानी 2021-22 में 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था। लेकिन ताजा रिपोर्ट में एजेंसी ने वित्त वर्ष 2021-22 के लिए भी आर्थिक विकास दर अनुमान घटाकर 6.4 प्रतिशत कर दिया है।

एजेंसी ने यह भी कहा कि ग्लोबल इकोनॉमी अब सुस्ती के दायरे में है। फिच ने वैश्विक आर्थिक परिदृश्य 2020 में कहा कि आगामी हफ्तों के दौरान भारत में कोरोना वायरस से प्रभावित लोगों की संख्या बढ़ेगी, लेकिन इसका तेज फैलाव रोकने में कामयाबी मिलेगी। बावजूद इसके आर्थिक परिदृश्य नकारात्मक हैं। फिच के मुताबिक चीन के साथ भारत का लिंकेज बहुत ज्यादा मजबूत नहीं है। लेकिन भारत के कारोबारी और उत्पादक कच्चे माल के लिए चीन पर बहुत ज्यादा निर्भर हैं।

उम्मीदों पर शेयर बाजारों में लौटी रौनक

सुधार ▶ बीएसई-सेंसेक्स में 1,627 .73 अंकों का उछाल, निफ्टी 482 अंक मजबूत

संकटग्रस्त कई क्षेत्रों को जल्द राहत पैकेज संभव

मुंबई, प्रेट्र : चार कारोबारी सत्रों की गिरावट को पीछे छोड़ते हुए सप्ताह के आखिरी कारोबारी सत्र में शुक्रवार को घरेलू शेयर बाजारों में थोड़ी रौनक दिखी। निचले स्तर पर खरीदारी और कई सेक्टरों के लिए सरकार से राहत पैकेज की उम्मीद और विदेशी बाजारों के सकारात्मक रुख पर बीएसई और एनएसई में निवेशकों ने जमकर खरीदारी की। दिन के कारोबार के आखिर में बीएसई का 30-शेयरों वाला प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स 1,627.73 अंकों यानी 5.57 प्रतिशत उछाल के साथ 29,915.96 अंक पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का 50-शेयरों वाला प्रमुख सूचकांक निफ्टी भी 482 अंक यानी 5.83 प्रतिशत सुधरकर 8,745.45 अंक पर स्थिर हुआ।

इंट्रा-डे में सेंसेक्स एक 30,400 के ऊपर तक गया, लेकिन वहां टिका नहीं रह पाया। इस पूरे सप्ताह के दौरान सेंसेक्स की कुल गिरावट 4,187.52 अंकों यानी 12.27 प्रतिशत की रही, जबकि इसी दौरान निफ्टी 1,209.75 अंक यानी 12.15 प्रतिशत लुढ़क गया।

प्रतीकात्मक

सोना-चांदी में जबर्दस्त उछाल

नई दिल्ली, प्रेट्र : विदेशी बाजारों के सकारात्मक रुख से संकेत लेते हुए घरेलू सराफा बाजार में भी निवेशकों ने अच्छी खरीदारी की। शुक्रवार को घरेलू सराफा बाजार में सोना 1,395 रुपये उछलकर 41,705 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंच गया। चांदी के भाव में भी 2,889 रुपये का उछाल आया और यह 38,100 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव पर बिकी। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सोना तेज बढ़त के साथ 1,514 डॉलर और चांदी 12 .96 डॉलर प्रति औंस (28 .35 ग्राम) के भाव पर बिके।

शुक्रवार को सेंसेक्स पैक में सबसे ज्यादा 18.58 प्रतिशत का उछाल ओएनजीसी के स्टॉक्स में दिखा। अल्ट्राटेक सीमेंट (13.01 प्रतिशत), एचयूएल (11.75 प्रतिशत), आरआइएल (11.24 प्रतिशत), टीसीएस (9.90 प्रतिशत), टाटा स्टील (9.60 प्रतिशत) और एशियन पेंट्स (8.91 प्रतिशत) के शेयरों में भी निवेशकों की खूब दिलचस्पी दिखी। हालांकि एचडीएफसी बैंक और इंडसइंड बैंक के शेयरों को निवेशकों ने भाव नहीं दिया और दोनों शेयर 1.39 प्रतिशत तक टूट गए। बीएसई के सभी सेक्टोरल इंडेक्स हरे निशान पर बंद हुए। बीएसई एनर्जी, ऑयल एंड गैस, आइटी, एफएमसीजी, टेक, मेटल और यूटिलिटीज इंडेक्स करीब 10 प्रतिशत तक चढ़कर बंद हुए। बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में भी 4.18 प्रतिशत तक का उछाल देखा गया।

इकोनॉमी पर कोरोना वायरस के गंभीर असर को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कोविड-19 इकोनॉमिक टास्क फोर्स के गठन का एलान किया था। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण इस टास्क फोर्स का नेतृत्व करेंगी। यह टास्क फोर्स कारोबार के विभिन्न सेक्टर पर कोरोना महामारी के असर का आकलन कर उसके पुनरुद्धार के उपाय सुझाएगा। इस खबर के चलते शुक्रवार को शेयर बाजारों में निवेशकों ने बहुत से स्टॉक्स की वैल्यू बाइंग पर जोर दिया। विशेषज्ञों का कहना था कि यह टास्क फोर्स बहुत जल्द ठोस उपाय लेकर सामने आएगा।

दिन के कारोबार के बारे में जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के रिसर्च प्रमुख विनोद नायर का कहना था कि विदेशी बाजारों के सकारात्मक रुख पर भारतीय शेयर बाजार करीब छह फीसद चढ़कर बंद हुए। हालांकि दुनियाभर की अर्थव्यवस्था पर कोरोना का असर दिख रहा है, लेकिन कई देशों के केंद्रीय बैंकों ने अपने-अपने स्तर पर राहत पैकेज की जो घोषणाएं की हैं, उनसे बाजारों को मदद मिली है।

विदेशी बाजारों के मामले में एशिया के अन्य प्रमुख बाजार सकारात्मक स्तर पर थे। शंघाई, हांगकांग और सियोल के शेयर बाजार सात प्रतिशत तक चढ़कर बंद हुए। यूरोप के शेयर बाजारों में भी शुरुआती कारोबार के दौरान पांच प्रतिशत तक का उछाल दिखा।

निजी एफएम रेडियो क्षेत्र को संकट से उबारे सरकार : एआरओएआइ

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

संगठन ने कोरोना संकट के चलते मांगी लाइसेंस फीस में एक साल की छूट

आमजन की जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुके निजी एफएम रेडियो के गहराते संकट को देखते हुए केंद्र सरकार से इस सेक्टर को तत्काल मदद देने की अपील की गई है। एफएम रेडियो ऑपरेटरों के संगठन एसोसिएशन आफ रेडियो ऑपरेशंस फॉर इंडिया (एआरओआइ) ने केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर से निजी एफएम रेडियो उद्योग को मौजूदा संकट से उबारने की गुहार लगाई है।

एआरओआइ की ओर से जावडेकर को पत्र लिखकर एफएम रेडियो क्षेत्र की बढ़ती चुनौतियों से अवगत कराया गया है। एआरओआइ की अध्यक्ष अनुराधा प्रसाद की ओर से सूचना प्रसारण मंत्री को लिखे गए पत्र में कहा गया है कि देश के सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में बदलाव लाने में एफएम रेडियो चैनलों की अहम भूमिका रही है। इस दौरान एफएम रेडियो ने हर मौके पर सरकार के साथ सक्रिय साझेदारी की भूमिका का निर्वाह किया है। चाहे प्राकृतिक आपदा की स्थिति हो या अन्य किसी तरह का संकट, एफएम रेडियो ने अपनी जिम्मेदारी का गरिमापूर्ण निर्वहन किया है। एफएम रेडियो की इस भूमिका की याद दिलाते हुए एआरओआइ ने यह भी कहा है कि इस सकारात्मक नजरिये की वजह से किसी रेडियो स्टेशन के किसी भी कंटेंट को लेकर कोई एतराज या शिकायत कभी नहीं मिली है। इतना ही नहीं, कई रेडियो स्टेशनों को तो सरकार की ओर से आपदाओं के दौरान उनकी सकारात्मक भूमिका के लिए सम्मानित भी किया जाता रहा है।

प्रतीकात्मक

एआरओआइ के मुताबिक सेक्टर के लिए पिछला साल काफी संघर्षपूर्ण रहा है। विज्ञापनों के खर्च में भारी कटौती तो हुई ही है, सरकारी विज्ञापनों में भी भारी गिरावट आई है। इसके चलते एफएम रेडियो सेक्टर का संकट बढ़ गया है। इसीलिए रेडियो स्टेशनों की लाइसेंस फीस के साथ प्रसार भारती के एक साल के शुल्कों को माफ करने की अपील की है। एफएम रेडियो स्टेशनों के लिए सरकारी विज्ञापनों को पहले की तरह बहाल किया जाना चाहिए। मंत्री से यह भी गुहार लगाई गई है कि डीएवीपी, एनएफडीसी और बीएसएनएल जैसे सरकारी कंपनियों के विज्ञापन बकाया का भुगतान कराया जाए।

आर्थिक चुनौतियों के साथ कोरोना वायरस के ताजा संकट से पर्यटन और मनोरंजन क्षेत्र ही नहीं सेवा क्षेत्र के विज्ञापनों में भारी कमी आई है, जिससे एफएम रेडियो स्टेशनों की आर्थिक चुनौती गंभीर हो गई है। जबकि इस सेक्टर में अभी 20 हजार से अधिक लोग सीधे काम करते हैं। अगर संकट का समाधान नहीं हुआ तो इन्हें काम पर बनाए रखना संभव नहीं होगा।

टैक्स वसूली रोकने के आदेश पर सुप्रीम कोर्ट की रोक

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना के कारण केरल और इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बैंक, वित्तीय संस्थानों, इनकम टैक्स और जीएसटी अथारिटी आदि को वसूली की प्रक्रिया 6 अप्रैल तक टालने का आदेश दिया था

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को केरल और इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी है जिसमें दोनों ने बैंकों, वित्तीय संस्थानों, आयकर विभाग और जीएसटी जैसे प्राधिकरणों से कोरोना वायरस के चलते वसूली प्रक्रिया और दंडात्मक कार्यवाही छह अप्रैल तक रोकने को कहा था। साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट की सुनवाई पर भी अंतरिम रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने रोक के आदेश में केंद्र सरकार का बयान भी दर्ज किया है जिसमें केंद्र की ओर कहा गया था कि सरकार हालात को लेकर सजग है और उचित तंत्र बनाया जाएगा, ताकि लोगों को परेशानी न हो।

ये आदेश न्यायमूर्ति एएम खानविल्कर की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय पीठ ने हाई कोर्ट के फैसले को चुनौती देने वाली केंद्र सरकार की याचिका पर सुनवाई के बाद दिए। इससे पहले केंद्र की याचिका पर बहस करते हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि इस तरह ब्लैंकेट ऑर्डर नहीं दिए जा सकते और केरल हाई कोर्ट के आदेश पर रोक लगाई जानी चाहिए। मेहता ने कहा कि करों की वसूली पर रोक से सरकार के हित प्रभावित होंगे क्योंकि 31 मार्च को वित्त वर्ष का अंत हो रहा है। उन्होंने कहा कि टैक्स का भुगतान ऑनलाइन भी हो सकता है। उच्च न्यायालयों को इस तरह टैक्स के भुगतान पर रोक लगाने वाले आदेश नहीं देने चाहिए।

सस्ते तेल से रणनीतिक भंडार भरेगा भारत

नई दिल्ली, आइएएनएस : अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कच्चे तेल के घटे दाम का भारत पूरा फायदा उठाना चाहता है। इसके तहत भारत आकस्मिक परिस्थितियों के लिए विकसित किए गए अपने रणनीतिक तेल भंडारों को भर लेने की तैयारी में है। दो सरकारी अधिकारियों ने बताया कि मौजूदा 30 डॉलर प्रति बैरल के भाव पर भारत ने करीब 5,000 करोड़ रुपये मूल्य का कच्चा तेल खरीदने का फैसला किया है।

इस खरीदारी के माध्यम से सरकार कुल 53.3 लाख टन क्षमता वाले तीन रणनीतिक भंडार भरेगी। इन भंडारों का निर्माण इंडिया स्ट्रेटैजिक पेट्रोलियम रिजर्व्स लिमिटेड (आइएसपीआरएल) के माध्यम से किया गया है। अनुमान लगाया जा रहा है कि अगर सरकार रणनीतिक भंडार का आधा भी मौजूदा दरों पर भर लेती है, तो उसे 60 करोड़ डॉलर (करीब 4,200 करोड़ रुपये) तक का फायदा हो सकता है।

रूस और ओपेक के बीच पेट्रोलियम उत्पादन में कटौती पर वार्ता विफल होने के बाद मार्च में ग्लोबल क्रूड ऑयल का भाव करीब 40 प्रतिशत गिर गया है, जो इस वक्त 27 डॉलर प्रति बैरल के आसपास है। यह बातचीत विफल होने के बाद सऊदी अरब ने कह दिया है कि वह अप्रैल से कच्चे तेल का उत्पादन 1.2 करोड़ बैरल प्रतिदिन पर पहुंचाएगा। कोरोना संकट सामने आने के बाद पेट्रोल-डीजल की खपत में खासी गिरावट आई, जिसका सीधा असर कच्चे तेल के दाम पर दिखा।

53.3 लाख टन क्षमता वाले तीन रणनीतिक भंडार भरेगी सरकार

5,000 करोड़ रुपये मूल्य का कच्चा तेल खरीदने का हुआ है फैसला

प्रतीकात्मक

एक अधिकारी ने कहा कि सरकार पहले सऊदी अरैमको और एडनॉक को इन रणनीतिक भंडारों को भरने का मौका देगी, जिसका वे खुद भी बाद में अपने लाभ के लिए इस्तेमाल कर सकती हैं। लेकिन अगर इन कंपनियों ने रुचि नहीं दिखाई, तो सरकार से समुचित बजट मिलने के बाद आइएसपीआरएल खुद इन भंडारों के लिए कच्चा तेल खरीदेगी। इसके लिए इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आइओसी) और भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन (बीपीसीएल) जैसी सरकारी ऑयल कंपनियों को इन भंडारों को भरने का जिम्मा दिया जाएगा। सस्ते दाम पर भंडार इस वक्त भर लेने से बड़ी रणनीतिक क्षमताओं की हमारी विकास योजना को गति मिलेगी।

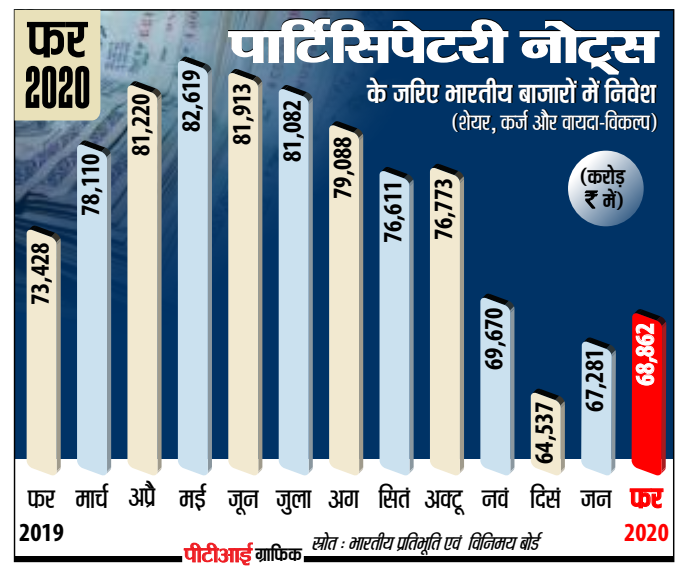

तीन-चौथाई से ज्यादा उद्योग जगत की नकदी में कमी

नई दिल्ली, प्रेट्र : घरेलू उद्योगों पर कोरोना वायरस का गंभीर असर दिखने लगा है। देश के सबसे बड़े उद्योग संगठन फिक्की के एक सर्वे में सामने आया है कि 80 प्रतिशत से ज्यादा कंपनियां नकदी की कमी से प्रभावित होने लगी हैं। कंपनियों के मुताबिक नकदी की वैसी आमद नहीं हो रही है, जैसी पहले होती थी। सर्वे में हिस्सा लेने वाले 40 प्रतिशत उद्योगपतियों ने बताया कि उनका कैशफ्लो 20 प्रतिशत या उससे ज्यादा घटा है। सर्वे के मुताबिक 73 प्रतिशत उद्योगपतियों की ऑर्डर बुक में कमी आई है। करीब 53 प्रतिशत उद्योगपतियों का कहना है कि उनकी ऑर्डर बुक में 20 प्रतिशत से ज्यादा गिरावट आ गई है। महज आठ प्रतिशत ने कहा है कि उनकी ऑर्डर बुक बढ़ी है।

फिक्की के सदस्यों और उद्योग मंडलों के बीच 15-19 मार्च को कराए गए सर्वे में 317 कंपनियों ने हिस्सा लिया। इस सर्वे की रिपोर्ट में कहा गया है कि उद्योगपतियों कारखानों और संयंत्रों में इनवेंट्री का स्तर बढ़ रहा है। सर्वे में शामिल 35 प्रतिशत उद्योगपतियों का कहना है कि जिस हिसाब से उत्पादन हो रहा है, उस पैमाने पर माल बाहर नहीं जा रहा है, इसलिए इनवेंट्री का स्तर बढ़ रहा है। 50 प्रतिशत उद्योगपतियों का कहना है कि उनकी इनवेंट्री 15 प्रतिशत या इससे ज्यादा है।

कोरोना वायरस ने उद्योग जगत की सप्लाई चेन को बुरी तरह प्रभावित किया है। सर्वे में शामिल 60 प्रतिशत से भी ज्यादा उद्योगपतियों ने कहा कि उनका सप्लाई सिस्टम प्रभावित हुआ है। 47 प्रतिशत उद्योगपतियों का कहना है कि बीते चार हफ्तों से उनकी आपूर्ति प्रभावित हुई है, जबकि 31 प्रतिशत का कहना है कि एक-डेढ़ महीने से उनकी सप्लाई चेन टूटी हुई है। 6.76 प्रतिशत उद्योगपतियों के मुताबिक दो महीने से उनका आपूर्ति तंत्र गड़बड़ाया है। फिक्की के मुताबिक मौद्रिक, राजकोषीय और वित्तीय बाजार के मोर्चे पर उचित कदम उठाकर ही कारोबारियों को राहत दी जा सकती है।

फिक्की सर्वे का सच

53 प्रतिशत कंपनियों का मानना है कि उनका कारोबार प्रभावित हुआ

35 प्रतिशत उद्योगपतियों के मुताबिक माल पहले की तरह नहीं खप रहा

50 प्रतिशत उद्योगपतियों ने कहा कि इनवेंट्री 15 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ी

कोरोना कहर

राज्यों में मंडियों की बंदी से फल-सब्जियों की आपूर्ति बाधित, जनता कर्फ्यू से भी फल और सब्जियों की मांग में इजाफा

सप्लाई चेन प्रभावित, महंगाई से जूझने की होगी चुनौती

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते विभिन्न राज्यों में उठाए जा रहे एहतियाती कदम से आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई चेन बुरी तरह प्रभावित होने लगी है। इससे आने वाले दिनों में महंगाई पर लगाम लगाने की चुनौती से सरकार को जूझना पड़ेगा। सब्जियों व फलों की आपूर्ति पर सबसे ज्यादा असर पड़ रहा है। कोरोना से सर्वाधिक प्रभावित महाराष्ट्र में एग्री प्रोड्यूस मार्केटिंग कमेटी (एपीएमसी) की मंडियों में सप्ताह में दो दिनों की बंदी का प्रभाव अगले सप्ताह देश के उत्तरी क्षेत्र में दिख सकता है।

राजधानी दिल्ली की फल और सब्जी मंडियों में देश के ज्यादातर राज्यों से आपूर्ति होती है। ज्यादातर फलों की आपूर्ति जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और महाराष्ट्र से होती है। जबकि सब्जियों की आपूर्ति कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश से होती है। इसके बाद दिल्ली की मंडियों से बाकी उपभोक्ता राज्यों में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति की जाती है। आसपास के राज्यों उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश से भी इन जिंसों की आपूर्ति होती है, जिनमें आंशिक बंदी का माहौल है। इससे सप्लाई चेन प्रभावित हो रही है।

रविवार को प्रस्तावित लॉकडाउन से मांग में भारी इजाफा हो रहा है। प्रतीकात्मक

कृषि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कोरोना वायरस के प्रकोप से बचाव के उपायों में परोक्ष रूप से लॉकडाउन की स्थिति पैदा की गई है। इस स्वाभाविक प्रतिबंधों के चलते राज्यों के बीच आवाजाही प्रभावित हो रही है। हालांकि आवश्यक वस्तुओं की ढुलाई पर किसी तरह की रोकटोक नहीं है। लेकिन इसका फायदा ट्रांसपोर्टर उठा रहे हैं। उनका तर्क है कि ड्राइवरों व काम करने वालों की कमी के चलते यह संभव नहीं हो पा रहा है।

उत्तरी राज्यों में प्याज, आलू और टमाटर की आपूर्ति पर विपरीत असर पड़ रहा है। कोरोना के चलते घरों में रहने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हिदायत के बाद इन्हीं सब्जियों की सर्वाधिक मांग इस समय हो गई है। उत्तरी राज्यों में प्याज का मूल्य पिछले साल के फरवरी व मार्च माह के मुकाबले लगभग ढाई गुना अधिक है। जबकि आलू का मूल्य दो गुना ज्यादा है।

राजधानी दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में कोरोना के कहर से रेस्टोरेंट बंद कर दिए गए हैं। इससे फल और सब्जियों के बड़े उपभोक्ता बाजार में नहीं उतर रहे हैं। इसके चलते बाजार में मांग और आपूर्ति का संतुलन गड़बड़ाने लगा था, लेकिन उत्पादक मंडियों से सब्जियों व फलों की आपूर्ति ठप होने की दशा में कीमतें आने वाले दिनों में और बढ़ सकती है। थोक व खुदरा बाजार में सब्जियों व फलों के मूल्य में लगातार अंतर भी बढ़ रहा है।

कैलिफोर्निया लॉकडाउन, न्यूयॉर्क में सेना तैनाती की मांग

महामारी का प्रकोप ▶ दुनियाभर में कोरोना वायरस से दस हजार से ज्यादा की गई जान, अमेरिकियों को स्वदेश नहीं लौटने पर बाहर ही रहने की दी गई चेतावनी

इटली ने विदेशी क्रूज के लिए बंद किए पोर्ट, लॉकडाउन की अवधि बढ़ी

लॉस एंजिलिस, एजेंसियां : यूरोप और अमेरिका कोरोना वायरस से बुरी तरह प्रभावित हैं। महामारी से मुकाबले के लिए कई सख्त कदम उठाए जा रहे हैं। अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रांत की करीब चार करोड़ आबादी को घरों में ही रहने के लिए कह दिया गया है। कोरोना के मरीजों की संख्या में भारी इजाफे के बाद न्यूयॉर्क के मेयर बिल डी ब्लासिओ ने सेना तैनात करने की मांग की है।

चीन के बाद वायरस के प्रकोप से सबसे ज्यादा त्रस्त इटली ने विदेशी क्रूज के लिए अपने पोर्ट बंद कर दिए हैं। लॉकडाउन की अविध भी अगले माह तक बढ़ा दी गई है। इटली में चीन से भी ज्यादा मौत हो चुकी हैं। जबकि पूरी दुनिया में मरने वालों का आंकड़ा दस हजार के पार पहुंच गया है।

कैलिफोर्निया को गुरुवार शाम से लॉकडाउन कर दिया गया। न्यूयॉर्क के मेयर ब्लासिओ ने कहा कि पूरा शहर महामारी से जूझ रहा है। संकट का सामना करने के लिए सेना को तैनात किया जाना चाहिए। अकेले न्यूयॉर्क में ही 3,615 मामले सामने आ चुके हैं। पड़ोसी देश मेक्सिको से अमेरिका में आवाजाही पर भी अंकुश लगा दी गई है। विदेश दौरे पर गए अमेरिकियों को चेतावनी दी गई है कि अगर वे तत्काल नहीं लौटे तो अनिश्चितकाल के लिए बाहर ही रह जाएंगे।

- मलेशिया में पाबंदियों को सख्ती से लागू कराने के लिए सेना तैनात की जाएगी, करीब 900 मामलों की पुष्टि
- ईरान में पीड़ितों का आंकड़ा 20 हजार के करीब पहुंचा, बीते 24 घंटे में 149 और पीड़ितों ने दम तोड़ दिया
- फ्रांस के करीब एक लाख 30 हजार नागरिक विदेश में फंसे हैं, उन्हें लाने के प्रयास किए जा रहे हैं

सर्वाधिक प्रभावित देश

देश	मौत	संक्रमित
इटली	3405	41,035
चीन	3,248	80,967
ईरान	1433	19,840
स्पेन	1,002	19,980
फ्रांस	372	10995
अमेरिका	200	13880
ब्रिटेन	144	3269
द. कोरिया	94	8652
नीदरलैंड्स	76	2460
जर्मनी	44	13,959

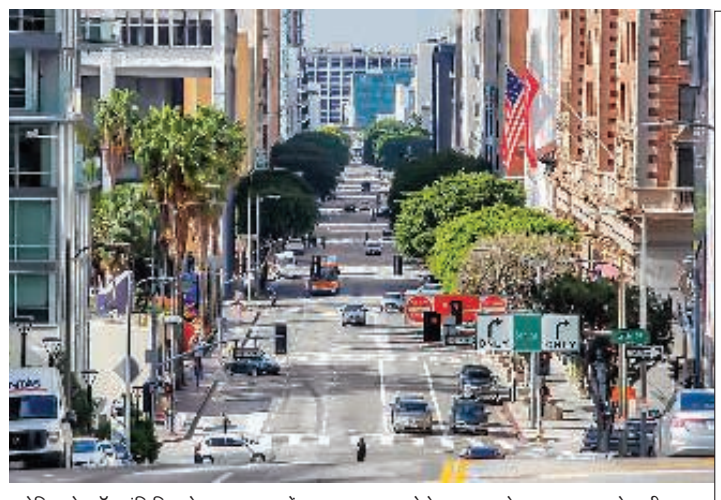

अमेरिका के लॉस एंजिलिस के डाउन टाउन में पसरा सन्नाटा। कोरोना वायरस के कारण चार करोड़ की आबादी वाले कैलिफोर्निया प्रांत में लोगों को घरों में रहने के निर्देश जारी किए गए हैं। एएफपी

इधर यूरोपीय देश फ्रांस में भी लॉकडाउन की अवधि बढ़ाने की तैयारी चल रही है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री भी कह चुके हैं कि कोरोना वायरस से निपटने के लिए सख्त कदम उठाए जा सकते हैं। अर्जेंटीना के राष्ट्रपति अल्बर्टो फर्नांडिज ने भी 31 मार्च तक के लिए लॉकडाउन का एलान किया है। ब्राजील के रियो डी जेनेरियो राज्य के सभी प्रसिद्ध समुद्र तटों के साथ ही रेस्तरां और बार भी 15 दिनों के लिए बंद कर दिए गए हैं।

यूएन महासचिव ने किया आगाह : संयुक्त राष्ट्र (यूएन) महासचिव एंटोनियो गुतेरस ने आगाह किया है कि कोरोना वायरस का भयावह प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने कहा, अगर हमने जंगलों में लगी आग की तरह इसे फैलने दिया तो लाखों लोगों की मौत हो जाएगी।

स्पेन में मृतकों का आंकड़ा एक हजार के पार : स्पेन के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि देश में कोरोना वायरस से मृतकों की संख्या बढ़कर 1,002 हो गई। पिछले 24 घंटे के दौरान 235 लोगों ने दम तोड़ा। जबकि 2833 नए मामलों के साथ पीड़ितों की संख्या बढ़कर 19,980 हो गई है। देश में कोरोना से सबसे ज्यादा मैड्रिड शहर प्रभावित है। इस शहर में ही 7165 मामले सामने आए हैं।

ब्रिटेन में शादी में सिर्फ पांच लोगों को इजाजत : चर्च ऑफ इंग्लैंड ने कोरोना वायरस के चलते शादी में आने वाले लोगों की संख्या सीमित कर दी है। इसकी वेबसाइट पर कहा गया है कि चर्च में होने वाली शादी में सिर्फ पांच लोगों दूल्हा, दुल्हन, दो गवाह और पादरी को मौजूद रहने की अनुमति होगी।

श्रीलंका में कर्फ्यू का एलान

कोलंबो, प्रेट्र : श्रीलंका सरकार ने कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए शुक्रवार से पूरे देश में कर्फ्यू लगा दिया। राष्ट्रपति गोतबाया राजपक्षे के दफ्तर ने एलान किया है कि शुक्रवार शाम छह बजे से सोमवार सुबह छह बजे तक पूरे देश में कर्फ्यू रहेगा। यह कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए सरकार द्वारा उठाया गया सबसे बड़ा कदम है। इससे पहले चुनाव आयोग ने देश में 25 अप्रैल को होने वाले संसदीय चुनाव स्थगित करने की घोषणा की थी। श्रीलंका में अब तक 66 मरीजों में कोरोना संक्रमण की पुष्टि हो चुकी है। संक्रमण की आशंका में करीब 2,400 लोगों को विशेष चिकित्सकीय निगरानी में रखा गया है। इससे पहले देश के पश्चिमी तट के इलाकों में कर्फ्यू लगाया गया था, लेकिन इससे सामाजिक दूरी का लक्ष्य पूरी तरह हासिल नहीं हो पाया। संक्रमण को रोकने के लिए श्रीलंका से सभी अंतरराष्ट्रीय उड़ानें पहले ही बंद कर दी गई हैं।

जर्मनी में कर्फ्यू लगाने की चेतावनी : जर्मनी के स्वास्थ्य अधिकारियों ने आगाह किया है कि देश के 8.3 करोड़ नागरिकों ने अगर रोकथाम के उपायों को नहीं अपनाया तो कर्फ्यू लगाया जा सकता है। जर्मनी में अब तक 13,959 मामलों की पुष्टि हुई है।

कोरोना का 'तोड़' निकालने में मददगार बना सुपर कंप्यूटर

वाशिंगटन, एजेंसियां : कोरोना वायरस जिसे तेजी से फैल रहा है उसकी काट निकालने में दुनिया भर के वैज्ञानिक दिन रात लगे हुए हैं। ताजा जानकारी सामने आई है कि अमेरिका का सबसे शक्तिशाली सुपर कंप्यूटर समिट ने उसका तोड़ तलाशने में काफी मददगार साबित हो रहा है। समिट ने गहन विश्लेषण कर ऐसे 77 कंपाउंड का पता लगाया है जो कोरोना वायरस को होस्ट सेल संक्रमित करने से रोक सकते हैं। इस खोज से वैज्ञानिक बहुत उत्साहित हैं। इस नतीजे से कोरोना से निपटने की दवा और टीका बनाने में बहुत आसानी होगी।

अमेरिका के टेनेसी राज्य की ओक रिज लैब में स्थित इस सुपर कंप्यूटर के निष्कर्षों को लैब की जर्नल में प्रकाशित किया गया है। अमेरिका के ऊर्जा विभाग के इस सुपर कंप्यूटर को अमेरिकी दिग्गज कंपनी आइबीएम ने तैयार किया था। यह 2014 से काम कर रहा है। इसकी क्षमता बेमिसाल है। सरल शब्दों में समझा जाए तो यह एक शक्तिशाली लैपटॉप के मुकाबले करीब दस लाख गुना तेजी से गणनाएं कर सकता है। इस सुपर कंप्यूटर समिट की मदद सेऔर वालंटियर्स पर किए गए प्रयोगों से शोधकर्ताओं ने ऐसे कंपाउंड तलाश लिए हैं जो कोरोना का विस्तार रोक सकते हैं। परीक्षण के दौरान करीब 8000 कंपाउंड आजमाए गए जिनमें से 77 ऐसे पाए गए जो उम्मीद की किरण जगाते हैं।

ओक रिज नेशनल लैब फार मालीक्युलर बायो फिजिक्स के डाइरेक्टर जेरेमी स्मिथ का कहना है कि अभी हम ये दावा नहीं कर रहे हैं कि हमने कोई इलाज तलाश लिया है। हालांकि जो परिणाम आए हैं वे उत्साहजनक हैं और भविष्य में कोई सटीक इलाज ढूंढने में मददगार होंगे। किसी ठोस नतीजे पर पहुंचने के लिए इन परीक्षणों को फिर से दोहराया जाएगा।

कामयाबी

- शक्तिशाली कंप्यूटर समिट ने 77 कारगर कंपाउंड तलाशे
- शोधकर्ता उत्साहित, सटीक इलाज खोजने में होगी आसानी

पाकिस्तान को मिलेंगे साढ़े चार हजार करोड़

इस्लामाबाद, प्रेट्र : कोरोना के तेजी से फैल रहे मामलों को देखते हुए पाकिस्तान सरकार की मदद की गुहार विश्व बैंक और एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) ने सुन ली है। संक्रमण से उपजे हालात से लड़ने के लिए पाकिस्तान को दोनों संस्थान मिलकर 58.8 करोड़ डॉलर (करीब 4,443 करोड़ रुपये) की सहायता राशि देंगे। इसकी घोषणा शुक्रवार को पाकिस्तान के योजना आयोग ने की। देश में कोरोना पीड़ितों की संख्या 451 हो गई है और तीन लोगों की मौत हो चुकी है।

आर्थिक तंगी से जूझ रहे पाकिस्तान की इमरान सरकार ने आपात स्थिति से निपटने के लिए वैश्विक संस्थानों से आर्थिक मदद की गुहार लगाई थी। सहायता की यह राशि पाकिस्तान में विश्व बैंक के निदेशक इलांगो पाशा-मुथु और एडीबी के निदेशक शियाओहोंग यांग के साथ योजना आयोग के उपाध्यक्ष मुहम्मद जहानजेब की बैठक में तय हुई।

वायरस को रोकने के लिए बच्चों पर इसका असर जानना जरूरी

न्यूयॉर्क, आइएएनएस : कोरोना वायरस के बढ़ते खतरे के बीच शोधकर्ताओं ने कहा है कि वायरस से बच्चों पर पड़ने वाले असर को समझकर ही इस वायरस के मॉडल को सही तरह से जाना जा सकता है। ऐसा होने से इसका प्रसार रोकना और सही इलाज दे पाना संभव होगा। जर्नल पीडियाट्रिक्स में शोधकर्ता एल. जीशनर और एंड्रिया टी. क्रूज का कहना है कि वायरस से प्रभावित बच्चों में से कुछ की स्थिति गंभीर है।

शोधकर्ताओं ने कहा, 'संक्रमण वाली कई बीमारियां बड़ों के मुकाबले बच्चों को अलग तरह से प्रभावित करती हैं। इस अंतर को समझना बेहद अहम हो सकता है।' वैज्ञानिकों का कहना है कि पहले से किसी बीमारी के शिकार बच्चों में कोरोना के संक्रमण की आशंका ज्यादा रहती है। ऐसे बच्चों में कोरोना वायरस के प्रभाव को समझना भी मुश्किल होता है। ऐसे बच्चे जिनमें बिना किसी लक्षण के वायरस का संक्रमण है, उनसे किसी और में वायरस के फैलने का खतरा बढ़ जाता है। इसे ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिकों का कहना है कि बच्चों के मामले में ज्यादा सतर्कता जरूरी है। प्रयास होना चाहिए कि बच्चों को परिवार के उन सदस्यों से दूर रखा जाए, जिनमें संक्रमण का खतरा ज्यादा है, जैसे बुजुर्गों या बीमार लोगों से।

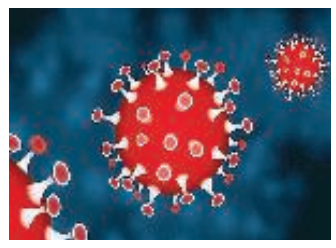

प्रतीकात्मक

ईरान में जेल से 23 कैदी हुए फरार

तेहरान, एएफपी : कोरोना वायरस जनित महामारी से जूझ रहे ईरान की एक जेल से शुक्रवार को 23 कैदी फरार हो गए। यह वाकया तब पेश आया जब जेल के सुरक्षाकर्मी पारसी नव वर्ष के मौके पर कैदियों को मिलने वाली सजा में छूट के सिलसिले में तैयारियां कर रहे थे। घटना लोरेस्तान प्रांत की राजधानी खुर्रमाबाद की है। ईरान में हर साल नव वर्ष नौरोज के मौके पर अच्छा बरताव करने वाले या उम्रदराज कैदियों को रिहा किया जाता है। इस बार दस हजार कैदियों को रिहा किए जाने की योजना है। पहली बार इतनी बड़ी संख्या में कैदी रिहा किए जा रहे हैं। इसकी बड़ी वजह कोरोना वायरस का प्रकोप है जिसके चलते सरकार जेलों में कैदियों खासतौर पर बुजुर्गों की संख्या कम करना चाह रही है। इसी योजना के चलते जेलों में कैदियों की छंटनी और उन्हें रिहा करने के लिए तैयारी चल रही है। इसी दौरान खुर्रमाबाद की जेल से कैदी निकल भागे।

स्पेन में डॉक्टरों का प्रदर्शन : उत्तरी स्पेन में डॉक्टरों ने कोरोना वायरस का इलाज करने वाले स्वास्थ्यकर्मियों को बेहतर सुरक्षा उपकरण की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। यह मांग कोरोना संक्रमित मरीजों की देखरेख करने वाली एक नर्स की मौत के बाद उठी है। प्रधानमंत्री पेड्रो सैंचेज ने श्रमिकों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए 200 बिलियन यूरो जुटाने की घोषणा की है। एपी

विशेष केंद्र बनाएगी बांग्लादेश की सेना

ढाका, आइएएनएस : बांग्लादेश में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए सरकार ने सेना की मदद लेने का फैसला किया है। इसकी जानकारी देते हुए देश के स्वास्थ्य मंत्री जाहिद मलिक ने गुरुवार को कहा कि कोरोना पीड़ितों की जांच और इलाज के लिए राजधानी ढाका के समीप तोंगी में सेना विशेष चिकित्सकीय निगरानी केंद्र का निर्माण करेगी। बांग्लादेश में कोरोना पॉजिटिव लोगों की संख्या 17 हो गई है। इनमें एक मरीज की मौत हो चुकी है। संक्रमण के चलते बांग्लादेश की सरकार लॉकडाउन की घोषणा कर सकती है। मलिक ने कहा कि संक्रमण के मामले बढ़ने पर कई जगहों पर लोगों की आवाजाही पूरी तरह से बंद की जा सकती है। सरकार पहले ही राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों को स्थगित करने की घोषणा कर चुकी है।

इटली में जहाज को अस्पताल में बदला गया

इटली में लगातार बढ़ते कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण अस्पताल मरीजों से भर गए हैं। कमी को पूरा करने के लिए पहली बार यात्री जहाज को अस्पताल में बदला जाएगा। क्रूज जहाज स्प्लेंडिड इटली के जेनोवा बंदरगाह पर खड़ा किया गया है। रायटर

मुंबई हमले के गुनहगार हाफिज सईद ने कराई एंजियोप्लास्टी

लाहौर, एएनआइ : मुंबई आतंकी हमले की साजिश रचने वाला हाफिज सईद हृदय संबंधी दिक्कतों से जूझ रहा है। लाहौर के एक अस्पताल में गुरुवार को उसकी एंजियोप्लास्टी की गई। अवरुद्ध धमनियों को खोलने के लिए एंजियोप्लास्टी की जाती है। आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का संस्थापक सईद आतंकी फंडिंग के मामलों में जेल की सजा काट रहा है।

स्थानीय मीडिया में आई खबरों के अनुसार, जेल में सईद ने सीने में तेज दर्द की शिकायत की थी। इसके बाद उसे लाहौर के पंजाब इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों ने बताया कि प्रारंभिक जांच में उसकी दायीं धमनी बंद पाई गई। अवरोधों को दूर कर दिया गया है। सईद को आतंकी फंडिंग से जुड़े दो मामलों में गत 12 मार्च को दोषी ठहराया गया था और साढ़े पांच साल जेल की सजा सुनाई गई थी। वर्ष 2008 में मुंबई पर हुए आतंकी हमले के बाद संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने सईद पर प्रतिबंध लगा दिया था। अपने मुल्क में ही वह आतंकी हमलों के 23 मामलों का सामना कर रहा है।

तुलसी गबार्ड ने भी छोड़ा मैदान, करेंगी जो बिडेन का प्रचार

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिका में चल रही राष्ट्रपति चुनाव की प्रक्रिया में अपनी डेमोक्रेटिक पार्टी में पिछड़ने के बाद भारतीय मूल की सांसद तुलसी गबार्ड (38) ने मैदान छोड़ दिया है। तुलसी अमेरिका की पहली हिंदू सांसद हैं और कई मौकों पर वह हिंदू संस्कृति की मजबूती के लिए आवाज उठा चुकी हैं। तुलसी ने अब अपनी पार्टी की उम्मीदवारी के लिए सबसे आगे चल रहे पूर्व उप राष्ट्रपति जो बिडेन का समर्थन करने का एलान किया है।

डेमोक्रेटिक पार्टी में राष्ट्रपति चुनाव में उम्मीदवारी के लिए अब बिडेन और बर्नी सैंडर्स के बीच मुकाबला बचा है। हालांकि बर्नी जारी प्राथमिक चुनाव में बिडेन से काफी पीछे हैं। संभवतः बिडेन का ही मुकाबला रिपब्लिकन पार्टी की ओर से घोषित उम्मीदवार राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से होगा। अमेरिका में राष्ट्रपति पद का चुनाव नवंबर में होना है। हवाई से सांसद तुलसी गबार्ड के समर्थन में बड़ी संख्या में भारतीय थे लेकिन वह आगे नहीं बढ़ सकीं। तुलसी अमेरिकी सेना की ओर से इराक युद्ध में भी जिम्मेदारी निभा चुकी हैं।

तुलसी गबार्ड। फाइल

हवाई से सांसद तुलसी ने ऑनलाइन वीडियो संदेश में कहा, 'मैं आज राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवारी के प्रचार का अभियान रोक रही हूं। मैं पूर्व उपराष्ट्रपति जो बिडेन को अपना पूरा समर्थन देती हूं, जो इस देश को एकजुट रखना चाहते हैं।' तुलसी ने आगे कहा कि हालांकि, मैं बिडेन के हर मुद्दों से इत्तेफाक नहीं रखती हूं लेकिन मैं जानती हूं कि वह सरल हृदय वाले इंसान हैं।

बता दें कि गबार्ड ने अमेरिका में 'हिंदूफोबिया' को लेकर भी टिप्पणी की थी। ट्विटर पर उन्होंने अपनी एक पोस्ट में कहा था, 'दुर्भाग्य से हिंदूफोबिया बिल्कुल वास्तविक है।

आइएस से जुड़ने जा रहा पाकिस्तानी डॉक्टर अमेरिका में गिरफ्तार

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिकी संघीय जांच एजेंसी एफबीआइ ने आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आइएस) में शामिल होने जा रहे पाकिस्तानी डॉक्टर मुहम्मद मसूद को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया। अमेरिका के मिनिसोटा प्रांत में बतौर रिसर्च सहायक काम करने वाले 28 वर्षीय मसूद को एफबीआइ ने उस वक्त गिरफ्तार किया जब वह मिनीपोलिस से फ्लाइट लेकर लॉस एंजिलिस रवाना होने वाला था।

वह लॉस एंजिलिस के बाद किसी मालवाहक जहाज की मदद से आइएस के गढ़ सीरिया जाने की फिराक में था। इससे पहले उसने शिकागो से सीरिया के पड़ोसी देश जॉर्डन की राजधानी अम्मान के लिए हवाई टिकट खरीदा था, ताकि वहां से सीमा पार कर सीरिया पहुंचा जा सके। लेकिन कोरोना संक्रमण के चलते जॉर्डन की सीमा बंद हो जाने के कारण उसने अपनी योजना बदल दी थी।

मसूद पर जांच एजेंसी की पिछले कुछ महीनों से नजर थी। उसने कई लोगों से बातचीत में आइएस से अपने संबंध होने की बात कही थी।

बढ़ाई ताकत

रूस की 33 हजार किमी प्रति घंटे की रफ्तार वाली मिसाइल के जवाब में किया तैयार, मारक क्षमता से बदल देगी किसी भी युद्ध का नक्शा

अमेरिका ने किया हाइपरसोनिक मिसाइल का परीक्षण

वाशिंगटन, एएफपी : अमेरिका ने शुक्रवार को अपनी पहली हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया। रक्षा मंत्रालय पेंटागन के अनुसार इस मिसाइल की गति ध्वनि की गति से कम से कम पांच गुना ज्यादा होगी। इस लिहाज से यह मिसाइल 6,200 किलोमीटर प्रति घंटा से ज्यादा गति से दुश्मन पर हमला करेगी। यह बैलेस्टिक मिसाइल परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम होगी। अमेरिका का यह कदम रूस के जवाब में उठाया गया है। रूस ने हाइपरसोनिक मिसाइल बनाकर उसकी तैनाती भी कर दी है।

इस मिसाइल के प्रोटोटाइप का सबसे पहले अक्टूबर 2017 में परीक्षण किया गया था। लेकिन गुरुवार को हाइपरसोनिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया। यह परीक्षण थल सेना और नौसेना द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। यह जानकारी वाइस एडमिरल जॉनी वॉल्फ ने दी है। हाइपरसोनिक मिसाइल को दुनिया की सबसे तेज हमलावर मिसाइल माना जाता है। इससे किसी भी युद्ध का नक्शा बदल सकता है। इसकी गति रडार और एयर डिफेंस सिस्टम को भी चकमा दे सकती है।

नई मिसाइल 6,200 किलोमीटर प्रति घंटा से ज्यादा रफ्तार से करेगी दुश्मन पर वार। फाइल

दिसंबर 2019 में रूस ने एवेनगार्ड हाइपरसोनिक मिसाइल बनाकर अमेरिका के सामने नई चुनौती पेश कर दी थी। रूस का दावा है कि उसकी मिसाइल 33 हजार किलोमीटर प्रति घंटा (मैक 27) की रफ्तार से दुश्मन पर हमला करने वाली है।

इस रफ्तार से उड़ने वाली मिसाइल को किसी भी रडार से पकड़कर उसे रोकने के लिए कार्रवाई कर पाना असंभव सा है। चीन भी हाइपरसोनिक मिसाइल बनाने की दिशा में काम कर रहा है। अक्टूबर 2019 की अपनी राष्ट्रीय परेड में उसने तेज गति वाली डीएफ-17 मिसाइल का प्रदर्शन किया था लेकिन उसके हाइपरसोनिक होने पर शक है।

अपनों की उपेक्षा से हारी यूनिसेफ गर्ल

मुकेश कुमार 'अमन', सीतामढ़ी

▶ यूनिसेफ ने 2004 में अपनी पत्रिका के कवर पर कराटे चैम्पियन ललिता की तस्वीर की थी प्रकाशित

बिहार के सीतामढ़ी शहर से 15 किलोमीटर दूर रीगा प्रखंड के बुलाकीपुर गांव में एक कच्ची सड़क है। टेढ़े-मेढ़े रास्ते से गुजरने पर वार्ड नंबर-नौ में एस्बेस्टस की छत वाला एक घर दिखता है। यह घर 'यूनिसेफ गर्ल' ललिता की ससुराल है। कराटे गर्ल की तस्वीर यूनिसेफ ने 2004 में 'दुनिया के बच्चों की स्थिति' पत्रिका के कवर पर प्रकाशित की थी। बतौर शिक्षक स्कूल में सेवा देती हैं। मगर, प्रतिदिन कराटे की प्रैक्टिस करना नहीं भूलतीं। उस समय 160 देशों की लड़कियों के बीच कराटे प्रतियोगिता में ललिता ने सबको परास्त कर देश का नाम रोशन किया। ललिता पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी व बाद में नीतीश कुमार से सम्मानित हो चुकी हैं।

गरीबी के चक्रव्यूह में वे ऐसे फंसीं कि खास से आम बन गईं। मगर, इनके इरादे अब भी चट्टान की तरह हैं। जज्बा उफान पर है। ललिता जिले की लड़कियों को कराटे सिखाकर चैंपियन बनाना चाहती हैं। 31 वर्षीय ललिता कहती हैं कि सरकार मदद करे तो वह ऐसा कर सकती हैं। 2005 में सोनबरसा में तीन डिसमिल जमीन देने की घोषणा सरकार की ओर से की गई थी। लेकिन आज तक यह फाइलों में घूम रही है।

सोनबरसा के लक्ष्मीनिया के खोपराहा टोला निवासी महादलित भदई मांझी व स्वरूपिया देवी की बेटी ललिता ने बीएड तक की पढ़ाई की है। 2010 में प्रखंड शिक्षिका बनीं और उसी साल शादी हो गई। वह सोनबरसा प्रखंड के खाप मध्य विद्यालय में पढ़ाती हैं। पति ब्रजेश कुमार मांझी इंटर पास हैं, बेरोजगार हैं।

ललिता के साहस ने तय किया यूनिसेफ का सफर : ललिता जिस परिवार से ताल्लुक रखतीं, वहां लड़कियों के लिए पढ़ाई मुश्किल थी। मां-बाप सुबह-सुबह घास काटने भेज देते। वह घास की टोकरी खेत में छोड़ जगजगी केंद्र पर पढ़ने चली जाया करती थीं। मां-बाप को जब इसका पता चला तो उन्होंने घर से निकलने पर पाबंदी लगा दी। बाद में कन्हौली जगजगी केंद्र की सहेली शिक्षिका ने उनके मां-बाप को समझा कर पढ़ाई के लिए राजी कराया। पहले सोनबरसा फिर मुजफ्फरपुर महिला समाख्या में पढ़ाई की। इसी दौरान हजारीबाग में कराटे का प्रशिक्षण लिया। महिला समाख्या की संयोजक संगीता दत्ता का उन्हें भरपूर सहयोग मिला था। यूनिसेफ पदाधिकारी अगस्तीन उसे दिल्ली ले गए।

जिला प्रशासन करेगा ललिता की मदद : जिलाधिकारी अभिलाषा कुमारी शर्मा कहती हैं कि ललिता को प्रशासन हरसंभव सहयोग देगा। सरकार से भी मदद के लिए आग्रह किया जाएगा। वहीं, सांसद सुनील कुमार पिंटू कहते हैं कि केंद्रीय खेल मंत्री से बात करूंगा। जरूरत पड़ी तो प्रधानमंत्री से मिलूंगा।

मुझे लगता है कि मेरी गुगली अब पहले से बेहतर हुई है। मैं हर बार इसे सटीकता से फेंक पाती हूं।
—पूनम यादव, भारतीय महिला क्रिकेटर

डेविड वार्नर ने द हंड्रेड से लिया नाम वापस

सिडनी, आइएएनएस : ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज डेविड वार्नर ने इंग्लैंड के नए टूर्नामेंट द हंड्रेड से नाम वापस ले लिया है। वार्नर का टूर्नामेंट से नाम वापस लेने का कारण कोरोना वायरस नहीं है बल्कि वह अपने आप को ऑस्ट्रेलिया और जिंबाब्वे के बीच होने वाली वनडे सीरीज के लिए तैयार रखना चाहते हैं। वार्नर को द हंड्रेड में साउदर्न ब्रेव ने अपनी टीम में शामिल किया था।

समय बिताने के लिए करना है कुछ काम

- कोई पार्क में कर रहा अभ्यास तो कोई सेक रहा कबाब
- कई खिलाड़ियों का फिटनेस और खेल पर पूरा ध्यान

अभिषेक त्रिपाठी • दिल्ली

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया में खेल की गतिविधियों को बंद करा दिया है। ऐसे में कुछ एथलीट आइसोलेशन पर हैं तो कुछ डॉक्टरों की राय के बाद अकेले ओलंपिक की तैयारी कर रहे हैं। क्रिकेट की गतिविधियां पूरी तरह से ठप हैं, ऐसे में अधिकतर क्रिकेटर घर पर ही समय बिता रहे हैं। ऐसे में कुछ क्रिकेटर अपने बच्चों और परिवार के साथ समय बिता रहे हैं तो कुछ पार्क में जाकर फिटनेस हासिल कर रहे हैं। वहीं कुछ अपना मनपसंद खाना खाकर टाइमपास कर रहे हैं।

जनता कर्फ्यू का पूरा समर्थन: कोरोना वायरस से लड़ने के लिए प्रधानमंत्री की रविवार को जनता कर्फ्यू आयोजित करने की अपील का समर्थन करते हुए रैना ने कहा कि लोग भीड़-भाड़ वाले इलाके में जाने से बचे। सैनिटाइजर का इस्तेमाल करिए। मेरे घर में बाहर से जो भी आता है उसको सैनिटाइज करने के बाद ही घर में प्रवेश दिया जाता है। अगर मुझे या किसी को हुआ तो यह बढ़ता जाएगा। हमें बस सतर्क रहना होगा। अगर हम सतर्क रहेंगे तो हमारे आस-पास वायरस नहीं आ सकता है। सब पर परिवार की जिम्मेदारी है। इसमें थोड़ा सतर्क होने की जरूरत है। परिवार के साथ समय बिताएं। छोटी-छोटी चीजों का लुत्फ उठाएं।

जिम बंद है तो पार्क में अभ्यास कर रहे हैं रैना

नई दिल्ली: चेन्नई सुपरकिंग्स के स्टार और भारतीय क्रिकेटर सुरेश रैना आइपीएल का कैंप छोड़कर दिल्ली आ गए हैं। उन्होंने दैनिक जागरण से कहा कि हमने दो महीने अच्छी ट्रेनिंग की लेकिन अभी तो क्रिकेट से ज्यादा जान जरूरी है। बीसीसीआइ जो भी निर्देश देता है हम उसको मानेंगे। केंद्र सरकार जरूरी कदम उठा रही है। हम सभी को घर में समय बिताने का वक्त मिल रहा है। अगले दो सप्ताह बेहद मुश्किल हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी रविवार को जनता कर्फ्यू की बात कही है। यह वैश्विक माहमारी है। यूरोप, अमेरिका सब बंद है। भारत में भी कोरोना धीमे-धीमे बढ़ रहा है। हम लोगों को आगे आकर साथ खड़े रहना होगा। संक्रमण एकदम बढ़ेगा तो मुश्किल होगी। जल्द ही दोबारा पापा बनने जा रहे रैना ने कहा कि जिम बंद होने के कारण मैं रोज सुबह दौड़ रहा हूं। नेहरू पार्क में खुद ही अभ्यास करता हूं। जहां तक आइपीएल की बात है तो उसके बारे में 15 अप्रैल तक तो कुछ बोला ही नहीं जा सकता है। जब भी पता चलेगा कि आइपीएल शुरू हो रहा है तो मेहनत करेंगे, हमारा सामान भी चेन्नई में ही रखा है। बिना दर्शकों के आइपीएल के आयोजन के सवाल पर रैना ने कहा कि मुझे तो पता ही नहीं है कि यह कैसे होगा। आइपीएल में बहुत पैसा लगा हुआ है। अगर यह नहीं होता है तो सभी का नुकसान होगा। सिर्फ फ्रेंचाइजी, क्रिकेटरों की बात नहीं है जो मैदान पर काम करते हैं, सप्लाई करते हैं और जो इसकी कमाई से परिवार चलाते हैं, उनके लिए मुश्किल हो जाएगी। आइपीएल से सीनियर खिलाड़ी का अनुभव बढ़ता है, युवाओं को सीखने को मिलता है।

क्रुणाल पांड्या का गेमिंग से प्यार

हार्दिक पांड्या के भाई क्रुणाल पांड्या हाल ही में भारतीय टीम में जगह नहीं बना पाए। क्रुणाल भी इस वक्त घर में समय बिता रहे हैं। घर में समय बिताने के लिए वह गेमिंग का सहारा ले रहे हैं।

घर में मोबाइल पर गेम खेलते क्रुणाल • इंस्टाग्राम

नीरज ने खुद को अलग किया, शिवपाल गए अपने घर

नई दिल्ली: तुर्की में अभ्यास से लौटने के बाद स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा को भारतीय खेल प्राधिकरण ने एनआइएस पटियाला में अलग थलग रहने को कहा है। टोक्यो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुके चोपड़ा को साई ने उनके हॉस्टल रूम में ही रहने को कहा है। उन्हें दूसरे खिलाड़ियों से दूर रहने को कहा गया है। वह बुधवार को ही तुर्की से लौटे हैं। ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुके भाला फेंक खिलाड़ी शिवपाल सिंह एनआइएस पटियाला से अपने घर जा चुके हैं। साई ने कहा है कि नीरज को यहां रहना है तो 14 दिन दूसरों से बिल्कुल अलग रहना होगा। उन्हें और रोहित यादव को अलग कमरे दिए गए हैं। उनके हॉस्टल रूम के पास ही पुराना जिम भी है। शिवपाल और विपिन कासना ने घर पर रहने का विकल्प चुना। दोनों दक्षिण अफ्रीका से आए थे।

राशिद खान ने सेके कबाब

अफगानिस्तान भी कोरोना वायरस से नहीं बच सका है। पूरी दुनिया की तरह यहां भी सभी तरह की गतिविधि बंद हैं। ऐसे में अफगानिस्तान क्रिकेट टीम के स्टार लेग स्पिनर राशिद खान को भी अपने परिवार संग समय बिताने का समय मिल गया है। राशिद कबाब सेककर टाइम पास कर रहे हैं।

कबाब सेकते अफगानिस्तान के स्पिनर राशिद खान (बायें) • इंस्टाग्राम

ट्रेनिंग कर रहे हैं मनप्रीत

भारतीय हॉकी टीम के कप्तान मनप्रीत सिंह भी खाली समय का उपयोग कर रहे हैं। मनप्रीत ने कहा कि मौजूदा स्थिति से हम सभी वाकिफ हैं, लेकिन हमें सही दिशा में कार्य करते रहना होगा। हमें डॉक्टरों और सहायक स्टाफ ने जरूरी सलाह दी है। हम ट्रेनिंग कर रहे हैं। ओलंपिक से पहले अहम समय में हम उन चीजों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं जो हमारे बस में नहीं है।

आइपीएल के प्रदर्शन के बाद लोगों का धौनी के प्रति नजरिया बदल जाएगा : रैना

नई दिल्ली: चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेंद्र सिंह धौनी भारतीय टीम से बाहर हैं लेकिन हाल ही में वह आइपीएल टीम के अभ्यास कैंप में शामिल हुए थे। रैना ने कहा कि वह कैंप में अच्छी बल्लेबाजी कर रहे थे। मैं और रायुडू भी अच्छी लय में थे। धौनी के बल्ले के बीचो-बीच गेंद आ रही थी। वह रोज दो-तीन घंटे तक अभ्यास कर रहे थे। वह रोज सुबह तीन घंटे जिम करने के बाद शाम को बल्लेबाजी कर रहे थे। फिटनेस और बल्लेबाजी को देखते हुए वह टच में नजर आ रहे थे। जहां तक उनके टीम इंडिया के भविष्य की बात है तो यह फैसला उनको ही करना है। जब आइपीएल शुरू होगा और आप सब धौनी की बल्लेबाजी देखेंगे तो खुद ही सबका नजरिया बदल जाएगा। उनमें अभी बहुत क्रिकेट बचा है। वह कब तक खेलेगा, हमें उस पर ही छोड़ देना चाहिए। मैंने उसको पहले इतनी अच्छी बल्लेबाजी करते नहीं देखा। कुछ दिनों पहले जहां उसने बल्लेबाजी छोड़ी थी वह वहीं से शुरुआत कर रहा है। वह काफी भूखा दिख रहा है। उसके अंदर सब कुछ पहले जैसा ही है।

घर में फोटो एल्बम देख रहे हैं मयंक

टीम इंडिया के टेस्ट बल्लेबाज मयंक अग्रवाल कर्नाटक में अपने घर पर समय बिता रहे हैं। मयंक ने लोगों से अपील की कि अगर वह घर पर समय बिता रहे हैं तो अपनी पुरानी यादों को ताजा कीजिए और पुरानी फोटो एल्बम को देखिए। उन्होंने इंस्टाग्राम पर अपने बचपन की एक फोटो शेयर करते हुए यह संदेश दिया।

बाला देवी ग्लास्गो में ही रहेंगी, रेंजर्स करेगी देखभाल

नई दिल्ली: भारतीय महिला फुटबॉल टीम की खिलाड़ी बाला देवी स्कॉटलैंड के फुटबॉल क्लब रेंजर्स के साथ हैं। उन्होंने ग्लास्गो में ही रहने का फैसला किया है। बाला देवी ने यह फैसला भारतीय सरकार द्वारा गुरुवार को सभी अंतरराष्ट्रीय विमानों को 22 मार्च तक भारत में न उतरने देने के फैसले के बाद लिया है। इस समय पूरे विश्व में फैली महामारी कोरोना वायरस के कारण सरकार ने यह फैसला लिया है। बाला भारत की पहली महिला फुटबॉल खिलाड़ी हैं जिन्हें किसी विदेशी फुटबॉल क्लब ने अपने साथ जोड़ा है। उन्होंने कहा कि वह ठीक हैं और क्लब उनकी देखभाल कर रहा है।

मुझे आजादी के मायने समझ में आ गए : मेरी कॉम

नई दिल्ली: कोरोना की वजह से सबकुछ ठप पड़ गया है, लेकिन भारतीय मुक्केबाज एमसी मेरी कॉम ने कहा कि जिंदगी की रफ्तार धीरे होने से उन्हें आजादी के नए मायने समझ में आए हैं। इस महीने जॉर्डन में एशियाई ओलंपिक क्वालीफायर के लिए ओलंपिक कोटा हासिल करने वाली मेरी कॉम वहां से लौटने के बाद दिल्ली के अपने घर में आइसोलेसन पर हैं। मेरी कॉम ने कहा कि मैं आराम कर रही हूं। एक्सरसाइज करती हूं और अपनी फिटनेस पर पूरा ध्यान देती हूं। अपने बच्चों के साथ खेलती हूं क्योंकि पूरे एक महीने बाहर रही हूं। ये खुद को एकांत में रखने का सबसे अच्छा हिस्सा है। मैं अपने परिवार के साथ हूं और किसी बात की चिंता नहीं है। मैं हर किसी से अपील करना चाहती हूं कि घबराए नहीं और घर पर अपने परिवार के साथ वक्त बिताएं। उन्होंने कहा कि मुझे इस वक्त आजादी के नए मायने समझ में आ रहे हैं। मुझे रोज के कार्यक्रम का कोई तनाव नहीं है। इस समय मुझे इतना ही पता है कि मेरे बच्चे बहुत खुश हूं। पिछले दस बारह दिन से उन्हें बिना किसी बाधा के उनकी मां मिली है।

पृथ्वी शॉ की घर में बल्लेबाजी

भारतीय टेस्ट टीम के सलामी बल्लेबाज पृथ्वी शॉ भी इस समय मुंबई में अपने घर में समय बिता रहे हैं। शॉ इस सयम घर में ही बल्लेबाजी कर रहे हैं।

घर पर गेम खेलते न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज लॉकी फर्ग्यूसन • इंस्टाग्राम

फर्ग्यूसन का गेमिंस से प्यार

ऑस्ट्रेलिया से लौटने के बाद पूरी न्यूजीलैंड टीम इस समय 14 दिन के लिए क्वारंटाइन पर है। टीम के सदस्य अपने परिवार से भी नहीं मिल सकते हैं। ऐसे में टीम के तेज गेंदबाज लॉकी फर्ग्यूसन गेम खेलकर समय बिताते दिखे। वह कार रेसिंग गेम खेलकर समय बिताते दिख रहे हैं।

रैकेट ड्रिल पर काम कर रहीं हैं पोनप्पा

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी अश्विनी पोनप्पा खाली समय का अच्छे से इस्तेमाल कर रही हैं। पोनप्पा ने कहा कि कोविड 19 ने सभी कुछ बंद करके रख दिया है। पहला फोकस स्वस्थ्य और सुरक्षित रहना है। हमें क्योंकि यात्रा बहुत करनी होती है तो मैं घर में समय बिता रही हूं। दो बार की ओलंपियन पोनप्पा घर पर रहकर अंगुलियों की शक्ति बढ़ाने और रैकेट ड्रिल पर काम कर रही हैं।

ओलंपिक मशाल का फीका स्वागत

हिगाशिमत्सुशिमा (जापान): कोराना वायरस के चलते ओलंपिक के आयोजन को लेकर अनिश्चितता के बीच खेलों की मशाल शुक्रवार को जापान पहुंच गई, जिसका सादे समारोह में स्वागत किया गया। विशेष लालटेन से ढकी मशाल चार्टर्ड उड़ान से यहां पहुंची। कोरोना वायरस की वजह से इसके स्वागत के लिए 200 स्कूली बच्चों को बुलाने का कार्यक्रम आयोजकों को रद करना पड़ा। पूर्व ओलंपिक जूडो चैंपियन साओरी योशिदा और तदाहिरो नोमूरा ने पारंपरिक कुंड में कुछ अधिकारियों और मेहमानों के सामने मशाल प्रज्ज्वलित की। टोक्यो 2020 के प्रमुख योशिरो मोरी ने कहा, 'बच्चे इस मशाल का स्वागत करने आने वाले थे, लेकिन सुरक्षा के चलते वह कार्यक्रम रद करना पड़ा।' मशाल रिले 26 मार्च से शुरू होगी। आयोजकों ने रिले के रास्ते में दर्शकों से भीड़ नहीं बनाने के लिए कहा है।

बीओए बोले, एथलीटों के स्वास्थ्य को खतरे में नहीं डालेंगे: ब्रिटिश ओलंपिक संघ (बीओए) ने जोर देते हुए कहा है कि कोरोना वायरस का खतरा बढ़ने पर टोक्यो ओलंपिक 2020 के लिए तैयार होने के लिए प्रोत्साहित करके वे अपने एथलीटों के स्थास्थ्य को खतरे में नहीं डालेंगे। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति 24 जुलाई से जापान में होने वाले ओलंपिक के लिए प्रतिबद्ध है।

ओलंपिक स्थगित करने के पक्ष में जेओसी अधिकारी

टोक्यो: जापान ओलंपिक समिति (जेओसी) की एक अधिकारी ने ओलंपिक गेम्स को स्थगित करने की बात कही है। रिटायर्ड जूडो खिलाड़ी और जेओसी कार्यकारी बोर्ड की सदस्य काओरी यामागुची ने कहा कि खिलाड़ी 24 जुलाई से होने वाले खेलों की तैयारी करने की स्थिति में नहीं हैं। यामागुची ने कहा कि ओलंपिक उस स्थिति में नहीं होने चाहिए जहां विश्व इसका लुत्फ नहीं उठा सके। जहां तक मैं कह सकती हूं अमेरिका और यूरोप के खिलाड़ी ट्रेनिंग और अपने क्वालीफाइंग मैचों को खत्म नहीं कर पा रहे हैं।

जब कोरोना के डर के बीच खेलीं पीवी सिंधू

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: भारत सरकार की यात्रा को लेकर लगाई गई पाबंदियों के बाद पीवी सिंधू को ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैंपियनशिप से हटने का विकल्प दिया गया था लेकिन ओलंपिक रजत पदक विजेता ने कोविड 19 के बावजूद खेलने का फैसला किया। सरकार ने 11 मार्च को यात्रा संबंधी संशोधित परामर्श जारी किया था जिसके तहत अप्रैल तक सारे वीजा रद कर दिए गए थे। इसके साथ ही सभी भारतीयों को प्रभावित देशों से स्वदेश लौटने के लिए कहा गया था।

कोरोना का कहर

इंग्लैंड कोरोना वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित देशों में से है। सिंधू के पिता पीवी रमन्ना ने कहा कि 11 मार्च की रात को सरकार ने जब एडवाइजरी जारी की तो अगले दिन सुबह गोपी (पुलेला गोपीचंद) ने हमसे कहा कि मैच नहीं खेलते हैं और वापस जाते हैं, क्या ख्याल है। सिर्फ सिंधू, लक्ष्य सेन, सिक्की रेड्डी और अश्विनी पोनप्पा दूसरे दौर में थे। हमने खेलने का फैसला किया। विमल ने भी कहा कि खेलते हैं, क्योंकि हम पहले से वहां थे और एक दिन और रुकने से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। साइना नेहवाल, पारुपल्ली कश्यप और बी साइ प्रणीत पहले दौर से बाहर हो चुके थे। लक्ष्य दूसरे दौर में हार गया जबकि सिंधू क्वार्टर फाइनल में हारी। रमन्ना ने कहा कि इंग्लैंड में कोई मास्क नहीं पहन रहा था लेकिन हमने पहने। हमने सारी एहतियात बरती और खाने के समय ही मास्क उतारते थे। हमने लगातार तुलसी के पत्तों का गर्म पानी पीया। उन्होंने कहा कि सिंधू और मैंने लौटने के बाद खुद को अलग कर लिया है। हम किसी से मिल नहीं रहे हैं। मेरी बड़ी बेटी घर के पास रहती है लेकिन हम उससे भी नहीं मिल रहे।

भारतीय कुश्ती कोच एंड्रयू कुक स्वदेश लौटे

नई दिल्ली: भारतीय महिला कुश्ती टीम के विदेशी कोच एंड्रयू कुक स्वदेश अमेरिका लौट गए हैं। राष्ट्रीय कुश्ती संघ ने लखनऊ और सोनीपत में चल रहे अपने कैंप रद कर दिए थे। कुक भारतीय महिला टीम के साथ लखनऊ में मौजूद थे, लेकिन वहां सिर्फ चार से पांच पहलवान ही मौजूद थी। भारतीय कोच कुलदीप मलिक भी पेट में दर्द और बुखार के कारण हरियाणा लौट गए हैं। भारतीय पुरुष टीम को अभी भी नए कोच का इंतजार है, क्योंकि ईरान के हुसैन करीमी ने कई वजहों से बीच में ही अपनी नौकरी छोड़ दी थी।

- एनबीए टीम लास एंजेलिस लेकर्स के दो खिलाड़ी संक्रमित। फिलाडेलफिया के तीन तो बॉस्टन सेलटिक्स के मार्कस स्मार्ट संक्रमित पाए गए
- रीयल मैड्रिड के खिलाड़ी लुका जोविक ने आइसोलेशन का नियम तोड़ने के लिए माफी मांगी
- 2022 विश्व कप क्वालीफिकेशन स्थगित करने की मांग
- जुवेंटस के स्ट्राइकर गोंजालो हिगुएन अर्जेंटीना लौटे
- तुर्की की सुपर लीग रद
- कई स्पेनिश क्लब ने दूसरों के लिए टेस्टिंग किट का इस्तेमाल करने से मना किया
- महेला जयवर्धने ने लोगों से घरों में रहने की अपील की
- मैनचेस्टर सिटी के आयेमेरिक लापोर्ते ने अपने साथियों से घरों में अभ्यास जारी रखने को कहा
- विश्व स्नूकर चैंपियनशिप स्थगित
- विश्व बैडमिंटन संघ ने पांच और टूर्नामेंट रद किए
- ला लीगा के कई क्लब ऑनलाइन टूर्नामेंट में भाग लेंगे
- भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कोच हरेंद्र सरकार की मदद कर रहे
- तीन से पांच अप्रैल तक होने वाली एथलेटिक्स संघ की बैठक स्थगित
- न्यूजीलैंड वॉरियर्स रग्बी लीग टीम ने खुद को ऑस्ट्रेलिया में ही रखने का फैसला किया है
- फॉर्मूला-वन की सबसे बड़ी रेसों में से एक मोनाको ग्रां प्रि को रद कर दिया गया है

आइपीएल का भारी नुकसान

मुश्किल
- ब्रांड वैल्यू में आ सकती है 75 अरब रुपये की गिरावट
- आइपीएल नहीं होने से हो सकता है बड़ा घाटा

मुंबई, प्रेट्र: दुनियाभर में लीग क्रिकेट का चेहरा बदलकर रख देने वाली इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) की ब्रांड वैल्यू में एक अरब डॉलर (करीब 75 अरब रुपये) की गिरावट आ सकती है। वैश्विक परामर्श कंपनी डफ एंड फेल्प्स ने अपनी एक रिपोर्ट में यह बात कही कि आइपीएल के 12वें सत्र के दौरान 2019 में इसकी ब्रांड वैल्यू 6.8 अरब डॉलर (पांच खरब रुपये) थी। यदि बीसीसीआइ खाली स्टेडियम में इसके मैच कराता है तो इसमें 20 से 35 करोड़ डॉलर (15 से 26 अरब रुपये) की गिरावट आएगी। वहीं, पूरा सत्र रद होने पर आइपीएल की ब्रांड वैल्यू 70 करोड़ से 100 करोड़ डॉलर (52 से 75 अरब रुपये) तक घट सकता है।

परामर्श एजेंसी ने दो स्थितियों को रखकर यह आकलन किया है। पहली स्थिति में मैच के दौरान स्टेडियम में आधी सीटों के भरने और दूसरी स्थिति में स्टेडियम के पूरी तरह से खाली रहने पर या टिकटों की कोई बिक्री नहीं होने से जुड़ी है। बीसीसीआइ की मानें तो फिलहाल आइपीएल-13 को रद करने का कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है। यह 15 अप्रैल से शुरू होने की संभावना है। इस तरह के खेल आयोजनों के रद होने से नुकसान उठाने वाला भारत इकलौता देश नहीं होगा। दुनिया भर ने पहले ही टोक्यो ओलंपिक गेम्स को रोकने की घोषणा कर दी है। इससे पहले खेल आयोजनों पर इस तरह की रोक द्वितीय विश्व युद्ध के समय लगी थी। उस समय भी ओलंपिक गेम्स रद हो गए थे। आइपीएल का प्रसारण करने के लिए स्टार स्पोर्ट्स ने बीसीसीआइ से पांच साल के लिए प्रसारण अधिकार 16,347 करोड़ रुपये में खरीदे हैं। इसका सालाना आंकड़ा निकाला जाए तो पता चलता है कि हर साल के लिए करीब 5500 करोड़ रुपये चुकाए गए है।

श्रद्धांजलि बीते जमाने के दिग्गज फुटबॉलर पीके बनर्जी का लंबी बीमारी के बाद निधन, हिंदी में बातचीत करना बहुत पसंद करते थे बंगाली बाबू

नहीं रहा भारतीय फुटबॉल का 'अर्जुन'

विशाल श्रेष्ठ • कोलकाता

भारत के दिग्गज फुटबॉलर प्रदीप कुमार (पीके) बनर्जी का लंबी बीमारी के बाद शुक्रवार दोपहर कोलकाता के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। 83 वर्षीय बनर्जी की दो पुत्रियां पाउला व पूर्णा हैं। बनर्जी को दो मार्च को निमोनिया की वजह से सांस लेने में तकलीफ होने पर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। तभी से वह लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर थे। पिछले दो दिनों से उनकी हालत बेहद नाजुक थी। शुक्रवार दोपहर 12.40 बजे उन्होंने आखिरी सांस ली। उनके निधन से फुटबॉल जगत में शोक की लहर दौड़ गई है।

पीके बनर्जी भले पारंपरिक बंगाली बाबू थे लेकिन उन्हें हिंदी में बातचीत करना पसंद था। मेरी जब भी उनसे बातचीत हुई, उन्होंने हिंदी में ही संवाद किया। पहली बार जब उनसे टेलीफोन पर बातचीत हुई और मैंने उन्हें अपना परिचय दिया तो उन्होंने तपाक से कहा कि तुम हिंदी अखबार से हो इसलिए मैं तुम्हारे साथ हिंदी में ही बातचीत करूंगा।' उनकी एक खासियत यह थी कि वह सवालों को बहुत ध्यान से सुनते थे और पूरे तथ्यों के साथ विस्तार से उनका जवाब देते थे। बातचीत के दौरान उन्होंने कभी समय नहीं होने का हवाला नहीं दिया। उनकी बातें सुनकर हमेशा यही प्रतीत हुआ कि भारतीय फुटबॉल को इतना कुछ देने के बावजूद वह और भी बहुत कुछ करना चाहते थे लेकिन उम्र के कारण शरीर उनका साथ नहीं दे रहा था। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ ने उनके निधन पर शोक जताया है। 23 जून, 1936 को उत्तर बंगाल के जलपाईगुड़ी के मैनागुड़ी क्षेत्र में जन्में पीके बनर्जी ने 1952 में महज 16 साल की उम्र में फुटबॉल में पदार्पण किया था।

वर्ष 2015 में विश्व के महान फुटबॉलर पेले के कोलकाता दौरे के दौरान आयोजित कार्यक्रम में उनके साथ भारतीय फुटबॉल खिलाड़ी पीके बनर्जी • फाइल फोटो, ट्विटर

पीके की बदौलत बंगाल ने रणजी ट्रॉफी जीत रचा था इतिहास

कोलकाता: बंगाल रणजी टीम के तत्कालीन कप्तान संबरन बनर्जी ने बताया कि 1990 रणजी ट्रॉफी के फाइनल से एक दिन पहले ईडन में सारे खिलाड़ियों के लिए एक प्रेरक सत्र का आयोजन हुआ। पीके बनर्जी ने सत्र को संबोधित करते हुए टीम को अपने कई संघर्षपूर्ण मैचों के बारे में बताया। उन्होंने कई युद्धकथाएं भी सुनाकर हमारा मनोबल बढ़ाया। उनकी बातों ने हमारे खिलाड़ियों में इस कदर उत्साहित किया कि टीम ने रणजी में इतिहास रच दिया। वह सौरव गांगुली का पहला रणजी मैच भी था।

पीके बनर्जी का नाम भारतीय फुटबॉल की सुनहरी पीढ़ी का हमेशा पर्याय बना रहेगा।
प्रफुल्ल पटेल, अध्यक्ष, अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ

प्रदीप कुमार बनर्जी अपनी उपलब्धियों में जिंदा रहेंगे।
कुशल दास, महासचिव, अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ

मैंने जिंदगी में सबसे अच्छी फुटबॉल बनर्जी सर के साथ ही खेली। वह भारत के महानतम फुटबॉलर थे।
बाईचुंग भूटिया, पूर्व भारतीय कप्तान

आज एक बेहद प्रिय को खो दिया... जिन्हें मैं बहुत प्यार करता था और जिनका बेहद सम्मान करता था...मेरे करियर में उनका बहुत प्रभाव था, जब मैं 18 साल का था...उनकी सकारात्मता फैल जाती थी...उनकी आत्मा को शांति मिले। **सौरव गांगुली**, बीसीसीआइ अध्यक्ष

वह पुरोधा थे। उनकी उपलब्धियां भारतीय फुटबॉल में हमेशा दर्ज रहेंगी।
सुनील छेत्री, भारतीय फुटबॉलर

गावस्कर का पहला शतक

ऐसा हुआ था आज

21 मार्च 1971 को करियर के दूसरे टेस्ट मैच में सनी ने खेली थी शतकीय पारी

विराट कोहली और सचिन तेंदुलकर से पहले के दौर में जिस भारतीय बल्लेबाज ने दुनिया भर में सम्मान हासिल किया वह सुनील गावस्कर थे। सनी के नाम से मशहूर गावस्कर ने पूरी दुनिया में अपनी बल्लेबाजी का लोहा मनवाया। इतना ही नहीं, निर्विवाद रूप से सर्वकालीन महानतम बल्लेबाज कहे जाने वाले ऑस्ट्रेलिया के डॉन ब्रेडमैन के 29 शतकों के टेस्ट रिकॉर्ड को टूटने में 35 साल लग गए और उस रिकॉर्ड को भी तोड़ने वाले कोई और नहीं, बल्कि लिटिल मास्टर गावस्कर ही थे। गावस्कर ने 34 टेस्ट शतक बनाए।

उनके करियर में कई तारीखें ऐसी साबित हुईं, जो इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हुईं। 21 मार्च 1971, को गावस्कर ने टेस्ट क्रिकेट में पहली बार शतक जड़ा। अजित वाडेकर की कप्तानी में 1971 का वेस्टइंडीज दौरा भारतीय क्रिकेट के लिए कई मायनों में अहम साबित हुआ। इसी दौरे ने भारत को सलामी बल्लेबाज के रूप में गावस्कर जैसा रत्न दिया। गावस्कर ने प्सीरीज के दूसरे टेस्ट में पदार्पण किया था और दोनों पारियों में अर्धशतक जड़े थे। भारत ने यह टेस्ट सात विकेट से जीता।

सुनील गावस्कर • फाइल फोटो, ट्विटर

भारतीयों के लिए पीटरसन का हिंदी में ट्वीट, यह समय होशियार रहने का

नई दिल्ली, जेएनएन: पूरी दुनिया में महामारी घोषित कोरोना वायरस को लेकर इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर केविन पीटरसन ने एक ट्वीट किया है, जो काफी चर्चा में है। इसके पीछे एक खास वजह है। दरअसल, इंग्लिश क्रिकेटर ने यह ट्वीट हिंदी में किया है। यही नहीं, ट्वीट में उन्होंने अपने हिंदी टीचर का नाम भी लिखा है, भारतीय क्रिकेटर श्रीवत्स गोस्वामी।

पीटरसन ने लिखा, नमस्ते इंडिया, हम सब कोरोना वायरस को हराने में एक साथ हैं। हम सब अपनी-अपनी सरकार की बात का निर्देश करें और घर में कुछ दिनों के लिए रहें। यह समय है होशियार रहने का। आप सभी को ढेर सारा प्यार। इसके साथ ही उन्होंने लिखा, मेरे हिंदी टीचर श्रीवत्स गोस्वामी। पीटरसन के इस ट्वीट के जवाब में श्रीवत्स गोस्वामी ने लिखा कि आप तेजी से सीखने वाले हैं।

कुनबा बिखरने का सिलसिला रोक नहीं पा रही कांग्रेस

सियासत ▶ मप्र की सत्ता हाथ से निकलना नेतृत्व की चुनौती और बढ़ाएगा

मध्य प्रदेश और गुजरात में राज्यसभा की एक-एक सीट का नुकसान तय

संजय मिश्र, नई दिल्ली

मध्य प्रदेश की सत्ता हाथ से निकलने के साथ एक बार फिर साबित हो गया है कि कांग्रेस नेतृत्व राज्यों में अपना कुनबा बिखरने का सिलसिला थाम नहीं पा रहा है। दिलचस्प यह है कि पार्टी चाहे सूबे की सत्ता में हो या विपक्ष में, विधायकों को अपने पाले में बनाए रखना उसके लिए चुनौती बन गई है। कुनबा बिखरने की वजह से मध्य प्रदेश समेत दो राज्यों में कांग्रेस को हाल के वर्षों में सत्ता से बाहर होना पड़ा है। दो सूबों में सबसे बड़ा दल होने के बावजूद सत्ता उसके हाथ से फिसल गई।

कांग्रेस की सूबों में लगातार गंभीर होती यह चुनौती जाहिर तौर पर पहले से ही दबाव में घिरे पार्टी नेतृत्व की मुसीबतों में और इजाफा करेगी। मध्य प्रदेश की घटना इस लिहाज से कांग्रेस के शिखर नेतृत्व के लिए अब तक का सबसे बड़ा झटका है, क्योंकि सियासी शतरंज की बिसात पर यहां अपने दो बड़े धुरंधर दिग्गजों के रहते हुए भी पार्टी मात खा गई।

मुख्यमंत्री कमल नाथ और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह को सूबे की सियासत ही नहीं, राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के बड़े रणनीतिकारों में गिना जाता है, लेकिन अपने विधायकों को बचाने की कसौटी पर दोनों ही न केवल फेल रहे, बल्कि कांग्रेस की राष्ट्रीय स्तर पर बनी चुनौती में और ज्यादा इजाफा कर दिया है। मध्य प्रदेश जैसे बड़े राज्य में कांग्रेस 15 साल बाद सत्ता में लौटी थी, मगर कमलनाथ और दिग्गी राजा की जोड़ी ज्योतिरादित्य सिंधिया की नाराजगी को हल्के में लेने की भूल कर बैठी।

मध्य प्रदेश से पहले पिछले साल मई में अपने विधायकों का कुनबा बिखरने के चलते कांग्रेस कर्नाटक की गठबंधन सरकार से हाथ धो बैठी। कांग्रेस के दिग्गज पूर्व मुख्यमंत्री सिद्दरमैया के करीबी दर्जन भर से अधिक विधायकों ने बिल्कुल इसी तर्ज पर बगावत कर कुमारस्वामी की अगुआई वाली कांग्रेस-जेडीएस सरकार गिरा दी। वहां भी सत्ता की बाजी भाजपा ने मार ली।

मध्य प्रदेश के अलावा अभी राज्यसभा के होने वाले चुनाव से पहले गुजरात में भी कांग्रेस के पांच विधायकों ने इस्तीफा देकर उसे तगड़ा झटका दे दिया। इस कदम से गुजरात की दूसरी राज्यसभा सीट कांग्रेस के लिए जीतना बेहद मुश्किल हो गया है। मध्य प्रदेश में सत्ता गंवाने के साथ ही वहां की एक राज्यसभा सीट भी कांग्रेस से छिन जाएगी।

मध्य प्रदेश, कर्नाटक और गुजरात तो कांग्रेस की ऐसी चुनौतियों के ताजा उदाहरण हैं। बीते तीन सालों में आधा दर्जन से अधिक राज्यों में कांग्रेस अपने बिखरते कुनबे को संभालने की चुनौती से रूबरू होती रही है। 2017 में गोवा के चुनाव में 17 सीटें जीतने के बाद भी कांग्रेस को सत्ता नहीं मिली जबकि भाजपा ने 13 सीटों के साथ जोड़-तोड़ कर सरकार बना ली और फिर एक-एक कर कांग्रेस के तीन विधायकों ने पाला बदल लिया। मणिपुर में भी कांग्रेस को 28 सीटें मिलीं जो बहुमत से केवल तीन कम थीं, लेकिन यहां भी 21 सीटों के बूते भाजपा ने सरकार बना ली और फिर कांग्रेस के कुछ विधायक टूट कर उसके साथ आ गए। इस तरह मध्य प्रदेश और गुजरात के ताजा घटनाक्रमों से एक बार फिर साबित हो गया है कि नेतृत्व की लंबे समय से जारी दुविधा राज्यों में कांग्रेस की जमीन को कमजोर कर रही है।

पूछा- 'मेरी गलती क्या थी'

प्रथम पृष्ठ से आगे

कमल नाथ ने शुक्रवार दोपहर करीब बारह बजे बतौर सीएम अपनी अंतिम पत्रकारवार्ता में रुंधे गले से खुद ही पत्रकारों से सवाल किया, 'मेरी गलती क्या थी?' उन्होंने विधानसभा चुनाव जीतने और सरकार बनने की जोड़-तोड़ के बीच जिस तरह चेतावनी दी थी कि 11 के बाद 12 तारीख भी आती है, ठीक उसी तरह शुक्रवार को भी कहा, 'आज के बाद कल और कल के बाद परसों भी आता है।' अपने 15 माह के कार्यकाल की उपलब्धियों को भी गिनाया। यह भी कहा कि वे प्रदेश की प्रोफाइल बदलने के लिए काम कर रहे थे। 15 महीने में उनके खिलाफ कोई घोटाले या भ्रष्टाचार के आरोप नहीं लगे।

सिंधिया का नाम लिए बगैर तंज : कमल नाथ ने ज्योतिरादित्य सिंधिया का नाम लिए बिना तंज कसा कि उनकी कोशिश रही कि कांग्रेस 'महल' (ग्वालियर का सिंधिया परिवार) में नहीं जाए। बल्कि महल कांग्रेस में आए, जिससे जनता शक्तिशाली बन सके। नाथ ने लिखित वक्तव्य में आरोप लगाया, 'जनता द्वारा नकारे गए महत्वाकांक्षी, सत्तालोलुप 'महाराजा' और उनके द्वारा प्रोत्साहित 22 लोभियों के साथ मिलकर भाजपा ने खेल रच लोकतांत्रिक मूल्यों की हत्या की।' उन्होंने कहा कि शीघ्र ही सच्चाई सामने आएगी। इन लोभियों व बागियों को जनता कभी माफ नहीं करेगी।

शक्ति परीक्षण के लिए शुक्रवार दोपहर दो बजे से विधानसभा का विशेष सत्र बुलाया गया था। चूंकि कमल नाथ इससे पहले ही सीएम पद छोड़ चुके थे, इसलिए मात्र तीन मिनट में सदन की कार्यवाही संपन्न कर दी गई। कांग्रेस, निर्दलीय, बसपा और सपा के विधायक विधानसभा में ही नहीं पहुंचे। सिर्फ भाजपा के ही सदस्य सदन में मौजूद थे। ठीक दो बजे विधानसभा अध्यक्ष आसंदी पर आए। अध्यक्ष ने सदन को बताया, 'सुप्रीम कोर्ट के आदेश की रोशनी में शक्ति परीक्षण के लिए विशेष बैठक बुलाई थी। कमल नाथ ने मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया है, इसलिए बैठक की उपादेयता समाप्त हो गई है।' इसके बाद सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई।

...न खुदा ही मिला न विसाल ए सनम

त्वरित टिप्पणी
प्रशांत मिश्र

आखिरकार कमल नाथ ने मान लिया कि उन्होंने काफी पहले विधायकों का और उस नाते जनता का विश्वास खो दिया था। 15 महीने तक उन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री के तौर पर शासन तो कर लिया, लेकिन वह सिर्फ जोड़तोड़ के कारण था। शुरुआत दिसंबर, 2018 में नतीजे आने के साथ ही हो गई थी जब कांग्रेस को भाजपा के मुकाबले छह-सात सीटें ज्यादा तो मिली थीं, लेकिन वोट कम मिले थे। यानी संख्या के हिसाब से ज्यादा लोगों ने भाजपा को ही वोट दिया था। कांग्रेस के अंदर नेतृत्व को लेकर भारी खींचतान थी और किसी तरह बसपा, सपा और अन्य को मिलाकर सरकार बना ली गई थी। यही नहीं, लगभग उसी वक्त से कमल नाथ की ओर से दावे भी किए जाने लगे थे कि भाजपा के लगभग एक दर्जन विधायक उनके संपर्क मे हैं। दरअसल यह सब कुछ इसलिए हो रहा था क्योंकि उन्हें भय था कि पार्टी के अंदर से ही उनके पांव खींचे जा सकते हैं। इसीलिए वह कुछ ज्यादा तेज दौड़ने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन खुद ही फिसलकर गिर गए।

एक दिन पहले तक कमल नाथ की ओर से दावा किया जा रहा था कि उनके 16 विधायकों को भाजपा ने बंधक बनाकर रखा है, हालांकि उन विधायकों की ओर से चीख-चीखकर कहा जा रहा था कि वे किसी भी शर्त पर कांग्रेस के साथ नहीं रहना चाहते। उससे पहले कोरोना की आड़ में विधानसभा की बैठक 26 मार्च तक के लिए स्थगित कर दी थी। जब सुप्रीम कोर्ट का डंडा पड़ा तो सदन में बहुमत साबित करने या फिर वहां अपनी बात रखने के बजाय उन्होंने मीडिया से बात करना ज्यादा मुनासिब समझा। स्पष्ट है कि उनका आत्मविश्वास कितना हिला हुआ था। कांग्रेस पहले कर्नाटक में इसी तरह सरकार गंवा चुकी है। अब मध्य प्रदेश में सरकार गई। सवाल यह है कि इसके लिए क्या सिर्फ कमल नाथ या सिद्दरमैया जिम्मेदार हैं या फिर केंद्रीय नेतृत्व को इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। जाहिर है कि केंद्रीय नेतृत्व इससे बच नहीं सकता। दरअसल नेतृत्व की कमजोरी के कारण ही कर्नाटक और अब मध्य प्रदेश की घटना हुई है। मध्य प्रदेश में जिस तरह कमल नाथ और दिग्विजय सिंह की जोड़ी ने मिलकर ज्योतिरादित्य सिंधिया और उनके समर्थकों को नाराज किया, अपने लोगों को पुरस्कृत किया और कांग्रेस नेतृत्व चुप्पी साधे बैठे रहा, यह उसी का नतीजा है। क्या यह सच नहीं कि जब ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा था कि किसानों की समस्या हल नहीं हुई तो वह सड़क पर उतरेंगे। तो कमल नाथ ने स्थिति सुधारने के बजाय कहा था, 'वह चाहें तो सड़क पर उतर जाएं।' यह नेतृत्व की जिम्मेदारी होती है कि वह अपनी धमक से राज्य में संतुलन बनाए रखे। लेकिन यहां तो हालत यह है कि प्रदेश नेतृत्व के सामने वह बेबस है। पार्टी के अंदर कितना विरोधाभास है, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पार्टी में बार-बार युवा नेतृत्व की बात तो उठती है, लेकिन छत्तीसगढ़ को छोड़कर हर जगह उन्हें नजरअंदाज किया जा रहा है। अगर मध्य प्रदेश में कमल नाथ को इस लिहाज से मुख्यमंत्री बनाया गया था कि वह प्रदेश अध्यक्ष थे तो राजस्थान में इस फॉर्मूले को क्यों पलट दिया गया। छत्तीसगढ़ में भी भूपेश बघेल अपने दमखम और दबाव के कारण ही मुख्यमंत्री बन सके वर्ना तो राहुल गांधी किसी और स्थापित करने की योजना बना रहे थे। क्या कांग्रेस नेतृत्व को इसका अहसास नहीं था कि मध्य प्रदेश में कमल नाथ-दिग्विजय की जोड़ी इकतरफा काम कर रही है? उन्हें इसका पता था कि 22 विधायकों के समर्थन वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया को जानबूझकर किनारे लगाया जा रहा है ताकि भविष्य में भी कमल नाथ-दिग्विजय के पुत्रों के हाथ में कमान रहे। लेकिन नेतृत्व हाथ पर हाथ रखे बैठा रहा। राज्यसभा सीट की दावेदारी के लिए किस तरह दिग्विजय और कमल नाथ हाथ मिलाए हुए थे इसका नजारा बार बार दिखा। दिग्विजय तो बागी विधायकों से मिलने बेंगलुरु तक पहुंच गए। वहां धक्का-मुक्की भी हुई।

इस पूरे क्रम में कमल नाथ और दिग्विजय से ज्यादा कांग्रेस ने खोया है। कमल नाथ मुख्यमंत्री बनना चाहते थे वह बन गए। ज्योतिरादित्य के भाजपा में जाने के बाद अब उनके पास अवसर है कि अपने पुत्रों को स्थापित करें। राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलता रहेगा। लेकिन कांग्रेस अगर अब भी खुद के अंदर नहीं झांकी तो हाथ खाली ही रह जाएगा।

विस के स्पीकर की भी विदाई तय

भोपाल, नईदुनिया

कमल नाथ के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफे के बाद अब मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नर्मदा प्रसाद प्रजापति की विदाई भी तय है। प्रजापति द्वारा खुद से इस्तीफा नहीं देने की स्थिति में सत्ता पक्ष द्वारा उनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया जा सकता है। इस्तीफा देने की स्थिति में राज्यपाल द्वारा नए विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव होने तक उन्हें प्रभारी स्पीकर बनाए रखने या फिर सत्ता पक्ष उनके स्थान पर नए विधानसभा अध्यक्ष चुनाव होने तक प्रोटेम स्पीकर की नियुक्ति करा सकती है।

विधानसभा चुनाव के बाद कमल नाथ सरकार ने स्पीकर के चुनाव में नर्मदा प्रसाद प्रजापति को उतारा था। उनके खिलाफ भाजपा ने सातवीं बार के विधायक विजय शाह को प्रत्याशी बनाया था। सर्वसम्मति से चुनाव नहीं होने की स्थिति बनी और प्रोटेम स्पीकर दीपक सक्सेना ने एनपी प्रजापति को विधानसभा अध्यक्ष चुनने की घोषणा की थी। इसके बाद सवा साल में हुए तमाम सत्रों में सदन की कार्यवाही के दौरान भाजपा के वरिष्ठ विधायकों के साथ स्पीकर प्रजापति का जिस तरह का रवैया रहा, उसे भाजपा विधायक दल भूल नहीं पाया है।

भार्गव, शाह, बसेन या वर्मा बनाए जा सकते हैं प्रोटेम स्पीकर

राज्य में नई सरकार गठन के बाद प्रजापति के भविष्य पर फैसला होने के संकेत हैं। विधानसभा अध्यक्ष के इस्तीफे की स्थिति में भाजपा विधायक दल के नेता द्वारा प्रोटेम स्पीकर के लिए राज्यपाल से अनुशंसा की जाएगी। बताया जाता है कि प्रोटेम स्पीकर के लिए भाजपा में सबसे वरिष्ठ विधायक गोपाल भार्गव या सातवीं बार के विधायक विजय शाह, गौरीशंकर बिसेन या करण सिंह वर्मा के नाम की चर्चा है। प्रोटेम स्पीकर नए विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव कराएंगे।

विधानसभा अध्यक्ष का इस्तीफा होने पर प्रोटेम स्पीकर बनाया जाएगा जो नए विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव कराएगा।
- बीडी इसरानी, पूर्व प्रमुख सचिव, मप्र विधानसभा

जीत का जश्न

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री कमल नाथ के इस्तीफा देने के बाद भाजपा नेताओं के साथ मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जश्न मनाते हुए। प्रेट्र

बिहार भाजपा की नई टीम घोषित

राज्य ब्यूरो, पटना : भाजपा के बिहार प्रदेश अध्यक्ष डा. संजय जायसवाल ने नई प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा कर दी। डॉ. मनोज कुमार लगातार तीसरी बार पार्टी के चिकित्सा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष बनाए गए हैं। उपाध्यक्ष पद से दरभंगा सांसद गोपाल जी ठाकुर बेदखल कर दिए गए हैं। नई कार्यकारिणी में 12 प्रदेश उपाध्यक्ष, चार महामंत्री, 12 प्रदेश मंत्री, नौ प्रवक्ता, एक प्रदेश मुख्यालय प्रभारी, एक कोषाध्यक्ष और एक सह कोषाध्यक्ष शामिल हैं।

पूर्व महामंत्री में सिर्फ एक पदाधिकारी सुशील चौधरी नित्यानंद राय कोटे से कुर्सी बचाने में कामयाब रहे हैं। गोपालगंज के पूर्व सांसद जनक राम, विधायक संजीव चौरसिया, सुशील चौधरी और देवेश कुमार बिहार भाजपा के महामंत्री बनाए गए हैं। देवेश का कद बढ़ा है।

जनमत
मुद्दा

क्या पानी की बर्बादी देख इसकी किल्लत को लेकर भविष्य की तस्वीर आपको परेशान करती है?

mudda@jagran.com पर आप अपनी राय हमें भेज सकते हैं।

बागी विधायक रहे धाकड़ की बेटी की संदिग्ध हालात में मौत

नईदुनिया, शिवपुरी

मध्य प्रदेश के सियासी घटनाक्रम में बागी बनकर विधानसभा सदस्यता खोने वाले शिवपुरी जिले के पोहरी के पूर्व कांग्रेस विधायक सुरेश धाकड़ की बेटी ज्योति की राजस्थान के बारां जिला स्थित ग्राम बासखेड़ा माल स्थित ससुराल में गुरुवार को संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। स्थानीय पुलिस इसे आत्महत्या बता रही है, जबकि मायके वालों ने दहेज हत्या का आरोप लगाया है। घटना के वक्त धाकड़ कांग्रेस के बागी पूर्व विधायकों के साथ बेंगलुरु में थे। पूर्व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने उन्हें आनन-फानन में विशेष विमान से झालावाड़ तक भेजा। वहां से वे गांव रांठखेड़ा पहुंचे। ज्योति का अंतिम संस्कार रांठखेड़ा में ही किया गया।

जानकारी के मुताबिक करीब चार साल पहले ज्योति का विवाह बारां के शाहबाद में पदस्थ चिकित्सा अधिकारी डॉ. जयसिंह मेहता से हुआ था। शादी के बाद से ही ससुराल पक्ष का रवैया ज्योति के प्रति ठीक नहीं था। उसके पति के एक अन्य महिला से दूसरी शादी की बात भी सामने आ रही है। ज्योति के साथ मारपीट और तनाव के हालात लगातार बने रहते थे।

ज्योति। (फाइल)

पारिवारिक सूत्रों के मुताबिक मध्य प्रदेश सरकार से विद्रोह के घटनाक्रम से पहले इसी पारिवारिक तनाव के चलते धाकड़ को बेटी की ससुराल जाना पड़ा था। वे बात संभाल पाते इसी बीच सिंधिया ने कांग्रेस छोड़ दी और धाकड़ को 21 अन्य बागी विधायकों के साथ बेंगलुरु जाना पड़ा था। उधर, बारां के पुलिस उपाधीक्षक कजोड़मल ने मीडिया को बताया कि 24 वर्षीय ज्योति ने गुरुवार रात करीब नौ बजे ससुराल बांसखेड़ा माल स्थित घर में फांसी लगाकर जान दे दी। शुक्रवार सुबह घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लिया और दोपहर में उसका पोस्टमार्टम करवाया गया। इसकी रिपोर्ट से हत्या या आत्महत्या की गुत्थी सुलझेगी। मृतका के भाई जितेंद्र धाकड़ ने ज्योति के ससुरालवालों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कराया है। जांच की जा रही है।

दांवपेच में पिट गए सब प्यादे

आनन्द राय, भोपाल

▶ मध्य प्रदेश में अब राज्यसभा चुनाव की सियासत, ज्योतिरादित्य और दिग्विजय का राज्यसभा में जाना तय

▶ सिंधिया के भाजपा और सिंह के कांग्रेस से प्रत्याशी बनने से दोनों ही दलों के कई नेताओं के मंसूबे धरे रह गए

कमल नाथ सरकार गिरने के बाद यह साफ हो गया है कि 26 मार्च को मध्य प्रदेश में तीन सीटों पर होने वाले राज्यसभा चुनाव में भाजपा का पलड़ा भारी रहेगा। भाजपा से ज्योतिरादित्य सिंधिया (पूर्ववती ग्वालियर राजपरिवार के प्रमुख) और कांग्रेस से दिग्विजय सिंह (पूर्ववर्ती राघौगढ़ राजपरिवार के प्रमुख) की जीत तय मानी जा रही है, जबकि तीसरी सीट पर भाजपा उम्मीदवार की ही राह आसान दिख रही है। अब इन दोनों 'राजा-महाराजाओं' के सिर पर जीत का सेहरा बंधने में कोई संशय नहीं रह गया है, पर यह बात तेजी से चर्चा में आ गई है कि दोनों राजा-महाराजा के दांव में प्यादों की किस्मत पिट गई।

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि मध्य प्रदेश में सत्ता के उलटफेर की बुनियाद राज्यसभा चुनाव के चलते ही पड़ी। कांग्रेस महासचिव रहे ग्वालियर राजघराने के ज्योतिरादित्य सिंधिया के भाजपा से राज्यसभा उम्मीदवार घोषित होते ही वहां करीब एक दर्जन दावेदारों के अरमान दिल में ही रह गए। कांग्रेस से एक बार फिर पूर्व मुख्यमंत्री और राघौगढ़ रियासत के दिग्विजय सिंह के उम्मीदवार बनने से दर्जन भर प्रमुख नेताओं की किस्मत का ताला नहीं खुल सका। सिंधिया और दिग्विजय की लड़ाई तो अपने-अपने हित में शुरू हुई, लेकिन इनके दांव में दोनों

ज्योतिरादित्य सिंधिया

दिग्विजय सिंह (दोनों फाइल फोटो)

दलों के कुछ नेताओं की महत्वाकांक्षा पिस गई हैं। दूसरी वरीयता के उम्मीदवार के रूप में भाजपा ने सुमेर सिंह सोलंकी तथा कांग्रेस ने अनुसूचित समाज के प्रमुख नेता फूल सिंह बरैया पर दांव लगाया है। वैसे तो भाजपा से रंजना बघेल ने भी नामांकन किया था, लेकिन औपचारिकता पूरी होते ही उनका नाम वापस ले लिया गया।

तीसरी सीट पर भाजपा उम्मीदवार की राह हुई आसान : 230 सदस्यों वाली मप्र विधानसभा में इस समय केवल 206 सदस्य हैं। दो सदस्यों का पहले ही निधन हो गया था जबकि छह मंत्रियों समेत 22 विधायकों के इस्तीफे हो चुके हैं। ऐसे में राज्यसभा के एक उम्मीदवार को जीत के लिए 52 विधायकों के मत की जरूरत होगी। कांग्रेस के पास अध्यक्ष समेत 92 विधायक हैं जबकि भाजपा के पास 107 सदस्य हैं। चार निर्दलीय, दो बसपा और एक सपा के सदस्य हैं। दोनों सीटों पर जीत के लिए अब भाजपा को 104 सदस्यों के मत चाहिए। मौजूदा आंकड़ों के हिसाब से राज्यसभा चुनाव में भाजपा के दोनों उम्मीदवार जीत जाएंगे जबकि कांग्रेस एक सीट ही जीतेगी। चूंकि कांग्रेस की ओर से दिग्विजय प्रथम वरीयता के उम्मीदवार हैं इसलिए उनकी राह में कोई रोड़ा नहीं है।

दिग्गी के खिलाफ कांग्रेस में मुखर विरोध : 'राजा-महाराजा' के दांव से चित हुए प्यादों की जंग भी शुरू हो गई है। भाजपा में अंदरखाने सिंधिया के विरोधी सक्रिय हो गए हैं और कांग्रेस में दिग्विजय के खिलाफ भी मुखर आवाज सुनाई पड़ने लगी है।

भाजपा विधायक शरद कोल को भारी पड़ी दो नाव की सवारी

राज्य ब्यूरो, भोपाल: मध्य प्रदेश के ब्योहारी विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक शरद कोल को दो नाव की सवारी महंगी पड़ गई। वह कभी कांग्रेस के साथ तो कभी भाजपा खेमे में नजर आ रहे थे। कमल नाथ सरकार को बचाने के गणित में उन्होंने इस्तीफा तक दे दिया था, लेकिन जैसे ही सरकार के जाने का आभास हुआ वह भाजपा के साथ हो गए थे, लेकिन विधानसभा अध्यक्ष नर्मदा प्रसाद प्रजापति ने शुक्रवार को उनका इस्तीफा मंजूर कर संकट में डाल दिया। उधर, कोल का कहना है कि 16 मार्च को ही इस्तीफा वापस लेने का पत्र लिख दिया था।

कोल की पारिवारिक पृष्ठभूमि कांग्रेस की है। वे चुनाव जीतने के बाद से ही मुख्यमंत्री कमल नाथ के प्रति कई बार हमदर्दी जता चुके हैं। पिछले साल विधानसभा सत्र के दौरान भी एक विधेयक पर मत विभाजन के दौरान कोल कांग्रेस के साथ खड़े दिखाई दिए थे। तभी से कयास लगाए जा रहे थे कि कोल भाजपा का साथ छोड़ सकते हैं, पर जब कमल नाथ सरकार के अल्पमत में आने की संभावना बनी, तो कोल भाजपा के पाले में आ गए। पिछले कुछ दिनों से वे भाजपा कैंप में ही डेरा डाले हुए थे। इस्तीफा मंजूर होने पर हैरान कोल का कहना है कि उनके खिलाफ षड्यंत्र किया गया।

लश्कर-ए-तैयबा से संबंध रखने के आरोप में बंगाल से छात्रा गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

- आतंकी संगठन के लिए महिलाओं की भर्ती करती थी आरोपित
- वाट्सएप ग्रुपों के जरिये देश विरोधी सामग्री प्रसारित कर रही थी

बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले में भारत-बांग्लादेश सीमा के पास से कोलकाता पुलिस के विशेष कार्य बल ने 21 वर्षीय छात्रा तानिया परवीन को आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के साथ कथित संबंधों के आरोप में गिरफ्तार किया है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि शहर के एक प्रसिद्ध कॉलेज की एमए फाइनल ईयर की छात्रा पर गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम और आइपीसी की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है।

अधिकारी ने कहा कि वह कथित तौर पर लश्कर के लिए महिलाओं की भर्ती कर रही थी और वाट्सएप ग्रुपों के जरिये देश विरोधी सामग्री प्रसारित कर रही थी। प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि उसके पाकिस्तान की खुफिया एसेंजी इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आइएसआइ) के साथ भी संबंध थे।

छात्रा बंगाल में आतंकी संगठन के लिए एक नियोक्ता के रूप में काम कर रही थी। उसे राज्य के साथ-साथ भारत के पूर्वी हिस्से में अपनी उपस्थिति को बढ़ाने का काम सौंपा गया था। पुलिस अधिकारी ने कहा कि गृह मंत्रालय की ओर से 2019 में अलर्ट जारी करने के बाद हमारे अधिकारी उसकी निगरानी कर रहे थे। बुधवार रात उत्तर 24 परगना जिले के बादुरिया इलाके में स्थित उसके आवास से उसे गिरफ्तार किया गया। वह करीब दस साल पहले बांग्लादेश से भारत आई थी। उसके पिता राजमिस्त्री हैं। वह अरबी साहित्य में पोस्ट-ग्रेजुएशन कर रही थी। पूछताछ के दौरान, उसने हाल ही में आतंकवादी संगठन के कुछ शीर्ष नेताओं से बात करने की बात स्वीकार की है। वह उन्हें वाट्सएप के माध्यम से कॉल करती थी।

अधिकारी ने बताया, छात्रा पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ के लिए हनी ट्रैप के रूप में भी काम कर रही थी और कई सरकारी अधिकारियों के संपर्क में थी। उन्होंने कहा कि उसके पास से एक डायरी, और एक मोबाइल फोन सहित दस्तावेज जब्त किए गए हैं। उन्होंने कहा कि हमें अभी तक नहीं पता है कि वह सरकारी अधिकारियों से कोई महत्वपूर्ण जानकारी इकट्ठा करने में कामयाब रही थी या नहीं।

पिथौरागढ़ में ब्रेक में खराबी से रनवे पर फिसला विमान

जागरण संवाददाता, पिथौरागढ़

गाजियाबाद के हिंडन से नौ सवारियों को लेकर आया हेरीटेज एविएशन का विमान नैनी सैनी हवाई पट्टी के रनवे पर उतरने के दौरान ब्रेक में खराबी आने से फिसल गया। विमान के नैनी सैनी की तरफ बनी दीवार से टकराने से पूर्व रुक जाने से बड़ा हादसा टल गया और विमान में दिल्ली से आ रहे यात्री बाल-बाल बचे।

हेरीटेज एविएशन का विमान शुक्रवार तीन बजे के बाद हिंडन से सवारियां लेकर नैनी सैनी हवाई पट्टी पर उतरा। रनवे में उतरने के बाद चार सौ मीटर रन करने के बाद अचानक ब्रेक में खराबी आने से रनवे से फिसल कर कच्चे रनवे की तरफ पांच मीटर दूर तक चला गया। आगे नैनी सैनी की तरफ दीवार थी, इससे पहले ही विमान के रुकने से बड़ा हादसा टल गया। गनीमत रही कि विमान में सवार नौ यात्री इसे न

पिथौरागढ़ की नैनी-सैनी हवाई पट्टी पर शुक्रवार को हेरीटेज एविएशन का विमान फिसलकर कच्चे में चला गया। विमान हिंडन से नौ सवारियां लेकर नैनी-सैनी पहुंचा था। जागरण

तो महसूस कर सके और नहीं इसके बारे में जान सके। विमान में सवार यात्री राम सिंह और पार्वती देवी ने बताया कि विमान के रनवे पर उतरते समय एक झटका जरूर लगा था।

मालूम हो कि इससे पूर्व एक बार विमान का पंतनगर से उड़ने के बाद हवा में फाटक खुल गया था और एक बार हिंडन से पिथौरागढ़ आते समय खराबी आने से विमान को देहरादून उतारना पड़ा था।

बांग्लादेश सीमा से 21 किलो सोने के साथ सात तस्कर गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) व राजस्व खुफिया विभाग (डीआरआइ) ने एक संयुक्त ऑपरेशन में कोलकाता से सटे उत्तर 24 परगना में भारत-बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास तस्करी को नाकाम करते हुए 21 किलोग्राम वजन के सोने के बिस्कुटों के साथ सात तस्करों को गिरफ्तार किया है। सोने के अलावा मौके से 5,000 बोतल प्रतिबंधित फैंसिडिल व 2.65 लाख रुपये मूल्य की बांग्लादेशी मुद्रा भी जब्त की। बीएसएफ के अनुसार पिछले कुछ महीनों में बांग्लादेश सीमा से सोने की यह सबसे बड़ी जब्ती है। मामले की जांच की जा रही है।

मौसम विशेष

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व उत्तर पश्चिम राजस्थान में आंशिक बादलों के साथ कुछ स्थानों पर गरज और तेज हवाओं के साथ वर्षा तथा एक-दो स्थानों पर ओलावृष्टि संभव है। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश में कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा व पर्वतीय स्थानों पर बर्फबारी संभव है।

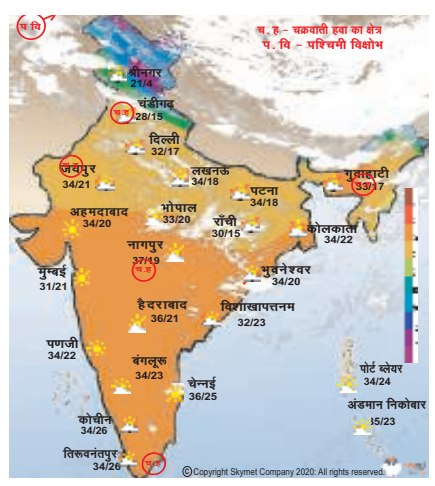

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

आजकल

शनिवार 21 मार्च 2020

16

www.jagran.com

1954 में पहले फिल्मफेयर पुरस्कार का आयोजन हुआ

मुंबई में आज ही घोषित इस पुरस्कार में सिर्फ पांच श्रेणियां थीं। दो बीघा जमीन सर्वश्रेष्ठ फिल्म, बिमल रॉय सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, दिलीप कुमार सर्वश्रेष्ठ अभिनेता, मीना कुमारी सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री और नौशाद सर्वश्रेष्ठ संगीतकार बने।

कलकत्ता सार्वजनिक पुस्तकालय शुरू हुआ

आज ही के दिन 1836 में कलकत्ता सार्वजनिक पुस्तकालय शुरू हुआ। बाद में इसे इंपीरियल लाइब्रेरी के साथ मिला दिया गया और जनवरी 1903 में जनता के लिए खोला गया। स्वतंत्रता के बाद इंपीरियल लाइब्रेरी के स्थान पर राष्ट्रीय पुस्तकालय 1948 में अस्तित्व में आया।

शहनाई गूंजेगी तो याद आएंगे बिस्मिल्लाह खान

आज ही 1916 में शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खान का जन्म बिहार के बक्सर जिले के डुमरांव में हुआ था। बचपन का नाम कमरुद्दीन था और संगीत परिवार से विरासत में मिली। 6 साल की उम्र में वाराणसी आ गए। 14 साल की उम्र में इलाहाबाद की संगीत परिषद में शहनाई बजाई और पीछे मुड़कर नहीं देखा। 15 अगस्त 1947 को लालकिले पर शहनाई बजाकर आजादी का स्वागत किया। तमाम सम्मानों के साथ 2001 में भारत रत्न बने। 21 अगस्त 2006 को निधन हुआ।

वायु प्रदूषण का पता लगाएगा एआइ सिस्टम

तकनीक ▶ ब्रिटेन की लॉघबोरो यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने किया तैयार

एक घंटे पहले बता देगा कैसा रहेगा पीएम 2 .5 का स्तर

लंदन, प्रेट्र : वैज्ञानिकों ने एक नया आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) सिस्टम विकसित किया है, जो वायु प्रदूषण के स्तर का पूर्वानुमान लगा सकता है। ब्रिटेन की लॉघबोरो यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने कहा, 'इस सिस्टम की तकनीक कई मायनों में नई है। इसमें पर्यावरणीय कारकों पर नई अंतर्दृष्टि प्रदान करने की क्षमता है, जो वायु प्रदूषण के स्तर पर प्रभाव डालते हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रोजेक्ट में एआइ के जरिये पीएम 2.5 का पूर्वानुमान लगाया गया है। पीएम 2.5 से तात्पर्य है कि एक व्यास में 2.5 माइक्रोन से कम के पार्टिकुलेट मैटर। वायुमंडल में इसका स्तर ज्यादा होने पर शहरों में अक्सर दृश्यता धुंधली हो जाती है।

स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है पीएम 2.5 : पार्टिकुलेट मैटर एक प्रकार का वायु प्रदूषक है और यह सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में सबसे बड़ी चिंता का विषय माना जाता है। शोधकर्ताओं ने कहा, 'ऐसा इसलिए है क्योंकि ये कण इतने छोटे होते हैं कि वे आसानी से हमारे फेफड़ों और फिर रक्तप्रवाह में प्रवेश कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कार्डियोवस्कुलर, सेरेब्रोवस्कुलर और अन्य श्वसन संबंधी बीमारियां लोगों को अपनी चपेट में ले लेती हैं।'

वायुमंडल में पीएम 2.5 के स्तर में वृद्धि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बेहद खतरनाक है। फाइल

मशीन लर्निंग का किया उपयोग

शोधकर्ताओं की टीम ने मशीन लर्निंग का उपयोग करके एक सिस्टम बनाया। यह एक प्रकार की आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस तकनीक है, जो नियमों और विशेषताओं को सीखने के लिए बड़ी मात्रा में डाटा का उपयोग करती है। इसी की मदद से यह वायु प्रदूषण का पूर्वानुमान लगाती है। अपनी एग्लोरिद्म का परीक्षण करने के लिए शोधकर्ताओं ने बीजिंग के वायु प्रदूषण के डाटा का उपयोग किया। उन्होंने कहा कि अब इस प्रणाली का परीक्षण अब चीन के शेनजेन में लगाए गए सेंसरों द्वारा एकत्र किए गए लाइव डा टा पर भी किया जाएगा।

आसानी से कर सकता है हवा की गुणवत्ता की जांच

लॉघबोरो यूनिवर्सिटी के युआनलिन ली ने कहा, 'ऐसा नहीं है कि हमारे पास वर्तमान में ऐसे सिस्टम मौजूद नहीं हैं, जो पीएम 2 .5 का पूर्वानुमान लगा सकें लेकिन नए सिस्टम के जरिये इस तकनीक को अगले स्तर पर ले जाया जा सकता है।' उन्होंने कहा कि इसकी मदद से हम किसी स्थान विशेष के बारे में एक घंटे पहले यह बता सकते हैं कि अगले कुछ घंटों में वहां हवा की स्थिति कैसी रहने वाली है।

पर्यावरणीय कारकों की पैदा होगी बेहतर समझ

शोधकर्ताओं ने कहा, 'यह सिस्टम वायु प्रदूषण के लिए जिम्मेदार विभिन्न कारकों और आंकड़ों के बारे में भी विस्तार से जानकारी देता है, जिससे मौसम और पर्यावरणीय कारकों की बेहतर समझ पैदा हो सकती है।' उन्होंने कहा कि इस एआइ सिस्टम में ऐसी क्षमता है कि यह वायु प्रदूषण विश्लेषण उपकरण यानी एयर पल्यूशन एनालिसिस टूल का इस्तेमाल कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग सिस्टम में रूप में कर सकता है।

वायु प्रदूषण से रक्त भी हो जाता है दूषित

वायु प्रदूषण के कारण कार्बन मोनोक्साइड मनुष्य के रक्त के हीमोग्लोबीन अणुओं से ऑक्सीजन की तुलना में 200 गुणा अधिक तेजी से संयुक्त हो जाती है एवं जहरीला पदार्थ कार्बोक्सी हीमोग्लोबिन बनाती है। जिस कारण ऑक्सीजन की वायु में पर्याप्त मात्रा रहने पर भी श्वास अवरोध, दम भी घुटने लगता है। इसके अलावा, अम्लीय वर्षा के कारण जलभण्डारों का जल तथा भूमिगत जल प्रदूषित हो जाता है।

खबरों को बिना पढ़े-समझे पोस्ट करने की प्रवृत्ति होती है खतरनाक

वाशिंगटन, प्रेट्र : सोशल मीडिया के इस दौर में फेक न्यू यानी फर्जी खबरें माचिस की तली से कम नहीं हैं। इनका प्रभाव इतना खतरनाक होता है कि ऐसे क्षेत्रों में भी दंगे-फसाद हो सकते हैं, जहां हमेशा शांति रहती है। एक नए शोध में सोशल मीडिया में प्रसारित होने वाली फर्जी खबरों पर यूजर्स की संभावित प्रतिक्रिया का अध्ययन किया गया है। इसमें बताया गया है कि जब भी फेसबुक और ट्विटर में फेक न्यूज आती हैं तो कुछ यूजर्स इन्हें अनदेखा कर देते हैं, तो कुछ खबरों की सत्यता का पता लगाने के लिए जांच-पड़ताल में जुट जाते हैं, लेकिन जो लोग खबरों को बिना पढ़े-समझे फॉरवर्ड करते हैं वह बहुत बड़ा संकट खड़ा कर सकते हैं।

अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन के शोधकर्ताओं ने कहा, 'हम यह जानना चाहते थे कि फर्जी खबरों पर यूजर्स कैसी प्रतिक्रिया देते हैं और ऐसी पोस्ट्स की जांच कैसे करते हैं।' इस अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं ने 25 प्रतिभागियों का चुनाव किया और उनके सोशल मीडिया के प्रयोग के तरीके का विश्लेषण किया। यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन की एसोसिएट प्रोफेसर और इस अध्ययन की वरिष्ठ लेखक फ्रांजिस्का रोसेनर ने कहा, अध्ययन के दौरान लोग का मिलाजुला असर देखा। कुछ लोग ऐसे थे जिन्होंने फर्जी खबरों पर ध्यान हीं नहीं दिया। कुछ ने तथ्यात्मक रूप से उनकी पड़ताल भी की और कुछ लोगों ने शीर्ष देखकर ही उन्हें आगे बढ़ा दिया था।

फोटो न्यूज

घर में रहकर करें शीर्षासन

इजराइल के पहले प्रधानमंत्री डेविड बेन गुरियन की प्रतिमा पर शुक्रवार को किसी ने कोरोना वायरस का प्रसार रोकने के लिए घर में रहने की अपील वाला पोस्टर लगा दिया। प्रतिमा तेल अवीव के समुद्र तट पर लगी है। पोस्टर पर लिखा था, घर पर रहकर इस प्रतिमा की तरह शीर्षासन करें। इजराइल में इस वक्त लोगों के अनावश्यक घर से बाहर निकलने पर प्रतिबंध लगाया गया है। एपी

दूसरे हार्ट अटैक का कारण बन सकता है लंबे समय तक तनाव

शोध अनुसंधान

आज के दौर में हर कोई किसी ना किसी समस्या के चलते तनाव में रहता है। इसके चलते स्वास्थ्य संबंधी कई दिक्कतें खड़ी हो रही हैं। अब एक नए अध्ययन में पता चला है कि तनाव दूसरे हार्ट अटैक का कारण भी बन सकता है। अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी के सालाना सम्मेलन में पेश किए गए इस अध्ययन के अनुसार, कई लोग पहली बार दिल का दौरा पड़ने के बाद बच जाते हैं। ऐसे लोगों में तनाव एक ऐसा संकेतक हो सकता है, जिससे दूसरी बार दिल का दौरा पड़ने के खतरे को भांपा जा सकता है। यह निष्कर्ष औसतन 61 साल की उम्र के 306 से ज्यादा रोगियों पर किए गए एक अध्ययन के आधार पर निकाला गया है। तनाव के स्तर को लेकर सभी प्रतिभागियों पर करीब तीन साल तक नजर रखी गई थी। -एएनआइ

सेहत के लिए नुकसानदेह है ज्यादा मीठा खाना

बहुत मीठा खाने वाले लोग सचेत हो जाएं। इस तरह का खानपान ना सिर्फ कई बीमारियों बल्कि असमय मौत तक का कारण बन सकता है। एक नए अध्ययन का दावा है कि उच्च स्तर पर मीठे आहार के सेवन का सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। ब्रिटेन के एमआरसी लंदन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के शोधकर्ताओं के अनुसार, 'हम सभी जानते हैं कि बहुत मीठा खाना सेहत के लिए नुकसानदेह होता है। इससे ना सिर्फ मोटापा और डायबिटीज जैसे मेटाबोलिक डिसॉर्डर का खतरा बढ़ सकता है बल्कि जिदंगी भी छोटी हो सकती है।' यह निष्कर्ष मक्खियों पर किए गए एक अध्ययन के आधार पर निकाला गया है। इस अध्ययन में मीठे आहार का ज्यादा सेवन करने वाली मक्खियों में भी इंसानों की तरह मेटाबोलिक रोग की कई निशानियां पाई गईं। शोधकर्ताओं ने कहा, 'अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि बहुत ज्यादा मात्रा में मीठे का सेवन करने से बचना चाहिए।' -एएनआइ

इधर-उधर की

कोरोना वायरस के चलते बन गया डायनासोर

मैड्रिड, एजेंसी : कोरोना वायरस के प्रकोप के कारण स्पेन में दो सप्ताह तक लोगों को प्रतिबंधों के चलते घरों से बाहर निकलने की मनाही है। लेकिन जब ये प्रतिबंध लोगों के लिए है, डायनासोर के लिए नहीं। दरअसल, स्पेन का एक शख्स डायनासोर की वेशभूषा में स्पेन की सड़कों पर निकल पड़ा। स्थानीय पुलिस ने उसे न सिर्फ रोका बल्कि उसका वीडियो भी बनाया। इस शख्स ने पीले रंग का डायनासोर की वेशभूषा पहनी हुई थी। अब इस वीडियो को जो भी देख रहा है इस पर कमेंट करने से खुद को रोक नहीं पा रहा है। इसे करीब 48 लाख लोगों ने देखा है और बड़ी संख्या में इस पर कमेंट आए हैं। लोगों ने लिखा है कि ऐसा सिर्फ स्पेन में ही हो सकता है। बहुत से लोग इस महामारी के दौर में खुद को व्यस्त रखने और हास्य बोध बनाए रखने के लिए इस तरह के वीडियो देखकर दिन काट रहे हैं।

बंदरों से भैंस में पहुंचा रोटा फैमिली का जी10 पी3 वायरस

वैभव शर्मा, हिसार

- लुवास के वैज्ञानिक बोले-विश्व में कहीं भी इस वायरस की पहचान नहीं हुई थी
- पशुओं से इंसानों में और इंसानों से पशुओं में पहुंचने की है इसकी प्रकृति

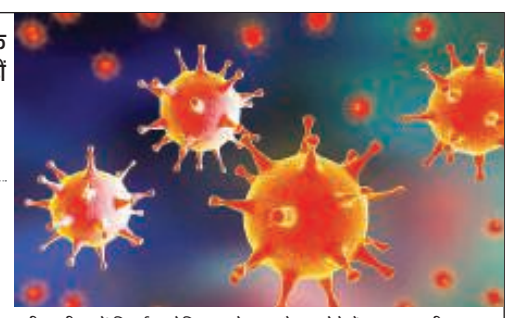

'जी10 पी3' में रिवर्स जूनोसिस वाले गुण मौजूद होते हैं। प्रतीकात्मक

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास) के बॉयोटेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट के वैज्ञानिकों ने रोटा वायरस फैमिली का नया वायरस जी10 पी3 खोजा है। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. मीनाक्षी बताती हैं कि इस वायरस की विश्व में पहले कहीं पहचान नहीं हुई थी। खास बात यह है कि हरियाणा के आर्गेनाइज्ड डेयरी फार्म की भैंस में यह पाया गया है। जब इस पर वैज्ञानिकों ने और रिसर्च की तो पता चला कि यह सैमियन मंकी यानि बंदरों से भैंसों में आया है।

डॉ. मीनाक्षी ने बताया कि वह रोटा वायरस पर काम कर रही हैं। इसी दौरान उन्होंने डायरिया ग्रस्त कई भैंस के बच्चों के मल के सैंपल लिए, जिसमें जी10पी3 वायरस मिला। वह बताती हैं कि कभी कोई बंदर रोटा वायरस से प्रभावित रहा होगा और उसने अपने मल से पशुओं के चारे या पानी को दूषित कर दिया होगा। इसके बाद यह वायरस भैंस के पेट में पहुंच गया होगा। इस बात की भी काफी संभावना है कि भैंस के अंदर पहले से मौजूद वायरसों से मिलकर यह नया वायरस जी10 पी3 डेवलप हुआ। खास बात यह है कि इस वायरस में रिवर्स जूनोसिस वाले गुण मौजूद हैं। यानि यह वायरस पशुओं से इंसानों में और इंसानों से पशुओं में भी फैल सकता है। ऐसे में वैज्ञानिकों ने इस वायरस की खोज कर आगामी प्रयोगों के लिए इसे राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र की वीटीसीसी सेंटर में सुरक्षित रख दिया है।

अभी तक पशुओं में रोटा वायरसके लिए नहीं है वैक्सीन : रोटा वायरस अगर पशुओं में हो तो उसे दस्त हो जाते हैं, जबकि इंसानों में रोटा वायरस के कारण उल्टी और दस्त दोनों होते हैं। पशुओं में तो अभी तक इस वायरस से लड़ने के लिए कोई वैक्सीन नहीं है, मगर इंसानों में इसे रोकने के लिए भारत ने विश्व बैंक की मदद से एक वैक्सीन तैयार की है। लेकिन, यह जरूरी नहीं कि एक वैक्सीन सभी प्रकार के रोटा वायरस पर काम करे। लुवास की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. मीनाक्षी बताती हैं कि पशुओं के रोटा वायरस को लेकर वैक्सीन बनाने की तरफ प्रयास किया जा रहा है।

कोरोना वायरस जैसी ही प्रकृति है इसकी

डॉ. मीनाक्षी बताती हैं कि स्वाइन फ्लू, कोरोना, वायरस यह सभी आरएनए (रेबो न्यूक्लिक एसिड) वायरस हैं। इसमें प्रूफ रीडिंग नहीं होती। इसलिए यह वायरस अपनी प्रकृति को बदलता रहता है। दूसरे वायरसों के संपर्क में आने पर यह एक नया रूप ले लेता है। यह वायरस मुंह के द्वारा, शौच के बाद हाथ न धोने से या सीवरेज वाले पानी से दूषित फल व सब्जियां खाने से आंत में पहुंच जाता है। इसके साथ ही मल के द्वारा ही यह बाहर वातावरण में आता है। अगर सीवरेज के पानी से पीने वाला पानी दूषित हो जाए तब भी यह वायरस जानवरों और इंसानों दोनों में ही संक्रमण पैदा कर सकता है। हमें मिला जी10 पी3 भी कुछ इसी प्रकार के नेचर का है। अगर कोई इंसान इस वायरस से ग्रस्त मिल्क प्रोडक्ट को खा ले तो वह भी बीमार पड़ सकता है।

डॉ. मीनाक्षी। जागरण

बमों को निष्क्रिय करेंगे रोबोट

हांगकांग में भविष्य में आतंकी खतरों से निपटने के लिए रोबोट का उपयोग भी किया जाएगा। हाल ही में यहां एक ऐसा रोबोट तैयार किया गया है, जो बमों को निष्क्रिय करने में सक्षम है। शुक्रवार को चीनी सीमावर्ती शहर शेनझेन में पुलिस एक्सप्लोसिव ऑर्डिनेंस डिस्पोजल ब्यूरो के एक अधिकारी ने इंटर डिपार्टमेंटल काउंटर टेरेरिज्म अभ्यास के दौरान इस रोबोट का प्रदर्शन किया और इसकी खूबियां गिनाईं। एएफपी

दिल की सेहत दुरुस्त रखेगा शाकाहारी भोजन

- हारोकॉपियो यूनिवर्सिटी ऑफ एथेंस के शोधकर्ताओं ने किया अध्ययन
- कहा- शाकाहारी लोगों में कम रहता है हृदय रोगों का जोखिम

लंदन, आइएएनएस : एक नए अध्ययन में शोधकर्ताओं ने दावा किया है कि जो लोग प्लांट बेस्ट डायट यानी शाकाहारी भोजन करते हैं और जंक फूड से परहेज करते हैं, उनके दिल का स्वास्थ्य अन्य लोगों के मुकाबले कहीं बेहतर रहता है।

वर्ष 2002 में शुरू हुए इस अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं ने 2,000 से अधिक ग्रीक वयस्कों के खान-पान और उनके दिल पर इसके प्रभाव पर नजर रखी। नामांकन के समय प्रतिभागियों को पांच और 10 साल के बाद विस्तृत भोजन आवृत्ति सर्वेक्षण को पूरा करने के लिए कहा गया था।

ग्रीस की हारोकॉपियो यूनिवर्सिटी ऑफ एथेंस के प्रोफेसर और इस अध्ययन के प्रमुख शोधकर्ता डेमोस्थेनीज पानाजिओटाकोज ने कहा, 'दैनिक जीवन में डिब्बाबंद मीट जैसे उत्पादों की खपत में थोड़ी-सी कमी और शाकाहारी भोजन का सेवन बढ़ाने से हृदय के स्वास्थ्य को बेहतर किया जा सकता है।'

शोधकर्ताओं ने आहार और हृदय रोगों के बीच संबंध का विश्लेषण करने के लिए एक आहार सूचकांक का उपयोग किया, जिसमें पशु आधारित खाद्य उत्पादों (मीट, अंडे, दुग्ध उत्पाद आदि) के आधार पर प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित किया गया। ये लोग पशु आधारित खाद्य उत्पादों का सेवन प्रतिदिन करते थे।

इस दौरान शोधकर्ताओं ने पाया कि जो लोग पशु आधारित खाद्य पदार्थों के साथ-साथ जंक फूड का सेवन ज्यादा कर रहे थे, उनमें अन्य के मुकाबले हृदय रोग होने की संभावना 25 फीसद ज्यादा रहती है।

डेमोस्थेनीज का कहना है कि अमेरिका में 28-30 मार्च को वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ कार्डियोलॉजी के साथ अमेरिकी कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी के वार्षिक सत्र में इस अध्ययन को प्रस्तुत किया जाएगा।

बॉलीवुड अपडेट

दूसरों के जीवन को खतरे में न डालें : रवीना टंडन

कोरोना वायरस से बचाव को लेकर सितारे सोशल मीडिया पर लोगों को जागरूक कर रहे हैं। रवीना टंडन ने पिछले हफ्ते का एक वीडियो साझा किया है, जिसमें वह शूट से लौट रही है। रवीना ने बताया कि एक दिन के असाइनमेंट के लिए वह शहर से बाहर थीं। पिछले हफ्ते वह मुंबई लौट आई। बांद्रा टर्मिनस पर बैठकर उन्होंने एक वीडियो शेयर किया है। रवीना ने बताया कि वह 31 मार्च तक क्वारंटाइन में रहेंगी। रवीना ने तीन वीडियो पोस्ट किए हैं। एक में वह बांद्रा टर्मिनस पर बैठी हैं। एक वीडियो में स्टेशन पर खड़ी ट्रेन में बैठने जा रही हैं, जबकि तीसरे वीडियो में वह उस बर्थ को गीले टिश्यू पेपर और सैनिटाइजर से डिसइन्फेक्ट कर रही है, जिस पर बैठकर उन्हें सफर करना है। रवीना ने लिखा कि बाद में बुरा महसूस करने से बेहतर है अभी अपनी सुरक्षा का ध्यान रखें। बहुत जरूरी हो, तभी सफर करें। कृपया अपने आपको और आसपास के लोगों की सावधानी और सुरक्षा को सर्वोपरि रखें। दूसरों के जीवन को खतरे में न डालें।'

जनजीवन सामान्य होने तक '83' की रिलीज टली

कोरोना वायरस के बढ़ते कहर की वजह से कई फिल्मों की रिलीज प्रभावित हुई है। अक्षय कुमार अभिनीत 'सूर्यवंशी' की रिलीज को टालने के बाद अब 10 अप्रैल को रिलीज होने वाली फिल्म '83' की रिलीज भी अनिश्चितकालीन समय तक टालने की आधिकारिक पुष्टि हो गई है।

फिल्म के निर्माताओं ने सोशल मीडिया पर तारीख टलने की जानकारी दी है। उन्होंने लिखा, '83 केवल हमारी नही, बल्कि पूरे देश की फिल्म है। इन सबसे पहले है देश की स्वास्थ्य सुरक्षा। सभी सुरक्षित रहें और अपना ध्यान रखें।' सोशल मीडिया पर साझा की गई जानकारी में कहा गया है कि लोगों की सुरक्षा सर्वोपरि है, इसलिए '83' की रिलीज को आगे बढ़ा दिया गया है।

जनजीवन सामान्य होने पर इस पर निर्णय लिया जाएगा। तब तक लोगों से गुजारिश है कि वे अपना और परिवार का ध्यान रखें। फिल्म '83' का निर्देशन कबीर खान ने किया है। यह फिल्म वर्ष 1983 में भारतीय क्रिकेट टीम के विश्वकप जीतने पर आधारित है। कपिल देव की भूमिका में रणवीर सिंह हैं।

ओ स्त्री बाहर मत जाना

दिनेश विजन की कंपनी ने बहुत ही अलग अंदाज में महिलाओं को कोरोना वायरस से सतर्क करते हुए एक संदेश सोशल मीडिया पर साझा किया है। उनकी कंपनी मैडौक फिल्म्स ने लिखा, 'ओ स्त्री, बाहर मत जाना' इसके साथ उन्होंने यह भी लिखा है कि यह संदेश हर किसी के लिए है। घर पर रहें, सुरक्षित रहें। दरअसल, 'ओ स्त्री बाहर मत जाना' लाइन मैडौक की ही वर्ष 2018 में रिलीज हुई हॉरर कॉमेडी फिल्म 'स्त्री' से प्रेरित है। फिल्म में हर घर के बाहर लिखा होता है कि 'ओ स्त्री कल आना'। यह भूत

को भगाने का प्रयास होता है। निर्माताओं ने इसका प्रयोग अब जनता कर्फ्यू को देखते हुए लोगों से घरों तक सीमित रहने को कहा है।

कीर्ति के शो के सीजन 2 का ट्रेलर आएगा 31 को

एक ओर जहां कई फिल्मों की रिलीज तारीख कोरोना वायरस की वजह से टल गई है, वहीं दूसरी ओर ओटीटी प्लेटफॉर्म पर लगातार नए शोज आ रहे हैं। घर पर रहने वाले लोगों के लिए नया कंटेंट देखने का मौका ओटीटी पर मिल रहा है। 17 अप्रैल से अमेजॉन प्राइम वीडियो पर 'फोर मोर शॉट्स प्लीज!' का दूसरा सीजन शुरू होने जा रहा है। यह शो हिंदी, तेलुगु, तमिल सहित कई भाषाओं में स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध होगा। खास बात यह है कि 19 से 31 मार्च तक इंडस्ट्री पूरी तरह से बंद है। लेकिन इस शो का ट्रेलर 31 मार्च को लॉन्च किया जाएगा। शो की कलाकार कीर्ति कुल्हारी का कहना है कि 2019 मेरे लिए खास रहा। यह 'फोर मोर शॉट्स...' की सफलता के साथ शुरू हुआ था। फिर मैं कुछ बड़ी फिल्मों का हिस्सा बनी। शायोनी गुप्ता का कहना है कि 'फोर मोर शॉट्स प्लीज!' की खास बात यह है कि यह शो चार महिलाओं पर आधारित है, जिनका व्यक्तित्व एक-दूसरे से अलग है।

जब सुपरमैन बने अमिताभ बच्चन

महानायक अमिताभ बच्चन सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहते हैं। इसके माध्यम से वह अपने प्रशंसकों के साथ तरह-तरह की जानकारियां साझा करते रहते हैं। इस बार बिग बी ने सुपरमैन बनने की इच्छा जताई है। दरअसल शुक्रवार को उन्होंने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर साझा की। इस तस्वीर में वह सुपरमैन की पोशाक पहनकर कैमरे से कुछ शूट कर रहे हैं। इस तस्वीर के साथ उन्होंने लिखा, 'अभिषेक के बचपन में उसके एक जन्मदिन पर सुपरमैन थीम पर एक फैंसी ड्रेस पार्टी का आयोजन किया था। काश कि वास्तव में सुपरमैन बनकर हम इस भयंकर महामारी कोरोना वायरस को सदा के लिए नष्ट कर सकते।' अमिताभ सोशल मीडिया पर लगातार लोगों को कोरोना वायरस के प्रति जागरूक कर रहे हैं। इसके चलते बीते रविवार को उन्होंने अपने बंगले पर होने वाले जनता दर्शन को भी रद कर दिया था। आगामी दिनों में उनकी चार फिल्में 'गुलाबो सिताबो', 'झुंड', 'चेहरे' और 'ब्रह्मास्त्र' रिलीज होंगी।

जोया बोलीं, 'चलो नाटक करते हैं'

कोरोना वायरस के कारण बॉलीवुड के सितारे अपने घर में हैं और सोशल मीडिया पर तरह-तरह की पोस्ट शेयर कर रहे हैं। रणवीर सिंह ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर साल 2009 में हुए एक नाटक का पोस्टर साझा किया। उस समय रणवीर थियेटर में काम करते थे, उन्होंने हिंदी सिनेमा में कदम नहीं रखा था। दिनकर जानी निर्देशित नाटक 'कैरी ऑन एट द की होल' में रणवीर ने दर्शन जरीवाला के साथ काम किया था। साझा पोस्टर में नीली टी शर्ट पहने वह बाकी कलाकारों के साथ खड़े हैं। तस्वीर के साथ उन्होंने लिखा, 'अपनी तस्वीरों को पुनः व्यवस्थित करते हुए मुझे यह कीमती तस्वीर मिली। मैं उन दिनों को कभी नहीं भूलूंगा। इस तस्वीर की तारीफ करते हुए विक्की कौशल ने टिप्पणी की, 'जे बात।' वहीं इस तस्वीर को देखते ही फिल्म 'गली ब्वॉय' की निर्देशक जोया अख्तर ने रणवीर को नाटक करने का प्रस्ताव दे दिया। उन्होंने लिखा कि चलो एक नाटक करते हैं।